शास्त्र प्रकाशक

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ट धर्मप्रेमी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महा लाभके लोभी धन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु २००००, का सर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु ४०००० क खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नही होते भी आपने उस ही उत्साह से कार्य को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों को गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

हैद्राबाद सिकन्द्राबाद जैन संघ

आश्रयदाता

मोरबाला (काठीयावाड) निवासी धर्म प्रेमी कायस्थ कुलज मणिलाल शिवलाल शेठ! इनोंने जैन ट्रेनींग कालेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्त की इन से शास्त्रोध्धार का कार्य अच्छा होगा एसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाये, इनोंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोध्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम लिया तैस ही भाषानुवाद की प्रेसकोपी बनाइ यद्यपि यह भाइ पगार से रहे थे तथापि इनोंने इस कार्य की सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की इस लिये इनको भी धन्यवाद देते हैं

ज्वालाप्रसाद

आभारी महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज !

इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय २ पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदद देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के आभारी होंगे

आपका अमोल ऋषि

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पुज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुवे हम आप के बडे आभारी हैं

सबकी तर्फ से

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

अपनी छत्ती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी के शिष्यवर्य ज्ञानानन्दी श्री देव ऋषिजी वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोप चार का संयोग मिला दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीमें वार्तालाप, कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके इस लिये इस कार्य सहज उक्त मुनिवरों का भी बडा उपकार है

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहन-लालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी तपस्वीजी माणकचन्दजी, कवी वर श्री अमी ऋषिजी, सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी प श्री नथमलजी, प श्री जोरावरमलजी कविवर श्री नानचन्द्रजी प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी गुणज्ञ-सतीजी श्री रंभाजी धोराजी सर्वज्ञ भंडार भीना सरवाले फत्तीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, लीमडी भंडार कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं

ओमपातिकाधिकार

सिद्ध अधिकार

इत्यनुक्रमणीका

पुरुयाधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्राने मुख मायसे महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बडा क्षेत्र साधुमार्गिय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे

शिष्य अमोलक ऋषि

उपकारी महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!

आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आपके परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोंद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा

दास अमोल ऋषि

॥ प्रथमउपाङ्ग-उववाई सूत्रम् ॥

तेण कालेण तेण समएण चपाएणाम णयरीहोत्था, रिद्धित्थीमिय सामिद्धा, पमुइय पकिलया जण जाणवया, आईण जणमणुस्सा ॥ हलसयसहस्स सकिट्ठ विकीट्ठ

उस काल चौथे आरे में, उससमय जिवसमय पर भाव भगवंत ने अपने ज्ञान में देखकर फरमाये, चम्पा नाम की नगरी थी वह नगरी भुवनादि ऋद्धिकर सहित निश्चल, स्वचक्रिय राजा का राजा का भौर पर चक्रीय अन्यराजा का दोनों के भयकर रहित, धन धान्यादि ऋद्धि पूर्ण भरी थी उस नगरी के जन पद-देश अगदेश के रहवासी लोग सदैव प्रमुदित हर्षरत रहते थे वह नगरी अकीर्ण (पूर्ण कीर्ण की तरह) मनुष्यों कर भराई थी उसनगरी के बाहिर सेंकड़ों हलोंकर जमीन खोदित थी अर्थात् वहां धमसादि के उत्पत्ति स्थानक बहुत थे मिलकर शिकिए बहुत दूरतक रम्य-मनोहर भूमिका कहि है उस चम्पा नगरी के रास्ते की सीम में बहुत लोगों कुर्कट (मूर्गे) के पालने वाले रहते थे, खेतों में इक्षु-जव-शाल-आदि बहुत प्रकार के

उववाई सुत्र की प्रस्तावना

नत्वा श्री जिनाधीश सद्गुरूणा प्रसादत । उववाई उपांगस्य कुरूते वार्तिकमय॥ १॥

श्री जिनेश्वर भगवन को नमस्कार करके प्रथम उपांग उववाई नामक सूत्र का हिन्दी अनुवाद करता हूं ॥ १ ॥ यह प्रथमांग आचारांग सूत्र का उपांग कहा जाता है, परंतु बहुत से शास्त्रों में नगर का बाग का, यक्ष का, राजा का, रानी का, समवसरण का, राजादि दर्शनार्थ गमन का, परिषद का वगैरह वर्णन आता है वहां इस उववाई शास्त्र का प्रमाण दिया जाता है, इस लिये शास्त्र बहुत प्रमाणिक है इस का उववाई नाम देने का यह प्रयोजन जाना जाता है कि इस के उत्तरार्ध विभाग में किस २ करणी से जीवों किस स्थानों में उत्पन्न होते हैं जिस का कथन विस्तार पूर्वक किया गया है, नरक में उत्पन्न होने का तथा देवलोक में दश हजार वर्ष से लगा कर तेंतीस सागरोपम का आयुष्य किस करणी वाले प्राप्त करे, और मोक्ष किस कारन से प्राप्त करे वगैरह कहा है, पीछे केवल समुद्घात का व सिद्ध के सुख वगैरह का भी अच्छा खुलासे पूर्वक कथन किया है, इस लिये यह शास्त्र शास्त्राभ्यासी को प्रथम अवश्य जानने योग्य माना गया है,

---

उववाइ सुत्र की अनुक्रमणिका

कहक, पवक, लासक, आइक्खग, लख मख, तूणइल्ल तुबविणिय, अणेगतालायराणु-
चरिया ॥ आरामुज्जाणा अगडतलागदीहिय, वप्पिण गुणोववेया, नंदणवण सन्निभ-
प्पगासा ॥ उव्विद्धविउलगंभीर खायफलिहा चक्क गय मुसढि उराह सयग्घि जमलकवा-
ड घणदुप्पवेसा, धणुकुडिल वंकपगार परिक्खित्ता, कविसिसय वट्टरयइ सठियविराय
माणा, अट्टालय चरियदार गापुर तोरणउणय सुविहत्तरायमग्ग, छेयायरियइरइय

बंदरों की तरह कूदने वाले, राजादि को का रास [पवाडा] गाने वाले, शुभा शुभ वृतान्त के कहने वाले ज्योतिषी, वांसके अग्रपर नृत्य करने वाले, तुंबीकी वीणा बजाने वाले,तालीयों बजाने वाल,इत्यादि मनुष्यों कर वह नगरी सवितथी उस चम्पा नगरीके बाहिर भीतर आराम-लता मंडप उद्यान पुष्प फलादि के वृक्षोंक बगीचे, कूवा तलाव नेहर वावडी इत्यादि विविध गुण से नन्दनवन समान प्रकाशिक थी ॥ उस नगरी के चारों तरफ ऊंडी चौडी गंभीर फलीया खाई थी चक्र, गदा, मुसढी, कोठा, सत्घनी [तोप] इत्यादि शस्त्रों कर गढ कोट संयुक्त था उस नगरी के द्वार के दोनों किमाडों सघन छिन्द्र रहित-शत्रु प्रवेश नहीं करसके एसे थे वह नगरी खेंचे हुवे धनुष्या कार कुटिल-बांका प्रकोट कर प्रतिसम घेरी हुई थी, वेह प्रकाट के काशी से-कगूर वृतुलाकार-गोल सस्थान से संस्थित विराज मान् बहुत रगमये थे, उस गढपर फिरणी फिरवो युद्धकरने के अटालास्थान बहुत थे, उस कोट के मध्य २ में जहां द्वार थे वहां २ आठ हाथ प्रमाण चौबारास्ता था, द्वारपर तोरण बहुत ऊंच अच्छे बनाये हुवे थे वह नगरी राज्यपथ युक्त

लट्ठपणगचे, सेओसिमा कुक्कडसंडेय गामपउरा, उच्छु जव सालि कलीया, गौ-महिस-गवेलग प्पभूया, आयारवंत चेईय, जुवइ विविह सणिवीट्ठ बहुला, * उक्कोडिय गाय गंट्ठिभेय भड, तक्कर खंडरक्ख, रहीया खेमा निरुवद्दवा, सुभिक्खा, वीसत्थ सुहावासा, अणेगकोडि कुटंबियाइणणिव्वुयसुहा ॥ णड, णट्टग, जल्ल, मल्ल, मुट्ठिय, वेलंवय,

धान्य की रमालों (फलों) की उत्पत्ति होतीथी, जिसकर ग्रामक पादिरका विभाग कलित-मनोहर देखाता था उस चम्पा नगरी के बाहिर गौ भैंस बैल आदि पशुओं भी प्रभूत बहुत थे. आकारवंत-शोभायमान यक्षादि का मंदिरों भी बहुतथे उसचम्पा नगरी में वेश्याके पाडे भी बहुत थे यह नगरी लांच ग्राहीयों, ग्रन्थी भेद को उचक्के, तस्कर चोरों, खंड-पासीगरों इत्यादि दुष्ट पुरुषों के भयकरहित थी ॥ उस चम्पा नगरी में सदैव क्षेम कुशल उपद्रव रहित सुभिक्ष सहित लोगों रहते थे; यथा-भिक्षा घरों को भिक्षा कालाभ सुलभता से होता था उस चम्पा नगरीमें सार्थवाह प्रमुख सुखी श्रीमन्त लोगोंकी वस्ती बहुत थी यहां के अनेक लोगों के पास अनेक क्रोडी द्रव्य का संग्रह था और व बहुत कुटुम्ब वाले भी थे इस प्रकार सुखीलोगों कर वह नगरी व्याप्त थी उस चम्पा नगरी में नट-नृत्य करने वाले, नटग नाटक करने वाले रस्सी-डोरीपर चढकर नृत्य करने वाले, मल्ल-युद्ध कुस्ती करने वाले, मुष्टि युद्ध करने वाले, भांड चेष्टा करने वाले, कथा-कहानी कहनेवाले,

---

* इस वेश्या के पाडे के पाठ का पाठान्तर " अहिरीत चेइय बहुला " ऐसा पाठ भी कितनीक प्रतोंमें लिखा है,

दिसीभाए पुण्णभद्देनाम चेइए होत्था चिराती ए, पुव्वपुरिसपण्णत्ते, पोराणसद्दिए वित्तिए कित्तिए णाए, सछत्ते सज्झए, सघंटे, सपडागे, पडागाइ पडाग मंडिते, सलोमहत्थे कय वेदीए लाउल्लोइए महिए गोसिय सरस रत्तचंदण ददरदिण्ण पंचगुलितले, उवचिय चंदनकलसे, चंदण घडसुकय, तोरण पडिदुवारे देसभाग आसत्तोसत्तविउल वट्ट- वग्घारित मल्लदाम कलावे, पंचवन्न सरससुरहि मुक्कपुप्फपूजो वयार कलिए, कालागुरु

उस चम्पानगरी के बाहिर उत्तर और पूर्वदिशा के बीच ईशान कौन में पूर्णभद्र नामका यक्षका यक्षालय (मंदिर) था, वह बहुत काल का जूना था, पूर्वजों पहिले हुवे बडे पुरुषोंने भी उस की प्रसंशा की थी, पूर्णभद्र का नाम बहुत काल से विख्याती पाया हुवा था कीर्ति विस्तरित था, वह यक्ष न्याय का करनेवाला था, छत्र ध्वजा घंटा पताका छोटी २ पताका इत्यादिकर वह देवालय मण्डित शोभित था यक्ष की प्रतिमा के हाथ में मोरपींछी थी, यक्ष के नीचे वेदि का [चबूतरा] थी वह देवालय गोबर कर लिम्प किया, खडीकर पोता हुवा गोशीर्ष चन्दन तत्काल का घसा हुवा, रक्त चंदन घसा हुवा जिस के पांचों अंगुलिये के छापे दिये हुवे थे, द्वारपर चन्दन के कलश स्थापन किये थे अच्छे चंदन के घड़े स्थापन किये थे, प्रति द्वारपर तोरन लगाये थे, जमीन से लगती हुई ऊपर से विस्तीर्ण वर्तुलाकार लम्बमान फूल की माला के समूह वहां रख रखे थे, और भी पांचोंवर्ण के सरस तत्काल के सुगन्धी

पडुफालिह इदकिला चिताणि विणिछचसिरिया इणाणिब्वुयसुहा॥ सिंघाडग तिग चउक्क चच्चर पणिमावण विविह वत्थुपरिमडिया, सुरम्मा नरवईपविइण महियइपहा अणेग वर तुरग मत्तकुंजर रह पहकर सिय संदमाणी आईण जाणजुग्गा विमउलण वणलिणि सोभिय जला पण्डूरवर भवणसेणि महिया उत्ताणय णयणपेच्छणिज्जा, पासादिया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा ॥१॥ तीसेण चपाए णयरिए बहिया उत्तरपुरच्छिम

अनेक विज्ञानी आचार्य से निष्पन्न थी उन नगरी के द्वार दृढ मजबूत फली आगल इन्द्रकीली भागल युक्त थे वह चम्पानगरी व्यापार के करनेवाले वाणिको व शिल्पकार-कुंभकारादि कर अकीर्ण भरीहुइथी, सबलोक सुखी थे उस चम्पानगरी के शृंगाटकाकार में तीनरस्ते मिले ऐसे स्थान में चौरस्ते बहुत रास्ते मिले ऐसा स्थान में, क्रियाणा आदि की दुकानों विविध प्रकार की वस्तुकर मण्डित शोभित थी, उस नगर में आवागमन करनेवाले लोगों हर्षकर प्रमुदित देखाते थे गजपथ में अनेक प्रधान घोडे मतवाले हस्तियों, शिबिका, तामजाम, गाडे, इत्यादि वाहन आकीर्ण भर हुवे थे, जिनकर वह नगरी नलनी कमल के पांखडि यों के सामान विकसित होरही थी वह नगरी श्वतवर्णवाले मूल्यादि कर शृंगारे हुवे बहुत ऊंचे २ भुवनों की पंक्ति कर मण्डित थी वह चम्पानगरी आंखों से मेखोंनमेख देखते भी नहीं किलामना पावे, चित्त को प्रसन्नकारी देखनेयोग्य मनोज्ञरूप, प्रतिरूप थी॥ इति नगर वर्णन, ॥ १ ॥

वक्खाण मंगल देवय चेईय विणएण पज्जुवासनिज्जे, दिव्वे सच्चे सच्चोवए सन्निहियपाडिहेरे जागसहस्स भागपडिच्छए, बहुजणो अच्चेइ आगम्म पुण्णभद्द चेइअ ॥ २ ॥ सेण पुण्णभद्दचेइए एक्केण महयावणसंडेण सव्वओ समता संपरिक्खित्ते, सेण वणसंड किण्हे किण्हभासे निले निलोभासे, हरिए हरियाभासे, सित सीतोभासे, णिद्धे णिद्धोभासे, तिव्वेतिव्वाभासे, किण्हे किण्हच्छाए, नीले नीलच्छाए, हरिए हरिच्छाए, सीए सीयच्छाए, णिद्धे णिद्धच्छाए, तिव्वे तिव्वेछाए, घणकडिय

भाधिष्ठित देव नजीक मे रहने वाला, सहस्रों यक्ष का मागका इच्छक, बहुत लोगों का अर्चनीक, आगमिक काल में भद्र-कल्यान का करने वाले ऐसे यक्षकी प्रतिमा थी ॥ इति यक्ष वर्णन ॥ २ ॥ वह पूर्ण भद्र नाम का चैत्य एक जबर वनखण्ड (बाग) कर चारों तरफ से वैष्टित-घरा हुवा था, वह वनखंड काल रंग वाला, काली प्रभावाला, आसमानी रंगवाला, आसमानी प्रभावाला, हरेरंग वाला, हरीप्रभा वाला, शीतल छायावाला, शीतल प्रभावाला, चिक्कना, चिकनी छाया वाला, वर्णादिकर तीव्र तीव्र प्रभावाला, काला काली छायावाला आसमानी, आसमानी छाया वाला, हरा हरी छाया वाला, शीतल शीतल छाया वाला, चिक्कना, चिकनी छाया वाला, तीव्र तीव्र छाया वाला, सघन परस्परमिली हुई वृक्षों की शाखायुक्त, गेहर गभी

पवर कुंदरुक्क तुरुक धुवमघमघत गंधधुआभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए ॥ णट्टग जल्ल मल्ल मुट्ठिय वेलंवग पवग कहग लासग आइक्खग, लंख मंख तूणइल्ल तुंववीणीय, भुयग मागह परिगए ॥ बहुजण जाणवयस्स विस्सुयकित्तिए बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्ज,अच्चणिज्जे, पूयणिज्जे सक्काराणिज्ज,सम्माणणिज्जे,

फूलों के ढगले वहां किये हुवे थे, जिस कर वह देवालय मनोरम्य हुवा था, कृष्णागर, प्रधान कुंदरुक रु-स्तारस आदि धूपोंक धूपेकर देवालय मघमघायमान अद्भुतगंधकर, अभीराम प्रधान सुगंधकर गंधितकिया अनेक गंध वट्टीयों गालीयों था अगर बत्ती आदि वत्ती यों समान उस देवालय को सुगंधमय किया था, ॥ उस देवालय के आश्रय बहुत नट नृत्यकरनेवाले नाटक करनेवाले, डोरीपर नाचनेवाले, मुष्टियुध करनेवाले, बंदर की तरह कूदनेवाले, भांड के जैसे कुचेष्टा करनेवाले, कथा कहानी कहनेवाले, राम [पवाडे] गानेवाले, शुभा शुभ के कथक, वंशाग्र खेलनेवाले, चित्रपट बताकर आजीविका करनेवाले, तार की वीना बजानेवाले, तुम्बी की वीना बजानेवाले, सर्प के खिलानेवाले, भाट मगधदेश के, इत्यादि रहते थे इत्यादि परिवार से परिवरा हुवा, विख्यात कीर्तिधारक, बहुत लोगों को आहुतीकर आहुतिक-आराधिक बंदनीक नमस्कारिक, अर्चनीक, पूज्यनीक, सत्कारनीय, सन्माननीय, कल्याणकारी, मङ्गलकारी ज्ञानवंत, विनय कर सेवा कराया हुवा, दिव्य प्रभावक्त, सत्य वन्त, सत्य वचनी, सत्य प्रभाव वाला, मानिन्द प्रतिमा का

कल्लाण मंगल देवय चेईय विणएण पज्जुवासनिज्जे, दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे सणिहिय, पाडिहेरे जागसहस्स भागपडिच्छए, बहुजणो अच्चेइ आगम्मपुण्णभद्द चेइअ ॥ २ ॥ सेण पुण्णभद्दचेइए एक्केण महयावणसडेण सव्वओ समता सपरिक्खित्ते, सेण वणसड किण्हे किण्हभासे निले निलोभासे, हरिए हरियाभासे, सित सीतोभासे, णिद्ध णिद्धोभासे, तिव्वेतिव्वाभासे, किण्हे किण्हच्छाए, नीले नीलच्छाए, हरिए हरिच्छाए, सीए सीयच्छाए, णिद्धे णिद्धच्छाए, तिव्वे तिव्वेछाए, घणकडिय

भाधिष्ठित देव नजीक मे रहने वाला, सहस्रों यक्ष का मागका इच्छक, बहुत लोगों का अर्चनीक, आगमिक काल में भद्र-कल्याण का करने वाले ऐसे यक्षकी प्रतिमा थी ॥ इति यक्ष वर्णन ॥ २ ॥ वह पूर्ण भद्र नाम का चैत्य एक जबर वनखण्ड (बाग) कर चारों तरफ से वेष्टित-घरा हुवा था, वह वनखंड काल रंग वाला, काली प्रभावाला, आसमानी रंगवाला, आसमानी प्रभावाला, हरेरंग वाला, हरीप्रभा वाला, शीतल छायावाला, शीतल प्रभावाला, चिक्कना, चिक्कनी छाया वाला, वर्णादिकर तीव्र तीव्र प्रभावाला, काला काली छायावाला आसमानी, आसमानी छाया वाला, हरा हरी छाया वाला, शीतल शीतल छाया वाला, चिक्कना, चिक्कनी छाया वाला, तीव्र तीव्र छाया वाला, सघन परस्परमिली हुई वृक्षों की शाखायुक्त, गेहर गभी

काडिगच्छाए रम्म महं महं निकुरंबभूए ॥ तेण पायवा मूलमंता कंदमंता खंधमंता तयामंतो, सालमंतो, पवालमंतो, पत्तमंता पुप्फमंता, फलमंतो, बीयमंतो, अणुपुव्व सुजाय रुईल वट्टभाव परिणया, एगखंध अणेगसाला, अणेगसाहप्पसाहवि-डिमा, अणेगनरवामसुप्पसारिय, अगेज्झ घण विउल वट्टखंधि, अच्छिद्दपत्ता, अविरलपत्ता अवाईणपत्ता, णिद्दरजरढ पंडुपत्ता, णव हरिय भिसंत पत्तभारंधयार गंभीर दरिसणिज्जा, उवणिग्गय वणतरुणपत्त पल्लव कोमल उज्जल चलंत किसलय

छाया वाला, रमणिक महामेघ गंभीर वदन की घटाके जैसा निकुंज था ॥ उस बाग के वृक्षों का १मूल पृथ्वी के अंदर ममरा हुवा था, २ कन्दमूल के ऊपर का विभाग जिसकर युक्त था, ३ स्कन्ध-धुडपर मत्स्याकार कंधकर संयुक्त था, ४त्वचा छाल युक्त, ५ बडी शाखाओं[डालियों]कर युक्त, ६ प्रवाल छोटी शाखाकर युक्त, ७ पत्तोंकर युक्त, ८ सुगंधी फूलोंकर युक्त, ९ अनेक प्रकार के फल युक्त, और १० बीजोंकर युक्त थे वे वृक्षों अनुक्रम मे अच्छे उत्पन्न हुवे रुचिर मनोहर, वृत्ताकार-गोलाकार परिणम हुवे, जिन वृक्षों के पत्र छिद्र भिद हुवे नहीं थे, विरल अलग पत्ते नहीं थे परंतु एकेक म मिले हुवे थे, अधो-मुख वाले पत्ते, थ पुराने पत्ते पीलपत्त सडपत्त झाडकर दूर किये थे, नवपत्ते हरे रंग वाले पत्त दीप्तिमान—चिलकते पत्तों के भार कर अन्धकार कर गंभीर दर्शन वाले वृक्षों थे जिनके ऊपर निकली थी नवी तरुण पत्र की कूपलों कोमल उज्वल हलतीहुई चिलकतीहुई, सुकुमाल प्रवाल शिखरशोभित प्रधान वृक्षों का शिखर था उसबागमें

सुकमाल पवाल सोभिय वरकुरुग्गसिहरा॥ निचकुसुमीया, णिच्चमाईया, निच्चलवईया, णिच्चथवईया, णिच्चगुच्छया, णिच्चगुम्छिया, णिच्चजमलिया, णिच्चजुवलिया, णिच्चविण मीया, णिच्चपणमिया णिच्चकुसुमिया, माईय, लवईय, थवईय, गुलईय गुच्छिय, जमलिय, जुवलिय, विणमिय, पणमिय, सुविभत्त पिंडमजरि वडंसयधरा॥ सुय वरहिण मयणसाल, कोईल कोहगक भिंगारक कोडलक, जीव जीवक, णदिमुह, कविल, पिंगल, क्खक, कारंड, चक्कवाय, कलहस, सारस, अणेग सउणगण मिहुण विरईय, सदुन्नईय

सदैव —१ फूलों करके झुके होते थे २ सदैव मयुर ममारी लगती थी ३ सदैव पत्र फूलों लगती थी, ४ सदैव पुष्पों के पत्र जमते थे, ५ सदैव गुल्म उत्पन्न होते थे, ६ सदैव गुच्छे लगते थ, ७ सदैव वृक्ष समश्रेणी बराबर जमाये हुए थे, ८ सदैव वृक्षों पक्व हुवे थे, ९ सदैव वृक्षों फल फूल के भार से नमे हुए थे, १० सदैव सुमगुणों प्रणमित थे, ११ सदैव फूलों कर मोर ममरी कर पत्राकर पत्रेकर गुल्मकर गुच्छकर जमे वृक्षोंकर युगल वृक्षोंकर नमे वृक्षोंकर गुणप्रणमित वृक्षोंकर, अच्छीतरे विभाग किया था, मंजरीयों के पिंड के धारक वृक्षों के शिखर शुक तोता मैना सालुंकी, कोकिला, कोहग, भिंगार, कुंडलक, जीव जीव, नन्दीमुख कपीलक, पिंगल, कारंड, चकवे, राजहंस, सारस इत्यादि अनेक पक्षियों के गाल

महुरसरणादिचे सुरम्मे सपिंडित दरिय भमर महुकरि, पहकर, परिलितु मत्तच्छप्पय, कुसुमा सवलोल महुर गुमंगुमत गुजंदसभागे ॥ अभिंतरपुप्फफले, बाहीरपत्तोच्छण्णे, पत्ताहिय, पुप्फेहिय उच्छण्ण पलिच्छण्णे, साउफल, निरोयए, अकटए, णाणाविह गुच्छगुम्म मडवग रम्मसोहिए विचित्त सुभकेऊभूए ॥ वावि पुक्खरणि दिहीया, सुय-सुनिवसिय रम्मजालहरए पीडिम, णीहारिम, सुगंधी, सुहसुरहि, मनहरच, महया

[श्री पुक्त] जाड़े विराजित थे, वे, पक्षी यों हर्षित हो मंजुल मधुर स्वर से गुंजारव कर रहे थे, वहां पक्षी यों का कल कलाट हो रहा था फूलोंपर भ्रमर मधुकर भ्रमकर भलित हो मकरन्दकर परपरा फूलों के ऊपर मधुर शब्द से गुंजारव करते बगीचे के दश भाग में शोभित थे ॥ सब वृक्षों अभ्यंतर अन्दर पुष्प फल से और बाहिर पत्रों कर अच्छादित होरहे थे पत्रोंकर फूलोंकर संपूर्ण ढके हुवे थे, दूर से पुष्प पत्र दृष्टीभूत थे, उन के फल अच्छे स्वादिष्ट आरोग्य कंटकादि अमनोज्ञता रहित थे ॥ उस बाग में अनेक प्रकार के मंडलाकार चतुष्कोणादि मंडपा में, विविध प्रकार के गुच्छे गुल्म द्राक्षादि की वल्लीकर अच्छादित शोभित थे, वे पत्र गुच्छादि ऐसे शोभित थे मानो विचित्ररंग की ध्वजाओं ही लटक रहीथी, उस बगीच में स्थान २ पर दीर्घवावडी, चतुष्कोन पुष्करनी, दीर्घनेहरों अच्छे प्रकार बनाइ हुई थी, जिस में निर्मल- स्वच्छ रमणिक पानी भरा हुवा था उस बाग की पुद्गल पिण्ड हरितकाय समूह

णाणाविह, गुच्छ गुम्म मंडनक घरक सुहकेउचहुला, अणेग रह जाण-जुग्ग शिविय पविमोयणा सुरम्मा पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ३ ॥ तस्सण वणसडस्स वहुमज्झदेसभए एत्थण महएक असोगवरपायवे पण्णत्ते कुसवि-कुस विसुद्धरुक्खमूल, मूलमतो कदमतो जाव पविमोयणे सुरम्मे पासादिय दरिसणि ज्जे अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४ ॥ सेण आसोगवर पायवे अण्णेहिं बहुहिं तिलएहिं, लउएहिं, छत्तोएहिं, सिरिसेहिं, सत्तवन्नेहिं, दहिवन्नेहिं, लोद्धेहिं, धवेहिं; चदणेहिं

रूप फूलों की बहुत दूरतक सुगन्ध सुरम्य मनहर महागंद महक रही थी, अनेक प्रकारके गुच्छे गुल्मकर मडप घर कर अच्छी बहुतसी ध्वजाओंकर अनेकोंप्रकार के रथ गाडे युग्म शिबिका स्थापे हुवे ,कर वह बाग अच्छा रमणिक चित्त को प्रसन्नकारी, देखने योग्य, अभीरूप प्रतिरूप था, ॥ ३ ॥ उसवन खण्ड[बाग] के बहुत मध्यदेश विभाग [बीच]में वहां एक बडा अशोक नामका प्रधान वृक्ष कहा है उसका मूल कुश डाभादिकर विकुश कटकादिकर रहित विशुद्ध निर्मल था, वह वृक्ष मूल कंद स्कंध आदि दस बोलकर शोभित यावत रथादि स्थापन होनेसे अच्छा रमणिक चित्तको प्रसन्न कारी,देखने योग्य अभीरूप प्रतिरूप था॥४॥ उस अशोक [सब वृक्षोंमें] प्रधान वृक्षके भूषण रूप चारों तरफ अन्य बहुत प्रकारके तिलकवृक्ष, बकुलवृक्ष, छत्रोप

अज्जुणेहिं णीवहिं, कुडएहिं, कलंबहिं, मचेहिं, फणसेहिं, दाडिमेहिं, सालेहिं, तालेहिं तमालेहिं, पियएहिं, पीयगुहिं, पुरोवेगहिं, रायरुक्खेहिं, नदीरुक्खेहिं सव्वचोसमन्ता सपरिक्खित्ते तेण तीलया लउया जाव णदिरुक्खा, कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूला, मूलमतो कदमतो एतेसिं वणतो भाणियव्वा जाव सिविय पविमोयणा सुरम्मा पासादिया ४ ॥ ५ ॥ तेण सिलया जाव णारिरूखा अण्णाहिं बहुहिं पउमलयाहिं, असोयलयाहिं, चपगलयाहिं, चुयलयाहिं वणलयाहिं, वासतिलयाहिं, अइमुत्तलयाहिं, कुदलयाहिं, सासलयाहिं, सव्वओसमता सपरिक्खित्ता ॥ ताओण पउमलयाओ णिच्चकुसुमियाओ जाव

वृक्ष, सिरिस वृक्ष, सप्तवर्ण वृक्ष, दधीपर्ण वृक्ष, लोधवृक्ष, धववृक्ष, चन्दन वृक्ष, अर्जुन वृक्ष, नीम वृक्ष कुटज वृक्ष, कदंब, फणस दाडिम, शीसम, ताड, तमाल प्रिय प्रियंगु, पुरीप मर्ग, रायण, नदीवृक्ष, इत्यादि वृक्षों कर सर्व समस्त चारों तरफ परिक्षित वेष्ठितथी ॥ ८ ॥ वे तिलक वृक्ष लउक वृक्ष यावत् नंदी वृक्ष, अन्य बहुत प्रकार की-पद्मलता, नागलता, अशोक लता, चंपकलता, चूतलता, वनलता, अतिमुक्तलता, कुंदलता स्यामलता, इत्यादिलता भी कर सर्व समस्त चारों तरफ वेष्टि थी ॥ वे पद्मादिलताओं सदैव फूलों कर फुलि व यावत् आवतंस शिखर उसको धरनहार चित्तको प्रसन्नकारी; देखने योग्य, अभीरूप-मनोहर प्रतिरूप थे ॥ ९ ॥ उस अशोक प्रधान वृक्ष के नीचे उस के थुड से कुछदुर तहा एक बडे पृथ्वी का शिलापटकरा है

वडसयधरिओ पासादिया४।६॥तस्सण आसोगवरपायवस्स हेट्ठाई सखित्रामसहिणे एत्थण मह एके पुढवि सिह्लापट्टए पण्णत्ते ! विक्खमायामउस्से सुप्पमाणे कण्ह अंजण कवाण कुवलय, हलधरकोसेज्जागसस्स केस काजलगी खजन सिंगभेदरिट्ठय जबूफल असणक सणबधण णीलुप्पल पत्तणिकर अयासिकुसुमप्पगासे मरकत मसार कलित्त णयण किकिय रासित्रणे णिद्धघणे अट्ठसिरे आयं सयतलोवमे सुरम्मे,ईहा मीय उसभ तुरग णर मकर विहग वालग किंनर रुरू सरभ चमर कुजर वणलय पउमलय भित्तिचित्ते आईणय, रूय बूर णव-

वह लम्बेपने में चौडेपने में उंचपने में प्रमाणोपेत बराबर सुशोभित थी,वह शिलापट कृष्ण वर्ण मय, अजनक वनस्पति, तलवार, निलोत्पल कमल, बलदेव के वस्त्र, आकाश, तरुण के बाल, काजल का ढग, गाडे का खंजन, श्रृंग का भेद, रिष्टरत्न, जम्बू के फल, बीय का वृक्ष, शण का बधन, नीलोत्पल कमल के पत्ते का समूह, अलसी के फूल का समूह, मरकतरत्न, चन्द्र नील मणि, आंखों की कीकी का समुह, इस के समान श्याम वरण सघन चिकना चिलकता हुवा देखाता था, वह शिलापट अष्टपेल (आठ कोने) वाला अयता-काच के तलिये के जैसा स्वच्छ प्रकाशिक सुरम्य था, जिस सिलापर शाहमृग मृग, वृषभ,घोडे,मनुष्य, मगर, पक्षी, बगले, विद्याधर के जोडे, सर्प, अष्टापद, चमर, हाथी, वनलता, पद्मलता, इत्यादि विविध प्रकार के चित्रों कर परि मंडित था वह शिलापट कमाया हुवा चर्म,रुय नामक वनस्पति,बूर वनस्पति,अकतुल (आककी रुई) इस के जैसा कोमल स्पर्श का धारक, सिंहासन के सस्थान से सस्थित चित्त को प्रसन्न करी, देखने

णिय तुल्लफास, सिंहासणसट्ठाणसठिए पासादिए ४॥७॥ तत्थणं चंपाए नयरिए कुणिए नाम राया परिवसइ महया हिमवत महंत मलय मंदर महिंदसारे, अच्चतविसुद्ध दीह राय-कुलवंस सुप्पसुते, निरतर रायलक्खणविराईयगमंग, बहुजण बहुमाण पूजिते सव्वगुण समिद्धे, खत्तिये, मुईए, मुद्धाहिसित्ते, माउपिउ सुजाए, दयपत्ते, सिमंकरे, सीमधरे, खेमकरे, खेमधरे, मणुस्सिदे जणवयपिया, जणवयपाले, जणवयपुरोहिए, योग्य, भाभिरूप, प्रतिरूप ॥ इति बाग वर्णन ॥ ७ ॥ तहां चंपा नगरी में कोणिक नामक राजा राज्य करता था, वह राजा महा हिमवंत पर्वत, मलयाचल पर्वत, मेरु पर्वत महेन्द्र तथा इन्द्र समान अत्यन्त विशुद्ध निर्मल दीर्घ राज्य कुल वंश में समुत्पन्न अन्तर रहित-अखंडित राजाओं के सुलक्षणों कर अलंकृत अंगोपांग वाला, बहुत जनों कर बहुत माना हुवा बहुत पूजाया हुवा राजाओं के सर्व गुण संपन्न, क्षत्रिकी जात्यात्पन्न, सदैव प्रमुदित सुखी, मात पिताओं कर राज्याभिषेक कराया हुवा, माता पिता का भक्त-सूपूत + महोदय प्राप्त या दयापात्र, मर्यादका करनेवाला, की हुई मर्यादका पालनेवाला, क्षेम करने-वाला उपद्रव का शमनेवाला, प्राप्त क्षम का रक्षण करनेवाला, मनुष्यों का इन्द्र, जनपद-देश का पिता, जनपद-देश का पालनेवाला, जनपद-देश का पुरोहित-निर्विघ्न करता, भूले को रास्तेका-नीति का बताने-

+ कोणिक राजा पिता को कारागार में बैठकर मारा है सो फक्त परभव के बन्धे हुवे वैरोदय कर, नहिं अभक्ति कर.

सेठकरे, केउकर, णरपवरे, पुरिसवरे, पुरिससिंहे, पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे, पुरिसवरपुंडरिए, पुरिसवरगधहत्थि, अड्ढे दित्ते वित्ते, विच्छि न्नविपुल भवण सयणासण जाणवाहणाइण्णे, बहुधण बहुजाय रूवरयए, आओग पओग सपउत्ते, विच्छिडिय पउर भत्तपाणा, बहुदासदासि, गो महिस गवेलग प्पभूते, पडिपुण्ण जतकोस कोठागारा,

अद्भुत-चमत्कारिक कार्य का करनेवाला, मनुष्यों में प्रधान, पुरुषों में प्रधान, पुरुषों में सिंह समान, पुरुषों में व्याघ्र समान, पुरुषों में दृष्टी विष सर्प समान रुष्ट हुआ मारे, पुरुषों में पुंडरीक कमल समान, पुरुषों में गन्ध हस्ति समान, महा ऋद्धिवंत, महा कांतिवन्त, महा धनवन्त, जिस राजा के विस्तीर्ण है भुवान-घरों, शयन शैय्याओ आसन यान-आकाशगामी विमान, वाहन सकटादि, इन कर पूर्ण है बहुत है धन बहुत जातिवन्त उत्तम रूपा रत्नादि, तैसे ही अर्थ धन का लाभ भी आभाग प्रयोग-द्विगुणा चतुगुणा होता है अर्थात् पुण्य प्रभाव से उत्पत्ति अधिक होने से राज्य में करादि का लाभ बहुत होता था, जिस के भोजन गृह में बहुत आहार पानी निष्पन्न होता था वह खाये बाद बहुत बचने से बहुत अनाथादि लोगों को देने में आता था, जिस राजा के दासीयों दास बहुत थे, तैसे ही गौ, भैंस बैल भी प्रभूत थे, जिस राजा के सस्त्रों का यन्त्र पाषान की सिलादि का संग्रह बहुत था, कोस भंडार द्रव्य कर, और कोठार अनाज कर प्रतिपूर्ण भरे हुवे थे, तैसे ही आयुध आगर-(आयुध शाला) भी शस्त्रों कर भरी हुई थी,

गारा, आयुधागारे, बलत्र पुव्वल पच्चमिचे, ओहयकटय, निहयकटय, मलियकटय उद्धियकंटय, ओहयसतु मलियसत्तु उद्धियसत्तु निज्जियसत्तु, पराईयसत्तु, ववगय-दुभिक्खं, मरिभयाविप्पमुक्क, खेम, सिव, सुभिक्खं, पसत डिंबडमर रज्ज पसाहे-माणे विहरति ॥ ८ ॥ तस्सण कुणियस्स रण्णो धारणि नाम देवी होत्था- सुकुमाल पाणिपाया, अहिण पडिपुण्ण पंचिंदिय सरीरा, लक्खण वंजण गुणोववेया, माणुम्मा-

वह कोणिक राजा शारीरिक बलकर बलवन्त था, और जिस के प्रत्यमित्र - वैरी थे, दुर्जन थे चोर जार अन्याइ आदि कंटकों की रिद्धी का अपहरण कर मान भगकर राज से दूर किये थे देशसे निकाल दिये थे जिस से उसका राज दुष्टजन रूप कंटक करके रहित हुआ था वैसे ही विनाश कियाथा शत्रुओं का जीतेथे शत्रुओं को, मर्दन किये थे शत्रुओं के मानको देश से निकाल दिये थे शत्रुओं को; इस प्रकार सब शत्रुओं जीते थे उसके देश से दुर्भिक्ष दुष्काल भी दूर हुआ था, मारीमृगी रोगका भयभी वह देशमुक्त था, क्षेम-कल्यान,शिव निरूप द्रव, सुभिक्ष सुकाल,सदैव वर्तताथा प्रशान्त-हुवा उपशया डिंबर अर्थात् राजा आदिका परस्पर का वैर विरोधनाशहुवा था इसप्रकार कोणिक राजा राज्यकरता विचरताथा॥इति राजा वर्णन॥८॥ उस कोणिकराजा के धारिणी नामकी राणी थी, उसके हाथपांवके तलिये सुकुमाल थे अङ्गोपाङ्ग पांचों इन्द्रियों आदि सब शरीरकर प्रतिपूर्ण थी स्वस्तिक आदि लक्षण तिलादि व्यंजन उत्तमोत्तम धारक

णप्पमाण पडिपुण्ण सुजाय सव्वंगसुंदरंगी, ससिसोमाकारा कंतपिय दंसणी, सुरूवा करयल परिमिय, पसत्थ तिवलि वलीय मज्झा, कोमुइ रयणिकर विमल पडिपुण्ण सोमवयणा, कुंडलुल्लिहियगंडलेहा, सिंगारागार चारुवेसा, सगयगय हसिय भणिय विहिय विलास ललिय सलाव णिऊण जुत्ते वयार कुसला, पासादिया ४ ॥ कोणिएण रण्णा भभसार पुत्तेण सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता, इट्ठे सद्दे फरस रस रूव

थी, मान मे + उन्मान से प्रमाण से जिस का शरीर—सर्व अङ्गोपाङ्ग सुन्दराकार, चन्द्रमा समान सोम्य शीतल प्रियकारी दर्शन, सुरूपथी त्रिवली युक्त करतल मध्य में आवे एसी कटिकी धारक, कौमुदी पूर्णिमाके प्रतिपूर्ण निर्मल चन्द्रमाके समान सोम्य मुखारविन्द वाली, कानों के दोनों कुंडल कर आछादित है गंडरेखा(कपोलस्थान) जिसका, शृंगारका आगार(घर)मनोहर वस्त्रकी धारक, स्वगत हंसके जैसा मिलता हुवा गति गमन, हंसना बोलना अंगचेष्टा करना, विलास भाव लालितपना, प्रश्नोत्तरदना, इत्यादि कार्यों में निपुन, लोक व्यावहार साधनमें बडी कुशल, चित्तको प्रसन्नकरी, देखनेयोग्य, मनोहर प्रतिरूपथी ॥ वह धारनीरानी कोणिक राजा भभसार (श्रेणिक) राजा के पुत्र के साथ अनुरक्त अविरक्त इष्टकारी शब्द स्पर्श रस रूप गन्धरूप पांचो इन्द्रिय के मनुष्य

+ पुरुष प्रमान कुंडी पानी से भर के पुरुष का अंदर बैठाने से उस का आधापानी निकले यह मान, तोलने में आधाभार वजन हो यह उन्मान, अपने अंगुल से १०८ अंगुल ऊंच शरीर हो यह प्रमान

परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि संठाणओ—परिम उलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरस संठाण परिणयावि, आयत संठाण परिणयावि, ॥ जे रसओ अंबिलरस परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि॥गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि दुब्भिगंध परिणयावि फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि सीअफास परिणयावि, उसिणफासपरिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरससंठाण परिणयावि, आयत संठाण परिणयावि ॥ जेरसओ महुररस परिणया तेवण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्णपरिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्णपरिणयावि, सुक्किलवण्णपरिणयावि ॥ गंधओसुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंधपरिणयावि, ॥ फासओ कक्खडफास परिण-

स्पर्श में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस छ स्पर्श व पांच संस्थान यों २३ बोल पाते हैं, गुरु में भी कर्कश

उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि लुक्खफास परिणयावि, संठाणओ परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंससंठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ जे फासओ लहुअफास परिणयावि, ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि, गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि; कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि, ॥ फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, सीयफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंससंठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ जे फासओ सीयफास परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि,

स्थान परिणत परमाणु पुद्गल हैं व वर्ण में काले, नीले, पीले, लाल व श्वेत वर्ण परिणत हैं गंध से

कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्णपरिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि उसिणफास परिणयावि णिद्धफास परिणयावि लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंस संठाण परिणयावि चउरंस संठाणपरिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ जे फासओ गरुअफासपरिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नील-वण्णपरिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंधपरिणयावि रसओ तित्तरसपरिणयावि कडुयरस परिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अंबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि, फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, सीयफास परिणयावि,

बत्तीस यों सब मीलकर अठों स्पर्श के १८४ बोल होते हैं अब संस्थान आश्री कहते हैं जो परिमंडल

परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंस संठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि॥ जे फासओ णिद्धफास परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयवि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि सुक्किल्लवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि दुब्भिगंध परिणयावि॥रसओ तित्तरस परिणयावि कडुयरस परिणयावि कसायरस परिणयावि अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ-कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि लहुयफास परिणयावि सीयफास परिणयावि उसिणफास परिणयावि संठाणओ परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंससंठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि॥ जे फासओ लुक्खफास परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिय वण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि, ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस

से कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष स्पर्श परिणत हैं यों परिमंडल संस्थान में म॰

सुक्किल्लवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि दुब्भिगंध परिणयावि॥ रसओ तित्तरसपरिणयावि, कडुयरसपरिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अंबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि फासओ-कक्खडफासपरिणयावि, मउअफासपरिणयावि, गरुयफास परिणयावि,लहुयफासपरिणयावि,णिद्धफासपरिणयावि,लुक्खफासपरिणयावि॥ सठाणओ परिमंडल सठाण परिणयावि, वट्टसठाण परिणयावि,तंससठाण परिणयावि चउरस सठाण परिणयावि, आयतसठाण परिणयावि॥ जे फासओ उसिणफास परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिय वण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि॥ गंधओ-सुब्भि-गंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ-तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि, लहुयफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ सठाणओ

सुरभिगंध दुरभिगंध परिणत हैं, रस से तिक्तकटुक कषाय, अम्बट व मधुर रस परिणत हैं और स्पर्श

नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्णपरिणयावि ॥ गधओ सुब्भिगधपरिणयावि दुब्भिगधपरिणयावि, ॥ रसओ-तित्तरसपरिणयावि कडुअरसपरिणयावि, कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि, ॥ फासओ कक्खडफासपरिणयावि,मउअफासपरिणयावि, गरुअफासपरिणयावि, लहुअफासपरिणयावि, सीअफासपरिणयावि उसिणफासपरिणयावि णिद्धफासपरिणयावि लुक्खफासपरिणयावि॥ जे सठाणओ तससठाण परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि लोहियवण्णपरिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्ण परिणयावि ॥ गधओ सुब्भिगध परिणयावि, दुब्भिगध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि फासओ कक्खडफासपरिणयावि,मउयफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि, लहुयफास परिणयावि, सीयफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ जे सठाणओ चउरस

२ बोल मानना सब मीलकर पांच संस्थान के १०० बोल हुए यों रूपी अजीव प्रज्ञापणा में वर्ण के १०८

परिणयात्रि, अंबिलरस परिणयात्रि, महुररस परिणयात्रि, ॥ फासओ-कक्खड फास परिणयात्रि, मउयफास परिणयात्रि सियफास परिणयात्रि, उसिण फास परिणयात्रि, गरुअफास परिणयात्रि, लहुय फास परिणयात्रि, ॥ सठाणओ परिमंडल सठाण परिणयात्रि, वट्टसठाण परिणयात्रि, तसंसठाण परिणयात्रि, चउरस सठाण, परिणयत्रि आयत सठाण परिणयात्रि, ॥ जे सठाणओ परिमंडल सठाण परिणया तेवण्णओ कालवण्ण परिणयात्रि, नीलवण्ण परिणयात्रि, लोहियवण्ण परिणयात्रि हालिद्दवण्ण परिणयत्रि, सुक्किलवण्ण परिणयात्रि ॥ गधओ सुब्भिगंध परिणयात्रि, दुब्भिगंध परिणयात्रि, ॥ रसओ तित्तरस परिणयात्रि, कडुयरस परिणयात्रि, कसायरस परिणयात्रि अंबिलरस परिणयात्रि, महुररस परिणयात्रि ॥ फासओ कक्खड फास परिणयात्रि, मउअफास परिणयात्रि, गरुअफास परिणयात्रि, लहुअफास परिणयात्रि, सीअफास परिणयात्रि, उसिणफास परिणयात्रि, णिद्धफास परिणयात्रि, लुक्खफास परिणयात्रि जे सठाणओ वट्टसठाण परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयात्रि,

मीलकर २० बोल होते हैं जैसे परिमंडल का कहा वैसे ही वृत्त, त्र्यस, चौरस व आयात के भी मिल २

णिद्धफास परिणयावि लुक्खफास परिणयावि ॥ सेत्त रूवी अजीव पण्णवणा ॥ ७ ॥ सेकिंत जीव पण्णवणा ? जीव पण्णवणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा संसार समावण्ण जीव पण्णवणाय, असंसार समावण्ण जीव पण्णवणाय ॥ से किंत असंसार समावण्ण जीव पण्णवणा ? असंसार समावण्ग जीव पण्णवणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा-अणंतरसिद्ध असंसार समावण्ण जीव पण्णवणाय, परंपरसिद्ध असंसार समावण्ण जीव पण्णवणाय ॥ से किंत अणंतरसिद्ध असंसार समावण्ण जीव पण्णवणा? अणंतर

प्रज्ञापना हुवा ॥ ७ ॥ अब जीव प्रज्ञापना का स्वरूप कहते हैं जीव प्रज्ञापना किसे कहते हैं ? जीव प्रज्ञापना के दो भेद कहे हैं संसार समापन्नक जीव व असंसार समापन्नक जीव इन में असंसार समापन्नक जीव के कितने भेद कहे हैं ? असंसार समापन्नक जीव प्रज्ञापना के दो भेद कहे १ जिन को सिद्ध हुए एक ही समय हुवा है वे अनंतर असंसार समापन्नक जीव और २ जिनको सिद्ध हुए एकसे विशेष समय हुए हैं वे परंपर असंसार समापन्नक सिद्ध अनंतर सिद्ध असंसार समापन्न जीव किसे कहते हैं ? अनंतर असंसार समापन्न जीव के पनरह भेद कहे हैं १ तीर्थ की स्थापना हुए पीछे सिद्ध होवे सो तीर्थ सिद्ध २ तीर्थ स्थापन हुए पहिले सिद्ध होवे सो अतीर्थ सिद्ध, ३ ऋषभादि तीर्थंकर सिद्ध होवे सो तीर्थंकर सिद्ध ४ सामान्य केवली सिद्ध होवे सो अतीर्थंकर सिद्ध ५ स्वतः अन्य किसी के उपदेश विना प्रतिबोध

पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति ॥ असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जति ॥ मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवग असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्ता पज्जत्तएसु उववज्जति ॥ तेणं भंते ! जीवा कतिगतिया कति आगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुगतिया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ॥ सेतं सुहुम पुढविकाइया॥१२॥सेकिंत बायर पुढविकाइया? बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्ह बादर पुढविकाइया खरबादर पुढवि काइया ॥१॥ सेकिंत सण्ह बादर पुढविकाइया? सण्ह बादर पुढविकाइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा कण्हमाट्टिया, भेदो जहा

मनुष्य में ये जीवों नहीं उत्पन्न होते हैं प्रश्न इन जीवों की कितनी गति व आगति है ? उत्तर इन जीवों की दो गति व दो आगति है अर्थात् तिर्यंच व मनुष्य इन दो गति में जाते हैं और इन दोमें से ही आते हैं सूक्ष्म पृथ्वीकाया के जीवों प्रत्येक शरीरी असंख्याते कहे हैं यह सूक्ष्म पृथ्वीकाया का स्वरूप हुवा ॥ १३ ॥ अब बादर पृथ्वी काया का कथन करते हैं प्रश्न बादर पृथ्वीकाया क्या है ? बादर पृथ्वीकाया के दो भेद कहे हैं १ कोमल बादर पृथ्वीकाया और २ कठोर बादर पृथ्वीकाय प्रश्न कोमल बादर पृथ्वीकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-कोमल बादर पृथ्वीकाया के सात भेद कहे हैं काली, हरी

काइया दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भते! जीवाण कति सरीरया पण्णत्ता? गोयमा! तउ सरीरया पण्णत्ता तजहा—ओरालिए तेयए कम्मए॥जहेव सुहुम पुढवि काइयाणं, नवर थिवुग सठिया पण्णत्ता सेस त चेव जाव दुगतिया दुआगतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता॥सेत्तसुहुम आउक्काइया॥ १ ५॥सेकिं त बायर आउक्काइया? बायर आउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा-उसा हिमे जाव जेयावन्ने तहप्पगारा

सूक्ष्म अपूकाया व बादर अपूकाया उनमें से सूक्ष्म अपूकायाके दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन सूक्ष्म अपूकायिक जीवोंको कितने शरीर हैं? उत्तर-इन जीवोंको उदारिक तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर हैं इसका सब कथन सूक्ष्म पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही जानना, परतु विशेषता यह कि इन का संस्थान पानी के परपोटे जैसे जानना शेष सब पूर्वोक्त जैसे मानना यावत् दो गति व दो आगति वाले हैं, प्रत्येक शरीर असंख्यात हैं ये सूक्ष्म अपूकाया के भेद हुए ॥ १५ ॥ प्रश्न-बादर अपूकाय के कितने भेद कहे हैं? उत्तर बादर अपकाया के ओस, हिम गले का पानी, आकाश का पानी, नदी आदि का पानी, तलाव का का पानी, खारा पानी, मीठा पानी, शीत, उष्ण पानी वगैरह अनेक प्रकार के पानी के भेद मानना इस के संक्षेप से दो भेद कहे हैं, पर्याप्त व अपर्याप्त इस का सब कथन बादर पृथ्वी काया जैसे जानना

मरंति ॥ तेण भंते ! जीवा अणंतरे उव्वट्टिता कहिं गच्छइ कहिं उववज्जति किं नेरइएसु उववज्जति पुच्छा ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जति, तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति, मणुस्सेसु उववज्जति, नो देवेसु उववज्जति तंचेव जाव असंखेज्ज वासाउयवज्जेहिंतो उववज्जति ॥ तेणं भंते ! जीवा कति गतिया कति आगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुगतिया तिआगतिया पण्णत्ता परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ! सेत्त बायर पुढविकाइया सेत्तं पुढविकाइया ॥ १४ ॥ सेकिंत आउक्काइया ? आउक्काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सुहुम आउक्काइया बायर आउक्काइया ॥ सुहुम आउ-

प्रश्न—वे जीवों क्या समोहया मरण मरते हैं या असमोहया मरते हैं ? उत्तर—समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं प्रश्न-वे जीवों वहां से नीकलकर कहां आते हैं उत्पन्न होते हैं ? उत्तर-नरक व देव में उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले अकर्मभूमि के मनुष्य छोडकर तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं प्रश्न—इन जीवों की कितनी गति व आगति है ? इन जीवों की मनुष्य व तिर्यंच यों दो गति और देव मनुष्य व तिर्यंच यों तीन की आगति है बादर पृथ्वीकाया प्रत्येक शरीरी असंख्यात है यह बादर पृथ्वी काया हुई यह पृथ्वी काया का कथन हुआ ॥ १४ ॥ प्रश्न अप्काया किसे कहते हैं ? उत्तर—अप्काया के दो भेद कहे हैं, सूक्ष्म

नवरं अणित्थत्थ संठिया दुगतिया दुआगतिया, अपरित्ता अणंता अवसेसं जहा पुढविकाइयाणं ॥ सेतं सुहुम वणस्सइ काइया ॥ १७ ॥ से किंतं बायर वणस्सइ काइया? बादर वणस्सइ काइया दुविहा पन्नत्ता तंजहा पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ, साहारण सरीर बायर वणस्सइ काइया ॥ से किंतं पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ काइया? पत्तेय सरीर बादर वणस्सइ काइया दुवालसविहा पण्णत्ता तंजहा रुक्खा, गुच्छा, गुम्मा, लताय, वल्लीय, पव्वगा चेव तण वलय हरित उसहि जलरूह कुहणाय बोधव्वा ॥ से किंतं रुक्खा?

पृथ्वीकाया जैसे जानना विशेषता यह है कि इस का संस्थान अनवस्थित है पावत् इस की दो गति व दो आगति है यह साधारण अनंत काया है, यह सूक्ष्म वनस्पतिकाया का भेद कहा ॥ १७ ॥ प्रश्न बादर वनस्पतिकाया किस को कहते हैं ? उत्तर बादर वनस्पतिकाया के दो भेद कहे हैं तद्यथा- प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया व साधारण शरीरी बादर वनस्पतिकाया प्रश्न-प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के बारह भेद कहे हैं तद्यथा १ आम्र प्रमुख वृक्ष, २ रिंगनी प्रमुख गुच्छे, ३ नवमालती प्रमुख गुल्म ४ चम्पकादि लता, ५ खर्बूज प्रमुख वल्ली, ६ इक्षु प्रमुख पर्व, ७ तृण ८ केतकी प्रमुख वलय, ९ तांदलजा की भाजी प्रमुख हरितकाय, १० शाली प्रमुख अनाज औषधि, ११ कमल प्रमुख जलवृक्ष और १२ भूमि फोड़ ब गैरह

ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय-अपज्जत्ताय, तं चेव सव्वं, णवरं थिवुग संठिया, चत्तारि लेसाओ, आहारो णियमाछद्दिसिं उववाओ तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवेहिं ॥ ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवास सहस्साइं, सेस तं चेव ॥ जहा बायर पुढवि काइयाणं जाव दुगतिआ तिआगतिया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो । सेत बायर आउक्काइया ॥ सेत आउक्काइया ॥ १६ ॥ से किंत वणस्सइ काइया ? वणस्सइ काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सुहुम वणस्सइ काइया बायर वणस्सइ काइया ॥ से, किंतं त सुहुम वणस्सइ काइया ? सुहुम वणस्सइ काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तहेव

परतु इस में इतनी विशेषता है इस का संस्थान पानी के परपोटे जैसे जानना, कृष्ण, नील, कापोत व तेजो ऐसी चार लेश्याओं जानना आहार नियमा छ दिशी का, तिर्यंच मनुष्य व देव में से उत्पन्न होवे, इन की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की, यावत् इन को दो गति व दो आगति है ये प्रत्येक शरीरी असंख्यात हैं यों बादर अप्काय के भेद हुए यह अप्काय का कथन हुआ ॥ १६॥ प्रश्न-वनस्पतिकाया किस को कहते हैं? उत्तर-वनस्पतिकाया के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म वनस्पतिकाया व बादर वनस्पतिकाया प्रश्न-सूक्ष्म वनस्पतिकाया किसे कहते हैं? उत्तर-सूक्ष्म वनस्पति के दो भेद कहे हैं, पर्याप्त व अपर्याप्त

फला बहुबीयका ॥ सेत रुक्खा ॥ एवं जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्व जाव जेया वण्णे तहप्पगारा सेत कूहणा ॥ णाणाविह सठाणा रुक्खाण एगजीविया पण्णत्ता खधोवि एगजीवा ताल सरल नालियरीणं जह सगल सरिसवाण पत्तेयसरीराण ॥ गाहा—जह वातिलस कुलिया गाहा-सत्त पत्तेयसरीर बायरवणस्सइ- काइया ॥ सेकित साहारण सरीर बायरवणस्सइकाइया ? साहारण सरीर बायर वणस्सइकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा आलुए मुलते सिंगबेरे हिरिलि सिरिलि सिस्सिरिलि किट्ठिया छिरिया, छिरविरालिया, कण्हकदा, वज्जकदो, सूरणकदो, खल्लूडो, किमिरासि, भद्दमोत्था,

वृक्ष का अधिकार कहा यह वृक्ष का अधिकार हुवा इस का विशेष खुलासा पन्नवणा सूत्र से जानना यहां कूहणा पर्यंत सब अधिकार कह देना प्रश्न वृक्षमें रहे हुवे जीवोंका सस्थान कैसा कहा? उत्तर वृक्ष में रहे हुवे जीवों का सस्थान अनेक प्रकार का कहा है वृक्ष में एक जीव कहा और स्कंध में भी एक जीव कहा, वैसे वृक्षों ताल, सरल, नालयेरी प्रमुख हैं प्रश्न-वृक्षादिक में पृथक् २ अनेक प्रत्येक शरीरी जीवों कैसे रहे हुवे हैं? उत्तर-जैसे अनेक सरसव के दाने को गुड में मीलाकर उस का लड्डु बनावे वह लड्डु एक पिंड रूप रहता है इस में सब सरिसव प्रतिपूर्ण रूप से रहे हुए हैं अपनी २ अवगाहना से अलग २ है, ऐसे ही प्रत्येक शरीरी जीवों का समुह है वह अलग २ अपनी २ अवगाहना से रहे हैं ऐसे ही तिलों की बनी हुई तिल पपडी एक ही कहलाती है, परंतु उस में तिल के दाने पृथक् २ रहे हुवे हैं, वैसे ही प्रत्येक

रुक्खा दुविहि पन्नत्ता तंजहा एगट्ठियाय बहुबीयाय से किंत एगट्ठिया? एगट्ठिया अनेग विहापण्णत्ता तंजहा-निंबु जंबु जाव पुन्नाग रूक्खे सीवन्नि तहा असोगेय, जेयावन्ने तहप्पगारा एतेसिण मूलावि असंखेज्ज जीविया एव कंदा खंधा तया साला पवाला पत्ता पत्तेय जीवा, पुप्फाइ अणेगजीवाइ फला एगट्ठिया सेत्त एगट्ठिया॥ सेकिंत बहुबीयगा? बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा अत्थिय तिंदुय उंबर कविट्ठे आमलक फणस दाडिम नग्गोह काउंबरीय तिलय लउय लोद्धेधते जेयावन्ने तहप्पगारा, एतेसिण मूलावि असंखेज्जजीविया जाव

कुहाण प्रश्न-वृक्ष के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-वृक्ष के दो भेद कहे हैं तद्यथा एक बीजवाले व बहुत बीजवाले प्रश्न एक बीजवाले के कितने भेद कहे हैं? एक बीजवाले के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-निंबु, जाम्बु यावत् पुन्नाग वृक्ष, सीवनी वृक्ष तथा अशोक वृक्ष और अन्य भी इस प्रकार के वृक्ष इन के मूल में असंख्यात जीवों कहे हैं ऐसेही कंद, स्कंध, त्वचा, शाल, प्रवाल, पत्र, में प्रत्येक जीवों हैं, पुष्प में अनेक जीवों हैं और फल एक बीजवाला होता है यह एक बीजवाले वृक्ष का वर्णन हुवा प्रश्न बहुबीजवाले वृक्ष के कितने भेद कहे हैं? बहु बीजवाले के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-अस्थिक, तिंदुक, उंबर, कपित्थ, आंवला, फणस दाडिम, कदम्ब, न्यग्रोध, (वड) तिलक, लोध्र, और अन्य भी इस प्रकार के बहुत बीजवाले वृक्षों हैं इन के मूल में असंख्यात जीवों कहे हुवे हैं यावत् फल बहुत बीजवाले हैं यह बहुबीजवाले

सरीरगा, अणित्थत्थ सठिया, ठिती जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दसवास सहस्सा‍ई जाव दुगतिया, तिआगतिया, परित्ता अणता पण्णत्ता ॥ सेत्त बादरवणस्सइकाइया ॥ सेत थावरा ॥ १८ ॥ से किंन तसा ? तसा तिविहा पण्णत्ता तजहा तेउकाइया वाउकाइया उराला तसा पाणा॥सेकिंत तेउकाइया? तेउकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा सुहुमतेउकाइयाय बायर तेउकाइयाय ॥ से किंत सुहुम तेउकाइया ? सुहुम तेउकाइया जहा सुहुम पुढविकाइया, णवर सरीरगा सूयकलाव सठिया, एकगातिया, दुआगतिया, परित्ता, असखेज्जा, पण्णत्ता सेस

संस्थान विविध प्रकार का, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की यावत् दो गति व तीन आगति है इस में अनंत जीवों कहे हैं यह बादर वनस्पतिकाया का कथन हुआ यों स्थावर के भेद संपूर्ण हुए ॥ १८ ॥ प्रश्न त्रस के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर त्रस के तीन भेद कहे हैं तद्यथा तेउकाया, वायुकाया व औदारिक त्रस प्रश्न तेउकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-तेउकाया के दो भेद कहे हैं, सूक्ष्म तेउकाया व बादर तेउकाया प्रश्न सूक्ष्म तेउकाया किसे कहते हैं ? सूक्ष्म तेउकाया का सूक्ष्म पृथ्वीकाय जैसे जानना परंतु विशेषता यह है कि इस का संस्थान सूचिकलाप का है, तेउकायावाले एक तिर्यंच में जाते हैं और मनुष्य व तिर्यंच यों दो गति में से आते हैं इस में असंख्यात जीवों कहे हैं

सिढइलिहा, ओहाणिगो हुंदे, हुरिमु, भरसकणी, सिहकणी, सिउंढी मुसुंढी, जयावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तका य अपज्जत्तकाय॥ तेसिण भंते ! जीवाण कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा ओरालिते, तेयते, कम्मते, तहेव जहा बायरपुढविकाइयाण णवर सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जति भाग, उक्कोसेण साइरेग जोयणसहस्से

पृथ्वी और वृक्षों में मस्सा २ रहे हुवे हैं बाद में एक ही रूप दीखने पर जीवों पृथक् २ रहे हुवे हैं यह प्रत्यक फूलरी बादर वनस्पतिकाया के भेद हुए अब साधारण वनस्पतिकाया के कितने भेद कहे हैं? उत्तर साधारण वनस्पतिकाया के अनेक भेद कहे हैं यथा आलू, मूले, अदरख, सिरली, सिरली किसरली, किट्टिया, छिरिया, छिरियाविया, कृष्णकंद, वज्रकंद, सूरणकंद, खल्लूडा किमिरासी, नीलीमोथ, पिडहली, हरलिनी, थोहरी, हस्तिमुण्डा, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सिउंढी, व मुसुंढी और इस प्रकार की अन्य वनस्पतिकाया कही हुई है इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन वनस्पतिकायिक जीवों के कितने शरीर कहे हैं? उत्तर इन को तीन शरीर औदारिक, तेजस व कार्मण ऐसे तीन शरीर कहे हैं ऐसे ही सब बादर पृथ्वीकाया जैसे जानना परन्तु विशेषता यह है कि इन की शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग में उत्कृष्ट साधिक एक हजार योजन,

सेसं तचेव जाव एगगतिया, दुयाअगितया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता॥सेत तेउकाइया ॥१९॥ सेकिंत वाउकाइया? वाउकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा सुहुम वाउकाइया, बायर वाउकाइया ॥ सुहुम वाउकाइया जहा सुहुम तेउकाइया,णवर सरीर पडाग सठिया, एगगतिया दुयागतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता,सेत्त सुहुम वाउकाइया ॥ सेकिंत बायर वाउकाइया? बायर वाउकाइया अणगविहा पण्णत्ता तजहा-पातीणवाते,पडीणवाते, एव जयावण्णे तहप्पगारा, तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तसिण भत! जीवाण कति सरीरगा पन्नत्ता? गोयमा! चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता तजहा

तेउकाया का स्वरूप हुवा ॥ १० ॥ प्रश्न-वायुकाया के कितने भेद कहे हैं? उत्तर वायुकाया के दो भेद कहे हैं तद्यथा-सूक्ष्म वायुकाया व बादर वायुकाया सूक्ष्म वायुकाया का सूक्ष्म तेउकाया जैसे जानना परंतु सूक्ष्म वायुकाया का सस्थान पताका का है यावत् एक गति व दो आगति है और इस में असख्यात जीवों कहे हुवे हैं यह सूक्ष्म वायुकाया का स्वरूप हुवा प्रश्न बादर वायुकाया किसे कहते हैं? उत्तर-बादर वायुकाया के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-पूर्व का वायु, पश्चिमका वायु, यों सब वायुकाया के भेद मानना इस का कथन पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है इस के सक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा-पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं? उत्तर-इन जीवों को उदारिक, वैक्रेय,

तंचर ॥ सेत्त सुहुम तेउक्काइया ॥ सेकिंत बायर तेउक्काइया ? बायर तेउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा-इंगाल, जाल, मुम्मुरे, जाव सूर,कतमाणि, निस्सिते जेया वण्णे तहप्पगारा त समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तजहा—ओरालिते,तेयते,कम्मते, सेस तचेव, सरीरगा सूयिकलावसठिया, तिन्निलेसा ॥ ठिति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि राइदियाइ॥तिरियमणुस्सेहिंतो उववाउओ,

यह सूक्ष्म तेउकाया का स्वरूप हुवा,प्रश्न-बादर तेउकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर बादर तेउकाया के अनेक भेद कहे हैं अंगार, ज्वाला, मुमुरे यावत् सूर्यकांत मणि और वैसे ही अन्य प्रकार के तेउकाया के जीवों हैं इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर-इन जीवों को उदारिक, तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर कहे हैं शेष सब बादर पृथ्वीकाया जैसे जानना परंतु विशेषता यह है कि इस का सस्थान सूई के समुह का है, इन जीवों को तीन लेश्या कही है, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन रात्रि दिन की, तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न है, शेष वैसे ही जानना यावत् एक गति व दो आगति है इस में असंख्यात जीवों कहे हुए हैं यह

से किंतं बेइंदिया? बेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा, जेयावण्ण तहप्पगारे, तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भते ! जीवाण कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तउ सरीरगा पण्णत्ता तजहा—ओरालिते तेयते कम्मत॥ तेसिण भते! जीवाण के महालिया सरीरा गाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नण अगुलस्स असखेज्जति भाग, उक्कोसेण बारस जोयणाइं, छेवट्ठ सघयणी, हुडसठिया, चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि-लेसातो, दोइंदिया, तओ समुग्घाया वयणा कसाया मारणतिय॥नो सण्णी असण्णी॥नपुसक

उत्तर उदार त्रस प्राणियों के चार भेद कहे हैं तथथा बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पचेन्द्रिय॥ २१ ॥ प्रश्न-बेइन्द्रिय किस को कहते हैं ? उत्तर-बेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तथथा-कृमी, कीडे, गिंडोल, शख, कोड, जलो, चदनक, अलसिया, इल्ड, फूशाग इत्यादि अनेक प्रकार के कहे हैं इन के सक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न इन बेइन्द्रिय जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन को तीन शरीर कहे हैं उदारिक, तेजस व कार्माण प्रश्न इन जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अगुल के असख्यातवे भाग उत्कृष्ट बारह योजन की, सघयन छेवट, सस्थान हुडक, चार कषाय, चार संज्ञा, तीन लेश्या, दो इन्द्रिय, वेदना, कषाय व मारणांतिक यों तीन समुद्घात हैं ये जीवों

उरालिते, वउव्वेते, तेयते, कम्मए, सरीरगा पडागसठिया, चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता तजहा—वेयणा समुग्घ ते, कसाय समुग्घाते, मारणतिय समुग्घाते, वेउव्विय समुग्घ ते, ॥ आहारो णिव्वाघाएण छ द्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पचद्दिसिं॥ उववत्ते देवमणुया, नेरइतेसु णत्थि॥ठिती जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णिवाससहस्साइ, सेस तचेव एगगतिया, दुआगातिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ? सेत्त वायर वाउकाइया ॥ सेत वाउकाइया ॥२०॥ से किंत उराला तसा पाणा ? उराला तसपाणा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा—बेइंदिया तेइदिया चउरिंदिया पचेंदिया ॥२१॥

तैजस व कार्मण यों चार शरीर कहे हैं इन का सस्थान पताका का है चार समुद्घात-वेदना, कषाय, मारणांतिक व वैक्रेय आहार निर्व्याघात से छ दिशि का और व्याघात आश्री क्वचित् तीन दिशि, क्वचित् चार दिशी व क्वचित् पांच दिशी का आहार करे नरक, मनुष्य व देव में से उत्पन्न नहीं होता है परंतु एक तिर्यंच में से उत्पन्न होता है स्थिति जघन्य अतमुहूर्त उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष शेष सब वैसे ही जानना यावत् एक गति व एक आगति इस में असख्यात जीवों कहे हुए हैं यह बादर वायुकाया का भेद हुआ यह वायुकाया का स्वरूप हुआ ॥ २२ ॥ प्रश्न-उदार त्रस प्राणियों के कितने भेद कहे हैं ?

तिरियमणुस्सेसु णेरइयदेव असखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिती—जहण्णेण अंतोमुहुत्त-उक्कोसेणं बारससंवच्छराणि, समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, कहिं गच्छति ? नेरइय देवअसखेज्जवासाउअवज्जेसु गच्छति, दुगतिया, दुआगतिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता, सेत्त बेइंदिया ॥ २२ ॥ सेकिंत तेइंदिया ? तेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—उवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा जेयावण्ण तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय,तहेव जहा बेइंदियाण णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण तिन्निगाउयाइ ठिति जहण्णेण अंतो मुहुत्तउक्कोसेण एक्कूणपण्ण राइंदियाइ सेस तहेव

स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं वे कहां जाते हैं ? नारकी देव व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले मनुष्य तिर्यंच छोडकर शेष मनुष्य में तिर्यंच में जाते हैं दो गति व दो आगति है वे असख्यात जीवों हैं यों बेइन्द्रिय का अधिकार हुवा ॥२२॥ प्रश्न—तेइन्द्रिय के कितने भेद हैं ? उत्तर—तेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा उदाइ रोहिणिये, धनेरीये, कान खजुरे, षट्पद, यूका पीपिलोका, मकोडा, इहाल, दूली, गधइया, विष्टा के कीडे, कुंथवे, इत्यादि अनेक प्रकार के तेइन्द्रिय जीव जानना इन के दो भेद कहे पर्याप्त व अपर्याप्त यों सब बेइन्द्रिय जैसे जानना परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट तीन गाउ की, इन्द्रियों तीन, स्थिति जघन्य अंत

बेइन्द्रा, पज्जपज्जत्तीओ पचअपज्जत्तीओ, सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि,नो.सम्मामिच्छदिट्ठी॥ नो चक्खुदसणी अचक्खुदसणी नो ओहिदसणी नो केवलदसणी ॥ तेण भते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि ॥ जे णाणी ते नियमा दुणाणी तजहा—अभिणिबोहियणाणीय सुयणाणीय ॥ जे अण्णाणी तेनियमा दुअण्णाणी मतिअण्णाणी, सुयअण्णाणीय ॥ नो मनजोगी, वइजोगी कायजोगीवि, सागरोवउत्तावि, अणागारोवउत्तावि, ॥ आहारो नियमा छदिसी, उववातो

संज्ञी नहीं परतु असंज्ञी है, उन को एक नपुसक वेद है, पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति है वे जीवों समदृष्टी व मिथ्यादृष्टी भी हैं, चक्षुदर्शन अवधि दर्शन व केवल दर्शन उन को नहीं है परतु एक अचक्षु दर्शन है प्रश्न-वे जीवों क्या ज्ञानी है या अज्ञानी है ? उत्तर ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं ज्ञान में आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान यों दोनों प्रकार के ज्ञान है और अज्ञान में मति व श्रुत अज्ञान है मन योग नहीं है परतु वचन योग व काया योग है, वे सागरोपयोगी व अनाकारोपयोगी दोनों हैं आहार छ दिशी का ही लेते हैं, मनुष्य व तिर्यच में से उत्पन्न होते हैं परतु नारकी देव से नहीं उत्पन्न होवे हैं और असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य व तिर्यच भी नहीं उत्पन्न होवे हैं

तिरियमणुस्सेसु णेरइयदेव असखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिती—जहण्णेण अतोमुहुत्तं-उक्कोसेण बारसमवच्छराणि, समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, कहिं गच्छति ? नेरइय देवअसखेज्जवासाउअवज्जेसु गच्छति, दुगतिया, दुआगतिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता, सेत्त बेइंदिया ॥ २२ ॥ सेकित तेइंदिया ? तेइंदिया अणगविहा पण्णत्ता तजहा——उवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा जेयावण्ण तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय,तहेव जहा बेइंदियाण णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण तिन्निगाउयाइं ठिति-जहण्णेण अतो मुहुत्तउक्कोसेण एक्कूणपण्ण राइंदियाइ सेस तहेव

स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं वे कहां जाते हैं ? नारकी देव व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले मनुष्य तिर्यंच छोडकर शेष मनुष्य में तिर्यंच में जाते हैं दो गति व दो आगति है वे असख्यात जीवों हैं यों बेइन्द्रिय का अधिकार हुवा ॥२२॥ प्रश्न—तेइन्द्रिय के कितने भेद हैं ? उत्तर—तेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा उदाइ रोहिणिये, घनेरीये, कान खजुरे, षट्पद, यूका पीपिलोका, मकोडा, इहाल, दूली, गधइया, विष्टा के कीडे, कुथवे, इत्यादि अनेक प्रकार के तेइन्द्रिय जीव जानना इन के दो भेद कहे पर्याप्त व अपर्याप्त यों सब बेइन्द्रिय जैसे जानना परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट तीन गाउ की, इन्द्रियों तीन, स्थिति जघन्य अंत

दुगतिया दुआगतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत तेइंदिया ॥ २३ ॥ सेकिंत चउरिंदिया ? चउरिंदिया अणेग विहा पण्णत्ता तजहा—अधिया पात्तिया जाव गोमयकीडा, जेयावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्ता अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भते ! जीवाण कतिसरीरगाय पण्णत्ता ? गोयमा! तओसरीरगा पण्णत्ता तहेव, णवर सरीरोगाहणा उक्कोसण चत्तारि गाउयाइ, इंदिया चत्तारि, चक्खुदसणीवि अचक्खु दसणीवि, ठिई—उक्कोसेण छ

मुहूर्त उत्कृष्ट ४९ दिन, शेष सब वैसे ही यावत् दो गति व दो आगति प्रत्येक शरीरी असंख्यात हैं। यों तेइन्द्रिय का कथन हुआ ॥ २३ ॥ प्रश्न—चतुरेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुरिन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं ? जिन के नाम—अंधिका पोतिका बिच्छू, बग मकडी, भ्रमरी, टीड मासिका, दंश, मच्छर कंसारी यावत् गोमय कीट और भी चतुरिन्द्रिय जीवों कहे हैं इन के दो भेद कहे हैं, पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न: इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन जीवों को तीन शरीर कहे हैं, इनका कथन पूर्वोक्त जैसे जानना, परतु इस में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट चार गाउ, चार इन्द्रियों, चक्षु दर्शन व अचक्षु दर्शन दोनों, स्थिति उत्कृष्ट छ मास की यों सब बेइन्द्रिय जैसे कहना यावत् असंख्यात कहे हैं. यह

म्मासा, सेस जहा बेइंदियाण जाव असंखिज्जा पण्णत्ता, सेत चउरिंदिया ॥ २४ ॥ से किंत पचेंदिय ? पचेंदिया चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—नेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्स देवा ॥ २५ ॥ से किंत नेरइया ? नेरइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा-रयण-प्पभा पुढवि नेरइया, जाव अहे सत्तम पुढवी नेरइया ॥ तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तंजहा-वेउव्विते, तेयते, कम्मए ॥ तेसिण भंते ! जीवाण

चतुरेन्द्रिय का स्वरूप हुवा ॥ २४ ॥ प्रश्न पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर पचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं तद्यथा-नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता ॥ २५ ॥ प्रश्न-नारकी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-नारकी के सात भेद कहे हैं तद्यथा रत्नप्रभा नारकी यावत् सातवी तमतम प्रभा नारकी इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे है ? उत्तर—इन जीवों को वैक्रय, तेजस व कार्माण यह तीन शरीर कहे हैं २ इन जीवों की कितनी शरीर की अवगाहना है ? उत्तर—इन के शरीर की अवगाहना के दो भेद कहे हैं जैसे भवधारनीय सो जन्म से शरीर होवे और २ उत्तर वैक्रेय सो अन्य रूप बनावें, इन में से भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की और उत्तर वैक्रेय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के

के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तजहा भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण पचधणुसयाइ॥तत्थण जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जति भाग उक्कोसेण धणुसहस्स ॥ तेसिण भते ! जीवाण सरीरा किं संघयणी पण्णत्ता ? गोयमा!छण्ह सघयणाण असंघयणी, णेवट्ठी णेवछिरा, णेवण्हारु णेवसघयणमत्थि जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा

संख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार धनुष्य की, ३ प्रश्न—इन जीवों के शरीर कौनसे संघयनवाले हैं ? उत्तर—इन जीवों को छ संघयन में से एक भी संघयन नहीं है क्यों कि इन को हड्डियों, स्नायु, नाड वगैरह कुच्छ भी नहीं है परंतु जो अनिष्ट, अकांत, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ व अमणाम पुद्गलों हैं वे इन के संघातनपने परिणमते हैं ४ प्रश्न—इन जीवों को कौनसा संस्थान है ? उत्तर—इन जीवों के शरीर दो प्रकार के संस्थानवाले हैं भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों के हुण्डक संस्थान है, (जैसे पक्षि पांख, गरदन के रोम वगैरह नीकालने से कुरूप दीखता है इस से भी विशेष भयकर उन नेरियों के शरीर दीखाते हैं) उत्तर वैक्रेय को बहुत सुंदर रूप बनावे तथापि अशुभ नाम कर्मोदय से अत्यंत अशुभ ही होते हैं. ५ कषाय चार हैं ६ संज्ञा चार हैं, ७ लेश्या तीन हैं (पहिली दूसरी में

अमणुण्णा अमणामा एतेसिं सघातत्ताए परिणमति ॥ तेसिण भते ! जीवाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय तत्थण जेते भवधारणिज्जा तेहुड सठिया, तत्थण जेते उत्तरविउव्विया तेवि हुडसठिया पण्णत्ता ॥ चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णातो, तिण्णिलेसातो पचइदिया, चत्तारि समुग्घाया आइल्ला, सण्णीवि असण्णीवि, नपुसकवेदका, छपज्जत्तीओ, तिविहा दिट्ठिओ, तिन्निदसणा ॥ णाणीवि अन्नाणीवि जेणाणी तेनियमा तिन्नाणी पण्णत्ता तजहा—आभिणिवोहियणाणी, सुयणाणी ओहिणाणी, जे

कापोत लेश्या तीसरी में कापुत व नील, चौथी में नील, पांचवी में नील व कृष्ण और छठी सातवी में कृष्ण लेश्या)८इन्द्रियों पांच,९समुद्घात चार वेदनीय,कषाय,मारणांतिक और वैक्रेय१०नरकमें सज्ञी असज्ञी दोनों हैं (प्रथम नरकमें असंज्ञी पचेन्द्रिय भी उत्पन्न होते हैं,इसलिये वहां असज्ञी होते हैं)११वेद नपुसक१२पर्याप्ति छ,१३दृष्टि तीन१४दर्शन तीन केवल दर्शनपावे नहीं१५ज्ञानी भी हैं अज्ञानी भी है ज्ञानमें मति, श्रुति व अवधि यों तीनज्ञानहै और अज्ञानमें मति व श्रुति ज्ञान है,दो अज्ञान हैं जो असज्ञी प्रथम नरक में उत्पन्न होतेहैं उनको अपर्याप्तावस्था में मति व श्रुति ऐसे दो अज्ञान ही पाते हैं तथा मति श्रुति व विभंग ज्ञान यों तीन अज्ञान भी हैं १६ योग तीन १७ उपयोग दो १८ आहार छ ही दिशी का लेते हैं, स्वाभाविक कारण से

अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी अत्थेगतिया तिअन्नाणी, जे दुअन्नाणी ते णियमा मतिअन्नाणी, सुत अन्नाणी जे ति अन्नाणी ते नियम मइअन्नाणीय, सुत अन्नाणीय विभंग णाणीय ॥ तिविधो जोगो, दुविहो उवओगो, छद्दिस आहारो, उसण्णकारणं पडुच्च वण्णतो कालाइ जाव आहार माहारंति, उववाओ तिरिय मणुस्सेसु, ठिती जहण्णेण दसवास सहस्साइ उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ ॥ दुविधा मरंति उवट्टुणा भाणियव्वा जाता आगता णवर समुच्छिमेसु पडिसेहो, दुगतिआ दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत नेरइया ॥ २६ ॥ सेकिंत पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ? पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम पंचिंदिय

काले वर्ण के पुद्गल यावत् अन्य भी वर्ण के पुद्गलों का भी आहार करते हैं, १० नेरीये मनुष्य व तिर्यंच में से उत्पन्न होते हैं २० स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की २१ समोहता व असमोहता दोनों प्रकार के मरण मरते हैं २२ मनुष्य तिर्यंच दोनों गति में आते हैं परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य तिर्यंच व समूर्छिम मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं दो गति व दो आगति है वे असंख्यात जीवों कहे हुए हैं यह नारकी का दंडक हुवा॥ २६ ॥ प्रश्न—तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, समूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय व गर्भज

तिरिक्खजाणियाय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ से किंत समुच्छिम पंचेंदिय तिरिक्ख जाणिया? समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा-जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा पंचविधा पण्णत्ता तंजहा-मच्छगा, कच्छगा, मगरा, गाहा, सुसमारा,॥ सेकिंत मच्छा? मच्छा एवं जहा पण्णवणाए जाव जेयावण्णे तहप्पगारा, ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरया पण्णत्ता तंजहा-ओरालिए तेयए कम्मए ॥ सरीरोगाहणा

तिर्यंच पंचेन्द्रिय प्रश्न—समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के तीन भेद कहे हैं १ जलचर २ स्थलचर और ३ खेचर प्रश्न-इनमें से जलचर किसे कहते हैं ? उत्तर-जलचर के पांच भेद कहे हैं मत्स्य, कच्छ मगर, गाहा, सुसमारा प्रश्न—मत्स्य किसे कहते हैं ? उत्तर—मत्स्य के अनेक भेद कहे हैं इस का वर्णन श्री पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है, इस के सामान्य से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों को तीन शरीर कहे हैं—उदारिक, तेजस व कार्माण, शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा

जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भागे, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, छेवट्ट सघयणी, हुडसंठिना, चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तओ लेसाओ इंदियापंच, समुग्घाता तिण्णि, णो सण्णी असण्णी, णपुसकवेदा, पज्जत्तीय अपज्जत्तिओय पचिंदिओ, दो दिट्ठिओ दो दसणा, दोणाणा दो अण्णाणा दुविहे जोगे दुविहे उवओगे, आहारो छद्दिसि, उववातो तिरिय मणुस्सेहिंतो, नो देवेहिंतो, नो नरइएहिंतो तिरिएहिंतो असखेज्जवासाउय वज्जेसु मणुस्सेसु अकम्मभूमिग अतरदीवग असखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिति जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी, मारणंतिय समुग्घातेण दुविहावि मरंति,

भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन सघयन एक छेवट्टा, सस्थान एक हुंडक, कषाय चार, संज्ञा चार, लेश्या तीन, इन्द्रिय पांचों, पहिली तीन समुद्घात, संज्ञी नहीं परंतु असंज्ञी, वेद एक नपुंसक पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति, दो दृष्टि, दो दर्शन दो ज्ञान, व अज्ञान दो, योग दो, उपयोग दो, आहार छ दिशी का, तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न होवे परंतु असख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच व अकर्म-भूमि व अतरद्वीप के मनुष्य में से यहां नहीं उत्पन्न होते हैं, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, मारणांतिक समुद्घात से दोनों मरण मरते हैं, प्रश्न—यहां से नीकलकर कहां उत्पन्न होवे ? उत्तर— असंज्ञी मत्स्य में से नीकलकर नरक, तिर्यंच मनुष्य व देव की चारों गति में उत्पन्न होवे हैं नारकी में

अणतरं उव्वट्टिता कहिं उववज्जेज्जा ? नेरइएसुवि तिरिक्खजोणिएसुवि, मणुस्सेसुवि, देवेसुवि ॥ नेरइएसु रयणप्पहाए सेसेसु परिसेधो, तिरिएसु सव्वेसु उववज्जति, संखेज्जवासाउएसुवि असंखज्जवासाउएसुवि चउप्पएसुवि, पक्खीसुवि, माणुस्सेसु सव्वेसु कम्मभूमिएसु नो अकम्मभूमिएसु, अतरदीवेसुवि, संखेज्जवासउएवि, असंखेज्जवासाउएसुवि, देवेसु जाव वाणमंतरा, चउगतिया, दुआगतिया, परित्ता असंखिज्जा पण्णत्ता ॥ सेत जलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥२७॥ से किंत थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ? थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता

उत्पन्न होवे तो रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे शेष नारकी में उत्पन्न होवे नहीं, तिर्यंच में उत्पन्न होवे तो संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले सब में उत्पन्न होवे, मनुष्य में उत्पन्न होवे तो कर्मभूमि, अकर्मभूमि अंतर्द्वीप व समूर्च्छिम मनुष्य संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले सब में उत्पन्न होवे देव में उत्पन्न होवे तो भवनपति व वाणव्यन्तर में उत्पन्न होवे क्यों कि असज्ञी यहां तक ही उत्पन्न होते हैं इस से चार की गति व दो की आगति है ये असंख्यात है यह जलचर संमूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥२७॥ प्रश्न—स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं चतुष्पद स्थलचर समूर्च्छिम

तजहा—चउप्पद थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया, परिसप्प थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत थलयर चउप्पय समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलयर चउप्पय समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—एकखुरा, दुखुरा, गंडीपदा, सण्णपदा जाव जेयावण्णे तहप्पगारा तेसमासतो दुविहा पन्नत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तओ सरीरा, सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण गाउय पुहुत्त, ठिति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण चतुरासीति वाससहस्साइ, सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया

तिर्यंच पंचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय प्रश्न—स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं यथा १ एक खुरवाले अश्वादि, २ दो खुरवाले गवादि, ३ गंडीपद गोल पांववाले हस्ति आदि और ४ सणिपद सो पंजे व नखवाले सिंह व्याघ्रादि इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं इन को तीन शरीर, अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक गाउ, (कोस) स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चोरासी हजार वर्ष, शेष सब जलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे जानना यावत् सब की चार की

दुआगतिया,परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्त थलयर चउप्पद समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २८ ॥ सेकिंत थलयर परिसप्प समुच्छिमा ? थलयर परिसप्प समुच्छिमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—उरपरिसप्प समुच्छिमा भुयगपरिसप्प समुच्छिमा॥ सेकिंत उरगपरिसप्प समुच्छिमा? उरगपरिसप्प समुच्छिमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-अही अयगरा आसालिया, महोरगा ॥ से किंत अही? अही दुविहा पण्णत्ता तंजहा—दव्वीकरा, मउलिणोय ॥ से किंत दव्वीकरा,? दव्वीकरा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा आसीविसा, जाव सेत्त दव्वीकरा ॥ सेकिंत मउलिणो ? मउलिणो अणेगविहा

गति व दो की आगति है वे परित्ता असंख्यात हैं यह स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥ २८ ॥ प्रश्न—स्थलचर परिसर्प संमूर्च्छिम के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर परिसर्प समूर्च्छिम के दो भेद कहे हैं १ उरपरिसर्प व भुज परिसर्प समूर्च्छिम प्रश्न—उर परिसर्प संमूर्च्छिम तिर्यंचके कितने भेद कहे हैं? उत्तर—उर परिसर्प समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रियके चार भेद कहे हैं तद्यथा १ अहि, २ अजगर, ३ असालिया, और ४ महोरग प्रश्न—अहि के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहि के दो भेद कहे तद्यथा—१ दर्विकर अर्थात् फणा करनेवाला और फण नहीं करने वाला प्रश्न—दर्वीकर के कितने भेद है ? उत्तर-दर्वीकर के अनेक भेद कहे हैं १ आशीविष,

पण्णत्ता तजहा—दिव्वा, गोणसा जाव सेत मउलिणो ॥ सेत्त अही ॥ सेकित अयगरा ? अयगरा एगागारा पण्णत्ता सेत अयगरा ॥ सेकित आसालिया ? आसालिया जहा पण्णवणाए ॥ सेत्तं आसालिया ॥ सेकित्त महोरगा ? महोरगा जहा पण्णवणाए ॥ सेत्त महोरगा ॥जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा

दृष्टिविष, उग्रविष, भोगविष त्वचाविष, लालविष, श्वासविष, काला सर्प ऐसे अनेक भेद कहे हैं प्रश्न—अजगर के कितने भेद हैं ? उत्तर—अजगर का एक ही भेद है प्रश्न—आसालिया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—इस का कथन पन्नवणा में है वहां ऐसा कहा है कि आसालिया सर्प मनुष्य क्षेत्रमें उत्पन्न होवे परंतु इस से बाहिर उत्पन्न होता नहीं है कर्म भूमि क्षेत्र में कर्म भूमि पना प्रवर्तता होवे वहां उत्पन्न होता है चक्रवर्ती, वासुदेव या मांडलिक राजा के पुण्य क्षीण हो गये होवे और उन के नामादिक का विनाश होने का होवे तब वहां आसालिया समूर्छिमपने उत्पन्न होता है उत्पत्ति समय उस की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग में होती है परंतु बढते २ बारह योजन की अवगाहना हो जाती है वह जमीन नीचे उत्पन्न होता है जब वह उलटता है तब वहां बडा खड्डा होता है जिस से चक्रवर्ति आदि नगर व सेना सहित नष्ट होजाते हैं इस की स्थिति अंत मुहूर्त की हैं प्रश्न—महोरग किसे कहते हैं ? उत्तर इस का विवेचन भी पन्नवणा सूत्र में हैं महोरग अढाइ द्वीप से बाहिर उत्पन्न होता है

पण्णत्ता तजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तत्थेत्र णवर सरीरोगाहणा जहण्णाण अगुलस्स असखेज्जइ भाग, उक्कोसेण जोयण पहुत्त ॥ ठिाते उक्कोसेण तेवण्ण वास सहस्साइ, सेसं जहा जलयराण, जाव चउगातिया, दुयागातिया, परिता असखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत उरपरिसप्पा ॥ २९ ॥ सेकिंत भुयपरिसप्प समुच्छिम थलयरा ? भुयपरिसप्प समुच्छिम थलयरा अणेगाविहा पण्णत्ता तजहा—गाहा, नउला, जेयावण्णे तहप्पगारा तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ सरीरागाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेणं धणु पुहुत्त ठिति उक्कोसेण

इस का शरीर वसेच अगुल प्रमाण होता है यह जल स्थल सर्व स्थान में गमन कर सकता है इन चारों प्रकार के उरपरिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम पचेन्द्रिय के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं इन का कथन जल चर संमूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय जैसे जानना शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक योजन, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेपन हजार वर्ष की शेष सब जलचर जैसे यावत् चारकी गति व दो की आगति जानना वे परित असंख्याते कहे हैं यह उरपरिसर्प का कथनहुवा ॥२९॥ प्रश्न—भुजपरिसर्प संमूर्च्छिम स्थलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—भुजपरिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-गो, नकुल, घुस चूहे, गिलहरी और इस

चोयालीस वाससहस्साइं सेस जहा जलयराणं जाव चउगतियां दुयागतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्त भुयपरिसप्प समुच्छिमा॥सेत थलयरा ॥२०॥ सेकिंत खहयरा? खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा चम्मपक्खी,लोमपक्खी,समुग्गपक्खी विततपक्खी ॥ से किंत चम्मपक्खी ? चम्मपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता तजहा वग्गुलि जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्त चम्मपक्खी ॥ से किंत लोमपक्खी ? लोमपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—ढका कंका जाव जेयावण्णे तहप्पगारा, सेत्त लोमपक्खी ॥ सेकिंत समुग्गपक्खी ? समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता जहा पण्णवणाए ॥ एवं

प्रकार के अन्य सब भुज परिसर्प स्थलचर हैं इन के दो भेद कहे हैं-पर्याप्त व अपर्याप्त इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ४२हजारवर्ष की, शेष सब जलचर जैसे मानना यावत् चार गति व दो आगति यह परित्ता असंख्यात है यह भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय का कथन हुआ ॥२॥ प्रश्न—खेचर के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—खेचर के चार भेद कहे हैं तद्यथा १ चर्म पक्षी चर्म की पांखवाले, २रोम पक्षी राम(बाल)की पांखवाले, समुद्रपक्षी मीडी हुई पांखवाले और वितत पक्षी खुल्ली पांखवाले प्रश्न—चर्म पक्षी किस को कहते हैं? उत्तर—१ चर्म पक्षी के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा चमचाडी वग्गुली व इसप्रकार के अन्य भी होते हैं२ रोम पक्षी के भी

बीततपक्खी, जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा--पज्जत्ताय अपज्जत्ताय, णाणत्त सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण धणु पुहुत्त, ठिति उक्कोसेण बावत्तरि वाससहस्साइं सेस जहा जलयराणं जाव चउगतिया दुयागतिया ॥ परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेत्त खहयरा समुच्छिमा पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेतं समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ ३० ॥ सेकिंतं गब्भवक्कंतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कंतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा थलयरा खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा?

अनेक भेद कहे हैं—ढेंक, केक, और इस प्रकार के अन्य पक्षी, प्रश्न—२ समुद्र पक्षी किसे कहते हैं ? उत्तर—समुद्र पक्षी का एक ही प्रकार है यह पक्षी अढाइद्वीप की बाहिर होता है इस का कथन पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है और वितत पक्षी का अधिकार भी पन्नवणा सूत्र में कहा है इस के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त विशेष में इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट ७२ हजार वर्ष शेष सब जलचर जैसे कहना यावत् चार गति व दो आगति मानना यह परित्त असंख्याते हैं यह खेचर समूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय

जलयरा पञ्चविहा पण्णत्ता तंजहा—मच्छा कच्छभा मगरा गाहा सुसुमारा, सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा पण्णवणाए जाव जेयावण्णे, तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता तंजहा—उरालिए, वेउव्विते, तेयए, कम्मए ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयण सहस्सं, छव्विह संघयणी पण्णत्ता तंजहा वइरोसभणाराय संघयणी, उसभनाराय संघयणी, नाराय संघयणी, अद्धनाराय

का अधिकार हुवा यह समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥१०॥ प्रश्न—गर्भ में उत्पन्न होने वाले तिर्यंच के कितने भेद हैं ? उत्तर-गर्भज के तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ जलचर २ स्थलचर व ३ खेचर प्रश्न—जलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर जलचर के पांच भेद कहे हैं मत्स्य, कच्छ, मगर, गाहा व सुसुमार यों सब भेद पन्नवणा में कहा वैसे ही जानना यावत् इनके दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों चार शरीर कहे हैं तद्यथा १ औदारिक, २ वैक्रेय, ३ तेजस व ४ कार्मण इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग में उत्कृष्ट एक

संघयणी, कीलिया संघयणी, सेवट्ट संघयणी ॥ छव्विह संठणीया पण्णत्ता तंजहा--
समचउरंस संठिया, नग्गोह परिमंडले, साति, खुज्ज, वामणे, हुंडे,॥ चत्तारि कसाया,
चत्तारि सण्णातो, छलेसातो, पंच इंदिया, पंच समुग्घाया आइल्ला, सन्नी नो असण्णी,
तिविहावेदावि, पज्जत्तीतो अपज्जत्तीतो, दिट्ठि तिविहा, तिण्णि-दंसणा णाणीवि अण्णाणिवि,
जेणाणी ते अत्थेगतिया दुणाणी अत्थगतिया तिणाणी, जे दुणाणी ते नियमा
आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी जे तिण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी
ओहिणाणीय ॥ एवं अण्णाणीवि ॥ जोगेतिविहे, उवओगे दुविहे, आहारो छदिसिं,

हजार योजन, वज्र ऋषभ नाराच वगैरह छ संघयन, समचतुस्रादि छ संस्थान, चार कषाय, चार संज्ञा, छ लेश्या, पांचों इन्द्रियों पहिली, पांच समुद्घात, संज्ञी है परंतु असंज्ञी नहीं है, तीनों वेद, छ पर्याप्ति, छ अपर्याप्ति, दृष्टि तीन, केवल दर्शन सिवाय दर्शन तीन, ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं -ज्ञानी में कितनेक दो ज्ञानवाले व कितनेक तीन ज्ञानवाले हैं जिन को दो ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान है और जिन के तीन ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञान ऐसे तीन ज्ञान हैं, ऐसे ही तीन अज्ञान का जानना, मन वचन व काया ऐसे तीनों योग हैं, दोनों प्रकार के उपयोग हैं, छ दिशी का आहार करते हैं प्रथम नारकी में यावत् सातवी नारकी में से, असंख्यात वर्ष के

उव्वातो नेरइते हैं जाव अहेसत्तमा,पुढवीसु, तिरिक्खजोणिएसु सव्वेसु, असंखे-ज्जवासाउयवज्जेसु, मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवग, असंखेज्ज वासाउयवज्जेसु, देवेसु जाव सहस्सारा ठिती—जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी,दुविहावि मरंति अणंतर उव्वट्टित्ता, गच्छंतसु जाव अहे सत्तमा तिरिक्ख जोणिएसु मणुस्सेसु, सव्वेसु देवेसु जाव सहस्सारो॥चउगतिया चउआगतिया,परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत जलयरा ॥३१॥से किंतं थलयरा? थलयरा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—चउप्पया, परिसप्पया ॥ से किंतं चउप्पया ? चउप्पया ! चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—एगखुरा, साचेव भेदो जाव

आयुष्यवाले तिर्यंच छोडकर शेष सब तिर्यंच अकर्मभूमि, अंतर द्वीप व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य छोडकर सब मनुष्य और सहस्रार देवलोक पर्यंत के सब देवों में से आकर उत्पन्न होते हैं स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड दोनों मरण मरते हैं, वहां से नीकलकर प्रथम नारकी से सातवी नारकी, सब तिर्यंच, सब मनुष्य व सहस्रार देवलोक के पर्यंत सब देवलोक में जाते हैं, चार गति व चार आगति परित असंख्याते हैं यह जलचरका स्वरूप हुवा ॥ ३१ ॥ प्रश्न—स्थलचर किसे कहते हैं? उत्तर—स्थलचर के दो भेद कहे हैं चतुष्पद व परपरिसर्प प्रश्न—चतुष्पद के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुष्पद के चार भेद एकखुर वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे जानना, यावत् इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे

जेयावण्णे तहप्पगारे ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ चत्तारि सरीरगा ॥ ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण छ गाउयाइं, ठिति उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं ॥ णवरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु चउत्थ पुढविं, ताव गच्छति सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया चउ आगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सत्त चउप्पया ॥ से किंत परिसप्पा ? परिसप्प ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—उरपरिसप्पाय भुजपरिसप्पाय ॥ से किंत उरपरिसप्पाय ? उरपरिसप्पाय च आसालिया चउरो भेदो भाणियव्वो ॥ चउ सरीरा सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स

जो भेद कहे हैं इन को चार शरीर, अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट छ गाउ की, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम स्थलचर मरकर चौथी नारकी तक उत्पन्न हो सकते हैं शेष सब जलचर जैसे जानना यावत् चार गति व चार आगति जानना परित्ता असंख्याते कहे हुए हैं यह चतुष्पद का कथन हुआ प्रश्न—परिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—परिसर्प के दो भेद कहे हैं उरपरिसर्प व भुज परिसर्प, इन में से उर परिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उर परिसर्प में आसालिया प्रकार सब भेद जानना, इन को चार शरीर, इन की अवगाहना जघन्य अंगुल का

असखेज्जइ भाग उक्कोसेण जोयण सहस्स, ट्ठिति—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं; उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वाट्टिता नेरइएसु जाव पचमि पुढवि ताव गछति, तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वसु देवेसु जाव सहस्सारा, सेस जहा जलयराण, जाव चउगतिया, चउ आगतिया, परित्ता असखेज्जा सेत उरपरिसप्पा ॥ ३२ ॥ से किंत भुयपरिसप्पा ? भुयपरिसप्पा भेदो तहेव चत्तारि सरीरगा सरीरोगाहणा जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण गाउयपुहुत्त, ठिति—जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी, सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा, णवर दोच्च पुढविं ताव गच्छति ॥ सेत भुयपरिसप्पा ॥

असख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोड पूर्व, उर परिसर्प का नीकला हुवा पांचवी नारकी तक जा सकता है, शेष सब जलचर जैसे यावत् चार गति व चार आगति वाले हैं, वे परित्ता असख्याते हैं यह उरपरिसर्प का कथन हुवा ॥ ३२ ॥ प्रश्न—भुजपरिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? भुज परिसर्प के भेद वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे जानना, यावत् इन के पर्याप्त व अपर्याप्त वैसे दो भेद कहे हैं, इन को चार शरीर, शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, भुजपरिसर्प मरकर दूसरी नारकी तक जाते हैं शेष उर परिसर्प जैसे कहना यावत् चार गति में से आवे व चार गति में

सेतं थलयर ॥३३॥ सेकिंत खहयरा ? खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा चम्मपक्खी तहेव, भेदो भाणियव्वो ॥ ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण धणुपुहुत्त, ठिति जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो, सेस जहा जलयराण णवरं जाव तच्च पुढविं गच्छति जाव सेत खहयर गब्भवक्कंतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, सेत्तं तिरिक्खजोणिया ॥ ३४ ॥ सेकिंत मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम मणुस्सा, गब्भवक्कंतिय मणुस्सा भेदो

जाने वे पारेसा असख्याते हैं यह भुजपरिसर्प का कथन हुवा ये स्थलचर के भेद हुए ॥ ३३ ॥ प्रश्न—खेचर के कितने भेद कहे हैं? उत्तर खेचर के चार भेद कहे हैं जिन के नाम-१ चर्म पक्षी, २ रोमपक्षी, ३ समुद्र पक्षी व ४ वितत पक्षी वगैरह सब कथन पूर्वोक्त जैसे जानना अवगाहना जघन्य अंगुलका असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमका असंख्यातवा भाग शेष सब जलचर जैसे जानना, परंतु खेचर में से मरकर जीव तीसरी पृथ्वी तक ही जा सकता है, यह गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रियका कथन हुवा यह तिर्यंच पंचेन्द्रियका अधिकार हुवा॥३४॥प्रश्न-मनुष्यके कितने भेद कहे हैं? उत्तर मनुष्य के दो भेद कहे हैं, तद्यथा १ समूर्च्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य, इन का सब भेद जैसे पन्नवणा में कहे वैसे ही यहां

जहा पण्णवणा ते तहा निरवसेसं भाणियव्वं जाव छउमत्थाय केवलीया॥ तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते जीवाणं कतिसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसरीरा पण्णत्ता तंजहा-ओरालिते जाव कम्मते ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि-गाउयाइं, छव्वेव संघयणी, छव्वेव संठिया ॥ तेणं भंते ! जीवा किं कोहकसायी जाव लोभकसायी अकसायी ? गोयमा ! सव्वेवि ॥ तेणं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव णो सण्णोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि तेणं भंते ! जीवा किं

मानना, यावत् छद्मस्थ केवली पर्यंत कहना, इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों को पांच शरीर कहे हैं, औदारिक, वैक्रेय, आहारिक, तेजस व कार्मण इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तीन गाउ की, छ संघयन, छ संस्थान, प्रश्न—वे जीवों क्या क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी व अकषायी हैं ? उत्तर वे जीवों क्रोध कषायी भी हैं यावत् अकषायी भी हैं, प्रश्न—वे जीवों क्या आहार संज्ञी यावत् नो संज्ञी हैं उत्तर वे जीवों आहार संज्ञी भी है यावत् नो संज्ञावाले भी हैं, प्रश्न—वे जीवों क्या कृष्ण लेशी यावत् अलेशी है ? उत्तर—वे जीवों कृष्ण लेशी यावत् अलेशी भी है, प्रश्न—वे जीवों क्या समदृष्टि यावत् मिश्र-

किण्हलेसा जाव अलेसा ? गोयमा ! सव्वेवि ॥ सइंदिओवउत्ता जाव नो इंदिओ वउत्तावि ॥ सत्तसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा-वेयणा समुग्घाते जाव केवलीसमुग्घाते, सण्णीवि नो सण्णी नो असण्णीवि ॥ इत्थिवेदावि जाव अवेदावि ॥ पचपज्जत्ती पंचअपज्जत्ती, तिविहा दिट्ठी, चत्तारिदंसणा ॥ णाणीवि अण्णाणीवि, जेणाणी अत्थेगतिया दुणाणी, अत्थेगतिया तिणाणी, अत्थगतिया चउणाणी, अत्थगतिया एगणाणी जे दुणाणी ते नियमा अभिणिबोहियणाणीय, सुयणाणीय; जे तिणाणी ते अभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणीय, अहवा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी

न्द्रिय है ? उत्तर—वे जीवों सइन्द्रिय भी हैं यावत् अनेन्द्रिय भी है, उन जीवों को वेदनीय से केवली पर्यंत सातों समुद्घात कहे हैं ऐसे ही संज्ञी व नो संज्ञी नो असंज्ञी हैं, वे जीवों स्त्री वेदी भी हैं यावत् अवेद भी हैं, तीनों दृष्टि हैं, चार दर्शन हैं वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं जो ज्ञानी हैं उन में से कितनेक को दो ज्ञान, कितनेक को तीन ज्ञान, कितनेक को चार ज्ञान और कितनेक एक ज्ञान है जिन को दो ज्ञान हैं उन को आभिनि बोधिक व श्रुत ज्ञान है तीन ज्ञानवाले को आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधि ज्ञान अथवा आभिनिबोधिक श्रुत व मनःपर्यव ज्ञान हैं, चार ज्ञानवाले को आभिनिबोधिक, श्रुत, अवधि व मनःपर्यव ज्ञान है और एक ज्ञानवाले को केवल ज्ञान है. ऐसे ही अज्ञानी में कितनेक दो अज्ञानवाले व कितनेक तीन

मणपज्जवणाणीय,जे चउणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणीय,जे एगणाणी ते नियमा केवलणाणी ॥ एवं अण्णाणीवि दुअण्णाणी तिअण्णाणी ॥ मण जोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि अजोगीवि, दुविहो उवओगो आहारोछद्दिसिं, उववातो नेरइएहिं अहसत्तम वज्जेहिं, तिरिक्खजोणिएहिं, तेउवाउ असंखेज्ज वासाउअवज्जेहिं, मणुस्सेहिं अकम्म भूमिग अतरदीवग, असंखेज्जवासाउयवज्जेहिं, देवेहिं सव्वेहिं, ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं, दुविहा विमरति उव्वट्टित्ता नेरइयाइसु जाव अणुत्तरोववाईएसु, अत्थेगातिया

अज्ञानवाले हैं योग में मन योग, वचन योग, काया योग तीनो योग वाले भी हैं व अयोगी भी है उपयोग दोनों प्रकार का, आहार छहों दिशि का, उपपात-सातवी नारकी छोडकर शेष सब नारकी में से, तेउ, वायु व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय छोडकर शेष सब तिर्यंच, अकर्मभूमि, अंतर द्वीप व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य छोडकर सब मनुष्य में और सब देव में से नीकलकर मनुष्य होते हैं स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, दोनों प्रकार के मरण मरते हैं, यहां से नीकलकर नारकी यावत् अनुत्तरोपपातिक देव में उत्पन्न होवे और कितनेक सीझते हैं, बुझते हैं यावत् सब दुःखों का

सिज्झति जाव अतकरेंति ॥ तेण भते ! जीवा कतिगइया कतिआगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचगतिया.चउआगतिया परित्तासखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत मणुस्सा ॥३५॥ सेकिंत देवा ? देवा ! चउव्विहा पण्णत्ता ,तजहा—भवणवासी वाणमतरा जोइसा वेमाणिया,सेकिंत भवणवासी?भवणवासी दसविहा पण्णत्ता तजहा-असुरकुमारा जाव थणिय कुमारा ॥ सेत भवणवासी ॥ सेकिंतं वाणमंतरा ? वाणमतरा देवभेदो सव्वो भाणियव्वो, जावते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥

अंत करते हैं, प्रश्न—इन जीवों की कितनी गति व कितनी आगति कही ? उत्तर—इन जीवों को पांच गति व चार आगति है, मनुष्य संख्याते कहे हैं यह मनुष्य का कथन हुवा ॥ ३५ ॥ प्रश्न—देव के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—देव के चार भेद कहे हैं भवनवासी, वाणव्यतर, ज्योतिषी व वैमानिक प्रश्न-भवनवासी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-भवनवासी के दश भेद कहे हैं असुर कुमार यावत् स्तनित कुमार, प्रश्न—वाणव्यतर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—वाणव्यतर ज्योतिषी व वैमानिक सब देव का कथन करना यावत् इन के दो भेद पर्याप्त व अप-पर्याप्त प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इनजीवों को वैक्रेय, तेजस व कार्माण एसे तीन

तेसिण भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा—वेउव्विये, तेयते, कम्मए ॥ उगाहणा दुविहा—भवधारणिज्जाय, उत्तरवेउव्वियाय, तत्थण जासा भवधारणिज्जासा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जभाग उक्कोसेणं सत्तरयणी, उत्तर वेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जति भाग उक्कोसेण जोयण सतसहस्स ॥ सरीरगा छण्हं संघयण असंघयणा, णेवट्ठि णेवछिरा णेवण्हारु नेव

शरीर कहे हैं अवगाहना के दो भेद भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय, इस में से भवधारनीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात हाथ उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लाख योजन इन को छ संघयन में से एक भी संघयन नहीं है क्यों कि इस को हड्डी, शिरा नशे व नपश्न नहीं हैं परंतु जो इष्ट कंत वगैरह पुद्गलों हैं वे संघयनपने परिणमते हैं प्रश्न—उन जीवों को कौनसा संस्थान है ? उत्तर—उन जीवों के संस्थान के दो भेद कहे हैं भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय इस में भवधारनीय को समचतुस्र संस्थान है और उत्तर वैक्रेय का संस्थान विविध प्रकार का है, इन को चार कषाय, चार संज्ञा, छ लेश्या, पांच इन्द्रियों, पांच समुद्घात है भवनपति वाणव्यंतर में संज्ञी असंज्ञी दोनों और ज्योतिषी वैमानिक में संज्ञी, वेद दो स्त्रीवेद व पुरुष वेद भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व

ण मत्थि, जे पोग्गला इट्ठा कंता जीव तेसिं सघायताये परिणमंति ॥ तेसिण भंते ! जीवाण किं सठिया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय॥ तत्थण जेते भवधारणिज्जा तेण समचउरंस साठया पण्णत्ता, तत्थण जेते वेउव्विया तेण णाणा सठाण सठिया पण्णत्ता चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णा छ-लेसाओ, पचइंदिया, पंचसमुग्घाया, सण्णीवि असण्णीवि, इत्थिवेदावि पुरिसवेदावि, नो नपुंसगवेदा, पज्जत्तिअपज्जत्तीओ पंच, दिट्ठि तिविहा, तिन्निदंसणे॥णाणीवि अन्नाणीवि जे नाणी ते नियमा तिनाणी, अन्नाणी भयणाए, दुविहा उवओगे, तिविहा जोगे आहारो नियमाछद्दिसिं, उसण्णकारण पडुच्च वण्णओ हालिद्द सुक्किलाइ जाव आहार

पहिला दूसरा देवलोक पर्यंत दोनों वेद, आगे एक वेद पांच पर्याप्ति, दृष्टि तीन, केवल दर्शन वर्ज कर तीन दर्शन, वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं, जो ज्ञानी है वे आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधि ज्ञानी है, और अज्ञानी हैं उनको मति, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान की भजना (क्योंकि असज्ञी उत्पन्न होते हैं तब जहांलग पर्याय पूर्ण नहीं करते हैं तब लग मात्र दो अज्ञान ही होते हैं,) दोनों प्रकार के उपयोग, तीनों योग हैं, नियमा छ दिशी का आहार करे, स्वाभाविक कारन से वर्ण से पीला शुक्ल का यावत् आहार करे तिर्यंच व मनुष्य में से आठवे देवलोक तक उत्पन्न होवे, उपर एक मनुष्य ही उत्पन्न होवे,

माहारंति, उववातो तिरियमणुस्सेसु, ठिति जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ दुविहावि मरंति, उव्वट्टित्ता णो णेरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहा संभवं नो देवेसु गच्छति, दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेतं देवा ॥ सेत्तं पंचेंदिया ॥ सेत्तं उराला तसापाणा ॥ २६ ॥ तस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ थावरस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं ठिति

स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दोनों प्रकार के मरण मरते हैं वहां से नीकलकर नारकी व देवमें नहीं उत्पन्न होते हैं, परन्तु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं आठवा देवलोक में से नीकलकर तिर्यंच होते हैं इन की दो गति व दो आगति है वे असंख्याते हैं यह देवका भेद हुवा यों पंचेन्द्रिय का कथन हुवा और यह उदारिक त्रस प्राणियों का कथन संपूर्ण हुवा ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! त्रस जीवों की कितनी स्थिति कही ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही यह एक भव आश्री ग्रहण की है प्रश्न स्थावर की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-स्थावर

पण्णत्ता ॥ ३७ ॥ तस्सणं भंते ! तस्सत्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण असंखेज्जकाल असंखेज्जाओ उसप्पणि उसप्पिणिओ कालतो, खेत्तो असंखेज्जा लोगा ॥ थावराण भंते! थावरेत्ति कालतो केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण अणतकाल अणताओ उस्सप्पिणीओव सप्पिणीओ, कालतो खेत्तता अणता लोगा, असंखेज्जा पोग्गल परियट्टा, तेण पुग्गल परियट्टा आवलियाए असंखेज्जति भागे ॥ ३८ ॥ तसस्सण भंते ! केवति काल

की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की स्थिति है ॥ ३७ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! त्रस त्रसपने में कितना कालतक रहे ? उत्तर अहो गौतम ! त्रस त्रस में जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल, असंख्यात अवसर्पणी उत्सर्पिणी, क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश प्रमाण रहे प्रश्न-अहो भगवन् ! स्थावर, स्थावर में कितना काल तक रहे ? उत्तर अहो गौतम ! स्थावर, स्थावर में जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, अनंत अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, क्षेत्र से अनंत लोकाकाश, असंख्यात पुद्गल परावर्त ये पुद्गल परावर्त आवलिका के असंख्यातवे भाग के समय जितने जानना ॥ ३८ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! काल से त्रस का अंतर कितना कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना प्रश्न-

माहारंति, उववातो तिरियमणुस्सेसु, ठिति जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ दुविहावि मरंति, उव्वट्टिया णो णेरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहा संभवं नो देवेसु गच्छंति, दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेतं दवा ॥ सेत्त पंचेंदिया ॥ सेत्त उराला तसापाणा ॥ २६ ॥ तस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ थावरस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं ठिति

स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दोनों प्रकार के मरण मरते हैं वहां से नीकलकर नारकी व देवमें नहीं उत्पन्न होते हैं, परंतु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं आठवा देवलोक में से नीकलकर तिर्यंच होते हैं इन की दो गति व दो आगति है वे असंख्याते हैं यह इनका भेद हुआ यों पंचेन्द्रिय का कथन हुआ और यह उदारिक त्रस प्राणियों का कथन संपूर्ण हुआ ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! त्रस जीवों की कितनी स्थिति कही ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही यह एक भव आश्री ग्रहण की है प्रश्न-स्थावर की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-स्थावर

॥ द्वितीया प्रतिपत्ति ॥

तत्थ जेते एव माहसु तिविधासंसार-समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥ १ ॥ सेकिंत इत्थीओ ? इत्थीओ तिविहा पण्णत्ताओ तंजहा तिरिक्खजोणित्थीओ, मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ ॥ २ ॥ सेकिंत तिरिक्खजोणित्थीओ ? तिरिक्खजोणित्थीओ तिविधाओ पण्णत्ताओ तंजहा जलयरीओ, थलयरीओ, खहयरीओ, सेकिंत जलयरीओ ? जलयरीओ पंचविहाओ पण्णत्ताओ तंजहाओ मच्छीओ जाव सुंसुमारीओ, सेत्तं जलयरीओ ॥ ३ ॥ सेकिंत थलयरीओ ? थलयरीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा चउप्पदीओ परिसप्पिणीओय ॥ सेकिंत चउप्पदीओ ? चउप्पदीओ चउव्विहाओ

जो आचार्य ऐसा कहते हैं कि तीन प्रकार के संसार समापन्नक जीव हैं वे इस प्रकार कहते हैं तद्यथा-स्त्री, पुरुष व नपुंसक ॥ १ ॥ प्रश्न-स्त्री के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर स्त्री के तीन भेद कहे हैं, तिर्यंच स्त्री, मनुष्य स्त्री व देव स्त्री ॥ २ ॥ प्रश्न-तिर्यंच स्त्री के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर तिर्यंचणी के तीन भेद कहे हैं जलचरी, स्थलचरी व खेचरी प्रश्न जलचरी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-जलचरी के पांच भेद कहे हैं मच्छी यावत् सुंसुमारी यह जलचरी के भेद हुए ॥ ३ ॥ प्रश्न स्थलचरी किसे कहते हैं ? उत्तर स्थलचरी के दो भेद कहे हैं तद्यथा चतुष्पदी व परिसर्पिणी प्रश्न चतुष्पदी किसे कहते हैं ? उत्तर

अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥ थावर-रसण भते ! केवतिय काल अतर होति ? जहा तस्स संचिट्ठणाए ॥ ३९ ॥ एतेसिण भते! तसाणं थावर णय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसा, थावरा अणंतगुणा ॥ सेत्त दुविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता दुविहा पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ १ ॥ () () ()

अहो भगवन् ! स्थावर का कितना अतर कहा ? उत्तर अहो गौतम ! स्थावर का अतर त्रस की स्थिति जितना है ॥ ३९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इन त्रस व स्थावर में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे त्रस हैं उस से स्थावर अनंतगुने अधिक है यह दो प्रकार के संसार समापन्नक जीवों का वर्णन हुआ यह दो प्रकार के जीव की पहिली प्रतिपत्ति कही ॥ १ ॥

खहयरीओ? खहयरीओ चउव्विह पण्णत्ताओ तंजहा-चम्म पक्खीओ जाव सेत्तं खहयरीओ॥ सेत्तं तिरिक्खजोणित्थीयाओ॥५॥ सेकिंतं मणुस्सत्थियाओ? मणुस्सत्थियाओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-कम्मभूमियाओ, अकम्मभूमियाओ, अंतरदीवियाओ॥ सेकिंतं अंतरदीवियाओ? अंतरदीवियाओ अट्ठावीसतिविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-एगरुईओ, आभासीओ जाव सुद्धदंताओ सेतं अंतरदीवे॥सेकिंत अकम्मभूमियाओ? अकम्मभूमियाओ तीसति विधाओ पण्णत्ताओ तंजहा-पंचसु हेमवएसु, पंचसु एरण्णवएसु, पंचसु हरीवासेसु, पंचसु रम्मगवासेसु पंचसु देवाकुरुसु पंचसु उत्तरकुरुसु, सेत्तं अकम्मभूमग, मणुस्सीओ॥ सेकिंतं

इत्यादि यह भुज परिसर्प के भेद जानना॥४॥प्रश्न-खेचरी किसे कहते हैं? उत्तर-खेचरी के चार भेद कहे हैं, तद्यथा१-चर्म पक्षिणी, २रोम पक्षिणी, ३समुद्ग पक्षिणी व ४ वितत पक्षिणी यों यह खेचरी के भेद हुए॥५॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री किसे कहते हैं? उत्तर-मनुष्य स्त्री के तीन भेद कहे हैं कर्म भूमि की, अकर्म भूमि की व अंतर द्वीप की उत्पन्न हुई प्रश्न-अंतर द्वीप की स्त्रियों किसे कहते हैं? उत्तर अंतर द्वीप की स्त्रियों के अट्ठाइस भेद कहे हैं तद्यथा-एक रूप द्वीप की स्त्रियों यावत् शुद्ध दंत द्वीप की स्त्रियों, यह अंतर द्वीप की स्त्रियों का कथन हुआ प्रश्न अकर्म भूमि की स्त्रियों किसे कहते हैं? उत्तर-अकर्म भूमि की स्त्रियों के तीस भेद कहे हैं तद्यथा पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवास, पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु व पांच

पण्णत्ताओ तंजहा एगखूरीओ जाव सणप्फइओ॥सेकिंतं परिसप्पीओ?परिसप्पीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-उरग परिसप्पिणीओय भुयपरिसप्पीणीओय सेकिंत उरगपरिसप्पिणीओ उरग परिसप्पिणीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-अहीओ आयगरीओ महोरगीओ, सेत्त उरपरिसप्पिणी ॥ सेकिंतं भुजपरिसप्पिणीओ? भुजपरिसप्पिणीओ अणगविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-गोहीओ, णउलीओ, सेधाओ, सेल्लाओ, सरडीओ, सेरिंधीओ, साथाओ, खराओ, पंचलोइयाओ, चउप्पइयाओ, मूसियाओ, मुसुसियाओ, घरोलियाओ, गोहियाओ, जोहियाओ, थिराबालियाओ सेत्तं भुयपरिसप्पीओ॥४॥ सेकिंतं

चतुष्पदी के चार भेद कहे हैं १ एक खुरवाली घोडी इत्यादि २ दो खुरवाली गाय भैंस इत्यादि ३ गंडीपदी गोल पांववाली हथनी इत्यादि और सणीपदी नखवाली सिंहनी इत्यादि प्रश्न परिसर्पिनी किसे कहते है? उत्तर परिसर्पिनी के दो भेद कहे हैं उरपरिसर्पिनी व भुजपरिसर्पिनी प्रश्न-उर परिसर्पिनी किन कहते हैं? उत्तर उर परिसर्पिनी के तीन भेद कहे हैं सर्पिणी, अजगरी व महोरगी यह उर परिसर्पिनी हुई, प्रश्न-भुजपरिसर्पिनी किसे कहते हैं? उत्तर भुज परिसर्पिनी के अनेक भेद कहे हैं गोही, नकुली, रोहिनी, सल्ल यनी, कावडीयों, सेरंधियों, सांबियों, खारियों, चकडे ई, छछुंदरी, घरोली

वाणमंतर देवित्थियाओ अट्ठविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा पिसाय वाणमंतर देवित्थियाओ जाव सेत्त वाणमंतर देवित्थियाओ॥ सेकिंत जोतिसिय देवित्थियाओ? जोतिसियदेवित्थियाओ पंचविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा—चंद विमाणजातिसिदेवित्थियाओ, सूरविमाण देवित्थियाओ, गहविमाण देवित्थियाओ, णक्खत्तविमाण देवित्थियाओ, ताराविमाण जोतिसिय देवित्थियाओ, सेत्त जोतिसिय देवित्थियाओ ॥ सेकिंत वेमाणिय देवित्थियाओ ? वेमाणिय देवित्थियाओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा—सोहम्मकप्प वेमाणिय देवित्थियाओ, ईसाणकप्प वेमाणिय देवित्थियाओ, सेत्त विमाणित्थिओ ॥७॥ इत्थीणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेण आएसेण जहन्नेण अंतोमुहुत्त

देव की स्त्रियों यह वाणव्यंतर के भेद हुए प्रश्न-ज्योतिषी देव स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-ज्योतिषी देव स्त्रियोंके पांच भेद कहे हैं तद्यथा १ चंद्र विमान ज्योतिषीकी स्त्री २ सूर्य विमान ज्योतिषीकी स्त्री, ३ ग्रह, विमान ज्योतिषी की स्त्री, ४ नक्षत्र विमानज्योतिषीका स्त्री, ५ व तारा विमान ज्योतिषीकी स्त्री प्रश्न वैमानिक देवकी स्त्रियों किसे कहते हैं? उत्तर-वैमानिक देव स्त्रियोंके दो भेद कहे हैं तद्यथा-१ सौधर्म देवलोक के वैमानिक देवकी व २ ईशान देवलोक के वैमानिक देवकी स्त्री यह वैमानिक देवकी स्त्रीका कथन हुवा॥७॥ प्रश्न अहो भगवन्! स्त्री वेदकी कितने कालकी स्थिति कही? उत्तर-अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्तकी तिर्यंच व मनुष्य स्त्री आश्री उत्कृष्ट पचावन

कम्मभूमियाओ ? कम्मभूमियाओ पण्णरसविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा—पंचसुभरहेसु, पंचसुएरवएसु, पंचसुमहाविदेहेसु, सेतं कम्मभूमगमणुस्सीओ ॥ सेत्तं मणुस्सीओ ॥६॥ सेकिंत देवित्थियाओ ? देवित्थियाओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ तंजहा—भवनवासिदेवित्थियाओ, वाणमंतर देवित्थियाओ जोतिसि देवित्थियाओ, वेमाणिय देवित्थियाओ सेकिंत भवणवासि देवित्थियाओ ? भवणवासि देवित्थियाओ दसविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा—असुरकुमार भवणवासि देवित्थियाओ जाव थणितकुमार भवणवासिदेवित्थियाओ सेतं भवणवासिदेवित्थियाओ ॥ सेकिंतं वाणमंतर देवित्थियाओ ?

उत्तर कुरु की स्त्रियों यह अकर्म भूमि की स्त्रियों का कथन हुवा प्रश्न-कर्म भूमि की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर कर्म भूमि की स्त्रियों के पन्नरह भेद कहे हैं पांच भरत, पांच एरवत व पांच महा विदेह यह कर्म भूमि की स्त्रियों का कथन हुवा यह मनुष्यणी का भेद हुवा ॥ ६ ॥ प्रश्न-देव स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-देव स्त्रियों के चार भेद कहे हैं तद्यथा १ भवनवासी, २ वाणव्यंतर, ३ ज्योतिषी व ४ वैमानिक स्त्रियों प्रश्न भवनवासीनी किसे कहते हैं ? उत्तर भवनवासीनी देव स्त्रियों के दश भेद कहे हैं, असुर कुमार भवनवासी की स्त्री यावत् स्तनित कुमार भवनवासी की स्त्री प्रश्न वाणव्यंतर देव की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-वाणव्यंतर देव की स्त्रियों के आठ भेद कहे हैं पिशाच वाणव्यंतर देव की स्त्रियों यावत् गंधर्व वाणव्यंतर

भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि ॥ खहयर तिरिक्ख जोणित्थीणं जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो ॥ ९ ॥ मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिउवमाइं ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, कम्मभूमग मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं

तिर्यचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर—जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही भुज परिसर्प तिर्यचणी की जानना खेचर तिर्यचणी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ ९ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व प्रश्न-कर्म भूमि मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही है ? उत्तर क्षेत्र आश्री जघन्य

उक्कोसेणं पणपन्न पलिओवमाइं एकेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं णवपलि-ओवमाइं, एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं, ॥ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतमुहुत्तं उक्कोसेणं पण्णास पलिओवमाइं ॥ ८ ॥ तिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं ॥ जलयर तिरिक्खजोणियाण भंते! केवइय कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी॥ चउपदथलयर तिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतियकालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो

पल्योपमकी स्थिति ईशान देवलोककी अपरिग्रही देवी आश्री एक आदेशसे जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पचास पल्योपम सौधर्म देवलोक की अपरिग्रही देवी आश्री, एक आदेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट नव पल्योपम ईशान देवलोक की परिग्रही देवी आश्री एक आदेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात पल्योपम सौधर्म देवलोक की परिग्रही देवी आश्री ॥ ८ ॥ प्रश्न तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-जलचर तिर्यंचणी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जलचर तिर्यंचणी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड प्रश्न चतुष्पद स्थलचर

मुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ, उरपरिसप्प थलयरा तिरिक्ख जोणित्थिण भंते ! केवइयं कालं ठिइपण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि ॥ खहयर तिरिक्ख जोणित्थीण जहण्णेणं अंतो मुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो ॥ ९ ॥ मणुस्सित्थीण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिउवमाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त, उक्कोसेण देसणा पूव्वकोडी, कम्मभूमग मणुस्सियीणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त

तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर—जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही भुज परिसर्प तिर्यंचणी की जानना खेचर तिर्यंचणी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ ९ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व प्रश्न-कर्म भूमि मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही है ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य

पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिउवमाइ,धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ भरहेरवय कम्मभूमग मणुस्सित्थीण भते! केवतिय काल ठीती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ, धम्म चरण पडुच्च जहण्णण अतो मुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थीण भते ! केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ धम्मचर पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण देसूणा

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम धर्माचरण आश्री जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड भरत व एरवत कर्म भूमि क मनुष्य की स्त्री की कितनी स्थिति कही? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम धर्माचरण आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छकम(आठवर्षकम)क्रोड पूर्व, प्रश्न-पूर्वविदेह व अपर विदेह कर्मभूमिवाले मनुष्यणी की कितनी स्थिति है ? उत्तर क्षेत्र आश्री जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, धर्माचरण आश्री जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व अकर्म भूमि की मनुष्यणी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम

पुव्वकोडि ॥ अकम्मभूमगमणुस्सि‌णीणं भंते ! केवतियं कालंठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिउवम पलिओवमस्स असंखेज्जाति भागेणं, ऊणगं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ हेमवए एरण्णवए जहण्णेणं देसूणं पलिओवमं, पलिउवमस्स असंखेज्जइ भागे ऊणगं, उक्कोसेणं पलिउवमं, संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणाइं दोपलिओवमाइं, पलिओवमस्स असंखेज्जाति भागेऊणाइं, उक्कोसेणं दोपलिउवमाइं, संहरणं पडुच्च

साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड, हेमवय एरणवयके क्षेत्रकी मनुष्यणीकी स्थिति जघन्य पल्योपमका असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम, उत्कृष्ट, एक पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड प्रश्न हरिवर्ष रम्यक वर्ष अकर्मभूमि मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम दो पल्योपम उत्कृष्ट दो पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड प्रश्न-देवकुरु उत्तरकुरुकी मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जन्म आश्री पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम तीन पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री

जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म-
भूमगमणुस्सित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण
देसूणाइं तिण्णि पलिओवमाइं, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणगाइं, उक्कोसेण
तिण्णि पलिओवमाइं, सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी॥
अंतरदीवग अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता?
गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम, पलिओवमस्स, असंखेज्ज
तिभागेणऊणय, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं, सहरण पडुच्च जहण्णेण
अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥१०॥ देवित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती
पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण दसवास सहस्साइं उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइं,
भवणवासि देवित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेण दस वाससहस्साइं उक्कोसेणअद्ध पंचमाइं पलिओवमाइं

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोडपूर्व प्रश्न अंतर द्वीपकी मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही? उत्तर जन्म आश्री पल्योपम के असंख्यातवे भाग में कुछकम और उत्कृष्ट पल्योपमका असंख्यातवा भाग साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछकम पूर्व क्रोड ॥१०॥ प्रश्न देवी की कितनी स्थिति कही? उत्तर जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ५५ पल्य की प्रश्न भवनवासी देवी की कितनी स्थिति कही? उत्तर जघन्य दश हजार वर्ष

एव असुर कुमार भवणवासि देवरथीयाएवि ॥ नागकुमार भवणवासी देविरियपाए जहण्णेण दसवास सहस्साइ उक्कोसेण देसूण पलिओवम, एव सेसाणवि जाव थणिय कुमाराण ॥ वाणमतरीण जहण्णेण दसवास सहस्साइ, उक्कोसेणं अद्ध पलिओवम ॥ जोतिसीणं जहण्णेण अट्ठभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वास सहस्सेहिं अब्भहिय, चदविमाण जोतिसिय देविरियपाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण तचेव, सूरविमाण जोतिसिय देविरियपाए, जहण्णेण चउभाग पलिओवम, उक्कोसेण अद्ध पलिओवम, पचहिं वाससतेहिं, मब्भहिय, गहविमाण

उत्कृष्ट साडे चार पल्योपम की ऐसे ही असुर कुमार भवनवासी की देवी की जानना नाग कुमार भवन वासी देवी की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट कुछकम पल्योपम की, ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत शेष सब भुवनपति की देवी की स्थिति कहना ॥ वाणव्यतर देवी की जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट आधा पल्योपम ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष अधिक, चद्र विमान देवी की जघन्य एक पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष अधिक सूर्य विमान ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पांच सो वर्ष अधिक, ग्रह विमान ज्योतिषी की देवी की जघन्य पल्योपम का

जोतिसिय देवित्थिण जहण्णण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्ध पलिओवम णक्खत्तविमाण जोतिसिदेवित्थियाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण साहिय चउभाग पलिओवम, ॥ तारा विमाण जोतिसिय देवित्थियाए जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवम, उक्कोसेण सातिरेग अट्ठभाग पलिओवम वेमाणिय देवित्थियाए जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइ, सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ॥ ईसाण देवित्थीण जहण्णेण सातिरेग पलिओवमं उक्कोसेण णवपलिओवमाइ ॥ ११ ॥ इत्थीण भंते !

चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम, नक्षत्र विमान की देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चौथे भाग से कुछ अधिक तारा विमान वासिनी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट साधिक पल्योपम का आठवा भाग वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम सौधर्म देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की परिग्रही देवी आश्री ईशान देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की और अपरिग्रही देवी की स्थिति पचपन पल्योपम की है आगे स्त्रियों की उत्पत्ति नहीं है ॥ ११ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! एक जीव स्त्रीवेद का स्त्री वेद पने रहे तो कितना काल तक रहे ?

इत्थिवेदे कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! एकादेसेणं जहण्णेणं एकसमयं, उक्कोसेणं देसुत्तरं पलिओवमसतं पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियं ॥ एकेणादेसेणं जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण अट्ठारस पलिओवमाइ, पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइ ॥ एकेणा-देसेण जहण्णेण एकसमयं उक्कोसेण चोद्दसपलिओवमाइ पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं॥ एकेणादेसेण जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण पलिओवमसय पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहिय॥

उत्तर अहो गौतम ! एक आदेश से जघन्य एक समय (उपशम श्रेणी से पीछे पडता हुआ स्त्रीवेदी जीव काल करे इस अपेक्षा) उत्कृष्ट ११० पल्योपम, प्रत्येक पूर्व क्रोड अधिक, कोई स्त्री वेदी जीव दो भव दूसरे देवलोक की अपारग्रही देवीपने करेतो इस के ११० पल्योपम होवे और बीच में मनुष्यणी का भव कर सो अधिक जानना (देवी वहां से चवकर असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाली स्त्री में नहीं उत्पन्न होती है) दूसरे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट अठारह पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक यहां दूसरे देव लोक की परिग्रहीदेवी के दो भव और अन्य तिर्यंचणी या मनुष्यणी के भव आश्री जानना तीसरे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौदह पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक, पहिले देवलोक की परिग्रही देवी आश्री चौथे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट सो पल्योपम प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक पहिले देवलोक की अपरिग्रही देवी आश्री. पांचवे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट प्रत्येक पल्योपम व प्रत्येक पूर्व

जातिसिय देवित्थिण जहण्णण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्ध पलिओवम पन्नास- चाविमाण जोतिसिदेवित्थियाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण साहिय चउभाग पलिओवम, ॥ तारा विमाण जोतिसिय देवित्थियाए जहण्णेण अट्ठभाग पलितोवम, उक्कोसेण सातिरेग अट्ठभाग पलिओवम वेमाणिय देवित्थियाए जहण्णेण पलितोवम, उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइ, सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइ ॥ ईसाण देवित्थीण जहण्णेण सातिरेग पलिओवण उक्कोसेम णवपलितोवमाइ ॥ ११ ॥ इत्थीण भंते !

चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम, नक्षत्र विमान की देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चौथे भाग से कुछ अधिक तारा विमान वासिहनी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट साधिक पल्योपम का आठवा भाग वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम सौधर्म देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की परिग्रही देवी आश्री ईशान देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की और अपरिग्रही देवी की स्थिति पचपन पल्योपम की है आगे स्त्रियों की उत्पत्ति नहीं है ॥ ११ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! एक जीव स्त्रीवेद का स्त्री वेद पने रहे तो कितना काल तक रहे ?

मणुस्सित्थीण भते ! मणुस्सित्थीति कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण दसूण पुव्वकोडी ॥ एव कम्मभूमियात्रि भरहेरवयात्रि, णवर खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ, दसूणा पुव्वकोडी अब्भहियाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सखेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण

भग ! मनुष्यणी मनुष्यणीपने कितना काल तक रहती है ? अहो गौतम ! क्षेत्र आश्री जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व पूर्व क्रोड अधिक, धर्माचरण आश्री, जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड ऐसे ही कर्मभूमि व भरत एरवत का जानना परतु क्षेत्र आश्री जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व देशऊना क्रोड पूर्व अधिक धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छकम पूर्व क्रोड पूर्व विदेह व अपर विदेह मनुष्यणी की क्षेत्र आश्री जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड अकर्मभूमि की मनुष्यणी अकर्मभूमि में कितना काल तक

एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं पलिओवमपुहुत्तं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भ-हियं॥१२॥तिरिक्खजोणिणी भंते! तिरिक्खजोणित्थित्ति कालतो केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइं, जलचरीए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडि पुहुत्तं मब्भहियं॥ चउप्पदथलयरातिरिक्ख जहा ओहिता, तिरिक्खीउरगपरिसप्पि भुयगपरिसप्पित्थिणं जहा जलयराणं॥ खहयरी जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियं

क्रोड अधिक सात भव तिर्यंचणी के पूर्व कोडी आयुष्य के और आठवे भव में देवकुरु उत्तर कुरु में तीन पल्योपम के आयुष्य वाली युगलनी होकर सौधर्म देवलोक में जघन्य स्थिति वाली देवी होवे ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! तिर्यंचणी तिर्यंचणीपने कितना काल तक रहती है? उत्तर अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक सात भव पूर्व क्रोड की स्थिति के करे आठवा भव तीन पल्योपम की स्थिति का करे और नववा भव पूर्व क्रोड की स्थिति का करे जलचरी जलचरीपने रहे तो जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड, चतुष्पद स्थलचरी का औधिक जैसे मानना, उर परिसर्प व भुज परिसर्प का जलचरी जैसे मानना खेचरी का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक मानना॥१३॥ प्रश्न-अहो भग-

मणुस्सित्थीण भंते ! मणुस्सित्थिति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूण पुव्वकोडी ॥ एव कम्मभूमियावि भरहेरवयावि, णवर खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ, देसूणा पुव्वकोडी अब्भहियाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सखेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण

भन् ! मनुष्यणी मनुष्यणीपने कितना काल तक रहती है ? अहो गौतम ! क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व पूर्व क्रोड अधिक, धर्माचरण आश्री, जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्व क्रोड ऐसे ही कर्मभूमि व भरत एरवत का जानना परतु क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व देशऊना क्रोड पूर्व अधिक धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड पूर्व विदेह व अपर विदेह मनुष्यणी की क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड अकर्मभूमि की मनुष्यणी अकर्मभूमि में कितना काल तक

एक समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ अकम्मभूमिक मणुस्सित्थिण, अकम्मभूमए कालओ केवच्चिर होति? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णण देसूण पलिओवम पलिओवमस्स असखज्जतिभागेणऊण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ॥ सहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाए पुव्वकोडिए अब्भहियाइ ॥हेमवतरण्णवे अकम्मभूमिमणुस्सित्थि॰ भते! हेमवतरण्णवे कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलिओवमस्स असखेज्जति भागेण ऊणग उक्कोसेण पलिओवमग, साहारण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण

रहती है ? उत्तर जन्म आश्री पल्योपम का असख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व कुच्छ कम क्रोड पूर्व अधिक, प्रश्न—हेमवय एरणवय की मनुष्यणी हेमवय एरणवय में कितने काल तक रहती है ? उत्तर—जन्म आश्री पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट एक पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक पल्योपम व कुच्छ कम पूर्व क्रोड अधिक कोई देव कर्मभूमि की स्त्री को हेमवय एरणवय क्षेत्र में साहरन करके लावे वह वहां कुच्छ कम पूर्व क्रोड का आयुष्य भोगव कर काल कर जावे और उस ही क्षेत्र में

पलिओवम देसूण। पुव्वकोडीए अब्भहिय ॥हरिवास रम्मवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते! कालओ केवचर होई? गोयमा! जम्मण प॰ुच्च जहण्णेण देसूणाइ दो पलितोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेणं ऊणगाइ, उक्कोसेण दोपलितोवमाइ ॥ साहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो पलिओवमाइ देसूणाइ पुव्वकोडि अब्भहियाइ ॥ देवकुरु उत्तरकुरु जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूणाइ तिन्नि पलिओवमाइ पलितोवमस्स असखेज्जइ भागेणं ऊ गाइ उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ,सहरण पडुच्च जहण्णण अतोमुहुत्तउक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ॥अतरदीवा कम्मभूमगमणुस्सि २ जम्मणपडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलितोवमस्स असखेज्जाति भागेण ऊण

युगलनीपने उत्पन्न होवे उस आश्री हरिवर्ष रम्यक् वर्ष अकर्मभूमि मनुष्यणीकी जन्म आश्री पल्य का असंख्यातवा भाग दो पल्योपम उत्कृष्ट दो पल्योपम की साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो पल्योपम व कुच्छ कम क्रोड पूर्व अधिक मानना देवकुरु उत्तरकुरु की जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम तीन पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अतर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व कुच्छ कम क्रोडपूर्व अधिक अंतर द्वीप की देवीका जन्मय आश्री जघन्य पल्योपम के

उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग,सहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग देसूणाए पुव्व कोडीए अब्भहिय ॥१४॥ देवित्थीण (देवीणं) भंते! देवित्थित्ति कालओ केवच्चिरहोइ? गोयमा! जच्चेव संचिट्ठणा ॥१५॥ इत्थीण (इत्थीएण) भंते! केवतिय काल अंतर होति? गोयमा! जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण अनंतकाल वणस्सति कालो एवं सव्वासिं तिरिक्खित्थीण ॥ मणु-

असंख्यात वे भाग में कुच्छकम उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमका असंख्यातवा भाग व कुच्छकम क्रोड पूर्व अधिक॥१४॥ प्रश्न अहो भगवन्! देवता की स्त्री देवी पने कितने काल तक रहती है? उत्तर-अहो गौतम! जैसे देवी की स्थिति कही वैसे ही जानना क्यों की देवी चवकर पुनः देवीपने नहीं उत्पन्न होती है ॥ १५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन्! स्त्री का स्त्रीपने कितना अंतर होता है? अर्थात् स्त्री वेद में से नीकला पुनः कितने समय में स्त्रीपना प्राप्त करे? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति आश्री इतना स्त्री वेद का अंतर मानना ऐसे ही तिर्यंचणी व मनुष्यणी का जानना मनुष्य में क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल परावर्त में कुच्छ कम ऐसे ही पूर्व महाविदेह व अपर महाविदेह क्षेत्र आश्री जानना अकर्मभूमि की मनुष्यणी का कितना अंतर

स्सित्थीण मणुस्सित्थिए खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त,उक्कोसेण वणस्सइ कालो॥ धम्म चरण पडुच्च जहण्णेण समउ उक्कोसेण अणत काल जाव अवड्ढ पोग्गलपरि यट्ट देसूण, एव जाव पुव्व विदेह अवर विदेहियाओ ॥ अकम्म भूमगमणुस्सित्थिण भंते ! केवतिय काल अतर होइ ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण दसवास सहस्साति अतोमुहुत्त मब्भहियाइ उक्कोसेण वणस्सइकालो, सहरणं पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइकालो एव जाव अतरदीवियाओ ॥

कहा ! उत्तर—जन्म आश्री जघन्य दश हजार वर्ष अतर्मुहूर्त अधिक क्यों कि अकर्मभूमि की स्त्री मरकर जघन्य स्थितिवाले देवतापने उत्पन्न होवे वह दशहजारवर्ष का आयुष्य भोगवकर कर्मभूमि में मनुष्यकी स्त्रीपन उत्पन्न होवे वहां से मरकर अकर्म भूमि में स्त्रीपने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अनंत काल का अंतर यह साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल एसे ही अंतर द्वीप पर्यंत कहना प्रश्न अहो भगवन ! देवता की स्त्री मरकर पुनः देवता की स्त्रीपने उत्पन्न होवे तो कितना काल का अंतर होवे ? उत्तर-अहो गौतम ! जघन्य अंतर मुहूर्त क्योंकि देवी मरकर कर्म भूमि में उत्पन्न होवे वहां पूर्ण पर्याय बांध कर पुनः स्त्री पने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना अनंत काल जानना. एसे ही असुरकुमार भवन पति की देवी से ईशान देवलोक की देवी पर्यंत सबका कहना ॥

देविरिथण सव्वोसि जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणरसतिकालो ॥ १६॥ एतासिण भते! तिरिक्खजोणियाण मणुस्सित्थियाण देवित्थियाण कयरा २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ? सव्वत्थोवाओ मणुस्सित्थीयाओ, तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेजगुणाओ, देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, ॥ एतासिण भते ! तिरिक्खजोणित्थियाण जलयरीण थलयरीण खहयरीणय कयरा २ हिंतो अप्पाओवा बहुयाओवा तुल्लाओवा विसेसाहियाओवा? गोयमा! सव्वत्थोवाओ खहयरि तिरिक्खजोणियाओ थलयर तिरिक्खजोणियाओ संखेज्ज गुणाओ, जलयर तिरिक्ख संखेज्जगुणाओ ॥ एतासिण भते ! मणुस्सित्थिण कम्म भूमियाण अकम्मभूमियाण, अतरदीवियाणय कयरा २

॥ १६ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! तिर्यंचणी, मनुष्यणी, व देवी में कौन किस से अल्प, बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी मनुष्य की स्त्री क्यों कि वे संख्यात क्रोडाक्रोड है, इस से तिर्यंच की स्त्री असंख्यातगुनी, इस से देवियों असंख्यातगुनी प्रश्न-अहो भगवन् ! तिर्यंचणी में जलचरी स्थलचरी व खचरी में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर-अहो गौतम ! सब से थोडी खेचरी तिर्यंचणी, उस से स्थलचरी तिर्यंचणी संख्यात गुनी, उस से जलचरी तिर्यंचणी संख्यात गुनी प्रश्न—अहो भगवन् ! कर्मभूमि की स्त्रियों, अकर्मभूमि व अंतर द्वीप की स्त्रियों में कौन किस से

हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ अतरदीवग अकम्म भूमग मणुस्सित्थियाओ, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि-तुल्लाओ सखेज्जगुणाओ, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवितुल्लाओ सखेज्जगुणाओ, हेमवय हेरण्णवयवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ सखेज्जगुणाओ भरहेरवयवास कम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ, दोवि तुल्लाओ सखेज्ज-गुणाओ, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ सखेज्जगुणाओ॥

अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी अन्तर द्वीप की स्त्री, इस से देवकुरु उत्तरकुरु की स्त्रियों परस्पर तुल्य सख्यात गुनी, इस से हरिवर्ष रम्यक् वर्ष की स्त्रियों परस्पर तुल्य सख्यात गुनी इस से हेमवय एरणवय की स्त्रियों परस्पर तुल्य सख्यात गुनी, इस से भरत एरवत क्षेत्र की मनुष्य स्त्रियों परस्पर तुल्य सख्यात गुनी, इस से पूर्व विदेह व अपर विदेह क्षेत्र की स्त्रियों परस्पर तुल्य सख्यात गुनी प्रश्न—अहो भगवन् ! देवियों में भवनवासी, वाणव्यतर, ज्योतिषी व वैमानिक की देवियों में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडी वैमानिक की देवियों, क्यों की अगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशि का दूसरा वर्ग मूल को तीसरे वर्ग मूल से गुनने से जितनी राशि होवे उतने प्रमाण घन की हुई लोक की

एतासिण भंते ! देवित्थियाणं भवणवासीणं वाणमंतरीणं जोइसियाणं वेमाणिणीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ वेमाणियाओ देवित्थियाओ, भवणवासी देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, वाणवंतर देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवत्थियाओ संखेज्जगुणाओ ॥ एतासिण भंते ! तिरिक्ख-जोणिणीण जलयरीण थलयरीण खहयरीण मणुस्सित्थीयाण कम्मभूमियाण अकम्म भूमियाण, अंतरदीवियाणं, देवित्थियाणं, भवणवासिणीण, वाणमंतरीण, जोतिसि-

प्रदेश पंक्ति में जितने आकाश प्रदेश हैं उसे बत्तीससे भागदेनेसे उतने प्रमाणमें है, इससे सौधर्म ईशान देवलोक की देवियों असंख्यात गुनी क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशिका प्रथम वर्ग मूल उसे दूसरे वर्ग मूलसे गुणने से जितनी प्रदेश राशि होवे इतने प्रतर की श्रेणि में जितने प्रदेशराशि होवे, उसे बत्तीसका भागदेनेसे जो प्राप्त होवे उतनी है, इससे व्यंतर देवकी देवियों असंख्यातगुनी क्यों कि असंख्यात योजन प्रमाण एक प्रदेशिक श्रेणीप्रमाण जितने खण्ड एक प्रतर में हैं उस को भी बत्तीस का भागदेने से जो आवे उतनी व्यन्तर की स्त्रियों हैं उस से ज्योतिषी की स्त्रियों संख्यातगुनी क्यों कि २५६ अंगुल प्रमाण एक प्रदेश की श्रेणी मात्र खंड जितने एक प्रतर में होवे उस में से बत्तीसवा भाग रहित करने से जितनी प्रदेश राशि होवे उतनी है. अब—अहो भगवन् ! तिर्यंच स्त्रियों में जलचरी, स्थलचरी, खेचरी, मनुष्य स्त्रियों में कर्म-

याणं वेमाणिणीणय कयरा २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अतरदीवग अकम्म भूमग मणुस्सित्थियाओ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवितुल्ला संखेज्जगुणाओ, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ, हेमवतेरण्णवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि संखेज्जगुणाओ, भरहेरवयवास कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ, पुव्वविदेह अवरविदेहवास कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ वेमाणिय

भूमि की, अकर्मभूमि व अतरद्वीप की स्त्रियों व देव स्त्रियों में भवनवासीनी, वाणव्यन्तरी, ज्योतिषीनी व वैमानिकिनी देव की स्त्रियों में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी अंतरद्वीप अकर्मभूमिवाले मनुष्य की स्त्रियों हैं इन से देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी, इस से हरिवर्ष रम्यक वर्ष के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी इस से हेमवय एरणवय की मनुष्यणीयों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी, इन से भरत एरवत की मनुष्यणियों संख्यातगुनी, इस से पूर्व विदह व पश्चिम विदह की स्त्रियों संख्यातगुनी, इस से वैमानिक देवता की स्त्रियों असंख्यातगुनी, आकाश प्रदेश राशि प्रमाण होने से, इस से भवनपति देवी की स्त्रियों असंख्यातगुनी, इस से खेचर तिर्यंचणी असंख्यातगुनी. प्रतर के असंख्यातवे भाग में रही हुई आकाश श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है, इस से स्थलचर तिर्यंचणी संख्यातगुनी, अ विशेष महो

पंचिंदियाओ असंखेज्जगुणाओ, भवणवासि देविंदियाओ असंखेज्जगुणाओ, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, थलचर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ॥ १७ ॥ इत्थीवेदस्सणं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंध ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढो सत्त भागाओ पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेण ऊणं, उक्कोसेणं पण्णरस

प्रतर का असंख्यातवा भाग उस में रही हुई असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है इस से जलचर तिर्यंचणी संख्यातगुनी अतिशय बडा प्रतर का असंख्यातवा भाग में रही हुई असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है इस से वाणव्यंतर देव की देवियों संख्यातगुनी, संख्यात योजन कोटा कोटी प्रमान एक प्रदेश श्रेणि मात्र खंड जितने एक प्रतर में होवे उस में से १ षट्पंचाशवा भाग कम करने से जितनी राशी रहे उतनी है इससे ज्योतिषी की देवियों संख्यातगुनी पूर्वोक्त प्रकार ॥ १७ ॥ अब स्त्री वेद की स्थिति कहते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! स्त्री वेद कर्म की कितने काल पर्यंत स्थिति होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम व एक सागरोपमका सातवा भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम क्योंकि स्त्री वेदादिक कर्म की अपनी २ उत्कृष्ट स्थिति बंध से मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति का सित्तर क्रोडाक्रोड सागरोपम की प्रमाण से भाग

सागरोवम कोडाकोडीओ, पण्णरस वास सयाइ, अवाधा, अवाहुणिया कम्मठिती कम्मणिसेओ ॥ १८ ॥ इत्थिवेदेण भते ! किंपकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! फुफ अग्गि समाणे पण्णत्ते ॥ सेत्त इत्थियाओ ॥ १९ ॥ सेकिंत पुरिसा ? पुरिसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा–तिरिक्खजोणिय पुरिसा, मणुस्स पुरिसा, देवपुरिसा ॥ २० ॥ सेकिंत तिरिक्खजोणिय पुरिसा ? तिरिक्खजोणिय पुरिसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा–जलचरा थलचरा खहचरा ॥ इत्थि भेदो भ णियव्वो जाव खहयरा॥सेत्त खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा ॥ २१ ॥ सेकिंत मणुस्स पुरिसा ? मणुस्स पुरिसा

करने से इतनी होती है उत्कृष्ट पन्नरह क्रोडाक्रोड सागरोपम अबाधाकाल पन्नरह हजार वर्ष का कहा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! स्त्रियों का विषय कैसे कहा है ? उत्तर—जैसे बकरी की मींगनियों की अग्नि जाज्वल्यमान होती है और छेडने से विशेष दीप्यमान होती है, वैसे ही, तथा काष्ट की धगधगती अग्नि समान कामाग्नि है यह स्त्री वेद का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ प्रश्न—पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—पुरुष के तीन भेद कहे हैं तद्यथा तिर्यंच पुरुष, मनुष्य पुरुष व देव पुरुष ॥२०॥ प्रश्न—तिर्यंच पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच पुरुष के तीन भेद कहे हैं—जलचर, स्थलचर, व खेचर यावत् सब भेद में जैसा कहा वैसे ही यहां जानना यह तिर्यंच का कथन हुवा ॥ २१ ॥ प्रश्न—मनुष्य

तिविहा पण्णत्ता तंजहा-कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा सेत्त मणुस्स पुरिसा ॥ २२ ॥ सेकिंत देव पुरिसा ? देवपुरिसा चउव्विहा इत्थिभेदो भाणियव्वो जाव सव्वट्ठसिद्धा ॥ २३ ॥ पुरिसस्सणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा !

पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—मनुष्य पुरुष के तीन भेद कहे हैं—कर्मभूमि, अकर्मभूमि व अंतरद्वीप यह मनुष्य पुरुष के भेद हुवे ॥ २२ ॥ प्रश्न—देव पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—देव पुरुष के चार भेद कहे हैं यों जैसे स्त्री भेद में कहा वैसे ही जानना यहां सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत कहना ॥ २३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुष की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच पुरुष व मनुष्य पुरुष का से जैसे कहना देव पुरुष की यावत् सर्वार्थ सिद्ध देवों की स्थिति पन्नवणा से जानना विशेष में—भवनपति में असुरकुमार देव की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुछ अधिक, नागकुमार दि नवजाति के भुवनपति देवकी जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम की वाणव्यन्तर देवकी जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की, ज्योतिषी देवकी जाति में जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, चन्द्रमा की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, सूर्य की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक हजार वर्ष की

जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं मणुस्स पुरिसाण जच्चेव इत्थिय ठिती साचेव भाणियव्वा ॥ देव पुरिसाणवि जाव

ग्रह की, जघन्य पाव पल्योपम की, उत्कृष्ट एक पल्योपम की, नक्षत्र की, जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधा पल्योपम की, तारा की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट पाव पल्योपम से कुछ अधिक जानना वैमानिक की औघ से जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की, विशेष से—१ सौधर्म देवलोक के देव की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट दो सागरोपम की, २ ईशान देवलोक के देव की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट दो सागरोपम कुछ अधिक, ३ सनत्कुमार देवलोक के देवता की जघन्य दो सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, ४ माहेन्द्र देवलोक के देवों की जघन्य दो सागर कुछ अधिक उत्कृष्ट सात सागरोपम कुछ अधिक, ५ ब्रह्मदेवलोक के देवता की जघन्य सात सागरोपम की उत्कृष्ट दश सागरोपम की, ६ लांतक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम की उत्कृष्ट चौदह सागरोपम की, ७ महाशुक्र देवलोक के देव की जघन्य चौदह सागरोपम की उत्कृष्ट सत्तरह सागरोपम की, ८ सहस्रार देवलोक के देव की जघन्य सतरह सागरोपम की उत्कृष्ट अठारह सागरोपम की ९ आणत देवलोक की जघन्य अठारह सागरोपम की उत्कृष्ट उन्नीस सागरोपम की, १० प्राणत देवलोक की जघन्य उन्नीस सागरोपम की उत्कृष्ट बीस सागरोपम की, ११ आरण देवलोक के देव की जघन्य

सव्वट्ठसिद्धाण ताव ठिईए जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वा ॥ २४ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसात्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण

स सागरोपम की उत्कृष्ट इक्कीस सागरोपम की, १२ अच्युत देवलोक की जघन्य इक्कीस सागरोपम की त्कृष्ट बावीस सागरोपम की (यह कल्पोत्पन्न देव की स्थिति कही) १ भद्र ग्रैवेयक के देव की जघन्य बावीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेवीस सागरोपम की, २ सुभद्र ग्रैवेयक के देव की जघन्य तेवीस सागरोपम की त्कृष्ट चौवीस सागरोपम की, ३ सुजात ग्रैवेयक के देव की जघन्य चौवीस सागरोपमकी उत्कृष्ट पच्चीस सागरोपमकी, ४ सुमनस ग्रैवेयक के देवकी जघन्य पच्चीस सागरोपम की उत्कृष्ट छब्बीस सागरोपम की, सुदर्शन ग्रैवेयक के देव की जघन्य छब्बीस सागरोपम की उत्कृष्ट सत्तावीस सागरोपम की, ६ प्रिय [illegible]क के देव की जघन्य सत्तावीस सागरोपम की उत्कृष्ट अट्ठावीस सागरोपम की, ७ आ[illegible] क देव की जघन्य अठावीस सागरोपम की उत्कृष्ट गुनतीस सागरोपम की, ८सुमतिभद्रग्रैवेयक के घन्य गुनतीस सागरोपमकी और उत्कृष्ट तीस सागरोपम की और ९यशोधरग्रैवेयक के देव की जघन्य सागरोपम की उत्कृष्ट एकतीस सागरोपम की ॥ विजय वैजयंत जयंत और अपराजित विमान वासी की जघन्य एकतीस मध्यम बत्तीस उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की और सर्वार्थ सिद्ध विमान वासी वताओं की स्थिति जघन्योत्कृष्ट तेतीस ही सागरोपम की ॥ २५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुषका प पने निरंतर रहतो कितने काल तक रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो

सागरोवमसयपुहुत्त सातिरेगं ॥ तिरिक्खजोणिय पुरिसाण भंते ! कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिन्निपलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्त मज्झहियाइ ॥ एव तहेव संचिट्ठणा जहा इत्थीण जाव खहयरतिरिक्खजोणिय पुरिसस्स संचिट्ठणा ॥ मणुस्स पुरिस्साण भंते ! कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपालिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्त

सागरोपम कुछ अधिक फिर पुरुष वेद का अवश्य पलटा होवे प्रश्न-अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक पुरुष निरंतर पुरुषपने रहे तो कितने काल रहे ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम ऊपर पूर्व कोटी पृथक्त्व अधिक (सात भव पूर्व कोटी आयुष्य वाले तिर्यंच के कर्मभूमि के क्षेत्र आश्रिय और एक भव युगल तिर्यंच का तीन पल्योपम का मानना] यों जिस प्रकार तिर्यंचनी स्त्री का संचिठन काल कहा वैसा ही जलचर स्थलचर पुरुष का भी संचिठना काल जानना अर्थात् जलचर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व, चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक, उरपरि सर्प की तथा भुजपर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व, खचर पुरुषकी जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी पृथक्त्व ऊपर के पल्योपम का असंख्यात भाग पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक सात कर्मभूमी के भवकरे आठवा अन्तरद्वीपका भवकरे) प्रश्न-मनुष्य का पुरुषपना

मणुस्सइत्थियाए ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडि, एवं सव्वत्थ जाव पुव्वविदेह अवरविदेह अकम्मभूमक मणुस्स पुरिसाणं जहा अकम्मभूमग मणुस्सित्थीणं जाव अंतर दीवगाणं ॥ देवपुरिसाणं जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाणं ॥ २५ ॥ पुरिसाणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥

कितने काल तक रहे? उत्तर—अहो गौतम! क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक उक्त प्रकार ही जानना, और चारित्र धर्माचरण आश्रित जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्ष यावत् पूर्व महा विदेह का तथा अकर्मभूमि के मनुष्य पुरुष का जैसा अकर्म-भूमि की स्त्री का कहा यावत् अंतरद्वीप का पुरुष का भी अंतरद्वीप की स्त्री जैसा ही कहना और देव पुरुषों का पुरुषपने का काल तो उनकी स्थिति कही उतना ही जानना क्यों कि उन का पुरुष (दूसरा) भव होता नहीं है इस लिये सर्वार्थ सिद्ध तक का पुरुष वेद का काल उन की स्थिति जैसा ही कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुष वेद को प्राप्त करने का कितना अन्तर पडे ? उत्तर—अहो गौतम !, जघन्य एक समय का (उपशम श्रेणी में वेद का उपशम कर पश्चात् से पुनः पुरुष वद को

तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइ कालो ॥ एवं जाव खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसाण ॥ मणुस्स पुरिसाण भंते ! केवतिय काल अंतर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय उक्कोसेणं अणतकाल अणता

समय मार्ग स्पर्शकर तुर्त मृत्यु पावे उस आश्रिय) और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जानना (प्रश्न—स्त्री और नपुंसक दोनों श्रेणि करते हैं उन का एक समय का अन्तर क्यों न हो ? उत्तर—श्रेणिगत मृत्यु पाकर नियमा से पुरुष रूपपने ही उत्पन्न होता है परन्तु देवीपने या अन्य गति में नहीं जाता है इस लिये) तिर्यंच योनिक पुरुष में विशेषता बतावे हैं तिर्यंच योनिक पुरुष का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जलचर स्थलचर खेचर पुरुष का भी इतना ही अंतर जानना प्रश्न अहो भगवन् ! मनुष्य पुरुष मरकर पीछा पुरुष होवे तो कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! पुरुष का जघन्य से क्षेत्र आश्रिय अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना और चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य एक समय [परिणाम के पलटे आश्रिय] उत्कृष्ट अनन्त काल अर्ध पुद्गल परावर्तन, इस ही प्रकार भरत एरावत के मनुष्य पुरुष, पूर्व विदेह पश्चिम विदेह पुरुष का जन्म आश्रिय

उरसप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा संहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना सेष वीस रहे सब के वैसा जानना यावत् अतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेणं वास पुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन्! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार आदी के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नवमे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ! उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

अ
र्थ

उस्सप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां मे मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और सहरन आश्रिय जघन्य अंतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने मे पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष वीस्तार पर्व की के जैसा जानना यावत् अन्तर्द्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय काल अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण काल मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न-अहो भगवन्! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार जाती के देव मे लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य मास पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

उरसप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढ पोंगले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बीस स्थान का भी वैसा जानना यावत् अंतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना

पुरिसाण भंते ! केवतियं कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहन्नेणं वासं पुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार आदी के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नवमें आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष मास पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य बिना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवें] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

उस्सप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोंग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस 'जहित्थीण जावे अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्मभूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अंतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा संहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बोल रहा सब सूत्र के जैसा जानना यावत् अंतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण वास पुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो एव जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार आदी के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

पुरिसस्स जहण्णेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं, अणुत्तराण अंतरे एक्को आलावओ ॥ २६ ॥ अप्पाबहुयाणि जहेव इत्थीणं ॥ एतेसिणं भंते ?

मानना [अनुत्तर विमान के देव मरकर मनुष्य होकर अन्य विमानिक देवके तथा मनुष्य के मरकरे उस आश्रिय मानना और सर्वार्थ सिद्ध के देवकी उत्पत्ति तो एक ही वक्त होती है वे मनुष्य हो निश्चय से मोक्ष जाते हैं, इस लिये यहां का अन्तर नहीं कहा है + ॥२६॥ अब पुरुषों की अल्पाबहुत्व पांच प्रकारसे कहते हैं (१) सब से थोडे मनुष्य, क्यों कि संख्यात कोटा-कोटी प्रमाण है, उस से तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुना, क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग में रहकर असंख्यात श्रेणि में रही हुई जो आकाश प्रदेश की राशि उस प्रमाण है, उस से देव पुरुष असंख्यातगुना, क्यों कि अतिशय बडा प्रतर के असंख्यातवे भाग में रही जो असंख्यात श्रेणि की आकाश प्रदेशकी राशी है उतने हैं तिर्यंच योनिक पुरुष की अल्पाबहुत्व तिर्यंच योनिक स्त्रीके जैसा ही कहना और मनुष्य पुरुष की अल्पाबहुत मनुष्य की स्त्रियों जैसे कहना (४) देव पुरुष की

+ यहां कितनेक भवनपति देव से ईशान देवलोक तक जघन्य अन्तर्मुहूर्त का, सनत्कुमार से सहस्रार पर्यन्त नव दिन का, आनत देवलोक से अच्युत देवलोकतक नव महीने का, नव ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान तक नववर्ष का पुरुष वेद का अंतर कहते हैं.

देवपुरिसाण भवणवासिण वाणमतराण जोतिसियाणं वेमाणियाण कयरे २ हिंतो

अल्पाबहुत्व सब से थोडे अनुत्तर विमान के पुरुष क्योंकि जो क्षेत्र पल्योपम के असंख्यातवे भागमें है उस में जो आकाश प्रदेश की राशी है उस प्रमाने हैं, २ उस से ऊपर की ग्रैवेयक के देव संख्यातगुने क्यों की जो बहुत बडा क्षेत्र पल्योपम उस के असंख्यातवे भाग में रहे, जो आकाश प्रदेश उस की राशि जितने हैं, विमान की बहुल्यता कर अनुत्तर विमान पांच ही है और ऊपर के त्रिक में सो विमान है, उस में प्रत्येक विमान में अलग २ असंख्यात देवता हैं, (ऐसे ही आगे में भी २ नीचे २ विमान आगय हैं उन में देवता भी ज्यादा २ है ऐसी कल्पना आगे भी करना,) ३ उस से मध्य की ग्रैवेयक के देवत, संख्यातगुना, ४ उस से नीचे की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ५ उस से बारवे अच्युत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ६ उस से इग्यारवे आरण देवलोक के देवता संख्यातगुने, +७ उस से प्राणत देव लोक के देवता संख्यातगुना, ८ उस से आनत देवलोक के देवता संख्यातगुने, उक्त प्रकार से ही इन को भी कहना ९ उस से सहस्रार कल्पवासी देव असंख्यातगुना, [क्यों कि घनाकार लोक उस की

+ यद्यपि आरण और अच्युत कल्प बराबरी से हैं और उन की विमान की संख्या भी एकसी है तथापि उत्तर दिशा से दक्षिण में कृष्ण पक्षिक जीव अधिक उत्पन्न होते हैं इस आश्रिय जानना जिन का अर्द्ध पुद्गल परावर्त से अधिक संसार भ्रमण होता है वे कृष्ण पक्षी कहे जाते हैं और कमी संसारवाले शुक्लपक्षी कहे जाते हैं.

अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवपुरिसा

एक प्रदेश की श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश होवे हैं उतने यह होते हैं]
१० उस से महाशुक्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने क्यों कि यो बहुत बड़ी ऐसी जो श्रेणि उस के
असंख्यातवे भाग में जो आकाश प्रदेश की राशी है उस प्रमान जानना और सहस्रार कल्प में छ हजार
विमान है, महा शुक्र में चालीस हजार विमान है इस लिये, ११ उस से लांतक देवलोक के देवता असं-
ख्यातगुन क्यों कि उस से भी बड़ी जो श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में उसका प्रमान है १२उस से ब्रह्मदेवलोक
के देवता असंख्यातगुने, उक्त प्रकार से भी बहुत बड़ी श्रेणि उस के असंख्यातवे भागमें रहे जो आकाश प्रदेशकी
१३ उस से माहेन्द्र कल्प के देवता असंख्यात गुने, १४ उस से सनत्कुमार के देवता असंख्यात गुने,
सनत्कुमार में बारलाख विमान है और माहेन्द्र देवलोक में आठलाख विमान हैं इस
माश्रिय तथा दक्षिण में कृष्ण पक्षी जीव अधिक उत्पन्न होवे उस आश्रिय
[सनत्कुमार से लगाकर सहस्रार देवलोक तक अलग २ अपने २ स्थान में विचारने
से घन कर लोककी एक श्रेणिके असंख्यात वे भाग में आकाश प्रदेश की राशी हैं उस के प्रमाण इन
का प्रमाण जानना एक श्रेणिकेही असंख्यात भाग किये हैं वह इस लिये कि उस के असंख्यात
भेद हैं इस लिये इस प्रकार कहा बहुत करी हैं] १५ उस से ईशान देवलोक के देवता असंख्यात

भवणवाति देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, वाणमंतर देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, जोतिसिय

गुने [क्योंकि प्रमाण मात्र क्षेत्र प्रदेश की राशी का दूसरा वर्ग मूल उसे तीसरे वर्ग मूल के वर्ग से गुना करने से जितनी प्रदेश की राशि हो उतनी संख्यावाली घन करे लोक की एक प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का जो बत्तीसवा भाग उस प्रमाण उन का प्रमाण) १६ उस से सौधर्म देवलोक के देवता संख्यात गुन (विमान के अधिक पने से सौधर्म में बत्तीस लाख और ईशान देवलोक में अठाईस लाख विमान हैं, तथा सौधर्म देवलोक दक्षिण दिशा में होने से वहां कृष्ण पक्षीक जीव अधिक उत्पन्न होते हैं और ऊपर के सब देवलोक में असंख्यात गुना कह कर यहां संख्यात गुने ही कहे यह वस्तु स्वभाव जानना) १७ उस से भवनपति देवता असंख्यात गुन) क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशि का प्रथम वर्ग मूल दूसरे वर्ग मूल से गिनते हुवे जितनी प्रदेश राशी होवे उतनी संख्या वाली घन करे लोक की एक प्रदेश श्रेणि उस में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का जो बत्तीसवा भाग उस प्रमाण उस का प्रमाण जानना) १८ उन से वाणव्यन्तर देव पुरुष संख्यात गुने [क्यों कि संख्यात योजन कोटा कोटी प्रमाण की जो एक प्रदेश श्रेणी मात्र जो टकडे के एक प्रतर में जितने होवे उसका ही बत्तीसवा भाग उस प्रमाण उन का प्रमाण है) और १९ उन से ज्योतिषी देवता संख्यात गुना क्यों कि दो सो छप्पन अंगुल प्रमाण का एक प्रदेश श्रेणि मात्र टुकडा उस एक प्रतर में जितने होवे उस के

दवपुरिसा संखेज्जगुणा ॥ २७ ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं, देव पुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोतिसियाणं वेमाणियाणं सोधम्माणं जाव सव्वट्ठसिद्धगाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अंतरदीवग मणुस्स पुरिसा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा, हरिवास रम्मवास अकम्मभूमग पुरिसा दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा, हेमवय हेरण्णवएवास अकम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि संखेज्जगुणा, भरहएरवयवास कम्मभूमग

सर्वार्थसिद्ध विमान के देव पुरुष संख्यात गुने हैं ॥२७॥ प्रश्न अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक के पुरुष तथा जलचर खेचर पुरुष तथा कर्मभूमि के पुरुष में कर्मभूमि के पुरुष अकर्मभूमि के पुरुष, अंतरद्वीप के, तथा देव पुरुष में भवनपतिदेव, वाणव्यंतरदेव ज्योतिषी देव, वैमानिक देव सौधर्म देव का पुरुष यावत् सर्वार्थ सिद्ध के देव इन में कौन २ कमी ज्यादा यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे अंतरद्वीप के पुरुष, २ उन से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उन से हरीवास रम्यकवास के पुरुष परस्पर तुल्य संख्यातगुना, ४ उन से हेमवय एरणवय के पुरुष परस्पर तुल्य संख्यातगुना, ५ उन से भरत क्षेत्र एरवत क्षेत्र के पुरुष संख्यातगुने, ६ उन से पूर्व महा विदेह पश्चिम महा विदेह के पुरुष

मणुस्स पुरिसा दोवि संखेज्जगुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि संखेज्जगुणा, अणुत्तरोववाति देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, उवरिमगेवेज्जग देव पुरिसा संखेज्जगुणा, मज्झिम गेवेज्ज देव पुरिसा संखेज्जगुणा, हिट्ठिमगेवेज्ज देव पुरिसा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देव पुरिसा संखेज्जगुणा, आरणकप्पेदेव पुरिसा संखेज्जगुणा, पाणयकप्प देव पुरिसा संखेज्जगुणा, आणतकप्पे देव पुरिसा संखेज्जगुणा, सहस्सार कप्पेदेव पुरिसा असंखेज्जगुणा, महसुक्ककप्पेदेव पुरिसा असंखेज्जगुणा, जाव माहिंद कप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, सणकुमार कप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, ईसाणकप्पे देव

संख्यातगुने, ७ उन से अनुत्तर विमान के देवता असंख्यातगुने, ८ उन से ऊपर के ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ९ उन से मध्यम ग्रैवेयक के देव संख्यातगुने, १० उन से नीचे के ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ११ उन से अच्युत देवलोक के देव संख्यातगुने, १२ उन से आरण देवलोक के देव संख्यातगुने, १३ उन से प्राणत कल्प के देव संख्यातगुने, १४ उनसे आणत कल्प क देव संख्यातगुने, १५ उन से सहस्रार देवलोक के देव असंख्यातगुने, १६ उन से महाशुक्र कल्प के देव असंख्यातगुने, १७ उन से लांतक देवलोक के देव असंख्यातगुना, १८ उन से माहेन्द्र देवलोक के देव असंख्यातगुना, १९ उन से सनत्कुमार देवलोक के देव असंख्यातगुना, २० उन से ईशान देवलोक के देव असंख्यातगुने,

पुरिसा असखेज्जगुणा, सोधम्मकप्पे देव पुरिसा सखेज्जगुणा, भवणवासि देव पुरिसा असखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा असखेज्जगुणा, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा, वाणमतर देव पुरिसा सखेज्जगुणा, जोतिसिय देव पुरिसा सखेज्जगुणा ॥ २८ ॥ पुरिस वेदस्सण भते! कम्मस्स केवइय काल बंधठिती पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेण अट्ठ सवच्छराणि, उक्कोसेण दस सागरोवम कोडाकोडीओ दस वाससयाइ अवाहा अवाधूणिया, कम्मट्ठिती कम्मणिसेओ ॥ २९ ॥ पुरिस वेदस्सण भते ! किं पगारे पण्णत्ते ?

२१ उस से सौधर्म देवलोक के देव असंख्यातगुने, २२ उन से भवनपति के देव पुरुष असंख्यातगुना, २३ उन से खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यातगुना, २४ उन से स्थलचर तिर्यंच पुरुष संख्यातगुना, २५ उन से जलचर तिर्यंच पुरुष संख्यातगुना, २६ उन से वाणव्यंतर देव पुरुष संख्यातगुना, २७ उन से ज्योतिषी देव पुरुष संख्यातगुना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! पुरुष वेद कर्म बन्ध की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य से आठ वर्ष (इस से कमी अच्छे बुरे अध्यवसाय का अभाव है) उत्कृष्ट दश सागरोपम कोडाकोडी उस में से एक वर्ष का जो इस का अबाधा काल है उतना कम मानना, इतनी कर्म बन्ध की स्थिति मानना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! पुरुष वेद

गोयमा ! वणदवग्गिजाल समाणे पण्णत्ते ॥ सेत पुरिसा ॥ ३० ॥ से किंतं णपुसगा २ तिविहा पण्णत्ता तजहा—णेरइय णपुसका, तिरिक्खजोणिय णपुसका, मणुस्स णपुसका ॥३१॥ से किंत णेरइय णपुंसका २ सत्तविहा पण्णत्ता तजहा-रतण-प्पभा पुढवि णेरइय णपुसका जाव अहे सत्तमा पुढवि णेरइय णपुसका ॥ सेत णेरइय णपुसका॥ से किंत तिरिक्खजोणिय णपुसका? तिरिक्खजोणिय णपुसका पचविहा पण्णत्ता तजहा एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका, बेइदिय, तेइदिय चउरिंदिय तिरिक्ख-

का विषय किस प्रकार का होता है ? उत्तर—अहो गौतम ! दावानल की ज्वाला समान अर्थात् आरंभ काल में तीव्र कामाग्नि दाह होता है और फिर कभी पडजावे ॥ ३० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुसक कितने प्रकार के कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ नारकी नपुंसक, २ तिर्यंच नपुसक, और ३ मनुष्य नपुंसक ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक के कितने प्रकार कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नरक नपुसक के सात प्रकार कहे हैं, वे यथा रत्नप्रभा पृथ्वी यावत् तमस्तम पृथ्वी यह नरक नपुंसक के भेद जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! पांच प्रकार कहे हैं वे यथा—१ एकेन्द्रिय नपुसक, २ बेइन्द्रिय नपुंसक, ३ तेइन्द्रिय नपुंसक, ४ चौरिन्द्रिय नपुसक, और ५ तिर्यंच पंचेन्द्रिय

जोणिय णपुंसका, पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणेगविहा पण्णत्ता सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया णपुंसका॥एव तेइंदिया वि॥ चउरिंदिया वि सेकिंत पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा ? पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा सोचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पंचिंदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह असन्नी होता है उस में एक ही भेद है यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत मणुस्स णपुंसका ? मणुस्स णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवका भेदो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ णपुंसकस्सणं भंते ! केवतियं कालंठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ नेरइय णपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ तिरिक्खजोणिय नपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! मनुष्य नपुंसक के तीन प्रकार कहे हैं १ कर्मभूमी नपुंसक, २ अकर्मभूमी नपुंसक और ३ अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुंसक ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन ! नपुंसक वेद की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की सातवी नरक की अपेक्षा जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागर की यों अलग २ सब नारकी की स्थिति अलग २ कहदेना प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

जोणिय णपुसका, पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजो-णिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका?बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका अणेगविहा पण्णत्तासेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणियाणपुसका॥एवं तेइंदियावि॥चउरिंदियावि सेकिंत पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसगा ? पचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा सोचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पंचिंदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—वे पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक. इन नपुसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसकी होता है उस में एक ही भेद है वह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत मणुस्स णपुंसका ? मणुस्स णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवका भेदो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ णपुंसकस्सणं भंते ! केवतियं कालठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ नेरइय णपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ तिरिक्खजोणिय नपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! मनुष्य नपुंसक के तीन प्रकार कहे हैं १ कर्मभूमी नपुंसक, २ अकर्मभूमी नपुंसक और ३ अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुंसक ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की सातवी नरक की अपेक्षा जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागर की यों अलग २ सब नारकी की स्थिति अलग २ कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

जोणिय णपुंसका, पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजो-णिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका?बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणेगविहा पण्णत्तासेत्त बइंदिय तिरिक्खजोणियाणपुंसका॥एवं तेइंदियावि॥चउरिंदियावि सेकिंतं पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा ? पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा सोचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पंचिंदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—वे पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसकी होता है उस में एक ही भेद है यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्ख सव्वेसिं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ मणुस्स णपुंसगस्सणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ कम्मभूमग भरहेरवय पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सणपुंसकस्सवि तहेव, अकम्मभूमक मणुस्सणपुंसकस्सण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अंतोमुहुत्त, साहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एवं जाव अन्तरदीवकाण ॥ ३३ ॥ णपुंसएण भंते ! णपुंसएति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं

भगवन् ! मनुष्य नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! क्षेत्र आश्रित जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष की और चारित्र धर्माचरन आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्षकी युगल नपुंसक नहीं होवे हैं; परंतु युगल मनुष्यके उच्चार प्रसवणादि चउदह स्थान में जो समूर्च्छिम मनुष्य होवे हैं उन में नपुंसक वेद पाता है उन की स्थिति अन्तरमुहूर्त की ही होती है और संहरण आश्रिय भी जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्ष की ही मानना वैसे ही अंतरद्वीप मनुष्य तक कहदेना ॥ ३३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक का नपुंसक

उक्कोसेण पुव्वकोडी एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकस्सण भते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकस्सण भते केवतिय कालठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीस वाससहस्साइ सव्वेसिं एगिंदिय णपुंसकाण ठिती भाणियव्वा॥ बेइदिय तेइदिय चउरिंदिय णपुसकाण ठिती भाणियव्वा॥ पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्सणं भते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी॥ एव जलयर तिरिक्ख, चउप्पद थलयर, उरगपरिसप्प, भुयगपरिसप्प, खहयर

की उत्कृष्ट पूर्व कोटि की प्रश्न– अहो भगवन्! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है? उत्तर–अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की, पृथ्वीकाय की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष, अप्काय की सात हजार वर्ष, तेउकाय की तीन अहोरात्रि, वायुकाय की तीन हजार वर्ष की, वनस्पतिकाय की दश हजार वर्ष की, बेइन्द्रिय की बारा वर्ष की, तेइन्द्रिय की ४९ दिन की, चौरिन्द्रिय की छ महीने की, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनी की क्रोड पूर्व की युगल तिर्यंच नपुंसक नहीं होते हैं इसलिये, और इन तिर्यंच की जघन्य स्थिति अन्तरमुहूर्त की जानना प्रश्न—अहो

काणय जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जकाल पण्णत्ता; पचेंदिय तिरिक्ख जोणिय नपुसएण भते ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी पुहुत्त, एव जलयर तिरियचउप्पर थलयर उरपरिसप्प, महोयरगाणवि । मणुस्स णपुसकरसण भते ? गोयमा! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडिय पुहुत्त, धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एव कम्म भूमभरहेरवय पुव्वविदह अवरविदेहेसुवि भाणियव्व, अकम्मभूमक मणुस्सणपुसएण भते !

जानना विशेष में पृथव्यादि चारों स्थावर की असंख्यात काल की, वनस्पति की अनन्त काल की, तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष पृथक्त्व की (आठ भव पूर्व कोटी का जानना) इस प्रकार ही जलचर, स्थलचर, उरपरकी, भुजपरकी तथा महोरग तिर्यंच नपुंसक की स्थिति जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक की कायास्थिति कितने काल की है ? उत्तर—अहो गौतम ! क्षेत्र आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी पृथक्त्व जानना, धर्माचरण आश्रिय जघन्य एक समय की उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटी वर्ष की जानना इस ही प्रकार भरत एरवत क्षेत्र में तथा पूर्व पश्चिम महा विदेह के मनुष्य नपुसक की स्थिति जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुसक की स्थिति कितनी है ! उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य भी अंतर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट भी अंत-

एक समय उक्कोसेण तरुकालो ॥ नेरइय णपुंसएण भंतेत्ति ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं, एवं पुढवीओ ठिती भाणियव्वा ॥ तिरिक्खजोणिय णपुंसएण भंतेत्ति ? गोयमा ! तिरिक्खजोणिय नपुंसएण जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो, एव एगिंदियनपुंसकस्स, वणस्सइ कायस्सवि एवमेव सेसाण जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल असखेज्जाओ उस्सप्पिणिओ कालतो, खेत्तो असखेज्जा लोया ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय नपुंस-

पने रहे तो कितने काल तक रहता है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक समय (उपशम श्रेणि से पडकर आश्रिय एक समय वेद को स्पर्श मनुष्य पूर्ण करे देव होवे इस आश्रिय) और उत्कृष्ट वनस्पति का काल मानना (आवलिका के असख्यातवे भाग में जो समय की राशी है उस प्रमाण पुद्गल परावर्तन को वनस्पति का काल कहते हैं) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक का जीव नपुंसक नरक के नपुंसकपने रहे तो कितना काल रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम (नरक मरकर पुन नरक का भव नहीं करता है इस आश्रिय मानना) ऐसे ही मबस्थिति जैसे सातों नरक का कहना अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक नपुंसकपने रहे तो कितने काल तक रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के जितना काल

एव सव्वासि जाव अहे सत्तमा तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्स जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेणं सागरोवम सतपुहुत्त सातिरग॥एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दोसागरोवम सहस्साइ सखज्जवास मब्भहियाइ,पुढवि आउतेउ वाऊण जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो, वणस्सति काइयाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्को-सेण असखेज्ज कालं जाव असखेज्जालोया, सेसाण बेंदियादीण जाव खहयराण

मुहूर्त का उत्कृष्ट कुछ अधिक प्रत्येक सौ सागरोपम ॥ एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक का जघन्य अन्तर मुहूर्त का उत्कृष्ट संख्यात वर्ष अधिक दो हजार सागरोपम का [त्रस काय की कायस्थिति इतने काल की है इस लिये एकेन्द्रिय का इतना अन्तर पडे] पृथ्वी, पानी, तेऊ, वायु इन चार स्थावरों का जघन्य अन्तरमुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जानना वनस्पति काय का जघन्य अन्तर मुहूर्त का उत्कृष्ट असंख्यात काल का, और क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश प्रदेशों का समय २ एकेक प्रदेश एकेक समय में हरन करते उस में जितनी उत्सर्पिनी अवसर्पिनी होवे उतना वनस्पति के भव से मरकर दूसरे में उत्कृष्ट इतने काल रहने का संभव है, फिर संसारी जीव नियमा से वनस्पति में आवतरे बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय तिर्यंच नपुंसक का तथा जलचर स्थलचर खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक का

गोयमा! जम्मगं पडुच जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त (अंतोमुहुत्त पुहुत्त) सहरण पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एवं सव्वेसिं जाव अंतरदीवगाण ॥ २४ ॥ णपुंसगस्सणं भंते! केवतियं कालं अंतरं होति? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्त सातिरेगं ॥ नेरइय णपुंसकस्सण भंते! केवतियं कालं अंतरं होति? गो॰ जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तरुकालो ॥ रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसकस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तरुकालो ॥

मुहूर्त पृथक्त्व की, संहरन आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटि वर्ष की ऐसे ही हेमवय एरणवय हरीवास रम्यक्वास देवकुरु उत्तरकुरु में संमूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य की स्थिति मानना ॥२४॥ प्रश्न—अहो भगवन्! नपुंसक नपुंसकपने को छोडकर पीछा नपुंसक होवे उसके बीच में कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त का उत्कृष्ट कुछ अधिक प्रत्येक सो सागरोपम का प्रश्न—अहो भगवन्! नारकी नपुंसक मरकर पीछा नारकी नपुंसक होवे उस के बीच में कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त (नारकी मर तिर्यंच या मनुष्य का भव अंतर्मुहूर्त की स्थिति का कर पीछा नरक में उत्पन्न होवे इस आश्रिय,) उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना अन्तर जानना इस ही प्रकार रत्नप्रभा आदि सातों ही नरक का अन्तर जानना ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक का जघन्य अन्तर

वणस्सतिकालो, संहरणं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सतिकालो; एवं जाव अंतरदीवगाति ॥ ३५॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय नपुंसकाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं मणुस्स णपुंसकाणय कयरे२ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसका, नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय णपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढवि नेरइयं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

कुरु उत्तर कुरु तथा अंतरद्वीप के मनुष्य नपुंसक का अंतर मानना, तथा साहरन आश्रिय भी जघन्य उत्कृष्ट अंतर कहना ॥ ३५ ॥ अब पांच प्रकार से अल्पाबहुत कहते हैं (१) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक इन में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य नपुंसक, क्यों कि श्रेणि के असंख्यातवे भाग में वर्तती जो आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाण है, २ उन से नरक नपुंसक असंख्यातगुना क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशी उस में रहा जो वर्ग मूल उस से गुनाकार करने से जितनी प्रदेश राशी होवें उतने प्रमान में घनाकार लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतनी प्रमाण हैं इस लिये और ३ उन से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने हैं क्यों कि निगोद के जीव अनंत है

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो मणुस्स णपुंसकस्स खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सति कालो ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेह अवरविदेहकस्सवि ॥ अकम्मभूमक मणुस्स णपुंसकस्सणं भंते! केवतिय कालं अंतरं होति? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

तथा सामान्य से मनुष्य नपुंसक का इन सब के नपुंसक वेद का अंतर जघन्य अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट अनंत काल का—वनस्पति काल जितना ॥ कर्मभूमि नपुंसक का क्षेत्र आश्रिय अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना धर्माचरन आश्रिय जघन्य एक समय [पडवाइ आश्रिय] उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना, यावत् देश कम आधा पुद्गल परावर्तन का, ऐसे ही भरत एरवत क्षेत्र, पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के कर्मभूमि मनुष्य नपुंसक का कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक का कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जन्म आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, संहरन आश्रिय—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना; ऐसे ही हेमवंत हरणवंत हरीवर्ष रम्यकवर्ष देव-

वणस्सतिकालो, सहरणं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सतिकालो, एवं जाव अंतरदीवगाति ॥ ३५॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय नपुंसकाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण मणुस्स णपुंसकाणय कयर२ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसका, नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय णपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढवि नेरइयं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

कुरु उत्तर कुरु तथा अंतरद्वीप के मनुष्य नपुंसक का अंतर मानना, तथा साहरन आश्रिय भी जघन्य उत्कृष्ट अंतर कहना ॥ ३९ ॥ अब पांच प्रकार से अल्पाबहुत कहते हैं (१) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक इन में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य नपुंसक, क्यों कि श्रेणि के असंख्यातवे भाग में वर्तती जो आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाण है, २ उन से नरक नपुंसक असंख्यातगुना क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशी उस में रहा जो वर्ग मूल उस से गुनाकार करने से जितनी प्रदेश राशी होवे उतने प्रमान में घनाकार लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतने प्रमाण हैं इस लिये और ३ उन से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने हैं क्यों कि निगोद के जीव अनंत हैं

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वनस्सतिकालो मणुस्स णपुंसकस्स खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अणंतकाल जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट, देसूण एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेह अवरविदेहकस्सवि ॥ अकम्मभूमक मणुस्स णपुंसकस्सण भंते! केवतिय काल अंतर होति? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण

तथा सामान्य मे मनुष्य नपुंसक का इन सब के नपुंसक वेद का अंतर जघन्य अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट अनंत काल का—वनस्पति काल जितना ॥ कर्मभूमि नपुसक का क्षेत्र आश्रिय अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना चर्याचरन आश्रिय जघन्य एक समय [पडवाइ आश्रिय] उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना, यावत् देश कम आधा पुद्गल परावर्तन का, ऐसे ही भरत एरवत क्षेत्र, पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के कर्मभूमि मनुष्य नपुंसक का कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुसक का कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जन्म आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, संहरन आश्रिय—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना, ऐसे ही हेमवंत हेरणवंत हरीवर्ष रम्यक्वर्ष देव-

जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका, थलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, जलचर तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिय तेइंदिय विसेसाहिया, बेइंदिय विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया, एवं आउ वाउ वणस्सति काइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय

चौरिन्द्रिय में पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक में व जलचर स्थलचर खेचर नपुंसक इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे खेचर नपुंसक, २ उस से स्थलचर नपुंसक संख्यातगुने, ३ उससे जलचर नपुंसक संख्यात गुने, ४ उस से चउरिन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक ५ उस से तेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ६ उस से बेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ७ उस से तेउकायिक एकेन्द्रिय नपुंसक असंख्यातगुने, ८ उस से पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ८ उस से अप्काय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ९ उस से वायुकाय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, और १० उस से वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! कर्मभूमि मनुष्य के नपुंसक, अकर्मभूमि मनुष्य नपुंसक, और अंतरद्वीप के नपुंसक में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे अंतरद्वीप के सम्मूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक, २ उस से देव कुरु

अहेसत्तमपुढवि नेरइय णपुंसका, छट्ठपुढवि णेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, जाव दोच्च पुढवि नेरइय णपुसका असंखेज्जगुणा, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण पुढविकाइय एगिंदिय णपुंसकाणं जाव वणस्सकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण, बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण तेइंदिय चउरिंदिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जलयर थलयर खहयराणय कयरे २ हिंतो

प्रश्न अहो भगवन् ! नरक के नपुंसक में रत्नप्रभा से लगाकर तमस्तम प्रभा तक परस्पर कौन २ अल्पबहुत, यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे नीचे की सातवी नरक के नपुंसक क्यों कि वे अति थोडी श्रेणि के असंख्यात भाग में, रहे हुवे जो आकाश प्रदेश राशी होवे उस प्रमान हैं २ उस से छठी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यात गुने, ४ उस से चौथी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यात गुने और उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यात गुने, ७ उस से प्रथम नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, इन सातों नरकमें पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नेरीये से दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुने हैं, क्यों कि कृष्ण पक्षी जीव दक्षिण दिशा में अधिक उत्पन्न होते हैं २ प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक पृथ्व्यादि पांचों-स्थावर में, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय

क्खजाणिय णपुसकाण जाव वणस्सति काइय एगिंदिय णपुसगाण, बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण जलयराण थलयराण खहयराणं मणुस्स णपुंसकाणं कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतर दविकाणय कयरे२ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवि नेरइय नपुसका, छट्ठ पुढवि नेरइय नपुसका असंखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय णपुसका असंखेज्जगुणा, अतरदीवग मणुस्स णपुसका असंखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि संखेज्जगुणा, जाव पुव्वविदेह

मु मे अंतरद्वीप इन सब में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? उत्तर-अहो गौतम! १ सब से थोडे सातवी नरक के नपुंसक, २ उस से छठी के असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यातगुने, ४ उस से चौथी नरकके असंख्यातगुन ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुणा, ६ उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ७ उस से अंतरद्वीप के नपुंसक संख्यातगुने, ८ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य असंख्यातगुने, ९ उस से हरिवास रम्यकवास के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १० उस से हेमवत एरणवय के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य पीछे से संख्यातगुने, ११ उस से भरतएरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य

णपुंसका अणतगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्म-भूमिक णपुंसकाण अंतर दीवकाणय कतरे२ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अंतरदीवगा अकम्मभूमग मणुस्स णपुंसका देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म भूमगा दोवितुल्ला सखेज्जगुणा, एव जाव पुव्वविदह अवरविदेह कम्म भूमग मणुस्सणपुंसगा दोवी संखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥ एतेसिणं भंते! नेरइय णपुंसकाणं रयणप्पभा पुढवी नेरइय णपुंसकाण जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइय णपुंसकाण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणियाण पुढविकाइय एगिंदिय तिरि-

त्तर कुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य सख्यातगुने, ३ उस से हरिवास रम्यकवास के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुन, ४ उस से हेमवय एरणवय के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य सख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ६ उस से पूर्व महाविदेह के और पश्चिम महा विदेह के मनुष्य परस्पर तुल्य और भरत एरवत से सख्यातगुने अधिक ॥ १९ ॥ (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक रत्नप्रभा से सातवी नरक तक, तथा तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय पृथ्वीकाया से आरंभ कर यावत् वनस्पतिकाया तक; तथा बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिंद्रिय, पंचेन्द्रिय में जलचर स्थलचर खेचर, और मनुष्य नपुंसक में कर्मभूमि अकर्म-

क्खजोणिय णपुसकाण जाव वणस्सति काइय एगिंदिय णपुसगाण, वेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण जलयराण थलयराण खहयराणं मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतर दीविकाणय कयरे२ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवि नेरइय नपुसका, छट्ठ पुढवि नेरइय नपुसका असंखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय णपुसका असंखेज्जगुणा, अतरदीवग मणुस्स णपुसका असंखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि संखेज्जगुणा, जाव पुव्वविदेह

मुवे अंतरद्वीप इन सब में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? उत्तर-अहो गौतम! १ सब से थोडे सातवी नरक के नपुंसक, २ उस से छट्ठी के असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यातगुने, ४ उस से चौथी नरक के असंख्यातगुन ५ उस से तीसरी नरक के नपुसक असंख्यातगुणा, ६ उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ७ उस से अंतरद्वीप के नपुंसक संख्यातगुने, ८ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य असंख्यातगुने, ९ उस से हरिवास रम्यक्वास के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १० उस से हेमवत एरणवय के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य पीछे से संख्यातगुने, ११ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य

णपुंसका अणंतगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्स णपुंसकाणं कम्मभूमिकाणं अकम्म-
भूमिक णपुंसकाण अंतर दीवकाणय कतरे२जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा
अतरदीवगा अकम्मभूमगा मणुस्स णपुंसका देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म
भूमगा दोवितुल्ला संखेज्जगुणा, एवं जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्म
भूमग मणुस्सणपुंसगा दोवी संखेज्जगुणा ॥ २१ ॥ एतेसिणं भंते! नेरइय णपुंसकाणं
रयणप्पभा पुढवी नेरइय णपुंसकाण जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइय णपुंसकाण
तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुढविकाइय एगिंदिय तिरि-

उत्तर कुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उन से हरिवास रम्यक्वास के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उन से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ६ उन से पूर्व महाविदेह के और पश्चिम महा विदेह के मनुष्य परस्पर तुल्य और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक ॥ २१ ॥ (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक रत्नप्रभा से सातवी नरक तक, तथा तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय पृथ्वीकाया से आरंभ कर यावत् वनस्पतिकाया तक; तथा बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिंद्रिय, पंचेन्द्रिय में जलचर स्थलचर खेचर, और मनुष्य नपुंसक में कर्मभूमि अकर्म-

वेदस्सणं भंते ! केवइकाल ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागाण ऊणगा, उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ, दोन्निय वाससहस्साइं, अबाधा अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ ३८ ॥ णपुंसकवेदेण भंते ! किं पकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाह समाणे पण्णत्ते समणाउसो ! सेत्त णपुंसगा ॥ ३९ ॥ एतेसिण भंते ! इत्थीण पुरिसाणं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहिया ? गोयमा !

उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम के सात भाग करे उस में के दो भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम जितनी और उत्कृष्ट बीस क्रोडाकोड सागरोपम प्रमाण अबाधा काल दो हजार वर्ष का अर्थात् नपुंसक वेद मोहनीय कर्म का बन्ध किये बाद उत्कृष्ट दो हजार वर्ष पीछे यह नपुंसक भाव को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद का विषय (वेदोदय का विकार) किस प्रकार का कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! जिस प्रकार बहुत बड़ा नगर आग्नि कर प्रज्वलित हुवा बहुत काल तक प्रज्वलित रहता है, तैसे ही नपुंसक का वेदोदय सदैव प्रज्वलित रहता है, प्रश्न अहो श्रमण आयुष्मन्तो ! ऐसा नपुंसक वेदोदय कहा है इति नपुंसक वेदाधिकार ॥ ३९ ॥ अब तीनों वेद के आश्रिय आठ प्रकार से अल्पाबहुत्व कहते हैं इन आठों में प्रथम सामान्य प्रश्न अहो भगवन् ! स्त्री पुरुष और नपुंसक इन में

अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स णपुंसका दोवि संखेज्जगुणा, रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, थलयर संखेज्जगुणा जलयर संखेज्जगुणा, चतुरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइय एगिंदिय णपुंसगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया एगिंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, आउकाइया णपुंसगा विसेसाहिया, वाउकाइय विसेसाहिया वणस्सइकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ २७ ॥ णपुंसक

पीछे जैसे संख्यातगुने, १२ उस से पूर्व विदेह पश्चिम विदेह के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १३ उस से प्रथम नरक के नेरीये नपुंसक असंख्यातगुने, १४ उस से खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक असंख्यातगुने, १५ उस से स्थलचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुने, १६ उस से जलचर तिर्यंच नपुंसक असंख्यातगुने, १७ उस से चौरिन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, १८ उस से तेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक १९ उस से बेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक. २० उस से तेजस्काय असंख्यातगुने, २१ उस से पृथ्वीकाय नपुंसक विशेषाधिक, २२ उससे अपकाय नपुंसक विशेषाधिक, २३ उससे वायुकाय नपुंसक विशेषाधिक और २४ उससे वनस्पतिकाय नपुंसक अनंतगुने ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! नपुंसक वेद कर्म की स्थिति

वेदस्सणं भंते ! केवइकाल ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागाण ऊणगा, उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ, दोण्णिय वाससहस्साइं, अबाधा अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ ३८ ॥ णपुंसकवेदेण भंते ! किं पकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाह समाणे पण्णत्ते समणाउसो ! सेत्त णपुंसगा ॥ ३९ ॥ एतेसिण भंते ! इत्थीण पुरिसाणं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहिया ? गोयमा !

उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम के सात भाग करे उस में के दो भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम जितनी और उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाण अबाधा काल दो हजार वर्ष का अर्थात् नपुंसक वेद मोहनीय कर्म का बन्ध किये बाद उत्कृष्ट दो हजार वर्ष पीछे वह नपुंसक भाव को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद का विषय (वेदोदय का विकार) किस प्रकार का कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! जिस प्रकार बहुत बडा नगर आग्नि कर प्रज्वलित हुआ बहुत काल तक प्रज्वलित रहता है, वैसे ही नपुंसक का वेदोदय सदैव प्रज्वलित रहता है, प्रश्न अहो श्रमण आयुष्मन्तो ! ऐसा नपुंसक वेदोदय कहा है इति नपुंसक वेदाधिकार ॥ ३९ ॥ अब तीनों वेद के आश्रिय आठ प्रकार से अल्पाबहुत्व कहते हैं इन आठों में प्रथम सामान्य प्रश्न अहो भगवन् ! स्त्री पुरुष और नपुंसक इन में

सव्वत्थोवा पुरिसा, इत्थीओ संखेज्जगुणाओ, णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीण तिरिक्खजोणिय, पुरिसाण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिय पुरिसा, तिरिक्खजोणिइत्थीओ संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्सित्थीण मणुस्स पुरिसाण मणुस्स णपुंसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स पुरिसा मणुस्सित्थीओ

कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष वेदी, उन से स्त्री वेदी संख्यातगुने हैं, उस से नपुंसक वेदी अनंतगुने हैं (२) अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक स्त्री पुरुष और नपुंसक में कौन २ कमी ज्यादा विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे तिर्यंच योनिक पुरुष, २ उस से तिर्यंचनी स्त्रीयों संख्यातगुनी और ३ उस से तिर्यंच नपुंसक अनंतगुने (३) प्रश्न अहो भगवन् ! मनुष्य की स्त्री पुरुष और नपुंसक में कौन २ ज्यादा कमी विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष हैं, २ उस से मनुष्य की स्त्री संख्यातगुनी, सत्तावीसगुनी है ३ उस से मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुन, संमूर्च्छिम आश्रिय (४) प्रश्न—अहो भगवन् ! देवकी स्त्रीयों पुरुष और (देवता में नपुंसक वेद नहीं पाता है इसलिये नरक निकाली है) नारकी के नपुंसक इन में अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक कौन २ हैं ?

सखेज्जगुणाओ, मणुस्स णपुसका असखेज्जगुणा ॥ एतेसिण भते ! देवित्थीण देव पुरिसाण नेरइय नपुसकाणय, कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थे वा नेरइय नपुसगा, देव पुरिसा असखेज्जगुणा, देवित्थीओ सखेज्जगुणीओ ॥ एतेसिण भते तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणिय पुरिसाण तिरिक्खजोणिय नपुसगाणं, मणुस्सित्थीण मणुस्स पुरिसाण मणुस्सनपुसगाण, देवित्थीण देव पुरिसाण, नेरइय नपुसकाण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स पुरिसा,

उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे नरक के नपुंसक (नरक में स्त्री वेद पुरुष वेद का अभाव है) क्यों कि अगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशी का प्रथम वर्ग मूल का गुना करने से जितने प्रदेश की राशी होवे उस का घन किया सो लोक उस की प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उतने प्रमाण में उन का प्रमाण है, २ उन से देव पुरुष असंख्यात गुने, क्यों कि असंख्यात योजन कोडाक्रोडी प्रमान सूची में जितने आकाश प्रदेश होवें उतने धनकरे हुवे लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश होवे उस प्रमाण में उन का प्रमाण है, और उस से देवता की स्त्री संख्यातगुनी, क्यों कि बत्तीस गुनी, है (४) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक स्त्रीयों पुरुषो तथा नपुंसक वैसे ही मनुष्य योनिक स्त्री पुरुष तथा नपुंसको, वैसे ही देवकी स्त्री तथा पुरुषों और वैसे ही नारकी के नपुंसको इन में कौन २ कमी ज्यादा

मणुस्सित्थीओ संखेज्जगुणाओ, मणुस्स णपुंसका असंखेज्जगुणा, नरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय पुरिसा असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ, देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतासिणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीण जलयरीण, थलयरीण खहयरीण तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जलयराण थलयराण खहयराण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण पुढवि काइय एगिंदिय तिरिक्ख-

तथा विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे मनुष्य पुरुष, २ उस से मनुष्य स्त्रियों संख्यात गुनी, ३ उस से मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुने, ४ उस से नारकी नपुंसक असंख्यातगुने, क्योंकि संख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश की राशी प्रमाण है ५ उस से तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुने, क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग वर्तती जो असंख्यात श्रेणि प्रदेश की राशी उस प्रमाण हैं, ६ उससे तिर्यंच योनिक स्त्री संख्यातगुनी क्यों कि तीन गुनी हैं, ७ उस से देव पुरुष असंख्यातगुने क्यों कि वहुत बडी प्रतर के असंख्यातवे भाग वर्तती जो असंख्यात श्रेणि प्र स आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाणे हैं, ८ उस से देवीयों संख्यातगुनी क्यों कि बत्तीसगुनी है, ९ उस से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनन्तगुने, निगोद आश्रित (५) प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक जीवों जलचर की

जोणिय णपुंसकाण जाव वणस्सतिकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय नपुंसगाणं, बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण, तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जलयराण थलयराण खहयराण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्ज गुणाओ, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा थलयर तिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ, जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, जलयर तिरिक्ख-

स्थलचर की तथा खेचर की स्त्रियों, तैसे ही तिर्यंच पशुओं जलचर स्थलचर तथा खेचर पुरुषों, तैसे ही तिर्यंच नपुंसक एकेन्द्रिय पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया, बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय नपुंसक, जलचर स्थलचर खेचर नपुंसक, इन सब में कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! १ सब से थोडे खेचर पुरुष, २ उस से खेचरनी संख्यातगुनी, ३ उस से स्थलचर पुरुष संख्यातगुने, ४ उस से स्थलचरनी संख्यातगुनी, ५ उस से जलचर पुरुष संख्यातगुने, ६ उस से जलचरनी संख्यातगुनी, ७ उस से खेचर नपुंसक संख्यातगुने, ८ उस से स्थलचर नपुंसक संख्यातगुने, ९ उस से जलचर नपुंसक संख्यातगुने, १० उस से चउरिन्द्रिय विशेषाधिक, ११ उस से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, १२ उस से बेइन्द्रिय विशेषाधिक, १३ उस से तेउकाया असंख्यातगुनी, १४ उस से पृथ्वीकाया विशे

जोणित्थीयाओ संखेज्जगुणओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, थलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुंसगा संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका पंचेंदिया संखेज्जगुणा चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिय, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, पुढवि णपुंसका विसेसाहिया आउ नपुंसका विसेसाहिया, वाउनपुंसका विसेसाहिया वणप्फइ एगिंदिय णपुंसका

पाधिक, १५ उस से अप्काया विशेषाधिक, १६ उस से वायुकाया विशेषाधिक, १७ उस से वनस्पति-काया एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने (३) प्रश्न—अहो भगवन् ! कर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अकर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अंतरद्वीप मनुष्य पुरुषों, सामान्यपने नपुंसकों, कर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अकर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अंतरद्वीप मनुष्य नपुंसकों, इन में कौन २ अल्प बहुत यावत् विशेष है ? उत्तर—अहो गौतम ! अंतरद्वीप के मनुष्य स्त्रियों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और सब से थोडे हैं क्यों कि युगलिये हैं, २ उससे देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य स्त्री पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत के मनुष्य पुरुषों संख्यातगुने,

अणतगुणा ॥ एतासिण भते ! मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाण अकम्मभूमियाण अतरदीवीयाण मणुस्स पुरिसाण कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतरदीविकाणं मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमगाणं, अकम्मभूमगाण अतरदीविकाणय कयरे२हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमक मणुसित्थियाओ मणुस्स पुरिसाए एतेसिण दोण्णि तुल्ला स०त्थोवा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमक मणुस्सित्थियाओ मणुस्स पुरिसाओ एतेसिण दोण्णावि तुल्ला सखज्जगुणा, हरिवास रम्मकवास अकम्म-

६ उस स भरव परवत क्षेत्र की स्त्रीयों परस्पर तुल्य और संख्यातगुनी क्यों कि सत्ताबीस गुनी है ७ उस से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के पुरुषों परस्पर तुल्य भरत एरवत से सख्यातगुने अधिक, ८ उस से पूर्व महाविदेह पश्चि। महाविदेह स्त्री यों परस्पर तुल्य उस से सख्यातगुनी अधिक है क्योंकि सत्ताइस गुनी है, ९ उस में अकर्मभूमि के मनुष्य नपुसक असंख्यातगुने ,१० उस से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य नपुंसक दोनों असख्यातगुने अधिक, ११ उस से हरीवास रम्यक वास के मनुष्य नपुंसकों दोनों परस्पर तुल्य सख्यातगुने अधिक, १२ उस मे हेमवय एरणवय के मनुष्य नपुसकों दोनों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १३ उस से भरतैरावत के मनुष्य नपुसको परस्पर तुल्य सख्यातगुन, १४ उन से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के मनुष्य नपुंसको परस्पर तुल्य भरतए रावत से सख्यातगुने अधिक [७] प्रश्न—अहो भगवन् ! देवता की स्त्रीयों सामान्य

जोणित्थीयाओ संखेज्जगुणओ खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुंसगा संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका पचेंदिया संखेज्जगुणा चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिय, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, पुढवि णपुंसका विसेसाहिया आउ नपुंसका विसेसाहिया, वाउनपुंसका विसेसाहिया वणप्फइ एगिंदिय णपुंसका

पाधिक, १५ उस से अप्काया विशेषाधिक, १६ उस से वायुकाया विशेषाधिक, १७ उस से वनस्पति-काया एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने (६) प्रश्न—अहो भगवन्! कर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अकर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अंतरद्वीप मनुष्य पुरुषों, सामान्यपने नपुंसकों, कर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अकर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अंतरद्वीप मनुष्य नपुंसकों, इन में कौन २ अल्प बहुत यावत् विशेष हैं? उत्तर—अहो गौतम! अंतरद्वीप के मनुष्य स्त्रियों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और सब मे थोडे हैं क्यों कि युगलिये हैं, २ उससे देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य स्त्री पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत के मनुष्य पुरुषों संख्यातगुने,

असखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्स णपुसका दोवि सखेज्जगुणा, एव तहेव जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमक मणुस्स णपुसका दोवि सखेज्जगुणा ॥ एतासिण भते ! देवित्थीण भवणवासीण वाणमतरीण जोइसिण वेमाणिणीण देवपुरिसाण भवणवासीण जाव वेमाणियाण सोधम्मकाण जाव गेविज्जकाण अणुत्तरोववाइयाण, नेरइय णपुसकाण रयणप्पभा पुढवि नेरइय

नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १२ उस से आठवे सहस्रार देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १३ उस से सातवे महाशुक्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १४ उस से पांचवी नरके नेरीये असंख्यातगुने, १५ उस से छठे लांतक देवलोक के देव असंख्यातगुने, १६ उस से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने १७ उस से पांचवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १८ उस से तीसरी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १९ उस से चौथे महेन्द्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उस से तीसरे सनत्कुमार देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उस से दूसरी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उस से दूसरे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उस से दूसरे देवलोक की देवी संख्यातगुनी, २४ उस से प्रथम देवलोक के देवता संख्यात गुने, २५ उस से प्रथम देवलोक की देवी संख्यातगुनी, २६ उस से भवनपति देवता असंख्यात

भूमक मणुस्सित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाय एतेण दोण्णिवि तुल्ला सखेज्जगुणा, हेमवते हेरण्णवते अकम्मभूमक मणुस्सित्थीओ मणुस्स पुरिसाय दोवितुल्ला सखेज्जगुणा, भरहेरवत कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा, भरहेरवय मणुस्सित्थीयाओ दोवि सखेज्जगुणा, पुव्वविदेह अवरविदह कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि सखेज्जगुणा, अतरदीवग अकम्मभूमग मणुस्स णपुसका

पने, भवनपति की स्त्रीयों वाणव्यन्तर की स्त्रीयों ज्योतिषी की स्त्रीयों तथा वैमानिक की स्त्रीयों तथा देवता पुरुषो भवनपति से वैमानिक तक तथा सौधर्म देवलोक से लगाकर सर्वार्थसिद्ध तक, तथा नारकी नपुंसकों रत्नप्रभा से सातवी नरक तक इन सब में कौन २ कम ज्यादा बराबर विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! १ सब से थोडे अनुत्तर विमान वासी देव पुरुषों, २ उन से ऊपर की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ३ उस से मध्य की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ४ उस से नीचे के ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ५ उस से बारवे अच्युत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ६ उस से इग्यारवे आरन देवलोक के देवता संख्यातगुने, ७ उस से दशवे प्राणत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ८ उस से नववे आणत देवलोक के देवता संख्यातगुना, ९ उस से सातवी नारकी के नेरीये नपुसक असंख्यातगुना, १० उस से छट्टी

असंखेज्जगुणा, बमलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, तच्चाए पुढवीए नेरइया असं-खेज्जगुणा माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, सणकुमारे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा दोच्चा पुढवि नेरइय णपुसका असंखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा ईसाणे, कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा, संखेज्जगणा, सोधम्मे कप्पे देवि-त्थियाओ संखेज्जगुणाओ भवनवासि देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, भवणवासि देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, इमीसे रयणप्पभा पुढवि नेरइया असंखेज्जगुणा, वाणमंतर देवपुरिसा असं-

मनुष्य की स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों, कर्मभूमी अकर्मभूमी अंतर्द्वीप के पुरुषों, देवता की स्त्रीयों भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा प्रथम दूसरे देवलोक की स्त्रीयों, तथा देव पुरुषों भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी सौधर्म देवलोक यावत् सर्वार्थ सिद्ध तक के देवता नरक के नपुंसको तथा रत्नप्रभा से यावत् तमस्तमः प्रभा नरक के नेरीये, इन में कौन २ किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! १ सब से थोडे अंतर्द्वीप के मनुष्य और स्त्रीयों परस्पर तुल्य है, २ देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और अंतर्द्वीप से संख्यातगुने अधिक हैं, ३ हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्रीयों और मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और कुरु क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ४ हेमवय

-णपुंसकाण जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइय णपुंसगाण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववातिया देवपुरिसा, उवरिमगेवेज्जा देवपुरिसा संखेज्जगुणा, तहेव जाव आणतकप्पे देवपुरिसा सखेज्जगुणा, अहे सत्तमाए पुढविए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, छट्ठीए पुढवीए नेरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, सहस्सारेकप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पेदेवा असंखेज्जगुणा, पंचमाए पुढवीए नेरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, लंतएकप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पुढवीए नेरइय णपुंसका

गुने, २७ उस से भवनपति की देवीयों संख्यातगुनी, २८ उस से पहिली नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २९ उस से वाणव्यन्तर देवता असंख्यातगुने, ३० उस से वाणव्यंतर की देवीयों संख्यातगुनी, ३१ उस से ज्योतिषी देवता संख्यातगुने, ३२ उस से ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिकी स्त्रीयों जलचर स्थलचर और खेचर की स्त्रीयों, तिर्यंच योनिक पुरुष, जलचर स्थलचर और खेचर पुरुष, तिर्यंच योनिक नपुंसक पृथ्वीकाय—अप्काय—तेउकाय—वायुकाय वनस्पतिकाया तिर्यंच योनिक नपुंसक, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय नपुंसक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक जलचर स्थलचर और खेचर नपुंसक, कर्मभूमी मनुष्य की अकर्मभूमी मनुष्य की चार अवरद्वी-

संहयराण मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाण अतरदीवयाण मणुस्स पुरिसाण कम्मभूमकाण अकम्मभूमकाणं अतरदीवकाण मणुस्स णपुसकाण, कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतरदीवकाण, देवित्थीण भवणवासिणीण वाणमंतरीणं जोतिसीण वेमाणिणीण, देवपुरिसाण भवणवासीण वाणमतराण जोतिसियाण वेमाणियाणं, सोधम्मकाणं जाव गेविज्जकाणं, अणुत्तरोववाइयाण, नेरइय णपुसकाणं रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुसकाण जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइय णपुसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमिक मणुस्सित्थीओ मणुसपुरिसस्य एतेण दोवितुल्ला

सख्यातगुने, १३ उन से बारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १४ उन से इग्यारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १५ उन से दशवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १६ उन से नवबे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १७ उन से सातवी नरक के नेरीये असख्यातगुने, १८ उन से छठी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १९ उन से आठवे देवलोक के देवता असख्यातगुने, २० उन से सातवे देवलोक के देवता असख्यातगुने, २१ उन से पांचवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उन से छठी देवलोक के देवता असख्यातगुने, २३ उन से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २४ उन से पांचवे देवलोक के देवता

खेज्जगुणा वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा, जोति-
सिय देवित्थीओ संखेज्जगुणाओ॥ एतेसिणं भंते! तिरिक्खजोणित्थियणं जलयरीण थलयरीण
खहयरीण तिरिक्खजोणिय पुरिसाण जलयराण थलयराण खहयराण तिरिक्खजोणिय
णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जाव वणस्सइकाइया एगिंदिय तिरिक्ख
जोणियणपुंसकाणं बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाण तेइंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसकाण
चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण, पचेंदिय णपुंसकाण, जलयराण थलयराण

एरणवय क्षेत्र के मनुष्य स्त्रियों और मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और वास क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ५ भरत एरवत क्षेत्र के मनुष्य के पुरुषों परस्पर तुल्य है और वप क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ६ भरत एरवत क्षेत्र के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य है और पुरुषों से संख्यातगुनी अधिक हैं, ७ पूर्व विदेह पश्चिम विदेह के पुरुषों परस्पर तुल्य है और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक हैं, ८ पूर्व विदेह पश्चिम विदेह की मनुष्य स्त्रियों परस्पर तुल्य है और पुरुषों से संख्यातगुनी अधिक है, ९ उन से अनुत्तर विमान के देवता संख्यातगुने, १० उन से ऊपर की त्रिक के देवता संख्यातगुने, ११ उन से मध्य की त्रिक के देवता संख्यातगुने, १२ उन से नीचे की त्रिक के देवता

संहयराण मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाण अतरदीवयाण मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमकाणं अकम्मभूमकाण अनरदीवकाण मणुस्स णपुंसकाण, कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाणं अतरदीवकाण, देवित्थीण भवणवासिणीण वाणमंतरीणं जोतिसीण वेमाणिणीणं, देवपुरिसाण भवणवासीण वाणमंतराण जोतिसि- याण वेमाणियाण, सोधम्मकाण जाव गेविज्जकाणं, अणुत्तरोववाइयाण, नरइय णपुंसकाण रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसकाण जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइय णपुंसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमिक मणुस्सित्थीओ मणुसपुरिसय एतेण दोवितुल्ला

संख्यातगुने, १३ उन से बारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १४ उन से इग्यारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १५ उन से दशवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १६ उन से नववे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १७ उन से सातवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १८ उन से छठी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १९ उन से आठवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उन से सातवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उन से पांचवी नरक के नरीये असंख्यातगुने, २२ उन से छठी देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उन से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २४ उन से पांचवे देवलोक के देवता

भवनवासि देविथियाओ संखेज्जगुणाओ, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा असंखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, थलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, जलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, वाणमंतर देवपुरिसा संखेज्जगुणा, वाणमंतर देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जोइसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा जोइसिय देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा

४४ उन से स्थलचर पुरुष सख्यातगुने, ४५ उन से स्थलचरनी सख्यातगुनी, ४६ उन से जलचर पुरुष असख्यातगुना, ४७ उस से जलचरनी सख्यातगुनी, ४८ उन से वाणव्यतरदेव सख्यातगुना, ४९ उन से वाणव्यतर की देवी सख्यातगुनी, ५० उन से ज्योतिषी देव संख्यातगुने, ५१ उन से ज्योतिषी की देवी सख्यातगुनी, ५२ उन से खेचर तिर्यंच नपुंसक सख्यातगुना, ५३ उन से स्थलचर तिर्यंच नपुंसक सख्यातगुना, ५४ उन से जलचर नपुंसक सख्यातगुना, ५५ उन से चउरिन्द्रिय विशेषाधिक, ५६ उन से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, ५७ उन से बेइन्द्रिय विशेषाधिक, ५८ उन से तेउकाया असख्यातगुना,

थलयर णपुसका सखेज्जगुणा जलयर णपुंसका संखेज्जगुणा, चउरिंदिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिया णपुसगा विसेसाहिया, तउकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका असखेज्जगुणा, पुढविकाइया णपुसगा विसेसाहिय, आउकाइया णपुसगा विसेसाहिया, वाउकाइया णपुसका विसेसाहिया, वणस्सइकाइया एगिंदिए तिरिक्खजोणिय णपुसका अनंतगुणा ॥ ४० ॥ इत्थीणं भते । केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं भाणिय, एव पुरिसस्सवि णपुसकस्सवि सचिट्ठणा पुणरवि तिण्हपि जहा पुव्विं भाणिया अतर तिण्हपि जहा पुव्विं भणिय, तिरिक्खजोणित्थियाओ तिरिक्खजोणिय पुरिसेहिंतो तिगुणाओ तिरुवाहियाओ, मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीसइगुणाओ

५९ उस से पृथ्वीकाया विशेषाधिक, ६० उस से अप्काया विशेषाधिक, ६१ उस से वाउकाया विशेषाधिक, ६२ उस से वनस्पतिकाया एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! स्त्री वेद की कितने काल की स्थिति है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार पहिले एक आदेश कही वैसे ही यहां भी स्त्री पुरुष नपुंसक वेद की अलग २ स्थिति कह देना वैसे ही अतर भी कहदेना ॥४१॥

स वात्तीसइरूत्ताहियाओ देविस्थियाओ देवपुरिसेहितो, बत्तीसगुणाओ बत्तीसइरूत्ताधियाओ तिविहसु होइ भेदो ठिई सचिट्ठणंतरप्पबहु वेयाण संधठिई बेस्ते तहा किंपगारय ॥ सेच तिविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता॥इति जीवाभिगम वितिओ पडिवत्तीओ सम्मत्ता॥ २॥ *

तिर्यंचणी तिर्यंच से तिगुनी, मनुष्यणी मनुष्य से सत्ताइसगुनी, और देवांगना देवता से बत्तीसगुनी जानना यह १ वेद के भेद, २ स्थिति, ३ संचिट्ठन, ४ अंतर, ५ अल्पाबहुत, ६ बन्ध स्थिति, ७ और विषय यह सात द्वार कर वेद नामक जीवाभिगम शास्त्र की दूसरी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ २ ॥ ० ०

॥ तृतिया पडिवत्ति ॥

तत्थ जे ते एव माहसु चउविधा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु तजहा—नेरतिया, तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा, देवा ॥ १ ॥ से किंत नेरइया ? नेरइया सत्तविधा पण्णत्ता तजहा—पढम पुढवि नेरइया, दोच्चा पुढवि नेरइया, तच्चा पुढवि नेरइया, चउत्था पुढवि नेरइया, पचमा पुढवि नेरइया, छट्ठा पुढवि नेरइया, सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ २ ॥ पढमेण भते ! पुढवी किं नामा किं गोत्ता

अब तीसरी प्रतिपत्ति कहते हैं जो ऐसा कहते हैं कि चार प्रकार के ससारी जीवों हैं वे ऐसा कहते हैं कि नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता ये चार प्रकार के जीवों हैं ॥ १ ॥ प्रश्न—नारकी किसे कहते हैं ? उत्तर—नारकी के सात भेद कहे हैं जिन के नाम प्रथम पृथ्वी के नारकी, दूसरी पृथ्वी के नारकी, तीसरी पृथ्वी के नारकी, चौथी पृथ्वी के नारकी, पांचवी पृथ्वी के नारकी, छठी, पृथ्वी के नारकी व सातवी पृथ्वी के नारकी ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! प्रथम पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! प्रथम पृथ्वी का नाम घम्मा और गोत्र रत्नप्रभा है + प्रश्न—अहो भगवन् !

+ जो अनादि काल से अर्थ रहित प्रसिद्धिमें आये हैं उसे नाम कहना और अर्थ सहित होवे सो गोत्र है

पण्णत्ता ? गोयमा ! घंमा नामेण रयणप्पभा गोत्तेणं॥दोच्चाण भंते ! पुढवी किं नाम किं गोत्ता ? गोयमा ! वंसा नामेण सक्करप्पभा गोत्तेण ॥ एवं एतेण अभिलावेण सव्वासिं पुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा, अंजणा चउत्था, रिट्ठा पंचमा, मघा छट्ठा, माघवती सत्तमा, तमतमा गोत्तेण पण्णत्ता॥२॥इमाणं रयणप्पभा पुढवी केवतिया बाहल्लेण पण्णत्ता ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभा पुढवी असीउत्तरं जोयण सयसहस्स

दूसरी पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! दूसरी पृथ्वी का वंशा नाम व शर्कर प्रभा गोत्र है यों इस अभिलाप से सब का कहना तीसरी पृथ्वी का सेला नाम व वालु प्रभा गोत्र है चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र, पांचवी पृथ्वी का रिट्ठा नाम व धूमप्रभा गोत्र है छठी पृथ्वी का मघा नाम व तम प्रभा गोत्र है और सातवी पृथ्वी का माघवती नाम व तमस्तमः प्रभा गोत्र है ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड कितनी जाडाइ में है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडा है ऐसे प्रभावर आगे भी जानना अर्थात् शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का जाडपना है, वालुक प्रभा का एक लाख अठाइस हजार योजन का जाड पना है, पंकप्रभा का एक लाख बीस हजार योजन का जाडपना है, धूमप्रभा का एक लाख अठारह हजार

बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा—अणुगतव्वा आसीत बत्तीस अट्ठावीसं-तहेव वीसच अट्ठारस सोलसग अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥४॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविधा पण्णत्ता तंजहा—खरकंडे,पंकबहुले कंडे, आव बहुलेकंडे ॥५॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तंजहा—रयण, वइरे,वेरुलिए लोहितक्खे, मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए, सोइंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलये, रयते, जात

योजन का जाडपना है,तमःप्रभा का एक लाख सोलह हजार योजन का जाडपना है और सातवी तमस्तमःप्रभा का एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वी पिंड है ॥ ४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने भेद कहे हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद कहे हैं खरकाण्ड, अर्थात् कठिन काण्ड यह भी भवन रहते है सो अच्छा सुंदर पृथ्वी का भूमि भाग है यही खरकाण्ड है, तत्पश्चात् दूसरा पंक बहुल काण्ड अर्थात् इस में कीचड व कचरा बहुत होता है और तीसरा अप्बहुल काण्ड अर्थात् इस में पानी की बहुलता विशेष है ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के सोलह भेद कहे हैं तद्यथा—१ रत्न काण्ड, वज्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! घंमा नामेण रयणप्पभा गोत्तेणं॥दोच्चाण भंते ! पुढवी किं नाम किं गोत्ता ? गोयमा ! वंसा नामेण सक्करप्पभा गोत्तेण ॥ एवं एतेण अभिलावेण सव्वासिं पुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा, अंजणा चउत्था, रिट्ठा पंचमा, मघा छट्ठा, माघवती सत्तमा, तमतमा गोत्तेण पण्णत्ता॥ २॥इमाणं रयणप्पभा पुढवी केवतिया बाहल्लेण पण्णत्ता ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभा पुढवी असीउत्तरं जोयण सयसहस्स

दूसरी पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! दूसरी पृथ्वी का वंशा नाम व शर्कर प्रभा गोत्र है यों इस अभिलाप से सब का कहना तीसरी पृथ्वी का सेला नाम व वालु प्रभा गोत्र है चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र, पांचवी पृथ्वी का रिष्टा नाम व धूमप्रभा गोत्र है छठी पृथ्वी का मघा नाम व तम प्रभा गोत्र है और सातवी पृथ्वी का माघवती नाम व तमस्तम प्रभा गोत्र है ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड कितनी जाडाइ में है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडा है ऐसे प्रश्नोत्तर आगे भी जानना अर्थात् शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का जाडपना है, वालुक प्रभा का एक लाख अठाइस हजार योजन का जाडपना है, पंकप्रभा का एक लाख वीस हजार योजन का जाडपना है, धूमप्रभा का एक लाख अठारह हजार

बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा—अणुगतव्वा आसीतं बत्तीसं अट्ठावीसं तहेव वीसंच अट्ठारस सोलसगं अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥४॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविधा पण्णत्ता तंजहा—खरकडे, पंकबहुले कडे, आव बहुलेकडे ॥५॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरकडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तंजहा—रयण, वइरे, वेरुलिए, लोहितक्खे, मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए, सोइंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलये, रयते, जात

योजन का आडपना है, तमःप्रभा का एक लाख सोलह हजार योजन का जाडपना है और सातवी तमस्तमःप्रभा का एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वीपिंड है ॥ ४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद कहे हैं खरकाण्ड, अर्थात् कठिन काण्ड यह जो अपन रहते है सो अच्छा सुंदर पृथ्वी का भूमि भाग है यही खरकाण्ड है, तत्पश्चात् दूसरा पंक बहुल काण्ड अर्थात् इस में कीचड व कचरा बहुत होता है और तीसरा अप्बहुल काण्ड अर्थात् इस में पानी की बहुलता विशेष है ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! इस के सोलह भेद कहे हैं तद्यथा—१ रत्न काण्ड, वज्र

रूत्रे, अके फलिहे, रिट्ठेकन्डे ॥ ६ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकडे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते, एव जाव रिट्ठे ॥ ७ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए पकबहुले कन्डे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥ आव बहुले कन्डे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एकागारे पण्णत्ते ॥ ८ ॥ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवी कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ता, एव

काण्ड, ३ वैडूर्य काण्ड, ४ लोहिताख्य काण्ड, ५ मसारगल्ल काण्ड, ६ हंसगर्भ काण्ड, ७ पुलाक काण्ड, ८ सौगंधिक काण्ड, ९ ज्योतिरत्न काण्ड, १० अंजन काण्ड, ११ अंजन पुलाक काण्ड, १२ रजत काण्ड, १३ जातरूप काण्ड, १४ अंक काण्ड और १६ रिष्ट काण्ड यह सोलह भेद खर काण्ड के हुए ॥ ६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में पहिला रत्न काण्ड कितने प्रकार का है ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्न काण्ड का एकही आकार कहा है, यों रिष्ट काण्ड पर्यंत सब का जानना ॥ ७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पंकबहुल काण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! वह एकही प्रकार का है प्रश्न—अहो भगवन् ! अप्बहुल काण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! उस का भी एकही भेद कहा है ॥ ८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी के कितने

जाव अहेसत्तमा ॥ ९ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावास सतसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! तीसं निरयावास सतसहस्सा पण्णत्ता, एव एतेण अभिलावेणं सव्वासिं पुच्छा ? ॥ इमा गाहा अणुगन्तव्वा—तीसाय पण्णवीसा पण्णरस दसेव तिण्णिय हवंति पचूण सतसहस्सं पंचेव अणुत्तरा णरगा जाव अहेसत्तमाए पच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पण्णत्ता तजहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपतिट्ठाणे ॥ १० ॥ अत्थिण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अह

भेद कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! शर्कर प्रभा पृथ्वी एक प्रकार की है यों नीचे की सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर— अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास कहे हैं यों शर्कर प्रभा में पचीस लाख, वालुकप्रभा में पन्नरह लाख, पङ्क प्रभा में दश लाख, धूम्रप्रभा में तीन लाख, तमःप्रभा में एक लाख, नरकावास में पांच कम और तमस्तमःप्रभा में पांच नरकावास हैं ये अनुत्तर, महालय व महा नरकावास हैं इन के नाम—काल, महा काल, रौरव, महा रौरव और अप्रतिष्ठान ॥ १० ॥ प्रत्येक पृथ्वी नीचे घनोदधि आदि का सद्भाव है या नहीं इस का प्रश्न करते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे पिण्डभूत पानी का समूह रूप घनोदधि, पिण्डभूत वायु का समूह रूप घनवात, विरल परिणाम को

घमोदधितित्रा घणवातीतित्रा तणुवातेतिवा, उवासतरेतित्रा ? हता अत्थि, एव जाव अहे सत्तमा ॥ ११ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए खरकंडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ? इमीसेणं भंते ! रयप्पमाए पुढवीए रयणकंडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्कजोयण सहस्स बाहल्लेण पण्णत्ते ? एव जाव रिट्ठे ॥ इमीसेणं भंते ! रयप्पमाए पुढवीए पकबहुले कंडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! चउरासीति जोयण सहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ इमीसेण भंते ! रयण-

घन वायु के समूह रूप तनुवात और शुद्ध आकाश रूप अवकाशांतर है क्या ? उत्तर—हां गौतम ! ऐसे ही है यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी संबंधी जो खरकाण्ड है उस का जाडपना कितना है ? उत्तर—अहो गौतम ! इस का जाडपना सोलह हजार योजन का है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नकांड कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक हजार योजन का जाडपना है यों रिष्ट पर्यंत कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी का पंक बहुल काण्ड की कितनी जाडाइ है ? उत्तर—अहो गौतम ! इस का चौरासी हजार योजन का जाडपना है प्रश्न—अहो भगवन् ! अपबहुल काण्ड की जाडाइ कितनी है ? उत्तर—

प्पभाए पुढवीए आयबहुले कंडे केवतिय बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! असीति जोयण सहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि कवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! वीस जोयण सहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ते ? इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवात केवइय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइ जोयणसहस्साइ बाहल्लेणं पण्णत्ताइ, एव तणुवातेति उवासन्तरेत्रि ॥१२॥ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए घणोदधि केवतिय बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! वीस जोयणसहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ ॥ सक्करप्पभाए पुढवीए, घणवाते केवइए पण्णत्ते?

अहो गौतम ! अस्सी हजार योजन का जाडपना है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वीस हजार योजन का घनोदधि जाडा है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! असंख्यात हजार योजन का जाडा है, ऐसे ही तनुवात व आकाशांतर का जानना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करा प्रभा पृथ्वी का घनोदधि कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वीस हजार योजन का जाडा है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी का घनवात कितना जाडा कहा ? उत्तर—अहो गौतम !

गोयमा ! असंखेज्जइ जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं, एवं तणुवाएवि उवासंतरेवि जहा सक्करप्पभाए पुढवीए, एवं जाव अहेसत्तमा ॥ १२ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए खेतछिन्नेण छिज्जमाणाए अत्थि दव्वाइं वण्णओ काल नील लोहित हालिद्द सुक्किलाइं, गंधतो—सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं, रसतो—तित्त कडुय कसाय अंबिल महुराइं, फासओ—कक्खड मउय गरुय लहुय सीत उसिण णिद्ध लुक्खाइं, संठाणतो परिमंडल वट्ट तंस चउरंस आययसंठाण परिणयाइं, अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णउगाढाइं

असंख्यात हजार योजन का है, ऐसे ही तनुवात व आकाशांतर का जानना और ऐसे ही सातवी तमस्तमःपृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस के विभाग करते हुवे उन के द्रव्य यथा वर्ण से काले, नीले, लाल, पीले व शुक्ल हैं, गंध से सुरभिगंधवाले व दुरभिगंधवाले हैं, रस से तिक्त, कटुक, कषाय, आम्बिल व मधुर हैं, स्पर्श से कर्कश, मृदु, गुरु, लघु शीत, उष्ण, स्निग्ध व रुक्ष स्पर्शवाले हैं, संस्थान से और परिमंडल, वर्तुल, त्र्यस्र, चौरस व लम्बगोल हैं ? और क्या वे परस्पर बंधे हुवे, परस्पर स्पर्शे हुवे, परस्पर अवगाहे हुवे, परस्पर स्नेह से बंधे

अण्णमण्णसिणेह पडिबद्धाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरस्स कंडस्स सोलस जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त छिएण छिज्ज तचेव जाव ? हता अत्थि एव जाव रिट्ठस्स ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए पकबहुलस्स कडस्स चउरासिति जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त तचेव ॥ एव आउबहुलस्सवि असीति जोयणसहस्स बाहल्लस्स ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिस्स वीस जोयणससहस्स बाहल्लस्स खेत्तछेदे त व एव घणवातस्स असखेज्ज जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त तचेव ॥ सक्करप्पभाए ण भते ! पुढवीए बत्तीसुत्तर जोयणसतसहस्स बाहल्लए खेत्तछेदेण छिज्जमाणाए

हुवे व परस्पर संबंध करके क्या रहे हुवे हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही हैं ऐसे ही खर काण्ड सोलह हजार योजन का है उस का प्रश्न करना और उस के द्रव्य भी वैसे ही यावत् परस्पर बंधे हुए हैं ऐसेही रिष्ट काण्ड पर्यंत कहना इसी तरह रत्नप्रभा पृथ्वीका चौरासी हजार योजनका पंक बहुल काण्ड का जानना और अस्सी हजार योजन का अप्बहुल काण्ड का भी जानना रत्नप्रभा पृथ्वी का बीस हजार योजन का घनोदधि असंख्यात हजार योजन का घनवात तनुवात व आकाशांतर जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिण्ड है उस क

अत्थि दव्वाइं वण्णतो जाव घडत्ताए चिट्ठति ? हंता अत्थि एवं घणोदहिस्स, वीसजोयणसहस्स वाहल्लस्स, घणवातस्स असंखेज्ज जोयणसहस्स बाहल्लस्स, एवं उवासंतरस्स जहा सक्करप्पभाए एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभापुढवी किं संठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरि संठिया पण्णत्ता॥इमीसेणं भंते।रयणप्पभा पुढवि खरकंडे किं संठिते पण्णत्ता?गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते। इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे किं संठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते, एवं जाव रिट्ठं, एवं पंकबहुले

विभाग करते हुवे उन के द्रव्य वर्ण से काले, नीले, पीले, लाल व सुफेद यावत् परस्पर संबंध करके क्या रहे हुवे हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही रहे हुवे हैं ऐसे ही शर्कर प्रभा पृथ्वी के वीस हजार योजन का घनोदधि, असंख्यात हजार योजन का घनवात, तनुवात व आकाशांतर का जानना और ऐसे ही सातवी तमस्तमः पृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का संस्थान कैसा है? उत्तर—अहो गौतम! इसका संस्थान झालर के आकार है अर्थात् विस्तीर्ण वलयाकार है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का खर काण्ड का संस्थान कौनसा है ? उत्तर—अहो गौतम ! झालर का संस्थान है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का संस्थान कैसा है ?

आठबहुलेवि घणोदधिवि घणवाएवि उवासतरेवि, सव्वे झल्लरिसंठिया पण्णत्ता, सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवी किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरिसंठिया पण्णत्ता ॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवी घणोदधि किं संठिये पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिये पण्णत्ते एवं जाव उवासतरे जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वता, एवं जाव अहे सत्तमाएवि ॥ १५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ केवतिय अबाधाए लोयते पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसहिं जोयणेहिं

उत्तर—अहो गौतम ! झालर का है, ऐसे ही रिष्ठ पर्यंत सोलह प्रकार के रत्नों का, पंक बहुल, अप्बहुल काण्ड का, घनोदधि घनवात, तनुवात व आकाशांतर सब का झालर का संस्थान जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का क्या संस्थान कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! झालर का संस्थान कहा, ऐसे ही शर्करप्रभा पृथ्वी के घनोदधि यावत् आकाशांतर पर्यंत कहना जैसे शर्करप्रभा की वक्तव्यता कही वैसे ही सातवी तमस्तमः प्रभा पर्यंत सब का कहना ॥ १५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के अन्त से कितना दूर लोक का अन्त (अंत) कहा है ? उत्तर अहो गौतम ! बारह योजन जितना अन्तर लोकांत कहा हुवा है ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा से अलोक दूर

अबाधाए लोयते पण्णत्ते एवं दाहिणिल्लातो पुरत्थिमिल्लातो, उत्तरिल्लाओ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो केवतिय अबाधाए लोयते पण्णत्ते ? गोयमा ! तिभागूणेहिं तेरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, एवं चउद्दिसिं॥ वालुयप्पभाएण भंते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ पुच्छा ? गोयमा ! सतिभागेहिं तेरसेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, एवं चउद्दिसिंपि एवं सव्वासिं चउसुविदिसासु पुच्छियव्वं, पंकप्पभाए चोद्दसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, धूमप्पभाए तिभागूणेहिं पण्णरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, छट्ठी सतिभागेहिं पण्णरसहिं

जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के चरिमांत से कितने दूर लोकांत कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक योजन के तीन भाग करे वैसा एक भाग कम तेरह योजन लोकांत कहा है ऐसे ही चारों दिशा का जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! वालुप्रभा की पूर्व दिशा से लोकांत कितना दूर कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! तेरह योजन व एक योजन का तीसरा भाग इतना दूर लोकांत रहा हुवा है ऐसे ही वालुप्रभा नारकी की शेष तीनों दिशा का जानना पंकप्रभा की चारों दिशाओं से चौदह योजन पर लोकांत रहा हुवा है, धूम्रप्रभा की चारों दिशाओं में पन्नरह योजन में एक योजन का तीसरा भाग कम का लोकांत रहा हुवा है, तमःप्रभा की चारों दिशाओं से

जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते सत्तमाए सोलसएहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते एवं जाव उत्तरिल्लातो॥१६॥ इमीसेण भते! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा—घणोदधिवलये, घणवायवलये, तणुवाय वलये, ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए दाहिणिल्ले चरिमते कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा—एवं चेव जाव उत्तरिल्ले एवं सव्वासिं जाव अहेसत्तमाए उत्तरिल्ले ॥ १७ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलए केवतियं बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! छज्जोयणाणि बाहल्लेण पण्णत्ते ॥

ग्यारह योजन व एक योजन का तीसरा भाग लोकांत रहा हुवा है और सातवी तमस्तमःप्रभा से सोलह योजन पर लोकांत रहा हुवा है ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की पूर्व दिशा के चरमांत के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के तीन भेद कहे हैं घनोदधि वलय, घनवात वलय, व तनुवात वलय प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी की दक्षिण दिशा के चरिमांत के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! तीन भेद कहे हैं घनोदधि, घनवात व तनुवात ऐसे ही सब पृथ्वी की चारों दिशाओं में तीन २ वलय रहे हुवे हैं यों सातवी पृथ्वी का जानना ॥ १७ ॥ प्रश्न— अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय की जाडाइ कितनी कही है ? उत्तर—

सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधिवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सतिभागाइं छज्जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ वालूयप्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! तिभागूणाइं सत्तजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, एवं एतेण अभिलावेण पंकप्पभाए सत्तजोयणाइं बाहल्लेण, धूमप्पभाए सतिभागाइं, सत्तजोयणाइं पण्णत्ते, तमप्पभाए तिभागूणाइं अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, अहेसत्तमाए अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, ॥ १८ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! अद्धपंचमाइं जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं ॥ सक्कर-

अहो गौतम ! छ योजन की जाडाइ कही है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय की कितनी जाडाइ कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ योजन व एक योजन का तीसरा भाग की जाडाइ कही है वालुक प्रभा की पृच्छा ? सात योजन में तीसरा भाग कम की जाडाइ है पंक प्रभाकी सात योजनकी है धूम्रप्रभा की सात योजन व तीसरा भाग अधिक की, तमःप्रभा की तीसरा भाग कम आठ योजन की व तमस्तम प्रभा की घनोदधि की आठ योजन की जाडाइ है प्रश्न—अहो भगवन् ' इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनवात वलय की कितनी जाडाइ कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! चार

प्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! कोसूणाइं पंच जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं, एवं एएणं अभिलावेणं वालुयप्पभाए पंच जोयणाइं बाहल्लेण प० पंकप्पभाए सक्कोसाइं पंच जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं धूमप्पभाए अद्धछट्ठाइं जोयणाइं, बाहल्लेण, पण्णत्ताइं, तमप्पभाए कोसूणाइं छजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं अहेसत्तमाए छ जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं ॥ १९ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तणुवायवलये केवतियं बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! छक्कोसेणं बाहल्लेण पण्णत्ते एवं एतेणं अभिलावेणं सक्करप्पभाए सतिभाग छक्कोसे बाहल्लेण पण्णत्ते वालुप्पभाए तिभागूणे सत्तक्कोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, पंकप्पभाए पुढवीए सत्तकोसे बाहल्लेण

योजन की जाडाइ है, शर्कर प्रभा की पृच्छा, पांच योजन में एक कोश कम की जाडाइ है, ऐसे ही वालुप्रभा की पांच योजन की, पंक प्रभा की पांच योजन व एक कोश, धूम्रप्रभा की पांच योजन दो कोश (साडे पांच योजन,) तमःप्रभा की एक कोश कम छ योजन और तमस्तम प्रभा की छ योजन की जाडाइ कही है ॥ १९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तनुवात वलयाकार की कितनी जाडाइ कही ? उत्तर-अहो गौतम ! रत्न प्रभा के तनुवात की छ कोश की जाडाइ है, ऐसे ही शर्कर प्रभा के तनुवात की छ कोश तीसरा भाग, वालुकप्रभा में तीसरा भाग कम सात कोश, पंक प्रभा के

पण्णत्ते, धूमप्पभाए सतिभागे सत्तकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, तमाए तिभागूणे अट्ठकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, अहे सत्तमाए पुढवीए अट्ठकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ २० ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि वलयस्स छजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेएण छिज्जमाणस्स अत्थिदव्वाइ वणउ काल जाव ? हंता अत्थि॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधि वलयस्स सतिभाग छजोयण बाहल्लस्स खेत्तछेएण छिज्जमाणस्स जाव हंता अत्थि॥एव जाव अहे सत्तमाए ज जस्स बाहल्ल॥

तनुवात की सात कोश की जाडाइ, धूम्रप्रभा में सात कोश व तीसरा भाग, तम:प्रभा में तीसरा भाग कम आठ कोश और तमस्तम प्रभा में आठ कोश की जाडाइ जानना ॥ २० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय छ योजन का जाडा है उस को क्षेत्र छेद से छेद देने से उन के द्रव्यों से वर्ण काले यावत् परस्पर संबंधवाले क्या हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का वलय की जाडाइ छ योजन व एक योजन के तीसरा भाग अधिक की है इस का छेद देने से इस के द्रव्य वर्ण से काले यावत् परस्पर संबंधवाले क्या है ? उत्तर-हां गौतम! वैसेही हैं यों सातवी नरक तक सब का कहना, इस में जहां २ जितना जाडपना है उतना जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात साडेचार योजन का जाडा है

इमीसेणं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवायवलयस्स अद्ध पचजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेदेण छिज्ज जाव हता अत्थि, एव जाव अहे सत्तमाए जजस्स बाहल्लेण, एव तणुवात वलयस्सवि जाव अहे सत्तमा जजस्स बाहल्ल ॥ २१ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलये किं सठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टवलयागार संठाण सठित पण्णत्ते, जेण इम रयणप्पभ पुढविं सव्वतो मम तास परिक्खिविचाण चिट्ठति एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए घणोदधि वलये णवर अप्पाण पुढविं सपरिक्खित्ताण चिट्ठति ॥ इमीसेण भत ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवात वलए किं साठिते पण्णत्ते गोयमा ! वट्टवलयागारे तहेव जाव जेण इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि-*वात*

उस का छेद करने से उस के द्रव्य वर्ण से काल वर्णवाले यावत् परस्पर सबंधवाले हैं क्या ? उत्तर-हां गौतम ! वैसे ही हैं यों सातवी नारकी के घनवात का कहना, परतु जितना जितना जाडपना है उन को उतना जाडपना कहना एसे ही तनुवात वलय का सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी क घनोदधि का संस्थान कैसा है ? उत्तर अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार (चूडी जैसा) संस्थान है यह घनोदधि रत्नप्रभा पृथ्वी के चरों तरफ घेर कर रहा हुवा है ऐसे ही सातों पृथ्वी के घनोदधि का जानना प्रश्न—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का

खिवलय सव्वतो सम तास परिक्खिविताण चिट्ठइ, एव जाव अहे सत्तमाए घणवातवलय ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए तणुवातवलये किं सठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टवलयागार सठाण सठिए जाव जेण इमीसेण भते ! रयण-प्पमाए पुढवीए घणवातवलय सव्वतो सम तास परिखिवित्ताण चिट्ठति, एव जाव अहेसत्तमाए तणुवात वलय ॥ २२ ॥ इमाण भते ! रयणप्पभा पुढवी केवतिय आयामविक्खभेण पण्णत्ता ? गोयमा ! असखेज्जाइ जोयण सहस्साइ आयामविक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ता एव जाव

घनवात का सस्थान कौनसा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है इस से रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि चारों तरफ घेराया हुवा रहा है यों सातों पृथ्वी के घनवात का जानना प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का तनुवात वलय का क्या सस्थान कहा है ! उत्तर–अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार सस्थान कहा है इस से रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात चारों तरफ से घेराया हुवा है यों सातों पृथ्वी के तनुवात का जानना ॥ २२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की लम्बाइ चौडाइ कितनी कही है ? अहो गौतम ! असख्यात योजन की लम्बाइ चौडाइ कही प्रश्न—अहो भगवन् ! इसकी परिधि कितनी कही ? उत्तर अहो गौतम ! असख्यात योजन की परिधि कही

अहे सत्तमा ॥ २३ ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी अतेय मज्झेय सव्वत्थ समा बाहल्लेण पण्णत्ता ? हंता गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा पुढवी अतेय मज्झेय सव्वत्थसमा बाहल्लेण, एव जाव अधो सत्तमा ॥ २४ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववण्णपुव्वा सव्वजीवा उववन्ना ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववण्णपुव्वा, नो चेवण सव्वजीवा उववण्णा, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए॥इमाण भंते! रयणप्पभा पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढ पुव्वा सव्व

सातवी पृथ्वीतक सब का जानना ॥ २३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अंत में, मध्य में वगैरह सब स्थान जाडाइ में क्या समान है ? उत्तर—हां गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अंत में, मध्य में वगैरह सब स्थान जाडाइ में समान है ऐसे ही सातों पृथ्वी का जानना ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में सब जीवों सामान्यपना से काल के अनुक्रम से पहिले उत्पन्न हुवे अथवा सब जीवों समकाल में उत्पन्न हुवे ? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वीमें काल के अनुक्रम से सब जीवों उत्पन्न हुए परंतु समकाल में सब जीवों नहीं उत्पन्न हुवे हैं क्यों कि सब जीव एक ही काल में रत्नप्रभा नारकी में उत्पन्न होजावे तो अन्य देव नारकी के भेद का अभाव होवे यों सातवी नारकी तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का सब जीवने काल के अनुक्रम

नीवेहिं विजढा? गोयमा! इमाणं भंते! रयणप्पभा पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढपुव्वा नो चेवणं सव्वजीवेहिं विजढा, एवं जाव अहेसत्तमा॥२५॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठ पुव्वा सव्व पोग्गला पविट्ठा? गोयमा! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठपुव्वा, नो चेवणं सव्वपोग्गला पविट्ठा, एवं जाव अहेसत्तमाए॥ इमाणं भंते! रयणप्पभाए पुढवी सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नो चेवणं सव्व पोग्गला विजढा? गोयमा! इमाणं रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नो

स पहिले परित्याग किया अथवा समकाल में क्या परित्याग किया? उत्तर—अहो गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कालक्रम से सब जीवोंने परित्याग किया परंतु एक समय में सब जीवोंने परित्याग नहीं किया, ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक जानना॥२५॥ प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कालानुक्रम से क्या सब पुद्गलोंने प्रवेश किया अथवा समकाल में सब पुद्गलोंने प्रवेश किया? उत्तर—अहो गौतम! कालानुक्रम से रत्नप्रभा पृथ्वी में पुद्गलोंने प्रवेश किया परतु एक काल में सब पुद्गलोंने प्रवेश नहीं किया यों सातवी पृथ्वी तक कहना प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कालानुक्रम से सब पुद्गलोंने क्या त्याग किया अथवा एककाल में सब पुद्गलोंने त्याग किया? उत्तर—अहो गौतम! इस रत्नप्रभा का कालानुक्रम से पहिले सब पुद्गलोंने त्याग किया परतु एक

वेत्रण सव्वपोग्गलेहिं विजढा एव जाव अहेसत्तमा ॥ २६ ॥ इमाण भते ! रयणप्पमा पुढवी किं सासता असासता ? गोयमा ! सिय सासता सिय असासता ॥ से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ सिय सासता सिय असासता? गोयमा! दव्वट्ठयाए सासता वण्ण पज्जवेहिं, गधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं फास पज्जवेहिं असासता, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ तचेव जाव सिय सासया सिय असासया, एव जाव अहेसत्तमा ॥ २७ ॥ इमाण भते ! रयणप्पमा पुढवी कालओ केवचिर होइ? गोयमा ! ण कदायि णआसि, णकदायि

समय में सब पुद्गलों का त्याग किया नहीं, यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! यह रत्नप्रभा पृथ्वी क्या शाश्वत है या अशाश्वत है ? उत्तर—अहो गौतम ! स्यात् शाश्वत है स्यात् अशाश्वत है प्रश्न—अहो भगवन् ! ऐसा कैसे होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! द्रव्य आश्री शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव आश्री अशाश्वत है इस से अहो गौतम ! ऐसा कहा कि रत्नप्रभा पृथ्वी स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी काल से कितनी है ? उत्तर—अहो गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अतीत काल में नहीं थी वैसा नहीं, वर्तमान काल में नहीं है वैसा नहीं और भविष्य काल में नहीं होगी वैसा

णत्थि, णकदाइ णभविस्सइ, भुविंच भवतिय भविस्सइय, धुवा णितया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिता णिचा, एवं जाव अहे सत्तमाए॥२८॥इमीसेणं भंते!रयण-प्पभाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमताओ हेट्ठिल्ले चरिमते एसणं कवतिय अबाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असिउत्तर जोयण सतसहस्स अबाधाए अतरं पण्णत्ते ॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ खरकंडस्स हेट्ठिल्ले चारिमते एसणं कवतिय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं अबाधाए अतरे पण्णत्ते ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ

भी नहीं परंतु यह अतीत काल में थी, वर्तमान काल में है और भविष्य काल में होगी यह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित है, यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से नीचे के चरिमांत तक अबाधा से कितना अंतर कहा? उत्तर-अहो गौतम! एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से खर कांड के नीचे के चरिमांत तक कितना अंतर कहा? अहो गौतम ! सोलह हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न-अहो भगवन ! रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से

चरिमताओ रयणस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवइय अबाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्क जोयणसहस्स अबाधाए अतरे पण्णत्ते ॥ इमीसेण भत ! रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाउ चरिमताओ वइरस्स कडस्स उवरिल्ल चरिमते, एसण कवइय अबाधाए अतर पण्णत्ते ?गोयमा! एक्क जोयण सहस्स अबाधाए अतरे पण्णते। इमीसेण भत ! रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ वइरस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवइय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दो जोयणसहस्साइ अबाधाए अतरे पण्णत्ते एव जाव रिट्ठस्स ॥ उवरिल्ले पण्णरस जोयणसहस्साइ हेट्ठिल्ल चारिमते सोलस जोयणसहस्साइ ॥ इमीसेण भते !

रत्नकाण्ड के नीचे के चरिमांत तक में कितना अतर कहा है ? उत्तर–अहो गौतम ! एक हजार योजन का अतर कहा है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के उपर के चरिमांत से वज्र रत्न काण्ड के उपर के चरिमांत तक में कितना अतर कहा ? उत्तर-अहो गौतम ! एक हजार योजन का अतर कहा प्रश्न अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के उपर के चरमांत से वज्र रत्न काण्ड के नीचे के चरमांत तक में कितना अतर कहा ? उत्तर अहो गौतम ! दो हजार योजन का अतर कहा यों रिष्ट पर्यंत सब कहना रिष्ट के उपर के चरिमांत तक में पन्नरह हजार योजन, नीचे के चरमांत में सोलह हजार योजन

रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ पकबहुलस्स केंडस्स उवरिल्ले चरिमते एसण अबाधाए केवतिय अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते हेट्ठिल्ले चारिमंते एक जोयणसयसहस्सं आवबहुलस्स उवरि एक जोयणसयसहस्स हेट्ठिल्ले चारिमते असीउत्तर जोयणसयसहस्स घणोदधिस्स उवरिल्ले असीउत्तर जोयणसयसहस्स हेट्ठिल्ले चारिमते दो जोयणसयसहस्साइं ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए घणवातस्स उवरिल्ले चारिमते दो जोयण सयसहस्साइं हेट्ठिल्ले चारिमते असखेज्जाइं जोयण सयसहस्साइं ॥ इमीसेणं भते ! रयण-

का अंतर कहा प्रश्न इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से पंकबहुल काण्ड के ऊपर के चरमांत पर्यंत में अबाधा से कितना अंतर कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! सोलह हजार योजन का अंतर कहा है इस के नीचे के चरमांत तक में एक लाख योजन का अबाधा से अंतर कहा है अपबहुल काण्ड के ऊपर के चरमांत तक में एक लाख योजन का अंतर कहा है और इस के नीचे के चरमांत तक में एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर कहा है घनोदधि के ऊपर के चरमांत तक एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर और घनोदधि के नीचे का चरमांत तक दो लाख योजन का अंतर कहा है रत्नप्रभा पृथ्वी के

प्पभाए पुढवीए तणुवायस्स उवरिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयण सयसहस्साइं अबा-
धाए अंतर पण्णत्ते ॥ हेट्ठिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयण सयसहस्साइं, एवं, उवास-
तरेवि ॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्ल,चरिमंते
एसणं केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बत्तीसुत्तरं जोयण सयसहस्सं
अबाहाए अंतरे पण्णत्ते सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवीए उवरि घणोदधिस्स हेट्ठिल्ले
चरिमंते बावण्णुत्तरं जोयण सयसहस्सं अबाधाए घणवायस्स असंखेज्जाइं जोयणसय
सहस्साइं पण्णत्ताइं, एवं जाव उवासंतरस्सवि जाव अहे सत्तमाए, णवरं जीसे जं

ऊपर के चरमांत से घनवात के ऊपर के चरमांत तक लाख योजन का अंतर होता है और इस के नीचे के चरमांत तक असंख्यात लाख योजन का अंतर जानना रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से तनुवात के ऊपर के चरमांत तक असंख्यात लाख योजन का अंतर है और नीचे के चरमांत तक भी असंख्यात लाख योजन का अंतर है ऐसे ही आकाशांतर का जानना प्रश्न-अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से नीचे के चरमांत तक कितना अंतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख बत्तीस हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से घनोदधि के नीचे के चरमांत तक कितना अंतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए उवरिकेवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय वज्जेत्ता, मज्झे केवइय केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयण सहस्स

प्रश्न—अहो भगवन् ! पृथ्विओं कितनी कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! सात पृथ्विओं कही है तद्यथा—रत्नप्रभा यावत् सातवी तमस्तमः प्रभा ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से ऊपर कितना अवगाहा हुवा है, नीचे कितना वर्जा हुवा है बीच में कितना रहा हुवा है और कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से एक हजार योजन ऊपर छोड कर एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख अठ्ठत्तर हजार योजन की बीच में पोलार है इस में तीस लाख नरकावास कहे है, वे नरकावास अन्दर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून यावत् नरक में अशुभ वेदना रही हुई है सब पीठकी अपेक्षा से आवलिकागत गोल, त्रिकोन, चौरस व पुष्पावकीर्ण अर्थात्

उगाहित्ता, हेट्ठावि एग जोयण सहस्स वज्जेत्ता मज्झे अट्ठुत्तरे जोयण सय सहस्से एत्थण रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण तीस णिरयावास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खाया तेण नरगा अतो वट्टा बाहिं चउरसा जाव असुभा णरयेसु वेयणा, एव एएण अभिलावेण उववाजिऊण भाणियव्व ठाणप्पयाणुसारेण जत्थ ज बाहल्ल जत्तिया वा नेरइयावास सयसहस्सा जाव अहे सत्तमाए पुढवीए अहे सत्तमाए मज्झे

विविध प्रकार के सस्थानवाले हैं नीचे का पृथ्वी तल क्षुर जैसा कठोर है, वहां सदैव अधकार है, माघ तीर्थंकर के जन्म व दीक्षा काल में प्रकाश होता है, तीर्थंकर के कल्याण समय में प्रकाश होता है वहां चद्र सूर्यादि ज्योतिषी का प्रकाश नहीं है, रुधिर, मांस, राध वगैरह के कीचड से नरक का भूमितल लींपा हुवा है, नरकावास बहुत बीभत्स है, अत्यत दुर्गंधमय है, मृत पशु के कलेवर से भी अधिक दुर्गंधमय है काली अग्नि की ज्वालायों नीकलती है, धगधगती कपोत वर्ण जैसे अग्नि की कांति है, वहां का गध रस व स्पर्श अति दु सह व अशुभ है यह असाता वेदना सब नरक में रही हुई है सब पृथ्वी में एक हजार ऊपर व एक हजार नीचे उन के जाडपने में से नीकालकर शेष रहे सो पोलार समजना और पहिले कहे सो नरकावास जानना यों नीचे की सातवी पृथ्वी में पदा स्थानवाले नरकावास

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए उवरिकेवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय वज्जेत्ता, मज्झे केवइय केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्प-भाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयण सहस्स

प्रश्न—अहो भगवन् ! पृथ्विओं कितनी कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! सात पृथ्विओं कही है तद्यथा—रत्नप्रभा यावत् सातवी तमस्तम: प्रभा ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से ऊपर कितना अवगाहा हुवा है, नीचे कितना वर्जा हुवा है बीच में कितना रहा हुवा है और कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से एक हजार योजन ऊपर छोड कर एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख अठ्ठत्तर हजार योजन की बीच में पोलार है इस में तीस लाख नरकावास कहे है, वे नरकावास अंदर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून यावत् नरक में अशुभ वेदना रही हुई है सब पीठकी अपेक्षा से आवलिकागत गोल, त्रिकोन, चौरस व पुष्पावकीर्ण अर्थात्

पिहडगसठिया किण्णपुडएसठिया, मुखसंठिया, मुइंगसंठिया, णदिमुइंगसंठिया, आलिंगसठिया, सुग्घोससठिया, दद्दरसठिया, पणवसठिया, पडहसठिया, भेरीसठिया, झल्लरिसठिया- कतुबकसठिया, नालिसठिया, एव जाव तमाए अहे सत्तमाएण भंते ! पुढवीए नरगा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा-वट्टेय तसाय ॥ ३ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरया केवइय बाहल्लेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसहस्साइं

काष्ठा कुटज (तापस लोगों को रहने का स्थान) मुरज [मृदंग विशेष] मृदंग, नंदीमुख मृदंग, सुघोष (देवलोक की घंटा विशेष) दर्दर वादित्र, पणव-चमड का वादित्र, पडह, भेरी, झल्लरी, कुस्तरु व घटिका इत्यादि अनेक प्रकार के सस्थानवाले हैं यों छठी तमःप्रभा पृथ्वी पर्यंत कहना प्रश्न—तमस्तम.प्रभा पृथ्वी में नरकावास के सस्थान कौनसे कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! दो प्रकार के कहे हैं वर्तुलाकार व त्रिकूनाकार है सातवी पृथ्वी में पांच नरकावास आवलिकागत है जिस में अप्रतिष्ठान नरकावास गोल है और शेष चार नरकावास त्रिकून आकारवाले हैं ॥ ३ ॥ अब नरकावास का जाडपना कहते हैं

१ मृदंग दो प्रकार की है १ मुकुंद व २ मर्दल जो ऊपर से संकुचित व नीचे से विस्तार वाली है उसे मुकुंद कहना और ऊपर नीचे जो समान है वह मर्दल है. इस स्थान मुकुंद मृदंग ग्रहण करना

केवइए कइ अणुत्तरा महति महालया महाणिरया पण्णत्ता, एव पुच्छियव्व वागरेयव्वंपि तहेव छट्ठी सत्तमासु काऊ अगणिवण्णा भाणियव्वा॥ २॥ इमीसेण भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरका किं सठिया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा-आवलियप्पविट्ठाय आवलिय बाहिराय॥तत्थण जे ते आवलियपविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता तजहा-वट्टा तसा चउरसा तत्थण जे ते आवलियबाहिरा ते णाणा सठाण सठिया पण्णत्ता तजहा अयकोट्ठ सठिया पिढ पयणग सठिया, कंडूसठिया लोहीसठिया, कडाहसठिया, थालीसठिया

हैं सब में प्रश्नोत्तर रत्नप्रभा जैसे ही कहना यावत् छठी सातवी पृथ्वी में कापोत वर्ण जैसा अग्नि जानना ॥ २ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुए तीस लाख नरकावास का कौनसा संस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! नरकावास दो प्रकार के कहे हैं-१ आवलिकागत अर्थात् श्रेणी में रहे हुवे और २ आवलिका से बाहिर उस में आठों दिशि में श्रेणि से रहे हुवे नरकावास के तीन भेद कहे हैं १ वर्तुलाकार २ त्रिकून व ३ चोकून और जो आवलिका से बाहिर आठों दिशासे पृथक् रहे उन के संस्थान विविध प्रकारके कहे हैं जिनके नाम-कहते हैं, अयकोष्ट-लोहेका गोला जैसे, पिष्टपचनक (मदिरा पकाने के लिये जिस भाजन में आटा पकाया जावे वैसा) जैसा, पाक स्थान, रसोइ गृह के आकार से, कडाइ, कडाइ बड़ा कडाइया, स्थाली, पकाने की हंडी, पिठरग जिस में बहुत मनुष्यों के लिये धान्य पकाया जावे,

अहे सत्तमाएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—संखेज्जवित्थडेय, असंखेज्जवित्थडाय ॥ तत्थणं जे से संखेज्जवित्थडे, सेणं एक्कं जोयणसहस्सं आयाम विक्खंभेणं, तिन्नि जोयण सयसहस्साइं, सोलस सहस्साइं दोण्णिय सत्तावीसं जोयणसये तिण्णिकोसे अट्ठावीसं धणुसयाइं तेरसय अंगुलाइं अद्धंगुलयं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥ तत्थणं जे ते असंखेज्जवित्थडा तेणं असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं असंखेज्जाइं जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ता ॥ ४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए

के लम्बे चौडे हैं उनकी परिधि असंख्यात योजनकी है यों तम पृथ्वी पर्यंत कहना सातवी पृथ्वीकी पृच्छा, अहो गौतम ! इसके दो भेद कहे हैं कितनेक संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं और कितनेक असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं उस में संख्यात योजन का विस्तार व संख्यात योजन की परिधिवाला एक अप्रतिष्ठान नरकावास है उसकी लम्बाइ चौडाइ एकलाख योजनकी है और तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन, तीनगाउ, एकसो अट्ठाइस धनुष्य, साढे तेरह अंगुल से कुच्छ अधिक की परिधि है और जो असंख्यात योजन के विस्तारवाले चार नरकावास हैं वे असंख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं और असंख्यात योजन की परिधि है ॥४॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास कैसे वर्णवाले

बाहल्लेणं पण्णत्ता तंजहा हेट्ठिल्ले चरिमंत घणसहस्स मज्झे झुसिरासहस्स उर्दि संकुइया सहस्सा॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरगा केवइयं आयाम विक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संखेज्जवित्थडाय, असंखेज्जवित्थडाय । तत्थणं जे ते संखेज्जवित्थडा तेणं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, तत्थणं जे ते असंखेज्जवित्थडा तेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, एवं जाव तमाए ॥

प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास का जाडपना कितना कहा ? उत्तर अहो गौतम ! तीन हजार योजन का जाडपना है उस में एक हजार योजन की नीचे की पीठिका है, एक हजार योजन की पोलार है और एक हजार योजन का ऊपर का मुख संकुचित होता हुआ रहा है यों सब मिलकर तीन हजार योजन का मानना यों सातवी पृथ्वी तक के नरकावास का जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कहां है, चौडाई व परिधि में कितने कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! द्विविध संख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं और कितनेक असंख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं जो संख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं उन की परिधि संख्यात योजन की है और जो असंख्यात योजन

सूत्र

एयारूवे ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतरा चेव अकततराचेव जाव अमणामतराचेव ॥ गंधेण पण्णत्ता ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ ६ ॥ इमीसण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए असिपत्तेइवा, खुरपत्तेइवा, कलबचीरियापत्तेइवा, कुतग्गेवा, तोमरग्गेइवा, नारायग्गेइवा, सूलग्गेइवा, लउडग्गेइवा, भिंडिमालग्गेतिवा सूचिकलाएतिवा, कवियच्छूइवा, विच्छुयकटइवा, इगालेइवा जालाइवा, मुम्मुरेतिवा, अच्चेइवा, आलाएतिवा, सुद्धाग-

अर्थ

बीभत्स देखाववाला होवे उस की दुर्गंध जैसी क्या नारकी की दुर्गंध है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो गौतम ! नरकावास में इस से भी अधिक अनिष्ट, अकंत यावत् अमनामकारी दुर्गंध है यों सातवी पृथ्वी तक कह देना ॥ ६ ॥ अब स्पर्श का प्रश्न करते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! नरकावास का स्पर्श कैसा है ? अहो गौतम ! जैसे असिपत्र, क्षुरपत्र, कद व वीरिका (तृण विशेष) भाले की अणी तीर का अग्रभाग, सूलि का अग्रभाग, व सोये का अग्रभाग, सुई का अग्रभाग, भिंडमाल का अग्रभाग, सूई के समूह का अग्रभाग, कवच की

नरया केरिसया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालाघभासा, गंभीरा लोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा, वण्णेणं पण्णत्ता, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ५ ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरका केरिसया गंधेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए अहिमडेतिवा, गोमडेतिवा, सुणगमडेतिवा, मज्जारमडेतिवा, मणुस्स-मडेतिवा, महिसमडेतिवा, मूसगमडेतिवा, आसमडेइवा, हत्थिमडेइवा, सीहमडेइवा वग्घमडेइवा, विगडमडेइवा दीवयमडेइवा, मयकुहिय चिरविणट्ठे, कुणिमवावण्ण दुब्भिगंध किमिजालाउलसंसत्ते, असुयचिलीणविगय बीभत्स दरिसणिज्जे, भवे

कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! काले, कालाभासवाले, गंभीर लोमहर्षवाले, भयंकर, त्रास उत्पन्न करनेवाले व परम कृष्णवर्ण वाले कहे हैं यों सातवी नरक तक सब का कहना ॥५॥ प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कैसे गंधवाले कहे हैं ? उत्तर—जैसे सर्प का मृत कलेवर, गाय का, कुत्ते का, मार्जार का, मनुष्य, का भैंस का, चूहे का, घोडे का, हाथी का, सिंह का व्याघ्र का, विगढ का, व चित्त का मृत कलेवर कि जो बहुत काल से पड़ा हुवा होवे, विनष्ट होवे, जिस का मांस सडकर गिर गया होवे, जिस में बहुत कीडे पड गये होवे, अशुचि वस्तु के क्लेश परिणाम का कारनवाला

देवे ण महिड्ढीए जाव महाणुभावे जाव इणामेव इणामेवत्तिकट्टु इम केवलकप्प जबुदीव दीव तिहिं अच्छराणिवातेहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताण हव्वमागच्छेज्जा, सेण देवे ताए उक्किट्ठाये तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए ताए जइणाए दिव्वाए देवगइये वीईवयमाणे २ जहण्णेण एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण छमास वीतिवएज्जा, अत्थेगइए णरगे वीइवएज्जा, अत्थेगइये णरगा नो वीइवएज्जा ए महालयाण गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए नरगा पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए अत्थेगतिय नरग विइवएज्जा अत्थगइए नरग

कुच्छ अधिक परिधिवाला यह जम्बूद्वीप है ऐसा जम्बूद्वीप को कोई महर्धिक यावत् महानुभाव देवता तीन चप्पुटि बजावे उतने समय में इक्कीसवार परिभ्रमण करके आजावे ऐसी त्वरित, चपल, प्रचण्ड, शीघ्र, तथा उद्धृत जयवंत दीव्य देवगति से जाते हुए जघन्य एक दिन, दो दिन तीन दिन उत्कृष्ट छ मास में कितनेक नरकावास का उल्लंघन कर सकते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं अहो गौतम ! नरकावास इतने बडे कहे हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना उस में कितनेक नरकावास का उल्लंघन करते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं करते हैं अप्रतिष्ठान नरकावास एक लक्ष योजन का है इस से उस का उल्लंघन होवे, परंतु अन्य चार असंख्यात योजन के हैं जिस का उल्लंघन

फोएत्ता, भंते एतारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! इमीसेण रयणप्प-भाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतराचेव जाव अमणामतराचेव फासेण पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ ७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरका क महालया पण्णत्ता ? गोयमा ! अयण जंबूद्दीव दीव सव्वदीव समुद्दाण सव्वब्भतरए सव्वखुड्डाए वट्टे, तल्लपूत सठाण सठिय वट्ट पुक्खरकण्णिया सठाण सठिये वट्ट, पडिपुण्ण चद सठाण सठिए, वट्टे रहचक्कवाल सठाण सठिए एक्क जोयणसयसहस्स आयाम विक्खभेण जाव किंचि विसेसाहिय परिक्खेवण

फलों का अग्रभाग वृश्चिक का कांटा धूम्ररहित अग्नि, अग्नि की ज्वाला, अग्नि के कन, अग्नि से भिन्न बनी हुई ज्वाला, जला हुवा कोयला और शुद्धाग्नि इस प्रकार का क्या नरक का स्पर्श है ? अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर यावत् अमनामतर स्पर्श नरकावास का कहा है ॥ ७ ॥ पहिले नरकावास का विस्तार बतलाया था, इस का विशेष विवरण के लिये पुनः उपमा से जानने के लिये प्रश्न करते हैं प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कितने बडे कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र के मध्य में रहा हुवा सब से छोटा, तेल से तला हुवा पुडा समान रथ चक्र जैसा गोल अथवा कमल की कर्णिका अथवा प्रतिपूर्ण चद्र के आकार जैसा गोल, एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा यावत् तीन लक्ष योजन से

उरगेहिंतो उववज्जति, इत्थियाहिंतो उववज्जति, मच्छमणुएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! असण्णिहिंतो उववज्जति जाव मच्छमणुएहिंतो उववज्जति एव एतेण अभिलावेण इमा गाहा घोसेयव्वा असण्णी खलु पढम दोच्च चसिरीसिवा, तत्तियपक्खी सीहा जंति चउत्थी उरगा पुण पचमीजाति, छट्ठी च इत्थियाओ, मच्छा मणुयाय सत्त मिजत्ति जाव अह सत्तमा पुढवी णेरइया णो असण्णीहिंतो उववज्जति जाव णो इत्थियाहिंतो उववज्जति मच्छमणुएहिंतो उववज्जति ॥ १० ॥ इमीसण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया एक समएण केवइया उववज्जति ? गोयमा !

आकर उत्पन्न होते हैं, मत्स्य में से उत्पन्न होते हैं अथवा मनुष्यों से उत्पन्न होते हैं ? उत्तर असंज्ञी से यावत् मत्स्य व मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं इस का खुलासा निम्नोक्त गाथा कर करते हैं असंज्ञी पचेन्द्रिय पहिली नरक में आवे, सरिसर्प से गोधा, नकुल प्रमुख दूसरी नरक तक आवे, पक्षी तीसरी तक जाते हैं सिंह व्याघ्रादि चतुष्पद चौथी नरक तक जाते हैं, उरपरिसर्प पांचवी तक जाते हैं, स्त्री छठी में है, और मत्स्य व मनुष्य सातवी में जाते हैं यावत् सातवी पृथ्वी में असंज्ञी तिर्यंच पचेन्द्रिय यावत् स्त्री उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु मत्स्य व मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥ १० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! एक समय में रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक दो

मो वीइवएज्जा ॥ ८ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा किंमया पण्णत्ता ? गोयमा ! सव्ववइरामया पण्णत्ता, तत्थण नरएसु बहवे जीवाय पोग्गलाय अवक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति सासताण ते नरगा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं, गधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं असासया, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ९ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया कतोहिंतो उववज्जति? उववातो सव्वो भाणिऊण, ततो पुच्छा किं असण्णीहिंतो उववज्जति, सिरिसवेहिंतो उववज्जति, पक्खीहिंतो उववज्जति, चउप्पएहिंतो उववज्जति,

नहीं कर सकते हैं ॥ ८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास किस वस्तु मय हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! सबवज्र रत्नमय है उस में बहुत खर बादर पृथ्वी काया के जीव व पुद्गल आते हैं और जाते हैं परंतु उनका संस्थान एकही रूप सदैव रहता है, इससे द्रव्य से शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वत है यों सातवी पृथ्वी तक मानना ॥ ९ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या असंज्ञी में से उत्पन्न होते हैं परिसर्प अर्थात् गोधा, नकुलादि में से उत्पन्न होते हैं, पक्षी में से आकार उत्पन्न होवे हैं चतुष्पद में से आकर उत्पन्न होवे स्त्री में से

पुढवीए नेरइयाण के महालिया सरीरागाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरो-गाहणा पण्णत्ता तजहा-भवधारणिजाय उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थेण जासा भवधा-रणिज्जा सा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण सत्तधणूइ, तिण्णिरयणीओ छच अगुलाइ, तत्थणं जस उत्तरवेउव्विए से जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जइभाग उक्कोसेण पण्णरस धणूइ अड्ढाइज्जाउरयणीओ दोच्चाए भवधारणिज्जे जहण्णए

की भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट पन्नरह धनुष्य अढाइ हाथ की है और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का सख्यातवा भाग उत्कृष्ट एकत्तीस धनुष्य एक हाथ तीसरी वालुकप्रभा की भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट एकतीस धनुष्य एक हाथ की उत्तर वैक्रेय जघन्य अगुल का सख्यातवा भाग उत्कृष्ट बांसठ धनुष्य दो हाथ ऐसे ही सातवी नरक पर्यंत सब की भव धारनीय जघन्य अगुल का असख्यातवा भाग व उत्तर वैक्रेय जघन्य अगुल का सख्यातवा भाग और उत्कृष्ट पंकप्रभा की भवधारनीय ६२ धनुष्य २ हाथ उत्तर वैक्रेय १२५ धनुष्य, धूम्र प्रभा की भव धारनीय १२५ धनुष्य उत्तर वैक्रेय २५० धनुष्य तम:प्रभा की भव धारणीय २५० धनुष्य व उत्तर वैक्रेय ५०० धनुष्य तमस्तम:प्रभा की भव धारनीय ५०० धनुष्य व उत्तर वैक्रेय १००० धनुष्य की भव धारक की सख्या कहते हैं पहिली नरक के १३, दूसरी में ११, तीसरी में ९, चौथी में ७, पांचवी

जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जति, एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ ११ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया समय समय अवहीर माणा २ केवइय कालेण अवहितासिया ? गोयमा ! तेण असंखेज्जा समए समए अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेवण अवहिता सिया जाव अहे सत्तमा ॥ ११ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए

तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी असंख्यात कहे हैं उस में से समय २ में एक २ नीकालते कितने समय में सब नारकी पूर्ण हो जावे ? उत्तर—अहो गौतम ! नारकी असंख्यात कहे हैं उन में से प्रति समय एक २ नीकालते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी पर्यंत नीकाले तथापि नारकी के जीव कभी हुवे नहीं, होते नहीं व होवेंगे भी नहीं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी की शरीर अवगाहना कितनी कही ? उत्तर—अहो गौतम ! उस के शरीर की अवगाहना दो प्रकार की कही, भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय उस में जो भवधारनीय अवगाहना है, वह जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात धनुष्य तीन हाथ व छ अंगुल की है, और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुलका संख्यातवा भाग उत्कृष्ट पन्नरह धनुष्य व अढाइ हाथकी है शर्करप्रभा पृथ्वी

धणुसयं, उत्तरवेउव्विया अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं, छट्ठीए भवधारणिज्जे अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उत्तरविउव्विया पंचधणुसयाइं, सत्तमाए भवधारणिज्जे, पंचधणुसयाइं उत्तरवेउव्विया धणुसहस्स ॥१२॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए नेरइयाणं सरीरया किं

अंगुल और तेरवे पाथडेमें ७ धनुष्य, तीन हाथ ६ अंगुलकी यह उत्कृष्ट भवधारनीय अवगाहना हुई उत्तर वैक्रेय स्थान से दुगुनी जानना इसी तरह आगे नरक में पाथडे के नारकी की अवगाहना जानना जिस नरक में जितनी अवगाहना का अधिकपना होवे उसका उस नरक के पाथडे से भाग देना जो भाग आवे वह प्रत्येक पाथडे में बढाना ॥१२॥प्रश्न-अहो भगवन् ! नारकी के शरीरका संघयन क्या

१ रत्नप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धनुष्य	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हाथ	३	१	३	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अंगुल	०	८॥	१७	१॥	१०	१८॥	३	११॥	२०	४॥	१३	२१॥	६

अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ, उत्तर वेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्ससंखेयभाग उक्कोसेण एक्कतीसधणूइं एक्कारयणी ॥ तच्चाए भवधारणिज्जे, एक्कतीस धणूइं एक्का रयणी, उत्तर वेउव्विया बासट्ठिधणूइं दोण्णियरयणीओ ॥ चउत्थीए भवधारणिज्जे बावट्ठि धणूइं दोण्णिरयणीओ, उत्तरवेउव्विया पण्णवीस धणुसयं, पंचमीए भवधारणिज्जे पणवीस

में ५ छठी में तीन व सातवी में एक पाथडा है यों सब मीलाकर ४९ पाथडे हुवे इन में भव की भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग इस में पहिली नरक के प्रथम पाथडे की उत्कृष्ट अवगाहना तीन हाथ की इस के आगे प्रत्येक पाथडे में ५६॥ बढते जाना जिस से दुसरे पाथडे में एक धनुष्य एक हाथ व साडे आठ अंगुल की हुई, तीसरे में एक धनुष्य तीन हाथ व १७ अंगुल की चौथे पाथडे में दो धनुष्य दो हाथ १॥ अंगुल की, पांचवे पाथडे में तीन धनुष्य दश अंगुल की, छठे पाथडे में तीन धनुष्य दो हाथ १८॥ अंगुल की, सातवे में चार धनुष्य एक हाथ व तीन अंगुल की, आठवे पाथडे में चार धनुष्य तीन हाथ व ११॥ अंगुल की नववे पाथडे में पांच धनुष्य एक हाथ २० अंगुल की, दशवे पाथडे में ६ धनुष्य ४॥ अंगुल का, अग्यारवे पाथडे ६ धनुष्य २ हाथ १३ अंगुल की बारहवे पाथडे में ७ धनुष्य २१॥

सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी, णेवट्ठी णेवच्छिरा, णेवण्हारु, णेव सघयण मत्थि, जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिं सरीर सघायत्ताए परिणमति, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १३ ॥ इमीसेण भते ! रयण-प्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जा, उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता ॥ तत्थण जेते उत्तरवेउव्विया तेवि हुड सठिया पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसण भते रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परम कण्हावण्णेण पण्णत्ता ॥

कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ सघयण में से एक भी सघयण नहीं हैं, क्यों की उन के शरीर में हड्डियों, शिरा व स्नायु नहीं है परंतु जो पुद्गल अनिष्ट, अकांतकारी यावत् अमनोज्ञ होते हैं वे रूप से भयंकर शरीरपने परिणमते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी को कौनसा सस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! सस्थान के दो भेद कहे हैं तथथा—भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों शरीर का हुड सस्थान कहा है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ १५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे नारकी का कैसा वर्ण कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! काला, कालाभास

२ शर्करप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मनुष्य	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५
हाथ	३	२	१	०	३	२	२	१	०	३	२
अंगुल	६	९	१२	१५	१८	२१	०	३	६	९	१२

३ वालुकप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मनुष्य	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
हाथ	२	२	२	१	१	१	१	१	१
अंगुल	१२	७॥	३	२२॥	१८	१३॥	९	४॥	०

४ पंकप्रभा,

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७
मनुष्य	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६२
हाथ	१	१	२	३	०	१	२
अंगुल	०	२०	१६	१२	८	४	०

७ तमस्तम प्रभा

पाथडा	१
मनुष्य	५००
हाथ	०
अंगुल	०

५ धूम्रप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५
मनुष्य	६२	७८	९३	१०९	१२५
हाथ	२	०	३	१	०
अंगुल	०	१२	०	१२	०

६ तम प्रभा

पाथडा	१	२	३
मनुष्य	१२५	१८७	२५०
हाथ	०	२	०
अंगुल	०	०	०

सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी, णेवट्ठी णेवच्छिरा, णेवण्हारु, णेव सघयण मत्थि, जे पोग्गला आणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिं सरीर सघायत्ताए परिणमति, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १३ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जा, उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता ॥ तत्थण जेत उत्तरवेउव्विया तेवि हुड सठिया पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसण भते रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परम कण्हावण्णेण पण्णत्ता ॥

कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ सघयण में से एक भी सघयण नहीं है, क्यों की उन के शरीर में हड्डियों, शिरा व स्नायु नहीं है परतु जो पुद्गल अनिष्ट, भकांतकारी यावत् अमनोज्ञ होते हैं वे रूप से भयकर शरीरपने परिणमते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी को कौनसा सस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम! सस्थान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों शरीर का हुड सस्थान कहा है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे नारकी का कैसा वर्ण कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! काला, कालाभास

एव जाव अहेसत्तमा ॥ १५ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण सरीरया केरिसया गधेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए अहिमडेतिवा तंचेव जाव अहे सत्तमा ॥ १६ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरइयाणं सरीरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! फुडितत्थविच्छविया, खरफरुसा ज्झाम झुसिरा फासेण पण्णत्ता एव जाव अहे सत्तमा॥ १७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरइयाण केरिसया पोग्गला ऊसासत्ताए परिणमति ? गोयमा !

वाला, यावत् परम कृष्ण वर्ण कहा है यों सातों पृथ्वी के नारकी का जानना ॥१५॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी के शरीर की कैसी गंध कही ? उत्तर-अहो गौतम ! जैसे मृत सर्प का कलेवर वगैरह जैसा पाहिले नरक स्थान की गंध कही वैसे ही जानना यों सातों पृथ्वी के नारकी का जानना ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इन रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी का कैसा स्पर्श कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! फटी हुई कांति रहित, अति कठिन दग्ध छाया व बहुत छिद्रवाली चमडी उन नेरियों की कही है ॥ १७ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसे पुद्गलों उश्वासपने ग्रहण करते हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! जो अनिष्ट, यावत् अमनाम पुद्गलों हैं उन को उश्वासपने ग्रहण करते हैं

गाउयाइं उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइं, सक्करप्पभाए पुढवीए जहण्णेण तिण्णिगाउयाइं उक्कोसेण अद्धुट्ठाइं गाउयाइं एवं अद्धगाउयाइं २ परिहायति जाव अहे सत्तमाए, जहण्णेण अद्धगाउयं उक्कोसेण गाउयं ॥ २४ ॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतियाणं कति समुग्घाता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समुग्घाता पण्णत्ता तंजहा-वेदणा समुग्घाए कसाय समुग्घाए, मरणातिय समुग्घाए, वेउव्विय समुग्घाए ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥२५॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया केरिसय खुह-पिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरति? गोयमा ! एकमेकस्सणं रयणप्पभा पुढवी निरइयस्स

साढ तीन गाउ, बालुक प्रभा के नारकी जघन्य अढाइ गाउ उत्कृष्ट तीन गाउ पंक प्रभा के नारकी जघन्य दो गाउ उत्कृष्ट अढाइ गाउ, धूम्रप्रभा के नारकी जघन्य देढ गाउ उत्कृष्ट दो गाउ, तम प्रभा के नारकी जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट देढ गाउ और तमस्तमप्रभा के नारकी जघन्य आधा गाउ उत्कृष्ट एक गाउ ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी को कितनी समुद्घात कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! चार समुद्घात कही हैं जिन का नाम वेदना कषाय, मारणांतिक व वैक्रय यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसी क्षुधा पिपासा

असब्भाव पट्ठवणाए सव्वोदधीवा सव्व पोग्गलेवा आसयसि पक्खिवज्जा णो चेवण से रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए तित्तिवे वासित्ताधि तण्हे वासित्ता, एरिसियेण गोयमा! रयण-प्पभाए जे णेरइया खुहप्पिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरति एव जाव अहे सत्तमाए ॥२६॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया किं एकत्त पभू विउव्विचए पुहुत्तपि पभू विउव्विचए? गोयमा! एकत्तपि पभू विउव्विचए पुहुत्तपि पभू विउव्विचए, एगत्त विउव्वेमाणा एगमहं मोग्गररूवेवा, मुसुंढरूवेवा, एव मोग्गर मुसुंढि करकत्त असि

अनुभवते हुवे विचरते हैं। उत्तर—अहो गौतम! असत्य कल्पना से सब समुद्र का पानी अथवा सब पुद्गल उन के मुख में डाल देने से वे तृप्त नहीं होते हैं, तृषा रहित नहीं होते हैं अहो गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी ऐसी क्षुधा पिपासा का अनुभव करते हुवे विचरते हैं यों सातों पृथ्वी तक जानना ॥ २६ ॥ अब वैक्रेय शरीर की वक्तव्यता कहते हैं प्रश्न—अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी क्या एक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है या अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है? उत्तर—अहो गौतम! एक रूप की विकुर्वणा करने में भी समर्थ हैं और अनेक रूप की विकुर्वणा करने भी में समर्थ हैं जब एक रूप की विकुर्वणा करते हैं तब एक बडा मुद्गर, मुसंढी, करवत, खड्ग, शक्ति, हल, गदा, मुशल

सची हल गया मुसल चक्क णाराय कुंत तोमर सूल लउड भिंडिमालाय जाव भिंडमाल रूवा जाव पुहुत्तपि विउव्वेमाणा मोग्गर रूवाणिवा जाव भिंडमालरूवाणिवा ताइं सखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं संबद्धाइं नो असंबद्धाइं, सरिसाइं नो असरिसाइं विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स काय अभिहणमाणा वेयण उदीरेति उज्जल विउल पगाढ कक्कस कडूय, फरुस णिठ्ठुर चंड तिव्व दुक्ख दुग्ग दुरहियास एवं जाव धूमप्पभाए पुढवीए छट्ठ सत्तमासुण पुढवीसु नेरइया पभू महंताइं लोहिय कुंथुरूवाइं वयरामयतुंडाइं गोमय

चक्र, बाण, भाला, तोमर, त्रिशूल, लकुट, भिंडिमाल के रूप बनाने में समर्थ हैं और बहुत रूप वैक्रेय करते हुवे बहुत मुद्गर यावत् बहुत भिंडिमाल के रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है वे संख्यात रूप बना सकते हैं, परंतु असंख्यात नहीं बना सकते हैं, अपने शरीर की साथ संबंधवाले बना सकते हैं परंतु संबंध बिना के नहीं बना सकते हैं, अपने रूप जैसे रूप बनावे परंतु असदृश रूप बनावे नहीं, ऐसे रूप की विकुर्वणा करके परस्पर काया की घात करते हुए वेदना की उदीरणा करे उज्वल, विपुल, प्रगाढ, कर्कश, कटुक, कठोर, निष्ठुर, चंड, तीव्र, दुःखकारी, विषम व असुरप सहन नहीं होसके वैसी वेदना अनुभवते हुवे विचरते हैं ऐसे ही पांचवी धूम्रप्रभा पृथ्वी तक जानना छठी व सातवी पृथ्वी में नारकी काष्ठ कुंथुरूप वज्रमय,

कीडसमाणाइं विउव्वति कीड समाणाइं विउव्वित्ता अन्नमन्नस्सकाय समतुरंगेमाणा २ खायमाणा २ सयपोरगाकिमियाइ चालेमाणे २ अतो २ अणुप्पविसमाणा २ वेयण उदीरयति उज्जल जाव दुरहियास ॥२७॥ इमीसेण भंते! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया किं सीय वेयण वयति, उसिण वेयण वेयति, सिउसिण वेयण वेयति? गोयमा! णोसीय वेयण वेयति उसिणवेयण वेयति, नो सीउसिण वेयण वेयति अप्पयरा उण्हजोणिया एव जाव वालुप्पभाए, ॥ पकप्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! सीयवेयण वेयति उसिणवेयण वेयति नो सीउसिण वयण वेयति, ते बहुयरगा, जे

चांचवाले गोमय के कीडे समान रूप की विकुर्वणा करके परस्पर एक दूसरे के शरीर में प्रवेश करे, नीकले, आरोहण करे, समान घोडे जैसे आक्रमण करे, एक२ के शरीर का भक्षण करते हुए पूर्वोक्त उज्वल यावत् नहीं सहन हो सके वैसी वेदना प्रगट भोगवते हुवे विचरते हैं ॥२७॥ प्रश्न—अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी क्या सीत वेदना वेदते हैं, ऊष्ण वेदना वेदते हैं या शीतोष्ण वेदना वेदते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! शीत व शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं परंतु उष्ण वेदना वेदते हैं ऐसे ही शर्करप्रभा तथा वालुकप्रभा का जानना पंकप्रभा की पृच्छा, अहो गौतम ! शीत वेदना व ऊष्ण वेदना यों दो प्रकारकी वेदते हैं परंतु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इसमें ऊष्ण वेदना वेदनेवाले बहुत हैं और शीत वेदना वेदनेवाले थोडे हैं

उसिणवेयण वेयंति ते थोवयरगा, जे सीयवेयण वेयंति ॥ धूमप्पभाए पुच्छा? गोयमा ! सीयपि वेयण वेयंति उसणपि वेयण वेयंति, नो सीउसिण वेयण वेयंति ॥ ते बहुयरगा जे सिय वेयण वेयंति ते थोवयरका जे उसिण वेयण वेयंति ॥ तमाए पुच्छा ? गोयमा ! सीय वेयणा वेयंति, नो उसिण वेयण वेयंति, नो सीउसिण वेयणा वेयंति एवं अह सत्तमाए, णवर परमसीय ॥२८॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइए केरिसय निरयभव पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! तेण तत्थ निच्च भीया निच्चवहिया निच्चतासिया निच्च तत्था निच्चउव्विग्गा निच्चउद्दुया निच्चपरमसुभमतुल-

धूम्रप्रभा की पृच्छा, अहो गौतम ! शीत व उष्ण वेदना वेदते हैं परंतु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इस में शीत वेदना वेदनवाले बहुत जीव हैं और उष्ण वेदना वेदनेवाले थोडे जीव हैं तम प्रभा की पृच्छा? अहो गौतम ! शीत वेदना वेदते हैं परंतु उष्ण व शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं, ऐसे ही सातवी पृथ्वी में कहना परंतु इस में परम शीत वेदना का कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसा नरक भव का अनुभव करते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! वे वहां सदैव भय भीत बने हुवे, निरंतर व्याकुलित, स्वतः ही त्रास पाते हुए परमाधामी से निरंतर त्रास पाये हुवे निरंतर उद्वेगवाले, निरंतर उपद्रववाले, किंचिन्मात्र सुख को नहीं प्राप्त करते हुवे अशुद्ध, अतुल व अनुबद्ध

मणुयस्स निरयभवं पच्चणुभवमाणा विहरति एव जाव अहे सत्तमाएण पुढवीए ॥२९॥ अहे सत्तमाएण पुढवीए पंच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पण्णत्ता तंजहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे ॥ तत्थ इमे पंच महापुरिसा अणुत्तरेहिं दंड समादाणेहिं कालमासे कालकिच्चा अप्पइट्ठाणे निरए नेरइयत्ताए उववन्ना तंजहा—रामे जमदग्गिपुत्ते, दढाऊले छइपुत्ते, वसू उवरिचरे, सुभूमे कोरव्वे, बंभदत्ते चुलणीसुए, तेण तत्थ णेरइया जाया, काला कालो भास परमकिण्हा वण्णेण पण्णत्ता, तेण तत्थ वेयण वेयंति

मत्र का अनुभव करते हुवे विचरते हैं ऐसे ही सातवी नरक पर्यंत जानना ॥ २९ ॥ सातवी पृथ्वी में अनुत्तर महान बडा आलयवाले पांच नरकावास कहे हैं जिन के नाम—काल, महाकाल, रोरुप, महा रोरुप व अप्रतिष्ठान इन पांच नरकावास में पांच महान पुरुषों, अनुत्तर, प्राणीहिंसा करने वाले, क्रूर अध्यवसाय स काल के अवसर में काल कर के उत्पन्न हुए जिन के नाम—१ जमदग्नि का पुत्र राम जिस को परशुराम कहते हैं, २ छाया पुत्र दाढाल ३ वसुराजा उपरिचर ४ कौरव्य सुभूम चक्रवर्ती और ५ बारहवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती चूलनी का पुत्र ये पांचों वहां कृष्ण वर्णवाले यावत् परम कृष्ण वर्णवाले नारकीपने उत्पन्न हुए वे वहां

उज्जल विउल जाव दुरधियास ॥ ३० ॥ उसिण वेयणिज्जेसुण भंते ! नेरइया केरिसय उसिणवेयण पच्चणुभवमाणा विहरति? गोयमा! से जहा नामए कम्मारदारए सिया तरुणे बलव जुगव अप्पायके थिरग्ग हत्थे दढपाणिपायपासपिट्ठतरो परिणए लवणपवणजइण (वायामण) पमद्दण समत्थे तल जमल जुयल बाहु (फलिह-निभबाहु) घणणिचित वलिय वद्द खधे चम्मेट्ठग दुघण मुट्ठिय समाहय निचिय गायगत्ते (कायगुत्ते) उरस्स बलसमण्णागए छेए दक्खे पट्ठे कुसले मेहावि णिउण, सिप्पोवगए एग मह अयपिंड उदगवारसमाण गहाय त ताविय कोट्टिय२ उब्भिदिय२

उज्जल यावत् नहीं सहन हो सके वैसी वेदना का अनुभव करते हैं ॥ ३० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी कैसी उष्ण वेदना वेदते हैं ? उत्तर अहो गौतम ! जैसे कोई तरुण बलवंत, युवान, अल्प रोगवाला, हाथ का अग्रभाग जिस का स्थिर है, हाथ, पांव, पीठ, पार्श्व व जंघा जिस की दृढ है, अतिशय गोल स्वरूपवाला, चमडे के गोटिके पण मुष्ट्यादिक से घडे हुवे गात्रोंवाला, अतरिक उत्साह वीर्य से युक्त, दृढ हृदयवाला, वैतालवृक्ष का युगल होवे वैसा समान सरल, लम्बे पुष्ट दो हाथवाला, अति शीघ्र गति व परिश्रम में समर्थ, किसी वस्तु के मर्दन करने में समर्थ, बहत्तर कला में निपुण, विलंब रहित कार्य का करनेवाला, अच्छी तरह क्रिया का करनेवाला, अनुसंधान करने में निपुण ऐसा लोहकार का पुत्र, एक

मुणिय २ जाव एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण अद्धमास साहणेज्जा, सेण त सीयभूय आउमयेण सडासएण गहाय असब्भाव पट्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेसुय नरएसु पक्खिवेज्जा, सेण त उम्मिसिय णिमिसिएण णिमिसियतरेण पुणरवि पच्चु-द्धरिस्सामि तिकट्टु पविरायमेव फासेज्जा पविलीणामेव फासेज्जा पविद्धत्थमेव फासेज्जा (पासेज्जा) नो चेवण सचाएइ अविरायवा अविलीणवा अविद्धत्थवा पुणरवि पच्चुद्ध-रित्तए से जहा वा मत्तमातगे दुपाए कुजरे सट्ठिहायणे पढम सरय काल समयसिवा चरिम

छोटे घडे जैसा लोहे का गोला अग्नि में तपाकर उसे घन से कूटकर बारबार बनावे यों एक दिन, दो दिन यावत् पनरह दिन तक उस लोहे के गोले को अग्नि में तपाकर घन से घडे पीछे अच्छी तरह उसे ठंडा किये बाद उसे सडासी से पकड कर उष्ण वेदनावाले नारकी के शरीर में रखे रखते समय ऐसा विचार करे कि मैं एक मेषोन्मेष (पलक) में उस गोलेको शरीरमें से नीकालूंगा परंतु इतने में उस गोलेको उस शरीरकी अग्निसे मक्खन जैसे गलता पिगलता हुवा भस्म होता हुवा देखे परतु उसे ऐसाही नीकाल सके नहीं नरकमें ऐसी उष्ण वेदना कही है यह दृष्टान्त असद्भाव (काल्पित)है इसके विशेष खुलासाके लिये दूसरा दृष्टान्त कहते हैं जैसे साठ वर्षकी वयवाला तरुण प्रथम शरत्कालमें अथवा चरिम ग्रीष्म-ऋतु(ज्येष्ठ मास)में

निदाहकाल समयसिवा, उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए आउरे जुसिए (मुसिए) पिवासिए दुब्बले किलंते एक्क महं पुक्खरिणिं पासिज्जा चाउक्कोण समतीर अणुपुव्वसुजाय वप्पगभीर सीतल जल सछन्न (पउम) पत्तभिसमुणाल बहुउप्पलकुमुय नलिण सुभग सोगंधिय पुंडरीय (महापुंडरीय) सयपत्त सहस्स-पत्त केसर फुल्लोवचिय छप्पयपरिभुज्जमाण कमल अच्छ विमल सलिल पुण्ण परिहत्थ भमत मच्छकच्छभ अणेग सउणगण मिहुण विचरिय (विरइय) सदुन्नइ महुर सरनाइय (त पासइ) पासित्ता त उगाहइ उग्गाहित्ता, सेणं तत्थ उण्हंपि पविणेज्जा तिण्हंपि

ऊष्णता से तप्त बना हुवा, तृषा से पीडित बना हुवा, दावाग्नि की ज्वाला से हनाया हुवा, आतुर अवस्था दुर्बल, व थका हुवा, मदोन्मत्त, मूशादंड से पानी पीने का इच्छित ऐसा हस्ती एक चार कोनावाली, विषमपना रहित, अनुक्रम से नीचा गई अच्छा, गंभीर व शीतल जलवाला पानी से ढकाते हुवे कमलपत्रों व कमलनालवाली (किसी प्रत में पद्मलता) बहुत सूर्य विकासी, चंद्र विकासी, वैसे ही अन्य कमल, पुंडरिक कमल, श्वेत कमल लाल कमल, श्याम कमल, सो पांखडी का कमल, केसर समान कमल, भ्रमर जिन के पास रहे वैसे कमलवाली, स्वच्छ स्फटिक समान निर्मल पानी से परिपूर्ण, आविधम मत्स्य कच्छ से भरी हुई, अनेक पक्षियों के मधुर स्वर के गुंजारव से गुंजायमान बनी हुई बावडी को देखकर

पविणज्जा, खुहवि पविणेज्जा जरवि पविणेज्जा दाहपि पविणेज्जा णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सुतिंवा रतिंवा धितिंवा उवलभेज्जा, सीए सीयभूए सकममाणे२ सायासुक्ख बहुले-यावि विहरिज्जा एवामेव गोयमा ! असब्भावपट्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेहिंतो नरएहिंतो नेरइए उव्वट्टिए समाणे जाइं इमाइं मणुस्सलोयंसि भवंति तंजहा-अयागराणिवा, तवागराणिवा, तउगराणिवा, सीसागराणिवा, रुप्पागराणिवा, हिरन्नागराणिवा, सुवन्नागराणिवा, कुंभागराणिवा, [कुंभारागरागणीवा कुंभारागिणीवा] तवागिणीवा, इट्टयागिणीवा, कवेलुयागिणीवा, लोहारंबरिसवा, जतवाडचुल्लीवा, हंडयालिच्छाणिवा, सोंडयलिच्छाणिवा, णलागणीतिवा, तिलागणीतिवा, कुसागणीतिवा

उन में बैठे उस में अपनी दाह तृषा शांत करे, वहां रहे हुवे सहुक प्रमुख तृण विशेष उस से अपनी क्षुधा शांत करे, जलपान से परिताप भी शांत करे, सपा तृषा शांत होने से सुखपूर्वक निद्रा लेवे, प्रचला करे और उस से शरीर स्वस्थ करे, उत्पन्न करन रूप रति प्राप्त करे, बाह्य व अंतर से शीतल होवे, निवृत्ति में सारा सुख की प्राप्ति करे, आधि से उत्पन्न हुवा जो दाह उस रहित बन सुख भोगवता हुवा विचरे अहो गौतम ! ऐसे ही असद्भाव कल्पना से ऊष्ण वेदना भोगते हुए नरक के नेरियों को नरक से निकालकर इन मनुष्य लोक में लोह को गालने का महा सुधा नामक पत्र, ताम्बा गालने का पात्र, सीसा गालने का पात्र, चांदी गालने का पात्र, सुवर्ण गालने का पात्र, कुंभकार का [मांड,

तत्ताइ समजोइभूयाई फुल्लकिंसुयसमाणाइ उक्का सहस्साइं विणिमुयमाणाइ जाला सहस्साइ, मुचमाणाइ, इंगाल सहस्साइ पविक्खरमाणाइ अतो२ हुहूयमाणाइ चिट्ठति ताइ पासति ताइ पासित्ता ताइ उगाहइ ताइ उगाहित्ता सेण तत्थ उण्हपि पविणिज्जा तण्हपि पविणिज्जा, खुहपि पविणिज्जा, जरंपि पविणिज्जा दाहपि पविणिज्जा, णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सइवा रइवा धिइवा मतिवा उवलभेज्जा सीए सीयभूए सकममाणे२सायसुक्ख बहुलेयावि विहरेज्जा, भवे एयारूवो सिया? णोइणट्ठे समट्ठे गोयमा! उसिणवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइया एत्तो अणिट्ठतारियचेव उसिण वेयण पच्चणुब्भव

ईंटें पकाने का स्थान, कुंभकार की अग्नि, तुषा की अग्नि, ईटपकाने की अग्नि, कवेलु पकाने की अग्नि, लोहा तपाने की अग्नि, इक्षुरस का गुड बनाने की अग्नि, हटो की अग्नि, सोंटक अग्नि, नडाग्नि, तिल की अग्नि तीव्रसरों की अग्नि, इत्यादि सब ज्योतिभूत बनी हुई किंशुक पुष्प समान रक्त बनी हुई, हजारों म्लेछे जिस में से नीकलती होवे वैसी हजारों ज्वालायों नीकालती हुई, हजारों अंगार फेलाती हुई एसी धगधगायमान अग्नि देखकर उस में नरक के जीव प्रवेश करे तो वे जीवों वहां उष्णता, तृषा, क्षुधा, ज्वर, दाह शांत करे और इस से वहां निद्रा लेवे, साता प्राप्त करे, रति, धृति, मति प्राप्त करे उस का शीत, शीतभूत मानते हुवे सुख पूर्वक रहे अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर उष्ण वेदना

माणा विहरंति ॥ ३१ ॥ सीय वेयणिज्जेसुण भंते! नरएसु नेरइया केरिसय सीयवेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! से जहा नामए कम्मारदारएसिया तरुणे जुगवं बलवं जाव सिप्पोवगए एक महं अयपिंडं दगवारसमाण गहाय ताविय २ कुट्टिय २ जाव एगाहंवा दुयाहंवा तियाहंवा उक्कोसेण मासं हणिज्जा सेणं तं उसिणं उसिणब्भूय आयामएण संडासएण गहाय असब्भावपट्ठवणाए सीयवेयणिज्जेसु नरएसु पक्खिविज्जा सेयं ओम्मिसियनिम्मिसिएण पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामि तिकट्टु पविरायमेव पासिज्जा तं चेवण जाव णो संचाएज्जा पुणरवि पच्चुद्धरित्तए॥ से जहा नामए मत्त मायंगेवा तहेव जाव सुक्खबहुलयावि विहरेज्जा एवामेव गोयमा! असब्भाव पट्ठवणाए सीयवेयणेहिंतो णेरइए उव्वट्टिएसमाणे जाइं इमाइं इहमणुस्स लोए हवंति तंजहा

नारकी के जीव वेदते हैं ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शीत वेदना वेदते हुवे नारकी कैसी शीत वेदना वेदते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जैसे कोई युवावस्थावाला, बलवंत यावत् सब कला में निपुण लोहकार एक लोहे का गोला को अग्नि में डालकर कुटे. यों एक दिन, दो दिन, तीन दिन यावत् एक मास पर्यंत कूटे, फीर उसे लोह की संडासी से पकडकर शीत वेदना वाले नारकी के शरीर पर इस विचार से रखे कि मेषोन्मेष (पल) मात्र में पीछा ले लेऊगा, परंतु वह तत्काल विखर जाने से उसे पीछा लेने को समर्थ नहीं हो

हिमाणिवा हिमपुंजाणिवा हिमपडलाणिवा हिमपडलपुंजाणिवा तुसाराणिवा, तुसार पुंजाणिवा हिमकूडाणिवा हिमकूडपुंजाणिवा सीयाणिवा ताइं पासाइ पासित्ता ताइं उग्गाहइ उग्गाहित्ता से तत्थ सीयंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा खुहंपि पविणिज्जा जरंपि पविणिज्जा निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा जाव उसिणे उसिणब्भूए संकसमाणे २ साय सुक्ख बहुले यावि विहरेज्जा गोयमा ! सीयवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइयातो अणिट्ठतरिय चेव सियवेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरति ॥ ३२॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं केवइय कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि ठिई भाणि-

पकता है अथवा जैसे साठ वर्षवाला हस्ती यावत् बावडी की पास आकर सुख पूर्वक रहे वैसे ही शीत वेदनावाले नारकी को वहां से उठा कर इस मनुष्य लोक में हिम, हिम का समुह, हिम के पडल, तुषार, तुषारपुंज, हिम के कूट व हिमकूट के समुह में प्रवेश करावे तो वहां उस की शीत, तृषा, क्षुधा व ज्वर शांत होवे इस से वह वहां निद्रा व प्रचला करे यावत् उष्ण उष्णभूत बनकर सुख भोगता हुआ विचरे अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर शीत वेदना नारकी के जीव वेदते हुवे विचरते हैं ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा में नारकी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम की, शर्कर प्रभा में जघन्य एक सागरोपम उत्कृष्ट तीन सागरोपम,

याव्वा जाव अहे सत्तमाए ॥ ३२ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पहाए नेरइया अणतर

वालुक प्रभा में जघन्य तीन सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, पंकप्रभा में जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दश सागरोपम, धूम्रप्रभा में जघन्य दश सागरोपम उत्कृष्ट सत्तरह सागरोपम, तमःप्रभा में जघन्य सत्तरह सागरोपम उत्कृष्ट बावीस सागरोपम और तमस्तमःप्रभा में जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम अब सातों नरक के ४९ पाथडे की पृथक् २ स्थिति कहते हैं रत्नप्रभा पृथ्वी के पहिले पाथडे की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की दूसरे में जघन्य दश लाख वर्ष उत्कृष्ट ९० लाख वर्ष, तीसरे में जघन्य ९० लाख वर्षकी उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्षकी, चौथे में जघन्य पूर्व क्रोड वर्ष उत्कृष्ट एक सागर के दश भाग कर वैसा एक भाग की, पांचवे में जघन्य सागरोपम का दशवा भाग उत्कृष्ट दो दशवा भाग, छठे में जघन्य सागरोपम का दो दशवा भाग उत्कृष्ट तीन दशवा भाग, सातवे में जघन्य तीन दशवा भाग उत्कृष्ट चार दशवा भाग, आठवे में जघन्य चार दशवा भाग उत्कृष्ट पांच दशवा भाग, नववे में जघन्य पांच दशवाभाग उत्कृष्ट छ दशवा भाग, दशवे में जघन्य छ दशवाभाग उत्कृष्ट सात दशवा भाग, अग्यारहवे में जघन्य सातदश भाग उत्कृष्ट आठदश भाग बारहवे में जघन्य आठदश भाग उत्कृष्ट नवदश भाग और तेरहवे पाथडेमें जघन्य एक सागरोपम के९दशवे भाग, उत्कृष्ट एक सागरोपमकी स्थिति है ऐसेही अन्यनरक में जितनी स्थिति होवे उसे जितने पाथडे होवे उतने से भागकर फिर प्रत्येक पाथडे में एक २भाग बढावे हुवे सब पाथड स्थिति कहना यों सब पृथ्वी में जानना जिस का प्रश्न ॥ ३३ ॥ अहो

रत्नप्रभा १३ पाथड़े		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार	१० लाख	९० लाख	क्रोड									
	विभाग	वर्ष	वर्ष	वर्ष	पूर्व	१/१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६	१/७	१/८	१/९
उत्कृष्ट	सागर	९० हजार	९० लाख	क्रोड पूर्व	०									
	विभाग	वर्ष	वर्ष		०	१/१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६	१/७	१/८ १/९	१

२

शर्करप्रभा ११ पाथड़े		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
जघन्य	सागर	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	विभाग	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९
उत्कृष्ट	सागर	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	विभाग	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०

३

वालुक प्रभा ९ पाथड़े		१	२	३	४	५	६	७	८	९
	सागर	३	३	३	४	४	५	५	६	६
जघन्य	विभाग	०	४/९	[illegible]/९	३/[illegible]	७/९	२/९	६/९	१/९	५/९
	सागर	३	३	४	४	५	५	६	६	७
उत्कृष्ट	विभाग	४/९	[illegible]/९	३/९	७/९	२/[illegible]	६/९	१/९	५/९	

४

पंक प्रभा ७ पाथड़े		१	२	३	४	५	६	७
	सागर	७	७	७	८	८	९	९
जघन्य	विभाग	–	३/७	६/७	२/७	५/७	१/७	४/७
	सागर	७	७	८	८	९	९	१०
उत्कृष्ट	विभाग	३/७	६/७	२/७	५/७	१/७	४/७	

५

धूम्रप्रभा ५ पाथड़े		१	२	३	४	५
जघन्य	सागर	१०	११	१२	१४	१५
	विभाग	०	२/५	४/५	१/५	३/५
उत्कृष्ट	सागर	११	१२	१४	१५	१७
	विभाग	२/५	४/५	१/[illegible]	३/५	०

६

तमःप्रभा ३ पाथड़े		१	२	३
जघन्य	सागर	१७	१८	२०
	विभाग	०	२/३	१/३
उत्कृष्ट	सागर	१८	२०	२२
	विभाग	२/३	१/३	०

७

तमस्तमःप्रभा १ पा

जघन्य सागर २२

उत्कृष्ट सागर ३३

उव्वट्टिय कहिं गच्छति कहिं उववज्जति किं नेरइएसु उववज्जति किं तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिए तहा इहवि जाव अहे सत्तमाए ॥ २४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए नेरइया केरिसयं पुढवी फासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ २५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसयं आउफासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अनिट्ठं जाव अमणामं एवं जाव अहे सत्तमाए एवं जाव वणस्सई फासं अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ २६ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभा

भगवन् ! रत्नप्रभा नरक में से नारकी नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! जैसे उद्वर्तना व्युत्क्रांति (पन्नवणा) में कही, वैसे ही उद्वर्तना यहां कहना यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसा स्पर्श का अनुभव करते हुए विचरते हैं ! अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम स्पर्श का अनुभव करते हुए विचरते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसा अप्काया के स्पर्श का अनुभव करते हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमनाम अप्काया का स्पर्श करते हैं यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना वैसे ही वनस्पतिकाया के स्पर्श पर्यंत सातवी नरकी तक सब पृथ्वीयों में कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् !

पुढवीए दोच्च पुढविं पणिहाय सव्व महतिया बाहल्लेण सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ? हंता गोयमा! इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए दोच्चपुढविं पणिहाए जाव सव्व खुड्डिय सव्वंतेसु? हंता गोयमा ! दोच्चाण भंते ! पुढवी तच्च पुढवी पणिहाय सव्व महतिया बाहल्लेण पुच्छा? हंता गोयमा ! दोच्चाण पुढवी जाव खुड्डिया सव्वंतेसु ॥ एव एएण अभिलावेण जाव छट्ठिया पुढवी ॥ अहे सत्तमि पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ॥ २७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु जे पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया तेण भंते ! जीवा महाकम्मतरा चेव महा आसवतरा चेव महावेयण तरा चेव ? हंता गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु तहेव

यह रत्नप्रभा पृथ्वी दूसरी शर्कर प्रभा से जाडाइ में क्या बडी है व चौडाइ में क्या छोटी है ? हां गौतम! वैसे ही है, क्यों कि रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है, और शर्कर-प्रभा का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिंड है और रत्नप्रभा पृथ्वी एक रज्जु की लम्बी चौडी है और शर्करप्रभा पृथ्वी दो रज्जु की लम्बी चौडी है यों इस अभिलाप से छठी पृथ्वी तक कहना यावत् सातवी पृथ्वी की अपेक्षा छठी पृथ्वी लम्बाइ चौडाइ में सब से छोटी है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में जो पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पति कायिक जीवों हैं वे क्या महा कर्म महा आश्रव

जाव महाकम्मतरा चेव महा आसवतरा चेव एव जाव अहेसत्तमाए ॥ २८ ॥- इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एक्कमेक्कांसि निरयावासंसि सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइ अदुवा अणत खुत्तो, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवी णवर जत्थ जत्तिया णरक ॥ गाहा ॥ पुढवी उगाहित्ता नरगा संठाणमेव बाहल्ले विक्खभ परिक्खेवो वण्णो गधोय फासोय ॥ १ ॥ तेसिं महालयाए

व महा वेदनावाले क्या है ? हां गौतम ! वे भीषों वैसे ही है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में के एक २ नरकावास में सब प्राण, भूत, जीव व सत्व पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकायापने क्या पहिले उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! अनेक वार अथवा अनंतवार वे जीवों उत्पन्न हुए यों सातवी पृथ्वी तक के पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया का जानना विशेष में जहां जितने नरकावास हैं वहां उतने कहना. अब गाथा का अर्थ कहते हैं पृथिवी कितनी, पृथ्वी में अवगाह कर जो नरक स्थान हैं सो बतलाया, नरक का संस्थान, उस का जाडपना, चे डाइ, परिधि, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, नरक कितनी बडी है सो उपमा से बतलाइ, जीव व पुद्गल

उवमा; देवेण होइ कायव्वा जीवाय पोग्गलावक्कमाति, तहसासया निरया ॥ २ ॥ उववाय परिमाण, अवहारुच्चत्तमेव संघयण ॥ संठाण वण्ण गंधे फासे उसास आहारे ॥३॥ लेस्सा दिट्ठी णाणे जोगुवओगे तहा समुग्घाए ॥ तत्तोय खुप्पिवासा विउव्वणा वेयणायभए ॥ ४ ॥ उववाओ पुरिसाण उवम्मं वेयणाय दुविहाय ॥ ठिई उवट्टणा पुढवी उववाओ सव्व जीवाण ॥ ५ ॥ एयाओ संगहणिगाहाओ ॥ बीउद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ २ ॥ * * * * *

इमीसेण भंते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया केरिसय पुग्गल परिणामं पच्चणुभव

नरक में उत्पन्न होते हैं, शाश्वत नरकावास, उपपात—एक समय में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं और व यहां से उद्वर्तते हैं, नरकावास की ऊंचाइ, नारकी का संघयन, संस्थान, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, श्वासोश्वास, आहार,-लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, उपयोग, समुद्घात, क्षुधा, तृषा, विकुर्वणा, वेदना, भय, पांच पुरुषों नीचे सातवी नरक में उत्पन्न हुए उन के दृष्टान्त, दो प्रकार की वेदना, स्थिति, उद्वर्तना, पृथ्व्यादिक के स्पर्श और सब जीवों का उत्पन्न होना इतना कथन इस उद्देशे में कहा है॥ इस तरह नरक के अधिकारका दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ २-॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसे पुद्गल परिणाम का अनुभव करते हुए विचरते हैं ?

णाए विहरति ? गोयमा अणिट्ठ जाव अमणामं ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए, एवं णेयव्वं पुग्गल परिणाम ॥गाहा॥ वेयणाय लेसाय णाम गोएय अरई॥भएय सोगे खुहा पिवासाय वाहीय ॥ १ ॥ उस्सासे अणुभावे कोहे माणेय माया लोभेय ॥ चत्तारिय सण्णाओ णेरइयाण तु परिणामा ॥ २ ॥ एत्थ किर अतिवतती नर वसभा केसवा जलयराय । रायाणो मंडलिया जेय महारम कोडुंबी ॥ ३ ॥ भिन्नमुहुत्तो नरएसु तिरिय मणुएसु होइ चत्तारि ॥ देवेसु अद्धमासो उक्कोस विउव्वणा भणिया ॥ ४ ॥ असुभा विउव्वणा, खलु नेरइयाणतु होइ सव्वेसिं ॥ सठाणं पिय तेसिं नियमा

अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम पुद्गल का अनुभव करते हुए विचर रहे हैं यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना इस तरह वेदना, लेश्या, नामकर्म, गोत्र कर्म, अरति, भय, शोक, क्षुधा, तृषा, व्याधि, उश्वास, अनुताप, क्रोध, मान, माया, लोभ, आहार, मैथुन, परिग्रह, ये सब उस में जानना अब सातवी नरक में जो जीव उत्पन्न होते हैं उनका कथन करते हैं इस नरक में नरवृषभ केशव (वासुदेव) जलचर मत्स्य मांडलिक राजा कि जो महाआरम करनेवाले हैं, सोकरिक, (कसाई) कौटुम्बिक, ऐसे पुरुषों नरक में जाते हैं ॥३॥ अब उत्तर वैक्रेय का व्याख्यान करते हैं नेरीय का वैक्रेय किया अंतर्मुहूर्त तक रहे तिर्यंच मनुष्य का वैक्रेय किया चार अंतर्मुहूर्त तक रहे, और देवका उत्तर किया उत्तर वैक्रय रहने का काल है॥४॥

हंड तु णायव्व ॥ ५ ॥ जे पोग्गला अणिट्ठा, णियमा सो तेसिं होइ अहारो ॥ वेउव्विय सरीर असघयण हुंडसठाण ॥ ६ ॥ असाओ (उप्पाओ) उववन्ना असाओ चेव जहइ निरयभव ॥ सव्वपुढवीसु जीवा, सव्वेसु ठिईविसेसेसु ॥ ७ ॥ उववाण्ण व साता, नरइओ देवकम्मुणावावि ॥ अज्झवसाणा निमित्त, अहवाकम्माणु भावेण ॥ ८ ॥ तेया कम्मसरीरा, सुहुमसरीराय जे अपज्जत्ता ॥ जीवेण विप्पमुक्का, वच्चति सहस्ससाभेद ॥ ९ ॥ नरइयाणुप्पाओ, उक्कोस पचजोयण सयाइ ॥ दुक्खेण

सब नारकी को अशुभ विकुर्वणा कही है और उन का संस्थान भी हुंडक जानना ॥ ५ ॥ जो अनिष्ट पुद्गलों हैं उन का आहार नारकी का होता है वैक्रय शरीर होने से संघयन नहीं है और संस्थान हुंडक मानना ॥ ६ ॥ सब नारकी स्थिती में जीव असाता से उत्पन्न होवे और असाता से नरक भव का त्याग करे ॥ ७ ॥ कोइक नारकी का जीव अपने पूर्व भव के परिचित देव के प्रसंग से सुख पावे अथवा समदृष्टि होवे तो अध्यवसाय से भी सुख की प्राप्ति करे, अथवा कर्म के अनुभव से अर्थात् तीर्थंकर के जन्म दीक्षा, केवल ज्ञान इत्यादि कल्याण में प्रकाश होने से नारकी सुख का अनुभव करते हैं ॥ ८ ॥ नारीये के मृत्युकालमें तेजस और कार्माण शरीर बिना जो वैक्रय शरीर है वह सूक्ष्म नामकर्म के उदय से बिखर कर हजारों भेद (टुकडे) रूपवन बिखर जाता है ॥ ९ ॥ नारकी जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट पांच सो गाउ पर्यंत ऊंचे उछलते हैं नारकी दुःख से भयभीत बने हुए हैं व उदरागम

मिरुयाण, वेयण सतत गाढाण ॥ १० ॥ अच्छिनमीलियमेत्त, नत्थिसुहं दुक्खमेव अणुबद्ध ॥ नरए नेरइयाण, अहोनिस पच्चमाणाण ॥ ११ ॥ अतिसीय अतिउण्ह, अइतण्हा अइखुहा अइमयच ॥ नरए नेरइयाण, दुक्खसताति अविस्साम ॥ १२ ॥ एत्थय भिन्नमुहुत्तो, पुग्गल असुभायहोइ अस्साओ॥ उव्वाओउपाओ, अत्थि सरीराय नायव्वा (बोधव्वा) ॥१३॥ सेत नरइया॥तइओ नारय उद्देसओ सम्मत्तो ॥४॥३॥ से किंत तिरिक्खजोणिया ? तिरिक्खजोणिया पचविहा पण्णत्ता तजहा-एगिंदिय तिरिक्खजोणिया, बेइंदिय तिरिक्खजोणिया, तेइंदिय तिरिक्ख जोणिया, चउरिंदिय

वेदना सहित है ॥ १० ॥ नरक के जीवों को चक्षु टमकावे जितना भी सुख नहीं है वे दुःख में ही रहे हुवे अहर्निश पचते रहते हैं ॥ ११ ॥ अति शीत, अति उष्णता, अति तृषा, अति क्षुधा, अति भय, ये सब प्रकार के दुःख नारकी को सदैव रहते हैं ॥ १२ ॥ उक्त सब गाथा का संक्षेप में अर्थ बताने के लिये तेरहवी गाथा कहते हैं भिन्न मुहूर्त पुद्गल, अशुभ, वैक्रय, असाता, उपपात और श्वासका टमकाना, यों इस उद्देशे के द्वारों जानना॥१३॥यह नारकीका तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा॥४॥३॥

प्रश्न—तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच के पांच भेद कहे हैं यथा—एकेन्द्रिय तिर्यंच

तिरिक्ख जोणिया पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ १ ॥ से किंत एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया? एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-पुढविकाइएगिंदिय तिरिक्ख जोणिया जाव वणस्सइ काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत पुढविक्काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया? पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सुहुम पुढविकाइया एगिंदिया तिरिक्ख जोणिया, बादर पुढविक्काइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया। से किं त सुहुम पुढविक्काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया? सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय

बेइन्द्रिय तिर्यंच, तेइन्द्रिय तिर्यंच चतुरेन्द्रिय तिर्यंच व पचेन्द्रिय तिर्यंच ॥ १ ॥ प्रश्न एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—एकेन्द्रिय तिर्यंच के पांच भेद कहे पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच प्रश्न—पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर— पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच व बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच, प्रश्न—सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच व अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक

तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त सुहुम पुढविकाइया ॥ सेकिंत बादरपुढविकाइया ? बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्ता बादरपुढविकाइया अपज्जत्ता बादरपुढविकाइया॥ से त्त बादरपुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत पुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २ ॥ सेकिंत आउकाइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया ? आउकाइयाएगिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता एव जहेव पुढविकाइयाण तहेव चउभेदो ॥ एव जाव वणस्सइकाइया, सेत्त वणस्सइ काइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया॥ २॥ सेकिंत बेइदिय तिरिक्खजोणिया?

एकेन्द्रिय तिर्यंच यह सूक्ष्म पृथ्वीकाया के भेद हुए प्रश्न—बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उन के दो भेद कहे हैं—पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय व अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय यह बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय का कथन कहा यह पृथ्वी काया एकेन्द्रिय का वर्णन हुआ ॥ २ ॥ प्रश्न—अप्‌काया एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं जैसे पृथ्वीकाया के चार भेद कहे वैसे ही अप्‌काया के चार भेद कहना ऐसे ही तेउकाया, वायुकाया व वनस्पतिकाया के भेद जानना ॥ २ ॥ प्रश्न—द्वीन्द्रिय तिर्यंच के कितने

बेइंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया अपज्जत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ एवं जाव चउरिंदिया ॥ ४ ॥ सेकिंत पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणियाय, गम्भवक्कतिय जलयर पचेंदिय तारक्खजोणियाय ॥ से किंत समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? समुच्छिम जलचर पमेंदिय

भेद कहे हैं ? उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त बेइन्द्रिय तिर्यंच और अपर्याप्त बेइन्द्रिय तिर्यंच ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत दो २ भेद कहना ॥ ४ ॥ प्रश्न—तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! तिर्यंच पचेन्द्रिय के तीन भेद कहे हैं तद्यथा—जलचर, स्थलचर व खेचर प्रश्न—जलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—जलचर के दो भेद कहे हैं समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व गर्भज जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा, उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व अपर्याप्त समूर्च्छिम-जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—गर्भज जलचर

तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तग समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्तग समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त समुच्छिम पचइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किंत गब्भवक्कंतिया जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कंतिय जलयर पचेंइंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय जलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया अपज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—चउप्पय थलयर पचिंदिय तिरिक्ख-जोणिया, परिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिय ॥ सेकिंत चउप्पय थलयर पचें-

तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर दो भेद—पर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व अपर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय यह जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रियका कथन हुवा प्रश्न—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं तद्यथा-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, संमूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और गर्भज स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय संमूर्च्छिम स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त

दिय तिरिक्खजोणिया ? चउप्पय थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम चउप्पय थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, जहेव जलयराणं तहेव चउक्कओ भेदो, सेत्तं चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किं तं परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किं तं उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता जहेव जलयराणं तहेव चउक्कओ भेओ, एवं भुयपरिसप्पाणवि भाणियव्वा ॥ सेत्तं भुयगपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, सेत्तं

व अपर्याप्त ऐसे ही गर्भज के दो भेद मीलाकर चार भेद जानना यह चतुष्पद स्थलचर का कथन हुआ प्रश्न—परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—इस के दो भेद कहे हैं—उरपरिसर्प स्थलचर और भुज परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय प्रश्न—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं—समू-

थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ? खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया, गब्भवक्कतिय खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किंत समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ? समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तग समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्त समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ॥ एवं गब्भवक्कतियावि जाव पज्जत्तग गब्भवक्कतिया अपज्जत्तग गब्भवक्कतियावि ॥ ४ ॥ खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते !

च्छिम व गर्भज इन दोनों के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे चार भेद मानना ऐसे ही भुजपरिसर्प का कहना यों स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा॥ प्रश्न—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं-समूर्च्छिम व गर्भज प्रश्न—समूर्च्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जानना॥ ४ ॥ प्रश्न—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कितने प्रकार का योनि संग्रह कहा है ?

कइविहे जोणिसगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णत्ते तजहा अडया पोयया समुच्छिमा ॥ अडया तिविहा पण्णत्ता तजहा-इत्थी पुरिसा नपुसका। पोयया तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा णपुसया ॥ तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुसगा ॥ तेसिण भते ! जीवाण कइलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छलेस्साओ पण्णत्ताओ तजहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ तेण भते ! जीवा किं सम्महिट्ठि मिच्छदिट्ठि सम्ममिच्छादिट्ठि ? गोयमा ! सम्मादिट्ठीवि मिच्छादिट्ठिवि सम्मामिच्छादिट्ठीवि॥तेण भते!जीवा किं नाणि अन्नाणि?गोयमा!नाणीवि अन्नाणीवि, तिन्नि

उत्तर—तीन प्रकार का योनि संग्रह कहा है १ अण्डज अंड में से उत्पन्न होवे २ पोतज थैली से उत्पन्न होवे और ३ समूर्च्छिम उन में से अण्डज के तीन भेद, स्त्री, पुरुष व नपुंसक पोतज के तीन भेद स्त्री, पुरुष व नपुंसक और जो समूर्च्छिम होते हैं वे नपुंसक ही होते हैं अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी लेश्याओं कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्याओं कही हैं कृष्ण, नील यावत् शुक्ल लेश्या अहो भगवन् ! वे जीवों क्या समदृष्टि हैं मिथ्यादृष्टि है या समामिथ्यादृष्टि हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! समदृष्टि व समामिथ्या दृष्टि हैं अहो भगवन् ! वे जीवों क्या ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं ? अहो गौतम ! वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी

नाणाइ तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए जहा दुविहेसु गब्भवक्कंतियाण ॥ तेण भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! तिविहावि ॥ तेण भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ तेण भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमग अंतरदीवग वज्जेहिं उववज्जति ॥ तेसिणं भंते ! जीवाण केवइय कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइ भाग ॥ तेसिण भंते ! जीवाण

दोनों हैं ज्ञान में तीन ज्ञान व अज्ञान में तीन अज्ञान की भजना है अहो भगवन् ! वे जीवों क्या मन योगी, वचन योगी व कायायोगी हैं ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार के योग कहे हैं अहो भगवन् ! वे जीवों क्या साकारोपयुक्त है या अनाकारोपयुक्त है ? अहो गौतम ! साकार व अनाकार दोनों उपयोगयुक्त हैं अहो भगवन् ! वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या नरक में से, तिर्यंच में से वगैरह पृच्छा, अहो गौतम ! असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले युगलिये व अंतरद्वीप के युगलिये वर्जकर अन्य सब गति के जीव उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! उनकी जघन्य

कइ समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयण्णा समुग्घाए जाव तेया समुग्घाए ॥ तेण भंते ! जीवा मारणंतिय समुग्घाएण किं समोहता मरंति असमोहता मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति ॥ तेण भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टिता कहिं गच्छंति किं नेरइएसु उववज्जंति पुच्छा ? गोयमा ! एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिए तहेव ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कइ जाई कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बारसजाइ कुलकोडि जोणिपमुह सयसहस्साइ ॥ ५ ॥ भुयगपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरि-

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग की स्थिति कही अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी समुद्घात कही ? अहो गौतम ! पांच समुद्घात कही तद्यथा-वेदना, कषाय, मारणांति, वैक्रेय व तेजस अहो भगवन् ! वे क्या समोहया मरण मरते हैं या असमोहता मरण मरते हैं ? अहो गौतम ! वे समोहता व असमोहता ऐसे दोनों प्रकार के मरण मरते हैं अहो भगवन् ! वे वहां से नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! उत्पत्ति जैसे उद्वर्तना कहना अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी कुलकोडी कही है ? अहो गौतम ! उन की बारह लाख योनि प्रमुख कुल कोडी कही हैं ॥ ५ ॥

क्खजोणियाण भंते ! कइविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते तंजहा- अंडया पोयया संमुच्छिमा ॥ एवं जहा खहयराण तहेव णाणत्तं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वट्टित्ता दोच्चं पुढविं गच्छइ, णवजाइ कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया, सेसं तहेव ॥ ६ ॥ उरग परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! पुच्छा ? जहेव भुयग परिसप्पाणं तहेव णवरं ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी उव्वट्टित्ता जाव पंचमिं पुढविं गच्छइ, दसजाई कुलकोडी ॥ ७ ॥ चउप्पय थलयर पंचिंदिय

अहो भगवन् ! भुजपरिसर्प चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच की कितने प्रकार का योनिसंग्रह कहा है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार का योनि संग्रह कहा है, अंडज, पोतज व संमूर्छिम इस का सब कथन खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे कहना विशेष में स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष वहां से नीकलकर दूसरी नरक तक जाते हैं इस की नव लाख कुल कोडी कही है ॥ ६ ॥ उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय जैसे कहना परंतु स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष, वहां से नीकलकर पांचवी नरक तक जाते हैं इस की दश लाख कुल क्रोडी कही है ॥ ७ ॥

तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा जराओया संमुच्छिमया ॥ जराओया तिविहा पण्णत्ता तंजहा-इत्थी पुरिसा नपुंसका ॥ तत्थण जं ते समुच्छिमा ते सव्वे णपुंसका ॥ तेसिणं भंते ! जीवाण कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ? सेसं जहा पक्खीणं, णाणत्तं ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं उव्वट्टित्ता, चउत्थं पुढविं गच्छंति, दस जाई कुलकोडी ॥८॥ जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! पुच्छा ? जहा भुयगपरिसप्पाणं,णवरं उव्वट्टित्ता जाव अहेसत्तमिं, पुढविं अद्ध तेरसजाइ कुलकोडी जोणिय पमुह जाव पण्णत्ता

चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा, ? अहो गौतम ! दो प्रकार का योनि संग्रह कहा है १ जरायुज गर्भ से उत्पन्न होवे और २ संमूर्छिम इन में से जरायुज के तीन भेद स्त्री, पुरुष व नपुंसक और संमूर्छिम सब नपुंसक हैं अहो भगवन् ! उन को कितनी लेश्याओं कही हैं ? अहो गौतम ! जैसे खेचर का कहा वैसे ही जानना विशेष में स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम, वहां से नीकलकर चौथी नारकी तक उत्पन्न होवे हैं इस की कुल कोडी दश लाख है ॥ ८ ॥ जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भुजपरिसर्प जैसे जानना विशेष में इन में से नीकला हुआ नीचे सातवी पृथ्वी तक जाते हैं साडे बारह लाख कुल कोडी है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चतुरेन्द्रिय की कितनी कुल कोडी कही

॥ ९ ॥ चउरिंदियाणं भंते ! कइजाइ कुलकोडी जोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! नवजाई कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा जाव समक्खाया ॥ तेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अट्ठजाइकुल जाव समक्खाया ॥ बेइंदियाणं भंते ! केइ जाइ पुच्छा ? गोयमा ! सत्तजाइ कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा ॥ १० ॥ कइणं भंते ! गंधगा पण्णत्ता, कइणं भंते ! गंधसया ? गोयमा ! सत्तगंधगा सत्तगंधसया

है ? अहो गौतम ! नव लाख कुल कोडी कही है तेइन्द्रिय की पृच्छा, ? अहो गौतम ! आठ लाख कुल कोड, बेइन्द्रिय की कितनी कुल कोड कही है ? अहो गौतम ! सात लाख कुल कोड कही है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! गंधांग [गंध के अंग] कितने कहे हैं व गंधांग शत कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! सात गंधांग व सात गंधांगशत कहे हैं अब गंधांग जाति के भेद कहते हैं १ मूल, २ त्वचा, ३ काष्ट, निर्यास, ४ रस, ५ पत्र, ६ पुष्प, ७ फल इस में मूल, अर्थात् मोथवाला, २ त्वचा अर्थात् सुवर्णछाल ३ काष्ट अर्थात् चंदन अगुरु ४ निर्यास अर्थात् कपुर प्रमुख जानना ५ पत्र अर्थात् जाति का तमाल पत्र, ६ पुष्प सो प्रियंगु वगैरह, और ७ फल सो जाति फल ककोलादि इन सब को काला प्रमुख पांच वर्ण से गुणा करने से ३५ होवे, इसे एक गंध से गुणने से ३५ ही रहे इसे पांच रस से गुणने से १७५ होवे फीर इसे मृदु, लघु, शीत व रूक्ष ऐसे चार

पण्णत्ता ॥ ११ ॥ कइण भते ! पुप्फ जाई कुलकोडी जोणिपमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! सोलस पुप्फ जाइ कुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा पण्णत्ता तंजहा चत्तारिजलयराण, चत्तारिथलयराण, चत्तारि महारुक्खाण, चत्तारि महा गुम्मियाण ॥ १२ ॥ कइण भते ! वल्लीउ कइवल्लीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारिवल्लीउ चत्तारिवल्लिसया पण्णत्ता ॥ १३ ॥ कइण भते ! लयाउ कइलयसय, पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठलयाउ अट्ठलयसया पण्णत्ता ॥ १४ ॥ कइण भते !

स्पर्श से गुणने से ७०० होवे हैं यों सात सो गंधांग हुवे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! पुष्प जाति की कुल क्रोड कितनी कही ? अहो गौतम ! सोलह लाख कुल क्रोड कही जिस में चार लाख जल में उत्पन्न होवे सो, चार लाख स्थल में उत्पन्न होवे सो, चार लाख मचुंद प्रमुख महा वृक्ष के और चार लाख जाइ प्रमुख महा गुल्म के ॥१२॥ अहो भगवन् ! वल्लियों की कितनी जाति कही और वल्लीशत कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! चार जाति की वल्लो चार वल्लीशत ॥१३॥ अहो भगवन् ! कितनी लताओं व कितनी लताशत कहे हैं ? अहो गौतम ! आठ लता व आठ लताशत कही ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! कितनी हरिकाय व कितनी हरिकाय शत कही है ? अहो गौतम ! तीन हरितकाय व तीन हरितकायशत जानना एक २ के अवांतर सो २ भेद से तीन के तीन सो भेद होते हैं वृत से बंधे हुए के हजारों फल वृंताक प्रमुख और नाल स

वीईवइज्जा अत्थेगइय विमाण नो वीईवइज्जा ए महालयाण ? गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता ॥ १६ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ अच्चीणि अच्चिरावत्ताइ तहेव जाव अच्चुत्तर वडिंसकाइ ? हता अत्थि ॥ तेविमाणा के महालया पण्णत्ता ? गोयमा ! एव जहा सोत्थिणी णवर एव इयाइ पंचउवासतराइ अत्थेगइयस्स देवस्स एक्के विक्कमे सिया सेस तचेव ॥ १७ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ कामाइ कामवत्ताइ जाव कामुत्तर विडसगाइ ? हंता अत्थि ॥ तेण भंते ! विमाणा के महालया पण्णत्ता?

एक दिन, दो दिन तीन दिन उत्कृष्ट छ मास में कितनेक विमान को वे उल्लंघ सकते हैं और कितनेक विमान को नहीं उल्लंघ सकते हैं अहो गौतम ! इतने बडे विमान कहे हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! अर्चि, अर्चिआवर्त यावत् अर्चिरावतंस विमान हैं ? अहो गौतम ! वैसे हैं अहो भगवन् ! य विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! वे विमान स्वस्तिक विमान जैसे जानना परंतु इस में पांच आकाशांतर जितना क्रम बनाना ऐसा एक देवता का विक्रम होवे ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! काम, कामावर्त यावत् कामोत्तरावतंसक नामक विमान क्या हैं ? अहो गौतम ! वैसे ही विमानों हैं अहो भगवन् ! वे विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्वस्तिक विमान का कहा वैसे ही जानना परंतु इस में सात

गोयमा ! जहा सोत्थीणि नवर सचउवासतराइ विक्कमे सेस तहेव ॥ १८ ॥ अत्थिण भते ! विमाणाइ विजयाइ वेजयताइ जयताइ अपराइयाइ ? हता अत्थि ॥ तण भते ! विमाणा के महालया ? गोयमा ! जावतिय सूरिए उदेइ, एवइयाइ नव उवासतराई सेस तचेव, नो चेवण ते विमाणा वीईवइज्जा एमहालयाण विमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! तिरिक्खजोणिय पढमो उद्देसउ सम्मत्तो ॥ ४ ॥ १ ॥ कइविहाण भत ! ससार समावन्नगा जीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! छविहा ससार समावन्नगा जीवा पण्णत्ता तजहा—पुढवी काइव्वया, जाव तसकाइव्वया ॥१॥ सेकिं

अवकाशांतर कहना इतना देवता का विक्रम यहां जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! विजय, वैजयत जयत, अपराजित क्या विमानों हैं ? अहो गौतम ! वे विमानों हैं अहो भगवन् ! वे कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! स्वस्तिक विमान जैसे जानना परतु इस में नव अवकाशांतर जितना क्षेत्र बनाना इतना देवता का विक्रम जानना परतु किसी भी विमान को उल्लंघ नहीं कर सकते हैं + यह तिर्यंच योनीक जीवों का पहिला उद्देशा हुवा ॥ ४ ॥ १ ॥

अहो भगवन् ! ससार समापन्नक जीव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! छ प्रकार के संसार,

+ विमानों पृथ्वीकाया के बने हुए हैं इस से इन का कथन भी इस उद्देशे में लिया है

पुढवी, खरपुढवी ॥ ४ ॥ सण्हपुढवीण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण एग वाससहस्स ॥ सुद्धपुढवी पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बारसवाससहस्सा ! वालुयापुढवी पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण चउदसवास सहस्सा ॥ मणोसिलापुढवीए-पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सोलसवास सहस्साइ ॥ सक्करा-पुढवी पुच्छा?गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण अट्ठारस वास सहस्साइ ॥ खर पुढवि पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वास सहस्साइं

२ शुद्ध पृथ्वी, ३ वालुका पृथ्वी, ४ मनःशिला पृथ्वी, ५ शर्कर पृथ्वी और ६ खर पृथ्वी ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म पृथ्वी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष की, शुद्ध पृथ्वी की पृच्छा ? जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह हजार वर्ष वालुक पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चउदह हजार वर्ष, मन शिला पृथ्वी की पृच्छा, ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सोलह हजार वर्ष शर्कर पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अठारह हजार वर्ष की, खर पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की

॥ ५ ॥ नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई, एवं सव्वं भाणियव्वं जाव सव्वट्ठसिद्ध देवत्ति ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते ! जीवेति कालओ केवच्चिरं होति? गोयमा ! सव्वद्धा ॥ ७ ॥ पुढविकाइएणं भंते ! पुढविकाइयत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा! सव्वद्धं एवं जाव तसकाइए॥८॥पडुपन्न पुढविकाइयाणं भंते! केवति कालस्स निल्लेवा-सिया? गोयमा! जहण्णपदे असंखेज्जाहिं उसप्पिणि ओसप्पिणीहिं उक्कोसपए असंखेज्जाहिं ओसप्पिणि सप्पिणीहिं,जहण्णपदातो उक्कोसपद असंखेज्जगुणा,एवं जाव पडुप्पन्न वाउक्का-

है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही है यों सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत सब की स्थिति कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जीव जीवपने कितना काल तक रहता है ? अहो गौतम ! जीव जीवपने सदैव रहता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया पृथ्वीकायापने कितने काल तक रहती है ? अहो, गौतम ! सदैव रहता है यों त्रस काया पर्यंत जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! तत्काल को उत्पन्न हुवे पृथ्वीकायिक सार कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! समय २ में एक २ नीकाले तो जघन्य तथा उत्कृष्ट पद से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे तो भी उन जीवों का अंत नहीं होता है ऐसे ही अप्

इया॥पडुप्पन्न वणस्सति काइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा सिता? गोयमा! पडुप्पण्ण वणप्फइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा, पडुप्पण्ण वणस्सति काइयाण नत्थि निल्लेवणा ॥ पडुप्पन्न तसकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपए सागरोपम सहस्स पुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोपमस्स पुहुत्तस्स जहन्नपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १ ॥ अविसुद्ध लस्सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेसेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारे जाणइ

काया तेउकाया व वायुकाया का जानना अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए वनस्पतिकाया कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! वे कदापि निर्लेप नहीं होते हैं क्योंकि वे अनंत हैं अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए त्रस काया के जीवों कितने काल में निर्लेप होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से प्रत्येक हजार सागरोपम उत्कृष्ट पद से दश सो सागरोपम पृथक्त्व में निर्लेप होवे ॥ १ ॥ यह भाव के ज्ञान अनगार होने से अनगार का प्रश्न करते हैं १ अहो भगवन् ! अशुद्ध लेश्या (कृष्ण, नील व कापोत) वाला अनगार वेदनादि समुद्घात से रहित अपने ज्ञान से अशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं २ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात

पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्सं देवंदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्सं देवंदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्सं देवदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहया समोहएण विसुद्धलेस्सं देवदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा !

रहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार विशुद्ध लेश्यावाला देव तथा देवी को अपने ज्ञान से क्या जाने देखे? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ३ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार अविशुद्ध लेश्यावाला देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, ४ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार अपने ज्ञान से विशुद्ध लेश्या-वाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ५ अहो भगवन् ! अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार वेदनादि समुद्घात से सहित अथवा रहित अविशुद्ध लेश्या वाले देव अथवा देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ६ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात रहित

हया॥पडुप्पन्न वणस्सति काइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा सिता? गोयमा! पडुप्पण्ण वणप्फइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा, पडुप्पण्ण वणस्सति काइयाण नत्थि निल्लेवणा ॥ पडुप्पन्न तसकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपए सागरोपम सहस्स पुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोपमस्स पुहुत्तस्स जहन्नपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १ ॥ अविसुद्ध लेस्सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारे जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेसेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारे जाणइ

काया तेउकाया व वायुकाया का जानना अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए वनस्पतिकाया कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! वे कदापि निर्लेप नहीं होते हैं क्योंकि वे अनंत हैं अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए त्रस काया के जीवों कितने काल में निर्लेप होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से प्रत्येक हजार सागरोपम उत्कृष्ट पद से दश सो सागरोपम पृथक्त्व में निर्लेप होवे ॥ १ ॥ पर भाव के ज्ञान अनगार होने से अनगार का प्रश्न करते हैं १ अहो भगवन् ! अशुद्ध लेश्या (कृष्ण, नील व कापोत) वाला अनगार वेदनादि समुद्घात से रहित अपने ज्ञान से अशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं २ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात

किरियं पकरेइ, सम्मत्तकिरिया पकरेणयाए मिच्छत्त किरियं पकरेइ, मिच्छत्त किरिया पकरेणयाए सम्मत्त किरियं पकरेइ एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दोकिरियाओ पकरेइ तंजहा-सम्मत्त किरियं मिच्छत्त किरियं, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अन्नउत्थिया एवं माइक्खंति एवं भासंति एवं पन्नवेंति एवं परूवेंति एवं खलु एगेणं समएणं दोकिरियाओ पकरेइ तहेव जाव सम्मत्त किरियंच मिच्छत्त किरियंच जेतेएवं माहंसु तण्णमिच्छा, अहं पुण गोयमा ! एवं माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेइ तंजहा-सम्मत्ताकिरियंवा मिच्छत्त-

क्रिया करता है उस समय में मिथ्यात्व की क्रिया करता है, और जिस समय में मिथ्यात्व की क्रिया करता है उस समय में सम्यक्त्व की क्रिया करता है सम्यक्त्व की क्रिया करते हुवे, मिथ्यात्व की क्रिया करता है और मिथ्यात्व की क्रिया करते हुए सम्यक्त्व की क्रिया करता है इस तरह एक समय में एक जीव दो क्रिया करता है सो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि एक समय में एक जीव सम्यक् व मिथ्या ऐसी दो क्रिया करता है उन का कथन मिथ्या है अहो गौतम ! उस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में एक जीव एक ही क्रिया करता है यथा-सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया जिस समय

नो इणट्ठे समट्ठे ॥ विसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे असमोहतेण अप्पाणेण अविसुद्ध लेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ, जहा अविसुद्धलेस्सेण छ आलावगा एवं विसुद्धलेस्सेणवि छ आलावगा भाणियव्वा जाव विसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्सं देवंदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ १० ॥ अन्नउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खइ एवं भासेइ, एवं पन्नवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दोकिरियाओ पकरेइ तंजहा सम्मत्त किरियंच मिच्छत्त किरियंच, जं समयं सम्मत्त किरियं पकरेइ तं समयं मिच्छत्त किरियं पकरेइ, जं समयं मिच्छत्त किरियं पकरेइ तं समयं सम्मत्त

भगवन् ! क्या विशुद्ध लेश्यावाला अनगार विशुद्ध लेश्यावाले देव अथवा देवी को क्या जाने अथवा देखे? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अब विशुद्ध लेश्या (तेजो पद्म शुक्ल) का कथन है अहो भगवन् ! विशुद्ध लेश्यावाला अनगार वेदना आदि समुद्घात रहित अपने ज्ञान से विशुद्ध लेश्यावाले देव अथवा देवी को क्या जाने देखे? हां गौतम ! वैसे जाने व देखे या जैसे अविशुद्ध लेश्या के छ आलापक कहे वैसे विशुद्ध लेश्या के छ आलापक जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कितनेक अन्यतीर्थी ऐसा कहते हैं, यावत् प्ररूपते हैं कि एक जीव एक समय में दो क्रिया करता है तथा—सम्यक् क्रिया व मिथ्या क्रिया, जिस समय में सम्यक्त्व की

॥ १ ॥ काहिण भंते ! समुच्छिम मणुस्सा समुच्छंति ? गोयमा ! अंतो मणुयखेत्ते जहा पण्णवणाए जाव सेत्त समुच्छिम मणुस्सा॥२॥ से किं तं गब्भवक्कंतिय मणुस्सा ? गब्भवक्कंतिय मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा ॥ ३ ॥ सेकिंतं अंतरदीवगा ? अंतरदीवगा अट्ठावीसविहा पण्णत्ता तंजहा एगरुआ, आभासिया, वसाणिया, णागोली, हयकण्णगा, आयसमुहा, आसमुहा, आसकन्नगा, उक्कामुहा, घणदंता, जाव सुद्धदंता ॥ ४ ॥ कहिण्णं भंते !

कहे हैं ! संमूर्च्छिम मनुष्य एक रूप ही है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! संमूर्च्छिम मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसे पन्नवणा में संमूर्च्छिम मनुष्य का अधिकार कहा वैसा ही यहां जानना यावत् यह संमूर्च्छिम मनुष्य का कथन हुआ ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गर्भज मनुष्य के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! गर्भज मनुष्य के तीन भेद कहे हैं कर्मभूमि के, अकर्मभूमि के व अंतरद्वीप के ॥ ३ ॥ उस में अंतरद्वीप के कितने भेद कहे हैं ? अंतरद्वीप के अट्ठाइस भेद कहे हैं १ एक रूक, २ आभासिक, ३ वैषाणिक, ४ नांगोलिक, ५ हयकर्ण, ६ अयसमुख, ७ आसकर्ण, ८ उल्कामुख, ९ घनदंत यावत् शुद्धदंत ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के एक रूक मनुष्य का एक रूक द्वीप कहां कहा है ?

किरियत्ता, ज समय सम्मत्तकिरिय पकरेइ णो त समयमिच्छत्तकिरिय पकरेइ, ज समय मिच्छत्तकिरिय पकरेइ नो त समय सम्मत्ताकिरिय पकरेइ, सम्मत्ताकिरिया पकरणत्ताए नो मिच्छत्त किरिय पकरेति, मिच्छत्तकिरिया पकरणत्ताए नो सम्मत्त किरिय पकराति, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ तजहा-सम्मत्तकिरिय वा मिच्छत्तकिरियवा ॥ सेत्त तिरिक्खजोणी तइदेसउत्रोओ ॥ ४ ॥ २ ॥ सेकित मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम मणुस्साय गब्भवक्कतिय मणुस्साय ॥ सेकित समुच्छिम मणुस्सा ? समुच्छिम मणुस्सा एगागारा पण्णत्ता

सम्यक् क्रिया करता है उस समय मिथ्या क्रिया नहीं करता है और जिस समय मिथ्या क्रिया करता है उस समय सम्यक् क्रिया नहीं करता है सम्यक् क्रिया करने में मिथ्या क्रिया का अभाव है और मिथ्या क्रिया करने में सम्यक् क्रिया का अभाव है इस तरह एक जीव एक समय में एक ही क्रिया करता है यथा—सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया यह तिर्यंच का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा॥४॥२॥ अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! मनुष्य के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य के दो भेद कहे हैं समूर्च्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य इस में समूर्च्छिम मनुष्य के कितने भेद

वणसडेण सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ॥ सेणं वणसंडे देसूणाइ दो जोयणाइ चक्कवाल विक्खभेण वेइया समए परिक्खेवेण पन्नत्ते ॥ सेण वणसंडे किण्हे किण्हो भासे एव जहा रायपसेणइज्जे, वणसंडवन्नओ तहेव निरविसेस भाणियव्वं ॥ तणाणय वन्नगंधफासो सद्दो, तणाण वावीओप्पाय पव्वयगा, पुढविसिला पट्टगाय भाणियव्वा जाव तत्थण बहवे वाणमतरा देवाय देवीओय आसयति जाव विहरति ॥ ४ ॥ एगुरुय दीवस्सण दीवस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते—से जहा नामए आलिंगपुक्खरेइवा, एव सयणीए भाणियव्वे जाव पुढवि सिलापट्टगाति तत्थण

वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना इस प्रकार वेदिका को चारों तरफ जो वनखण्ड रहा हुवा है वह दो योजन में कुच्छ कम गोलाकार चौडाइ में है यह वनखण्ड कृष्ण वर्णवाला कृष्णाभासवाला यों इस का सब कथन रायप्रसेणी सूत्र से जानना तृण व मणिकाओं के वर्ण, गंध, रस व स्पर्श वैसे ही वावडियों, पर्वत, व पृथ्वी शिलापट्ट सब कहना वहां अनेक वाणव्यंतर देव व देवियों बैठते हैं यावत् विचरते हैं ॥४॥ उस एकरूक द्वीप की अंदर बहुत सम रमणीय भूमि भाग रहा हुवा है जैसे मृदंग का तल, यों वर्णन का कहना यावत् पृथ्वीशिलापट्ट का कहना उस में अनेक एकरूक द्वीप के मनुष्य व मनु-

दाहिणिल्लाण एगरुयमणुस्साण एगुरुयदीवेणाम दीवे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबूदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द तिण्णि जोयण सयाइं उगाहित्ता, एत्थण दाहिणिल्लाण एगुरुय मणुस्साण एगुरुय दीवे नामदीवे पण्णत्त, तिण्णिजोयण सयाइं आयाम विक्खंभेणं णवएकूणपण्णे जोयणसए किंचि विसेसूण परिक्खेवेण ॥ सेणं एगाए पउमवरं वेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता ॥ सेणं पउमवर वेइया अद्धजोयण उड्ढउच्चत्तेण पंच धणुसयाइं विक्खंभेण, एगुरूय दीव समंता परिक्खेवेण पन्नत्ता तीसेण पउमवर वेइयाए अयमेयारूवे वण्णवासे पन्नत्ते तंजहा-वइरामयानिम्मा, एवं वेतिया, वण्णओ जहा रायपसेणइए जहा भाणियव्वा, सेणं पउमवर वेइया एगेण

अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में चुल्लहिमवंत वर्षधर पर्वत की ईशानकून के चरिमांत से तीन सो योजन लवण समुद्र में जावे त्यां एकरूक नाम द्वीप रहा है यह तीन सो योजन का लम्बा चौडा है ९४९ योजन में कुच्छ कम की परिधि है उस की चारों तरफ एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है यह पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊंची है, पांच सो धनुष्य की चौडी है और एकरूक द्वीप को चारों तरफ घेर कर रही हुई है यह पद्मवर वेदि का वर्ण राजप्रश्नीय से जानना इत्यादि

खज्जूरीवणा णालिएरवणा कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ ७ ॥ एगरुय दीवेण तत्थ २ बहवे तिलयालयआ नग्गोहा जाव रायरुक्खा णंदिरुक्खा कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ एगरुय दीवेण दीवे तत्थ बहुओ पउमलयाओ, नागलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ एवं लयावन्नओ जहा उववाइए जाव पडिरूवाओ ॥ एगुरुय दीवेण दीवे तत्थ बहवे सिरियगुम्मा जाव महा जाइगुम्मा तणगुम्मा दसद्धवन्न कुसुम कुसुमेंति जेण वायविहुलग्ग साला एगुरुयदीवस्स बहुसमरमणिज्ज भूमिभाग मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति, एगुरुयदीवेण तत्थ २ बहुओ वणराईओ पन्नत्ताओ

व नालीयेरी के वन, पुष्प फलवाले यावत् रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ उस एकरूक द्वीप में बहुत तिलक वृक्ष के वन यावत् रायण नंदीवृक्ष प्रमुख धर्मादिक से रहित पुष्प फल वाले, यावत् रहे हुवे हैं और भी वहां पद्मलता यावत् श्यामलता पुष्प फल वाली रही हुई है इस का वर्णन उववाइ सूत्र में कहा वैसे जानना यावत् प्रतिरूप है, और भी वहां बहुत सिरिक वृक्ष के गुल्म यावत् महाजाति के गुल्म पांचों वर्ण के पुष्पों व फलों से फलित हुए हैं, वहां मंद वायु चलता है जिस से उस निर्मल वृक्षकी शाखा कंपायमान होती है उस से एकरूकद्वीप के बहुत मनोहर समभूमि भाग में पुष्प के समूह (ढग) होते हैं, और भी

बहवे एगुरूय दीवया मणुस्साय मणुस्सीओय आसयति जाव विहरति ॥ ५ ॥ एगरूय दीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उद्दालका मोद्दालका कोद्दालका कतमाला नतमाला नट्टमाला सिंगमाला सखमाला दंतमाला सेलमाला णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ कुसविकुस विसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव बीयमंतो, पत्तेहिय पुप्फेहिय अच्छन्न पडिछन्ना सिरिए अईव २ सोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥६॥ एगुरूय दीवेण दीवे तत्थ बहवे हेरुयालवणा, भेरुयालवणा मेरुयालवणा, सेरुयालवणा, सालवणा, सरलवणा, सत्तपण्णवणा पूयफलिवणा,

आमी बैठते हैं यावत् विचरते हैं ॥ ५ ॥ उस एकरूक द्वीप में बहुत उद्दालक मोद्दालक, कोद्दालक, कतमाल, नतमाल, नट्टमाल, सिंगमाल, शंखमाल, दंतमाल व सेलमाल नामक वृक्षों कहे हुवे हैं वे वृक्षों फल फूल से सहित हैं, उन के मूल शुद्ध हैं, दर्भादिक से रहित हैं, मूल, कंद यावत् बीज सहित हैं, पत्र पुष्प से आच्छादित बने हुए हैं, विशेष वृक्ष की शोभासे अती २ शोभते हुवे रहते हैं ॥ ६ ॥ उस एक रूप द्वीप में हेरुवाल वनस्पति के वन, भेरुवाल वनस्पति के वन, मेरुवाल वनस्पति के वन, सेरुवाल वनस्पति के वन, शाली के वृक्ष के वन, सरसव के वन, सोपारी के वन, आम के वन, खजुरी के वन

विसायण सुपक्क खोयरसवरसुरा वण्णरसगंधफासजुत्त

मज्जाविधीए बहुप्पगारा, तहेव तेमत्तंगयावि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परि-

णयाए मज्जविहीए उववेया फलेहिं पुन्नाविव विसट्टंति, कुसविकुसविशुद्ध रुक्खमूला जाव

चिट्ठंति ॥ १ ॥ एगुरुय दीवे तत्थ बहवे भिंगंगाणामदुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से

वारगघडकरग कलस कक्करि पायकंचणि उदंकवद्धणि सुपइट्ठकविट्ठा पारीचसगा

भिंगारकरोडि सरग परंगपत्ती थालणिल्लग चवलिय अवपलगवाल विचित्तवट्टकमणि

प्रकार से भरा रहते हैं. ऐसा मद्यांग वृक्ष का समूह है, ये अनेक प्रकार के क्षेत्र स्वभाव से ही होते हैं, परिपाकपने परिणमते हैं, फल से परिपूर्ण रहते हैं अथवा फल पक्व होकर फूले हो जाते हैं तब उस में से मद झरता है बहुत विस्तारवाले श्रेष्ठ व शुद्ध उस के मूल रहे हैं ऐसे वृक्षों वहां रहे हुए हैं यह पहिला मातंग कल्पवृक्ष का वर्णन हुआ ॥ २ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों! वहां बहुत प्रकार के भृंगारक नाम कल्प वृक्षों (भाजन के वृक्षों) हैं जैसे वारा घट, कलश, करकरी, कांचनीका, उदकवर्धनी, सुप्रतिष्ठक, विष्टर, परिश्रवक, भृंगार लोटा, करोटिक, सरक, भरक पात्री, थाल, पल्लक, चपलक, अपर, दकवारक, मणिपट्टक, शुक्तिक, घोरापिरका, कंचनमणि भाजन इत्यादिक मनोहर भाजनों होते हैं वे भाजनों सुवर्ण मणि रत्नों से विचित्र हैं जैसे इस क्षेत्र में पूर्वोक्त

फदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा, तहेव ते तुडियगावि दुमगणा अणेग बहुविह वीससा परिणताए ततवितत घण झूसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहाए उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टति, कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूलाओ जाव चिट्ठंति ॥ ११ ॥ एगरुय दीवे तत्थ बहवे दीवसिहाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से सञ्झाविराग समए नवनिहिपतिणो दीविया चक्कवालचंद पभूय वट्टिपलितञ्झणहिं विउज्जालिय तिमिर मद्दए कणगनिकर कसुमिय पारिजाय वणप्पगासे, कंचण मणिरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जलविचित्त दंडाहिं दीवियाहिं सहसा पज्जा-

वादित्र की प्राप्ति को प्राप्त करते हैं वैसे ही त्रुटितांग नामक कल्प वृक्षों तत, वितत, घन व शुषिर यों चारों प्रकार के वादित्र के गुणों से सहित हैं वे पूर्वोक्त वृक्ष पत्र पुष्प सहित परिपूर्ण हैं, उन के मूल शुद्ध हैं यह तीसरा त्रुटितांग नामक कल्प वृक्ष कहा ॥ ११ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! एकरूक द्वीप में अनेक प्रकार के दीपशिखा नामक वृक्षों कहे हुए हैं जैसे संध्या समय में नव निधान के स्वामी चक्रवर्ती राजा के यहां एक दीपक का चक्रवाल प्रकट करे कि जिस से अंधकार नष्ट हो जावे, उस की बत्ती बहुत आदि व तेल से परिपूर्ण होती है शिखा का वर्ण कनक जैसा होता है, उस दीपी को बहु मूल्यवाले मणिरत्नों से जडित सुवर्ण का दंड होता है, ऐसी दीपी उत्तम होती है सदैव प्रकाश करती रहती है, रात्रि में तेजवंत मनोहर

तद्धक्खिप्पिसारपिणय, कयगमणिग्यपभत्ति विचित्तविमायणेहिं बहुप्पगारा, तहेव तेसि भिगंगयावि दुमगणा अणेगा बहुविविह वीससा परिणयाए भायण विहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विवविसट्टति, कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ १० ॥ एगरुय दीवेण तत्थ बहवे तुडियगा नाम दुमगणा पन्नत्ता समणाउसो ! जहा से आलिंग पणव दद्दर पडह डिंडिमा भंभा तहोरम्भ किणिय खरमूहि मूयगं संखिय परिछए पव्वगा परिवायणि वंस वीणा सुघोस विपंचि महतिकच्छ तिरिक्खमत कलोला कसाल तालक संसपरोड' आते वावेधीये णिउणा गंधव्व समय कुसलेहिं

भाजन होते हैं ऐसे ही भृगार वृक्ष के समुह अनेक प्रकार के भाजन सहित हैं स्वभाव से परिणामित हैं, पुष्प फल से परिपूर्ण हैं, य वृक्ष पत्र पुष्पवाले यावत् मनोहर हैं यह दूसरा भृगांग कल्प वृक्ष का वर्णन हुआ ॥ १० ॥ अहो आयुष्मन् श्रमणो ! उस एकरूक द्वीप में तुटितांग नामक कल्प वृक्ष के समुह हैं, जैसे आलिंगक नामक बड़ा वादित्र, लघुमादल, पणव, पडह, ददर करटी, डींडिम, भेरी, बड़ा भेरी, कणिका खरमुखी, मुरज, संख, परिलिय, परिवादय, सप्ततन्त्री, वीणा, पर्व, विपुवंच, विक्षेप, सुघोषा, विपची तंत्री, वीणावंसी, वीणा विशेष शततन्त्री वीणा, स्तसीका नामक वाणा, इस्तमाल, कास्यताल ऐसे वादित्र के भेद कहे हैं - जैसे गायन विद्या में प्रवीण वादित्र बजाने आदि कार्य में चतुर [illegible]

फलिया तिट्ठाणकरणसुद्धा, तहेव ते तुडियगावि दुमगणा अणेग बहुविह वीससा परिणताए ततवितत घण झूसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहाए उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टाति। कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूलाओ जाव चिट्ठंति ॥ ११ ॥ एगरुय दीवे तत्थ बहवे दीवसिहाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से मज्झविराग समए नवनिहिपतिणो वेदीविया चक्कवालवंद पभूय वट्टिपलितझणाहिं विउज्जालिय तिमिर मद्दए कणगनिकर कुसुमिय पारिजाय घणप्पगासे कंचण मणिरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जलविचित्त दंडाहिं दीवियाहिं सहसा पज्जा-

वादित्र की भांति को प्राप्त करते हैं वैसे ही तृटितांग नामक कल्प वृक्षों तत, वितत, ताल व शुषिर यों चारों प्रकार के वादित्र के गुणों से सहित हैं वे पूर्वोक्त वृक्ष पत्र पुष्प सहित परिपूर्ण हैं, वन के मूल शुद्ध हैं यह तीसरा तृटितांग नामक कल्प वृक्ष कहा ॥ ११ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! एकरुक द्वीप में अनेक प्रकार के दीपशिखा नामक वृक्षों कहे हुए हैं जैसे संध्या समय में नव निधान के स्वामी चक्रवर्ती राजा के यहां एक दीपक का चक्रवाल प्रकट करे कि जिस से अंधकार नष्ट हो जावे, उस की बत्ती बहुत जाडी व तेल से परिपूर्ण होती है शिखा का वर्ण कनक जैसा होता है, उस दीपों को बहु मूल्यवाले मणिरत्नों से फाडित सुवर्ण का दंड होता है, ऐसी दीवी उत्तम होती है सदैव प्रकाश करती रहती है, रात्रि में तेजवंत मनोहर

रुइस मियंकत तपादप्पतावंमल महगण समय व्वदाहिं वितिमिरकरवसूर पतीरे उज्जोवसिद्धिपाहिं जालाउज्जलपहसियाभिरामाहिं सोभमाणाहिं सोभमाणा, तहेव ते दीवसिहावि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए उज्जोयविहीए उववेया फलेहिं कुसविकुसजाव चिट्ठंति ॥ १२ ॥ एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे जोइसिया नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहासे अचिरुग्गय सरयसूर मंडल पडत दक्को सहस्स दिप्पंतविज्जुज्जल हुय वहनिद्धूम जालिय निद्धंतधोय तत्ततवणिज्जकिंसुय

देदीप्यमान तेज होता है, निर्मल ग्रह चन्द्र जैसी उस की कांति होती है, अंधकार को नष्ट करनेवाले सूर्य के कीरण समान उद्योत करनेवाली होती है, उन दीपों की ज्योति से भेत प्रहसित विस्तारयुक्त मनोहर शोभनिक कांति प्रसरती है इस तरह की कांतिवाले दीपशिखावाले व अनेक विविध प्रकार से उद्योत करनेवाले वृक्षों फलपूर्ण यावत् पुष्प सहित रहे हुए हैं यह दीप शिखा नामक कल्पवृक्ष का कथन हुवा ॥१२॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! एकरुक द्वीप में बहुत ज्योतिषी के वृक्ष कहे हैं जैसे तत्काल का उदित हुवा शरदऋतु का सहस्र कीरणों से देदीप्यमान सूर्य, विद्युत का चमत्कार, निर्धूम, अग्नि, आग से तप्त किया हुवा सुवर्ण, किंशुक वृक्ष के पुष्प, अशोक वृक्ष के पुष्प, जासु वृक्ष के

सोगन्धासुमण कुसुमविमउलियपुंज मणिरयणकिरण जवाहिंगुलय तिरयरुवाइरेगरुवा, तहेव तेजातिसिहाविदुमगणा अणगबहु विविह वीससा परिणयाए उज्जोयविहीए उववेया, सुहलेसा मंदलेसा मंदातवलेसा कूडाट्ठाणट्ठिया, अण्णोण्णसमोगाढाहिं लेसाहिं सएरुमाए तेएएमे सव्वओसमंताओ भासति उज्जोवाति पभासति कुसविकुसवि जाव चिट्ठति ॥ १३ ॥एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे चित्तगानामए दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहा से पेच्छाघरेव्व चितरामेव कुसुमदाममाला कुलज्जललेसा भासत मुक्कपुप्फ पुंजोवयार किलिए विरल्लिय विचित्तमल्लसिरि समुदप्पगाब्भे गथिम वेढिम पूरिम

पुष्प, विकसित पुष्पों का समूह, मणिरत्न के कीरण, जातवंत हिंगुल का समूह इन सब के रूप से अधिक रूप वाले ज्योतिष वृक्ष के बहुत अनेक विविधवाले उद्योत सहित शुभ व मंद लेश्या वाले कहे हैं इन का संस्थान कूटाकार है परस्पर लेश्या के भेद रहे हुवे हैं. लेश्या के प्रदेश से सब दिशि में शोभते हैं उद्योत करते हैं कांति बढाते हैं, यावत् पुष्प फल से शोभनिक व मनोहर हैं यह ज्योतिष कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १३ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों! एक रूक द्वीप में बहुत प्रकार के चित्रांगक नामक कल्पवृक्षों के समूह हैं जैसे प्रेक्षागृह विचित्र मनोहर उत्तम पुष्प की मालाओं से संयुक्त, देदीप्यमान, व उज्ज्वल है, विकसित पांच वर्ण के पुष्पों के पुंज सहित हैं, विविध पुष्प व माला से सहित है, ग्रथीत, वेढिम,

सपयमेण मज्जण छेयसिप्पिय विभागरइएण सव्वओसमता चेव समणुबद्धे ९विरल लंबत विप्पइट्ठहिं पंचवन्नेहिं कुसुमदामेहिं सोभमाणा वनमालकतग्गए चेव दिप्पमाणे, तहेव ते चित्तगयाविदुमगणा, अणेगबहुविविहवीससा परिणयाए मल्लविहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति ॥१४॥ एगरुयदीवे तत्थ २ बहवे चित्तरसानाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहा से सुगंधवरकलमसालितंदुलविसिट्ठणिरुवयदुद्धरद्धे सारयघ मदत्थमुहुमेलिए अइरसे परमन्ने होज्जउ तमेगवन्नगंधमंतरण्णो जहा वा ति

पूर्व, व सपश्चिम यों चार प्रकार से निश्चय सब दिशाओं में विभाग करके अविरलपने लंबमान अन्तर रहित पांच वर्ण के पुष्पों की माला से भी शोभायमान है व वनमालाओं से उस के द्वार शोभनीक बन हुवे हैं, वैसे ही यह चित्रांग वृक्ष का समूह अनेक प्रकार के स्वभाव से परिणमा हुवा है पुष्प व पुष्पमाला के गुणों से सहित है, ये वृक्ष यावत् फल फूल वाले रहते हैं यह चित्रांग कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥१४॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! इस एकरुक द्वीप में चित्ररस नाम कल्प वृक्ष कहे हुवे हैं जैसे इस क्षेत्र में उत्तम शालि धान्य के चांवल को गाय के दुध में पकाकर उस में घृत, व शक्कर डालने से वह क्षीर वर्ण, गंध व रस से रसवन्त बनती है, ऐसे ही ६ खण्ड का स्वामी चक्रवर्ती के लिये रसोइ बनाने में निपुण पुरुषों रस

चक्कवट्टिसहोज्जा निउणेहिं सूयपुरिसेहिं, सालिए चाउरकप्प सेयासितेव उदणे कलमसालि णिव्वत्तिए विसके सेवप्फसिउ विसय सगलसित्थे अणेगसालणग संजुत्ते अहवा पडिपुण्ण दव्वुवक्खड सुसकए वण्णगंधरसफारिसजुत्त बलविरिय परिणामे इंदियबलवद्धणे खुप्पिवासा महणे पहाणगुलकढिय खंडमच्छंडिउवणीए वमोयगे, सण्हसमितिगब्भ हवेज्जा, परमइट्ठगसंजुत्ते, तहेव तेचित्तरसावि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए भायणविहीए उववेया कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ १५ ॥ एगुरुयदीवेण तत्थ २ बहवे माणयगा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से हारद्धहार वट्टणग

युक्त चार फलिक अनेक मसाले सहित बनाये जैसे मोदक अथवा परिपूर्ण सब द्रव्य सहित, यथायोग्य अग्नि में पका हुवा, उत्तम वर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त बल वीर्य को बढाने वाले शरीर की पुष्टि करने वाले, क्षुधा तृषा मीटाने वाले पौष्टिक मधुर उस में उत्तमगुड अथवा शक्कर डाले वैसा सिंह केसरी नामक मोदक स्पर्श में सुकुमाल व सूक्ष्म दल वाले व अच्छे स्वाद वाले होते हैं वैसे ही चित्र रस वृक्ष अनेक प्रकार के स्वभाव से परिणमित भोजन देते हैं वे भोजन विधिवाले कल्प वृक्ष पुष्प फल सहित रहते हैं यह चित्र रसात्मक कल्प वृक्ष हुवा ॥ १२ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों! एकरुक द्वीप में मणिअंग नाम कल्प वृक्ष समुह कहे हैं- जैसे, हार, अर्धहार, उत्तरा, मुकुट, कुण्डल, वामोत्तक, - हेमजाल

आव चिट्ठंति ॥ १६ ॥ एगुरुयदीवे २ तत्थ बहवे गेहागारा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से पागारट्टालग चरिया गोपुर पासायागास तलगमडव एगसालग चाउसालग गब्भघर मोहणघर वलभिघर चित्तसालग मालिय भत्तिघर वट्टतस नंदियावत्तसंठियायतपंडुरतल मुंडमाल हम्मिय अद्धघण धवलहर अद्धमागह विब्भतसेलद्धसेलसंठिय कूडागार सुविहि कोट्ठग अणेगघरसरणलेण आवण विडंग जालचंद निज्जूह अपवरक करोतालि चंदसालिवि भत्तिकलिया

रहते हैं यों मणिकांग कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १६ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों वहां एकरुकद्वीप में बहुत गृहाकार वृक्षों रहे हुए हैं. जैसे प्राकार अट्टालक, परिकाद्वार, प्रासाद, आकाशतल (चांदनी) मंडप, एकशालिया, दो शालिया, तीन शालिया, चार शालिया, गर्भगृह, वल्लभीगृह, चित्रशालि, मालिक, भूमिगृह वर्तुलाकार गृह, तीन कूनेवाले, चारकूने वाले नंदावर्त, पंडुरतल वाले, मुंडमाल, धवल गृह, अर्ध मागध गृह, विभ्रम गृह, शैल आकार गृह, शिखर के आकारवाले गृह, अच्छा कोठे के आकारवाले, अनेक गृह, शरण, लयन, दुकान, विडंगक, चंद्र निर्युह गृह, ओरडा, चंद्रमालीगृह, ऐसे अनेक प्रकार के विचित्र मनोहर गृह हैं जैसे गृह यहां भरत क्षेत्र में अनेक प्रकारे होते हैं वैसे ही गृहाकार वृक्ष के समुह भी अनेक प्रकार के हैं अनेक प्रकार के गृह के गुणों से विशेष स्वभाव से यावत् परिणमते हैं सब वृक्ष पर सुख पूर्वक चढ सकते हैं व उतर सकते हैं, उस वृक्ष में सुख से प्रवेश कर सकते हैं

नलिण सतुमय भत्तिचित्ता तत्थ बिहि बहुप्पगारा हयज्जवर पट्टणुग्गता वण्णराग कलिया तहेव ते अणियाणावि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए तत्थ विहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिट्ठति ॥ १८ ॥ एगरुयदीवेण भंते दीवे मणुयाण केरिसए आगारभावए पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेण मणुया अणतिवर सोमचारुरुवा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा, भोगसस्सिरिया सुजाय सव्वंगसुदरंगा सुपइठिय कुम्मचारुचलणा, रत्तुप्पलपत्तमउय सुकुमाल कोमलतला नग णगर मगर

ऐसे ही अणग्न नामक वृक्षों के समुह भी अनेक प्रकार के परिणमे हुवे वस्त्र विधि सहित फल फुलवाले पावत् रहे हुवे हैं यह दशवा अणिगण नामक कल्प वृक्ष का कथन हुवा यह दश जाति के कल्प वृक्ष का कथन किया ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में मनुष्य का आकार कैसा है ! अहो गौतम ! उन मनुष्यों को अत्यंत सौम्यकारी मनोहर रूप है, भोग में उत्तम, भोग के लक्षण धारण करनेवाले, व भोग में मनोहर हैं, उन के अंग सब अवयव से सुंदर मनोहर हैं, मनोहर सुस्थित काचबे जैसे पांव हैं रक्त कमल जैसे सुकोमल पांव के तले हैं; उन के पगतल में पर्वत, नगर, समुद्र, मगरमच्छ, चक्र मृग इत्यादि लक्षणों हैं, अनुक्रम से अंतर रहित पांव की अंगुलियों हैं; पांव की पानी ऊंची है, ताम्रवर्ण अम

सागर चक्कंकहरंक लक्खणंकियचलणा, अणगुन्वसु साहयगुलियाठण्णय, तणुय तंबणि-द्धणक्खा, सट्ठिय सुसलिट्ठ गुढगुप्फएणी कुरुविंदावत्त वट्टणुपुव्वजंघा, सामुग्ग निमुग्ग गुढजाणू, गतससण सुजात सण्णिभोरु वरवारणमत्त तुल्लविक्कम विलासितगती सुजात वरतुरग गुब्भदेसा आइन्नहतोव्व णिरुवलेवा पमुइय वर तुरग सीह अइरेग वट्टियकडी, साहयसोणिंद मुसलदप्पणणिगरित वरकणगच्छरुसरिस वर वइरवलित-मज्झा उज्जुअसम सहित सुजाय जच्चतणुकसिणणिद्ध आदेज्जलडह सुकुमाल मउय

नस छूपे अच्छे आकारवाली पुष्ट नहीं दीख सके वैसी पांव की घुंटी है, हरिणी के शरीर जैसे वर्तुलाकार जंघाओं हैं डब्बे के ढक्कन जैसे गाढ घुटने हैं, हस्ती समान विमल विलासवंत गति है, जातिवंत अश्व समान गुप्त देश गुप्त रहा हुवा है, शुभ जातिवंत अश्वों के गुह्य भाग लीद करते हुए खराब होते नहीं वैसे ही पुरुषों के गुह्य मदन पवन करते हुए खराब होता नहीं प्रमुदित अश्व अथवा सिंह उस का कटिमे अधिक वर्तुलाकार कटिभाग है, वज्र मुशल, आरिसा, निर्मल सुवर्ण तथा खड्ग की मूठ समान उन के कटि विभाग है, उदर में त्रिवली पडती है, ऋतु परिणाम सहित, उत्तम जातिवंत, सूक्ष्म, कृष्ण, स्निग्ध, सौभाग्यवन्त मनोहर, सुरूप क, कामक उत्पादिक उनके शरीरकी रोमराजी है, गंगावर्त, दक्षिणावर्त व सूर्य के उदय होने से

रमणिज्ज रोमराइ, गंगावत्तय पयाहिणावत्त तरंग भंगुर रविकिरण तरुण बोधिय अकोसा तत्त पउम गंभीर वियडणाभी झस विहगसुजाय पीणकुच्छी झसोदरा सुइकरणी पम्ह, वियडणाभी, सुन्नतपासा, संगतपासा, सुंदरपासा सुजातपासा, मितमाइत पीणरइत पासा, अकरंडुय कणगरुयग निम्मल सुजाय निरुवहय देहधारी, पसत्थबत्तीस लक्खणधारा, कणगसिलातलुज्जल पसत्थ समतल उवचिय विच्छिन्न पिहुलवच्छा, सिरिवच्छांकित वच्छा, पुरवरफलिह वट्टिभुया, भुयगीसर विपुलभोग, आयाण फलिह

जैसे कमल विकसित होता है वैसी नाभी है, मच्छ व पक्षी जैसी सुजात कुक्षि है, झख मत्स्य समान उदर है, शुचि पवित्र शरीर है, पद्म समान विकट नाभी है, किंचित् नीचे नमते हुए, मनोहर, गुण सहित, प्रमाण सहित, यथोक्त प्रमाण मांस से पुष्ट रचित पास है, पसली नहीं दीख सके वैसा कनक समान निर्मल शरीर है, उत्तम बत्तीस लक्षण धारण करनेवाले हैं, सुवर्णशीलतल समान उज्वल, प्रशस्त, समतल विस्तीर्ण उन के हृदय हैं, नगर द्वार की भोगल समान गोल प्रलम्ब दो भुजाओं हैं, कपाट के भोगल समान लम्बी दो बाहाओं हैं, वे भुजगी समान रमणीक अच्छे संस्थानवाले हैं उन के हस्ततल की सन्धी शुभी हुए मनोहर विशिष्ट निकट हैं मांस सहित पुष्ट, पुष्ट व मन उत्तम लक्षणों सहित छिद्र रहित उन के

उक्कुहुर्दव हु, जुगसंसम पीणरइय पीवरपउट्ठ संठिय उवचिय घणथिर सुबद्ध सुसलिट्ठ पव्वसंधी, रत्ततलोवइत मउय मंसल पसत्थ लक्खण सुजाय अच्छिद्द जालपाणी, पीवर वट्टिय सुजाय कोमल वरंगुलीआ, तंबतलिण सुतिरतिल (रुचिर) निद्धलुक्खा नक्खा, चंदपाणिलेहा, सूरपाणिलेहा, संखपाणिलेहा, चक्कपाणिलेहा, दिसासोवत्थियपाणिलेहा, चंद सूर संख चक्क दिसा सोवत्थिय पाणिलेहा, अणेगवर लक्खणुत्तम पसत्थ सुविरइयपाणीलेहा, वर महिस वराहसीह सद्दूल उसभ णागवर विउल उत्तम इदखंधा, चउरंगुलसुप्पमाण कंबुवरसारिस गीवा, अवट्ठित सुविभित सुजातचित्तमंसु

रक्ततल हैं, पुष्ट वर्तुलाकार अत्यंत मधान अंगुलियों हैं, ताम्बे के वर्ण समान अच्छे पवित्र देदीप्यमान हाथ के नख हैं, हथेली में चंद्र, सूर्य, दक्षिणावर्त शंख, चक्रवर्ती का चक्र, शुभ सीधा स्वस्तिक, इन का आकार रहा हुआ है और अन्य लक्षणों से संपूर्ण रचित उन की हथेलियों रही हुई हैं, अच्छा महिष, वराह, सूअर, सिंह, शार्दूल, महावृषभ, वृषभ, हस्ती समान घन के बडे स्कंध हैं, चार अंगुल प्रमाण शंख जैसी गरदन है, यथावस्थित विभाग समान मूछों हैं, मांस सहित सिंह समान दाढी (दाढे) हैं, परवाल अथवा बिंबफल समान वन के रक्त ओष्ठ हैं, पांडुर चंद्र समान निर्मल व दक्षिणावर्त शंख, गोक्षीर, कुंद पुष्प, मचकुंद का पुष्प, वायु के फेन अथवा कमल समान एकाकार सब के दांत की श्रेणी है

मसल सट्ठिय पसत्थ सद्दल विउल हणुयाओ सवितसिलप्पवाल बिंबफल सन्निभाधरोट्ठा, पडूर ससि सगल विमल निम्मल सख दधिघण गोक्खीर फेण दगरय मुणालिया धवलदत्तसेढी अखंडदंता, अफुडियदंता, अविरलदंता, सुसिणिद्दंता, सुजायदंता, एग- दंतसेढीव्व अणेगदंता, हुतवहनिद्धंत धोत तत्त तवणिज्जरत्त तलतालुजीहा, गरुलायत उज्जुतुंगणासा, अवदालिय पोंडरीयणयणा, कोकासित धवलपत्तलच्छा, आणामिय चावरुइल किण्हब्भराइय संठिय संगत आयत सुजात तणुकसिण निद्धभुमया, अल्ली- णपम णजुत्त सवणा, सुस्सवणा, पीणमसल कवोलदेसभागा, अइरुग्गय बालचंद

पन के दांत अखंड, फटे व अंतर रहित चीकने, व अच्छी तरह रहे हुवे हैं जो जाने में जैसा एक दांत है वैसे अनेक दांत रहे हुवे हैं, अग्नि से तपाया हुवा निर्मल सुवर्ण जैसा लाल तालु व जीभा है, गरुड पक्षी जैसी नासिका है, विकसित पुंडरीक कमल समान चक्षुओं हैं, विकसित कमल की कीर्णिका समान मधुर हैं, किंचित् नमाये हुए धनुष्य के आकार में काले वर्णवाली बरस समान अच्छे संस्थानवाली मनोहर लम्बी उत्तर पतली काली भ्रमर वाले हैं, प्रमाण युक्त कर्ण हैं, मांस से पुष्ट ऐसे कपोल हैं, तत्काल का उदित हुवा बाल सूर्य जैसा ललाट है प्रतिपूर्ण पूर्णिमा के चंद्र समान मुख है, छत्र के आकार में मस्तक है, निबिड नाडियों से बंधा हुवा अच्छ लक्षणों युक्त ऊंचे शिखर समान नम पीठाग्र शिखर होवे वैसा

मद्दिय पसत्थ विछिन्न समाणहाला, उज्जुङ्ग पाडपज्ञ सामवयणा, छचागराचमगदसाघण निचिय सुबद्ध लक्खणुन्नय कुडागारणिभ पिंडियसिरा, हुतवह निद्धतधोय तत्त-त्तवणिज्जरत्तकसतकेससूमि, सामलि पोंडघणणिचिय छोडिय मिउविसय पसत्थ सुहुम लक्खण सुगध सुदर भुयमोयग भिंग णीलकज्जल पहट्टभरगणणिद्ध णिकुरुंब णिचिय कुंचिय पयाहिणावत मुद्धसिरिया, लक्खण वंजण गुणोववेया, सुजायसुविभत सुरूवा पासाइया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा। तेण मणुया उहस्सरा हसस्सरा कोंचस्सरा णदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा मंजुस्सरा मंजुघोसा, सुस्सरा निग्घोसा

मस्तक है, दाडिम के पुष्प अथवा तपाए सोने जैसी लाल टट है, सामली वृक्ष के पुष्प सेपाल वहुत पास मे उपचित सुकोमल विशद प्रशस्त सूक्ष्म, लक्षणवत, सुगंध से मनोहर कृष्ण वर्ण जैसा, काजल का समूह भमरा भ्रमर के समूह समान श्याम चीकने दक्षिणावर्तवाले वलय पड़े नहीं ऐसे मस्तक के बाल हैं, उनका सब शरीर सर्व गुण लक्षण से सपन्न है, उन के अग उपांग अच्छे हैं स्वरूपवन्त देखने योग्य है, अभिरूप व प्रतिरूप है और भी उन का स्वर हंस क्रौंच पक्षी, वीणा व सिंह के स्वर समान है सिंह समान घोष (गर्जना) है, मधुर स्वर मधुर घोष है, सुस्वर सुघोष है, कांति से देदीप्यमान उन का शरीर है, वज्रऋषभ नाराच संघयण-वाले हैं, समचतुरस्र संस्थानवाले हैं, उन की चमडी झिलनी व राम रहित है, उत्तम प्रशंसनीय है, जिस को

छाया उज्जोइयगमणा, वज्जरिसह नारायसंघयणा समचउरंस - संठाण संठिया, सिणिद्धच्छवी, निरायंका उत्तमपसत्थ अइसेसनिरुवम तणूजल्ल मल कलंक सेयरय दोसवज्जिय सरीरा, निरुवमलेवा, अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कपोतपरिणामा, सउणिव्वोस पिट्ठतरोरुपरिणया विग्गहिय उन्नयकुच्छी पउमुप्पल सरिसगंध निस्सास सुरहियवयणा, अट्ठधणुसय ऊसिया तेसिं मणुयाणं चउसट्ठिपिट्ठि करंडगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ तेणं मणुया पगइभद्दया पगइविणीया, पगइउवसंता पगइपयणु कोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीण भद्दगा विणीया अप्पिच्छा असंणिहि

अन्य रूपवाँ नहीं देखके वैसा शरीर है, लघु गोत पक्षी जैसे लेप के नहीं व प्रस्वेद रहित शरीर है, मल प्रमुख उन के शरीर पर नहीं है, अनुकूल वायु वेग उनके शरीर का है, कंक पक्षी समान आहार ग्रहण करते हैं पारावत समान पाचन होता है, शकुन पक्षी समान विहार करते हैं, रोग रहित ऊंचा उदर भाग है पद्म अथवा कमल की गंध समान श्वासोश्वास है उन का वदन मनोहर है आठसो धनुष्य की ऊंची काया है, उन को ६४ पांसलियों होती हैं, अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्यों स्वभाव से भद्रिक, विनीत उपशांत हैं क्रोध मान माया व लोभ को पतले किये हैं, कोमलता व विनीत भाव सहित हैं, माया रहित भद्रिक स्वभावी विनीत भेष धन रहित, धनादिक संचय रहित वृक्षके घरोंमें रहने वाले, वांच्छित वस्तुकी

सचया अचट्ठा विडिमतरपविसमा जहिरियय कामगामिणोय तेमणुयग्गा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ १९ ॥ तेसिण भते ! मणुयाण केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! चउत्थभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ २० ॥ एगुरुयमणुईण भते ! केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ताओण मणुइओ सुजायसव्वंग सुंदरिओ, पहाणमहिलागुणेहिंजुत्ता, अच्चंत विसप्पमाण पउमसूमाल कुम्मसंठिय विसिठचलणा, उज्जमउयपीवरनिरंतर सुसाहतचलणगुलीओ, अब्भुण्णय रतियसालिण तंबसुसिणिद्धणक्खा, रोमरहिय वट्टलठसंठिय

प्राप्त करने वाले युगलनी से मनो वांच्छित काम भोग भोगते हुवे विचरते हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों! वैसे मनुष्य के समुह कहे हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! उन मनुष्यों को आहार की इच्छा कितने काल में होती है? अहो गौतम! एकांतर दिनमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥२०॥ अहो भगवन्! एकरूक द्वीपमें स्त्रियों का आकार भाव कैसा कहा ! अहो गौतम ! उन स्त्रियों का आकार अच्छा व मनोहर है उन के सब अंग मनोहर है, प्रधान उत्तम स्त्री गुणों सहित है, अत्यंत मनोहर कमल नाल व काचबे जैसे पांव हैं सरल, कोमल पुष्ट अंतर रहित व मांस सहित पांव की अंगुलियों हैं, ऊंचे मुखदायी कांस्य के आकार से लाल वर्ण के पवित्र चिकने नख हैं, रोम रहित वृत्ताकार से उत्तम प्रशंसनीय लक्षण सहित जंघायुगल

अमहस्स पसत्थ लक्खण अकोप्पजघजुयला, सुणिमियसुगूढजाणु, मसलसुबद्ध सधी कयलिखभातिरेग सठिया णिव्वणसुमाल मउय कोमल अविरल समसहत सुजातवट्ट पीवर निरतर रोरुआअट्ठावयदीविपट्टसठिया, पसत्थ विच्छिण्ण पिहुल सोणि वदणायामप्पमाण दगुणिय विसाल मसल सुबद्ध जहण्णवरधारिणिउवज्ज विराइय पसत्थ लक्खण णिरोदरा, तिवलिय तणुणमियज्झियाउ उज्जुय समसहिय जच्चतणु कसिणणिद्ध आदेज्जलडह सुविभत्त कत सुजाय सोभत रुइल रमणिज्ज रोमराई, गगावत्तकपयाहिणावत्तत्तर । भगुर रवीकरण तरुण बोधिय अकोसायत

है, अच्छी तरह नमते हुए दो घूंटण है, मांस से अच्छी तरह बधाइ हुइ घन की सधी है केलस्तम से अधिक आकारवाली व्रण रहित सुकुमाल मृदु, परस्पर मीलती हुई, पुष्ट वर्तुलाकार जंघा है, अष्टापद नामक पासोंके समान प्रशस्त लम्बी चौडी श्रोणि (कटी का पूर्वभाग—स्त्रीचिन्ह) है मुख का जो प्रमाण बारह अंगुल का होता है उस से दुगुनी करते जो होवे उतनी मांसल सहित व शिथिलता रहित घन की जघन है, रज विकार रहित उदर है, जिसकी तीन कुच्छ नमे हुए है सरल समवत, पतली काली, चिकनी मनोहर अंतराय रहित रमणिक, सुविभक्त रोमराजी है, गंगावर्त, दक्षिणावर्त तरंग कल्लोल जैसे गंभीर, उदित-होते सूर्य समान तेज से विकसित कमल समान गंभीर विकट नाभी है उत्तम मांस वाली कुक्षि है,

पउम गंभीर विगडणाभा, अणुन्नमउ पसत्थ पीण कुच्छी, संनयपासा संगयपासा सुजायपासा, मियमाइय पीणरइयपासा, अकरडुय कणगरुयग निम्मल सुजाय णिरुवहय गायलट्ठी, कंचण कलस पमाण समसंहिय सुजायालट्ठ चुचुय आमेल जमल जुगल वट्टिय अब्भुण्णय रतिय संट्ठिय पयोधराओ भुजंग अणुपुव्वतणुय गोपुच्छवट्ट समसंहिय णमिय आएज्ज ललिय बाहाओ, तंबणहा, मंसलग्ग हत्था, पीवर कोमल वरंगुलीओ, णिद्ध पाणिलेहा, रविससि संख चक्क सोत्थिय विभत्त सुविरातिय पाणिलेहा, पीणुण्णय कक्खवत्थिय पदेसा पडिपुण्णगलकवोला, चउरंगुल सुप्पमाण कंबुवर सरिसगीवा,

नम हुए धनुष्य समान मर्यादा सहित मनोहर दो पास हैं, उनकी हड्डियों नहीं दीखती है, सुवर्ण की कांति समान निर्मल रोग रहित काया है सुवर्ण कलश समान प्रमाण सहित दोनों सख्त कठिन स्तन है, वर्तुल समश्रेणि में - साथ दोनों गोलाकार में स्तन है, सर्प समान अनुक्रम से पतली होती गोपुच्छ के आकार से पतली नमती हुई गोलमी बाहु है ताम्र समान नख है, मांस सहित पुष्ट सुकोमल शोभनीक व पतली हाथ की रेखा है, चंद्र, सूर्य, दक्षिणावर्त शंख, चक्र, स्वस्तिक, प्रमुख की हाथ में रेखाओं हैं, भाछे, कंधे, कुक्षि हृदय व बस्ति रूप प्रदेश मांसपूर्ण है मांस से पुष्ट मरदन के कपोल है, चार अंगुल प्रमाण शंख जैसी ग्रीवा है, मांस सहित अच्छे आकारवाली हड्डी (हडी) है,

असलसठिय पसत्थहणुगा, दालिम पुष्फ पगासपीवर पलम्ब कुंचिय वराधरा छदरोत्तरोट्ठा दधि दगरय चंद कुंद वासंति मउल अछिद्द विमल दसणा रत्तुप्पल रत्तमउय मूमालतालु जीहा, कणयर मउल अकुडिल अब्भुग्गय उज्जतुंगणासा, सारयनव कमल कुमुद कुवलय विमुक्क मउल दलनिगर सरिस लक्खण अंकिय कंत नयणा, पत्तलधवलायततबलोयणाओ, आणमित चावरुइल किण्हभराइ संठिय संगय आयय सुजायतणकसिण निद्धभुमया अल्लीण पमाणजुत्त सवणा, सुस्सवणा, पीणमट्ठरमणिज्जगंडलेहा चउरंसपसत्थसमणिडाला, कोमुतिरयणिकरविमल

दाडिम के पुष्प समान लाल वर्ण के सुंदर ओष्ठ हैं, दधि, पानी, चांदी, चंद्र, मचकुंद के पुष्प, मालती के पुष्प, अशोक वृक्ष के पुष्प समान श्वेत वर्णवाले छिद्र रहित, निर्मल दांत कहे हैं रक्त कमल व रक्त पद्म समान रक्त वर्णवाले मृदु जिव्हा व तालु है कणेर अथवा अशोक वृक्ष समान ऊंची सरल लम्बी नासिका है, शरदकाल के उत्पन्न हुए कमल, चंद्र विकासी कमल, नीलोत्पल अहो गौतम ! कर्णिका समान लक्षण युक्त मनोहर नयन हैं, लावण्य सहित नयन के कोने ताम्र जैसे आहार करती हैं ? धनुष्य समान मनोहर काले केश सहित तगत, सुजात कृष्ण वर्णवाली भृकुटी है, श्रमणों ! यह मनुष्य पुष्ट मनोहर कपोल है, चार अंगुल प्रमाण विशाल ललाट है, कार्तिक पूर्णिमा के चंद्र कहा ? अहो गौतम !

विलाससल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला, सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयण लावण्ण-
वण्णरूवजोवणविलासकलिया, नंदणवणविवर चारिणीउव्व अच्छराओ
अच्छेरग पेच्छणिज्जा, पासाइयाता दरिसणिजातो अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ २१ ॥
तासिण भंते! मणुईणं केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! चउत्थ
भत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ २३ ॥ तेण भंते मणुया किं आहारति ? गोयमा !
पुढवी पुप्फफलाहारा ते मणुयगण पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २४ ॥ तीसेण भंते !

सोलह शृंगार व आचार से मनोहर है, बोलना, बैठना, हंसना व विलासवार्ता करना यह सब क्रिया युक्त है, मनोहर निबड पृष्ट है, सुंदर स्तन, जघन, वदन, हाथ, पांव चक्षु, लावण्य, रूप व योवन विलास सहित है, नंद वन में रहनेवाली अप्सरा समान रूप से देखने योग्य, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! युगल की स्त्री को कितने काल में आहार की इच्छा होती है ? अहो गौतम ! एकांतर दिनमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥२२॥ अहो भगवन्! वे किस वस्तु का आहार करती हैं ? अहो गौतम ! वे पृथ्वी पर के फल पुष्प का आहार करती हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! यह मनुष्य गण का कथन हुवा ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! वहां पृथ्वी का कैसा आस्वाद कहा ? अहो गौतम !

पुढवीए केरिसए अस्साए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा नामए गुलेइवा खंडेइवा सक्कराइवा मच्छंडियाइवा, भिसकंदेइवा, पप्पडमोततेतिवा, पुप्फुत्तराइवा, पउमुत्तराइवा अकामियातिवा, विजयातिवा महाविजयाइवा पायसोवमाइवा उवमाइवा अण्णोवमाइवा चउरक्कगोक्खीरे चउट्ठाणपरिणए गुडखंडमच्छंडिउववणाए मंदग्गिकढिए वण्णेण उववेए जाव फासेण भवेए एतारूवे सिता? नो इणट्ठे समट्ठे, तीसेण पुढवीए एतो इट्ठयराए चेव जाव मणामतरा चेव ॥ २५ ॥ आसाएणं भंते ! पुप्फफलाण केरिसए अस्साए पण्णत्ते ?

जैसे गुड़, शक्कर, मदिरा, मुसकंद, मोदक, पुष्पोत्तर अथवा पद्मोत्तर, आकोशिका, विजयापाक, महाविजयापाक, मिष्ट व विशेष, अनुपम गोक्षीर चार गाय को पीलाना, फीर उन चारों गायों का दुध तीन गायों को पीलावे, फीर तीन गायों का दुध दो गायों को पीलावे और दो गायों का दुध एक गाय को पीलावे और इस एक गाय का जो दुध होवे उस में गुड शक्कर वगैरह डालकर मंद अग्नि से पकावे यह जैसा वर्ण से पर्यन्त योग्य यावत् स्पर्श से पर्यन्त योग्य होवे वैसा एकरुक द्वीप के पृथ्वी का स्वाद वैसा होता है? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस इस से भी इष्ट व मनोज्ञ उस का स्वाद है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! वहांके पुष्प फल का स्वाद कैसा कहा ? अहो गौतम ! जैसे चारों दिशा का

गोयमा ! से जहा नामए रन्नोचाउरंत चक्कवट्टिस्स कल्लाणपवरभोयणे सयसहस्स निप्फन्ने वण्णेणं उववेए गंधेणं उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे वीसायणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे बींहणिज्जे मयणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे भवे तारूवेसिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, तेसिणं पुप्फफलाणं इतो इट्ठतराए चेव जाव अस्साएणं पन्नत्ते ॥२६॥ तेणं भंते! मणुया तमाहारेत्ता कहिंवसहिं उवेंति ? गोयमा! रुक्खगेहालया णं ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ॥ २७ ॥ तेणं भंते ! रुक्खा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! कूडागार संठिया, पेच्छाघरसंठिया छत्तागार

भव करनेवाले चक्रवर्ती राजा का परम कल्याणकारी लाखों वस्तुओं के संयोग से बनाया हुवा, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श से वर्णन योग्य, खाने योग्य, दीप्यमान, दर्प योग्य, मद इन्द्रियों व गात्रोंको सुख कर्ता व आनंद कर्ता, ऐसा भोजन जैसा क्या होता है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी इष्टतर यावत् आस्वादनीय उन पुष्प व फल का आस्वाद कहा है ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! वे मनुष्य आहार करके कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! वे मनुष्य वृक्ष रूप गृह में रहते हैं अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! वहां के वृक्षों कैसे आकारवाले कहे हैं ? अहो गौतम ! कूटाकार, प्रेक्षागृह, छत्राकार, ध्वजाकार,

सठिया, झयसठिया, थूभसठिया, तोरणसठिया, गोपुरसठिया, १ लगसंठिया, अट्टालग सठिया, पासायसठिया, हम्मितलसठिया, गवक्खसंठिया, वालग्गपोतियसठिया, वलभी सठिया, अण्णे तत्थ बहवे वरभवणसयणासण विसिट्ठ संठाण सठिया, सुभसीतल छायाणं ते दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २७ ॥ अत्थिणं भंते ! ते एगुरुय दीवे दीवे गेहाणिवा गेहवणाणिवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, रुक्खगेहालयाणं मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २८ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीव २ गामाइवा नगराइवा जाव सन्निवेसाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, जहत्थिय कामगामिणोणं ते मणुयगणा पण्णत्ता

स्तूप के आकार, तोरण का आकार गोपुर का आकार, मकर का आकार, अट्टालक का आकार, प्रासाद के आकार, हर्म्यतल के आकार, गवाक्ष के आकार, बालाग्रपोत के आकार, वलभि घर के आकार, रसोइ बनाने के गृह के आकारवाले हैं, और अन्य अनेक वृक्ष भवन, शैय्या, आसन के संस्थानवाले हैं उन की छाया अति शीतल है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में गृह गृह अथवा गृह हैं क्या ? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! वहां के मनुष्यों का वृक्ष ही गृहरूप बतलाये हैं ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में ग्राम नगर, यावत् सन्निवेश हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे

समणाउसो ! ॥ २९ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीवे असीइवा मसीइवा किसीइवा विवणीइवा पणीइवा वाणिज्जाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय असि मसि कसि विवणिपणियवज्जाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ॥ ३० ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ हिरण्णेइवा सुवण्णेइवा कंसेइवा दूसइवा मणीइवा मुत्तिएइवा विपुल-धण कणग रयण मणि मोत्तिय-संख सिलप्पवाल संतसार सावएज्जवा ? हंता अत्थि, णोचेवणं तेसिं मणुयाणं तिव्वममत्तिभावे समुप्पज्जइ ॥ ३१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ रायाइवा जुवरायाइवा, ईसरेइवा तलवरेइवा माडंबिएइवा कोडुंबिएइवा

मनुष्यों स्वेच्छा पूर्वक विचरनेवाले हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! एकरूप द्वीप में असी (शस्त्र का व्यापार) मसि (स्याही कलम का व्यापार) और कृषि (खेती का व्यापार) अथवा लेन देन का व्यापार है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! वे मनुष्यों असि, मसि, कृषि व लेन देन के व्यापार से रहित हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में हिरण्य, सुवर्ण, कांस्य, दूष्य, मणि मौक्तिक, व विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, शिलप, व प्रधान स्वापतेय है क्या ? हां गौतम ! वे सब हैं, परंतु उन मनुष्यों को उस पर तीव्र ममत्वभाव नहीं होता है ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में राजा, युवराज, ईश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठि, सेनापति,

इब्भेइवा, सेट्ठीइवा, सेणावईइवा, सत्थवाहिइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय इड्ढि सक्काराएण ते मणुयगणा पण्णत्ता ? समणाउसो ! ॥ ३२ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे दासाइवा, पेसाइवा, सिस्साइवा भयगातिवा भाइल्लगाइवा कम्मगाराइवा भोगपुरिसाइवा ? णो इणट्ठसमट्ठे, ववगय आभोगियाए तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३३ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ मातातिवा पियाइवा भाया इवा भयणीइवा भज्जाइवा पुत्ताइवा धूयाइवा सुण्हाइवा ? हंता अत्थि, णोचेवण तासिण मणुयाण तिव्वपेज्जबंधणे समुप्पज्जइ, पयणुपज्जबंधणा ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३४ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुय दीवे २ अरीइवा वेरियइवा घायगा-

व सार्थवाह है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्य ऋद्धि सत्कार समुदाय से रहित हैं ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में दास सेवक, शिष्य, भाजक, (भाग लेनेवाला) भागीदार [मित्र, कर्मकर, (नोकर) व भोग पुरुष है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है चाकर प्रमुख रहित वे मनुष्यों हैं ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में माता, पिता, भ्राता, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री, पुत्रवधू है क्या ? हां गौतम ! हैं परंतु उन में उनका प्रेम बंधन नहीं होता है स्वभाव से ही उन का प्रेम बंधन पतला होता है ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में अरि, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक

इवा वहगाइवा पडणीइवा पचामित्ताइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय वेराणुबंधाण ते मणुयागणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीव २ मित्ताइवा वयसाइवा घाडियातिवा सुहीतिवा, सुहीयाइवा, महाभागातिवा, सगतियातिवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ववगय पेमाणुरागाणं तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३६ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ आवाहाइवा विवाहाइवा जन्नाइवा सड्ढाइवा थालिपागाइवा चोलोवणतणाइवा सीमंतोवणतणाइवा, पितिपिंडनिवेयनाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ववगय आवाहविवाह

व शत्रु है क्या ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वैर के अनुबंध रहित वे मनुष्य कहे हैं ॥ ३५ ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में वयस्य, मित्र, समान वने हुए, सदैव साथ रहनेवाले सखा, महा भागवाले व संगतिक है क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्य प्रेमानुराग में रक्त नहीं हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में आवाह (स्वजनों को आमंत्रण) विवाह (लग्न क्रिया) यज्ञ विधि, श्राद्ध क्रिया, स्थालीपाक, (पकाने की क्रिया) बालक को वस्त्र पहिना, चूडामंडन संस्कार, उपनयन, मस्तक मुंडन का उत्सव, ओघव, पितृपिंड व नैवेद्यादिक क्रियाओं

जन्नरुद्दयालपागि चोलावण सीमताभणतणापितिपिंहनिवेदणाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३७ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ इंदमहाइवा रुद्दमहाइवा खंदमहाइवा सिवमहाइवा वेसमणमहाइवा मुगुंदमहातिवा नागमहातिवा जक्खमहाइवा भूतमहाइवा कूवमहाइवा तलागमहाइवा नदिमहाइवा दहमहाइवा, पव्वयमहाइवा रुक्खमहाइवा, चेतियमहाइवा, थूभमहाइवा ? णो इणट्ठेसमट्ठे, ववगयमहामहिमाण समणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥३८॥ अत्थिण भंते! एगुरुयदीवे २ नडपिच्छाइया णट्टपेच्छातिवा मल्लपेच्छातिवा मुट्ठियपेच्छाइवा विडवगपेच्छातिवा कहकपेच्छातिवा

है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य पूर्वोक्त सब क्रियाओं से रहित हैं ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में इन्द्र महोत्सव, रुद्र महोत्सव, स्कंद महोत्सव, शिव महोत्सव वैश्रमण महोत्सव, मुकुंद महोत्सव, नाग महोत्सव, यक्ष महोत्सव, भूत महोत्सव, कूप महोत्सव, तलाव महोत्सव, नदि महोत्सव, द्रह महोत्सव पर्वत महोत्सव, वृक्ष महोत्सव, चैत्य महोत्सव व स्तूप महोत्सव है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है पूर्वोक्त सब प्रकार के महोत्सव रहित वे पुरुषों हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में नट के खेल, नृत्य करने, मल्ल क्रीडा, मुष्टि युद्ध, विदूषक कथा करनेवाले, वार्ता करनेवाले, आख्यान कर

पवगपेच्छातिवा अक्खवाइगपेच्छातिवा लासगपेच्छातिवा लखपेच्छातिवा मखपेच्छातिवा तणइल्लपेच्छातिवा, तुम्बवीणपेच्छातिवा, कीवपेच्छातिवा मागहपेच्छातिवा, जल्लपेच्छातिवा, कहयपेच्छाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ववगय कोऊहल्लाण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३९ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सगडाइवा रहाइवा जाणाइवा जुग्गाइवा गिल्लीतिवा थिल्लीतिवा पवहणाइवा सीयाइवा संदमाणियाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे पादचार विहारणोण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ४० ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे आसाइवा हत्थिइवा उट्टातिवा

नेवाले, कुवा बावडी में कूदनेवाले, हास्य वचन कहनेवाले, अच्छा बुरा गानेवाले, वांस पर चढकर खेलन वाले, विचित्र मत से भिक्षा मांगनेवाले, वीणा बजानेवाले, मशी बजानेवाले, क्रीडा की क्रीडा, मागधा सो मगलीक वीणा बजानेवाले, कावड उठानेवाले, और स्तोत्र कहनेवाले ये पूर्वोक्त सब नाटक वहां हैं क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है क्यों कि उन को कौतुक नाच नहीं होता है ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में गाडे, रथ यान, पालखी, गिल्ली, थिल्ली, जहाज, शीबिका व संदमाणि है क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्यों पांव से ही चलते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में

गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गावीइवा महिसीइवा, उट्टीतिवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४२ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अच्छाइवा परस्सराइवा सियालाइवा विडालाइवा सुणगाइवा कोलसुणगातिवा कोकंतियइवा ससगाइवा चित्तचित्तलाइवा चिल्ललगाइवा? हंता अत्थि, णो चेवणं अण्णमण्णस्स तेसिंवा मणुयाणं किंचि आबाहंवा विबाहंवा उप्पायंति छविच्छेयंवा करेंतिवा, पगइभद्दगाणं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

हाथी, घोडे, ऊंट, बैल, महिष, खर, अजा व भाकर प्रमुख है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परन्तु वे वहां रहने वाले मनुष्यों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में गाय, महिषी, ऊंटनी, अजा (बकरी) व भाकरी प्रमुख है क्या ? हां वैसे ही हैं परन्तु वे वहां के मनुष्यों को उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में सिंह, व्याघ्र, दीपिका, अच्छ (रीछ) परस्सर, शृगाल, बिडाल, श्वान, कोलश्वा, कोकंतिक, शशक, चित्ता व चिल्लक आदि के पशु है क्या ? हां वैसे ही हैं परन्तु वे [illegible] एक दूसरे को अथवा मनुष्य को किसी प्रकार की बाधा [illegible]

॥ ४३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलाइवा ? हंता अत्थि नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गत्ताइवा दरिइवा घाइवा घसीइवा भिगूइवा उवाएइवा विसमेइवा विजलइवा धूलाइवा रेणुतिवा पंकेइवा चलणीइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे एगुरुयदीवेणं दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ खाणुइवा कंटाएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयराइवा पत्तकयराइवा असुइइवा पूइयाइवा दुब्भिगंधाइवा

उत्पात व पराभव नहीं करते हैं क्यों कि वहां जीवों भद्रिक स्वभाववाले हैं ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में शाली, व्रीहि, गोधुम, इक्षु व तिल हैं क्या ? हां वे हैं परंतु उन जीवों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में खड्डा, गुफा, भयंकर स्थान, उपपात का स्थान, विषम स्थान, जल रहित स्थान, धूल, रेणु, कचरा व रज विशेष हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि एकरूक द्वीप में बहुत सम रमणीय भूमिभाग है ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में खीला कंटक, तृणभुस, कंकर, तृण, कचरा, पान का कचरा, अपवित्र राख भूसा, दुर्गंध व अन्य अशोभनीक

गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४१ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ गावीइवा महिसीइवा, उट्टीइवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४२ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अच्छाइवा परस्सराइवा सियालाइवा बिडालाइवा सुणगाइवा कोलसुणगातिवा कोकंतियइवा ससगाइवा चित्तचित्तलाइवा चिल्ललगाइवा? हंता अत्थि, णो चेवण अण्णमण्णस्स तेसिंवा मणुयाण किंचि आबाहंवा विबाहंवा उप्पायंति छविच्छेयंवा करेंतिवा, पगइभद्दगाण ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

हाथी, घोडे, ऊंट, बैल, महिष, खर, अजा व गाडर प्रमुख है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परंतु वे वहां रहने वाले मनुष्यों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में गाय, महिषी, ऊंटनी, अजा (बकरी) व [illegible] प्रमुख है क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे वहां के मनुष्यों को उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में सिंह, व्याघ्र, दीपिका, अच्छ (रीछ) [illegible], शृगाल, बिडाल, श्वान, कोला, कोकंतिय, शशक, चित्ता व चित्तल आदि के पशु है क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे [illegible] परस्पर एक दूसरे को अथवा मनुष्य को किसी प्रकार की बाधा, विबाध

॥ ४३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलाइवा ? हंता अत्थि नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गत्ताइवा दरिइवा घाइवा घसीइवा भिगूइवा उवाएइवा विसमेइवा विजलइवा धूलाइवा रेणुतिवा पंकेइवा चलणीइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एगुरुयदीवेणं दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ खाणुइवा कंटाएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयराइवा पत्तकयराइवा असुइइवा पूईयाइवा दुब्भिगंधाइवा

उत्पात व पर्वछेद नहीं करते हैं क्यों कि वहां जीवों भद्रिक स्वभाववाले हैं ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में शाली, व्रीहि, गोधुम, इक्षु व तिल हैं क्या ? हां वे हैं परंतु उन जीवों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में खड्डा, गुफा, भयंकर स्थान, उपपात का स्थान, विषम स्थान, जल रहित स्थान, धूल, रेणु, कचरा व रज विशेष हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों कि एकरुक द्वीप में बहुत सम रमणीय भूमिभाग है ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में कंटक, रत्नमुख, कंकर, तृण, कचरा, पान का कचरा, अपवित्र राध मवाद

अमोक्खाइत्रा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय खाणुकण्टक हीरसक्कर तण कयवर असुइपूइय दुब्भिगन्ध मचोक्खवज्जिएण एगुरुयदीवे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४६ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ दंसाइवा मसगातिवा पिसुगाइवा जूवाइवा लिक्खाइवा ढिंकुणाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय दंसमसग पिसुत जुवा लिक्ख ढिंकुण परिवज्जिएण एगुरुयदीवे पन्नत्ते समणाउसो ! ॥ ४७ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ अहीइवा अयगराइवा महोरगातिवा ? हंता अत्थि नो चेवणं ते अन्नमन्नस्स तेसिं वा मणुयाण किंचि आवाहंवा विवाहंवा छविच्छेयंवा पकरेंति पगइ भद्दगाण ते वालगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ४८ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीव २

वस्तु हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्यों की वहां की भूमि खीला, कंटक वगैरह सब अशुचिमय वस्तु से रहित है ॥ ४६ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में दंश मशक, पिस्सूर, यूका, लिख, अथवा ढंकुण (खटमल) मनुष्य है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! वह द्वीप पूर्वोक्त दंश मशकादि रहित है ॥ ४७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में अहि, अजगर व महोरग है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परंतु वे परस्पर एक दूसरे को अथवा वहां के मनुष्यों को किसी प्रकार से बाधा पीड़ा अथवा विच्छेद नहीं करते हैं वे बाल जीवों प्रकृति के भद्रिक होते हैं ॥ ४८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक

गहदण्डातिवा गहमुसलाइवा गहगज्जियाइवा, गहजुद्धाइवा गहसंघाडाइवा गह सब्बा अब्भाइवा अब्भरुक्खाइवा संझाइवा, गंधव्वणगराइवा, गज्जियाइवा विज्जुयाइवा उक्कापयाइवा दिसादाहाइवा णिग्घाइवा पंसुविट्ठीइवा जूवइवा जक्खालि-त्ताइवा धूमियाइवा महियातिवा रउग्घायाइवा चंदोवरागाइवा सूरोवरागाइवा चंदपरिवेसाइवा सूरपरिवेसाइवा पडिचंदाइवा पडिसूराइवा, इंदधणूआइवा उदगमच्छा-इवा अमोहाइवा कविहसीयाइवा पाईणवायाइवा, पडीणवायाइवा जाव सुद्धवायाइवा

द्वीप में ग्रह दंड (शिखावाला ग्रह का उदय होना) ग्रह मुशल [पूछवाला ग्रह] ग्रह सबंधी गर्जारव, ग्रह युद्ध, ग्रह संघाटक, ग्रह अपसव्य [ग्रह का वक्रमार्ग में उदय होना] बद्दल समुत्थ, वृक्षाकार से बद्दल होना, पांचवर्णी संध्या, गंधर्व नगर सो आकाश में नगरों का होना, देवों के प्रासाद, गर्जारव, विद्युत, उल्कापात, दिशादाह, (किसी दिशा में विना मूल से अग्नि की ज्वालाओं दीखे) निर्घात, रजावृष्टि धूमिका यक्ष समुत्थ का कोप, धूम्र, धुंवर रजोघात, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण चंद्र परिवेष [चंद्र पीछे मंडलाकार होवे सो] सूर्य परिवेश (सूर्य पीछे मंडलाकार होवे सो) प्रतिचंद्र दो चंद्र दीखे, प्रतिसूर्य दो सूर्य दीखे, इन्द्र धनुष्य, उदक मत्स्य [वर्षा में मत्स्य का गिरना] पूर्व दिशी का प्रतिकूल वायु, पश्चिम दिशी का प्रतिकूल वायु यावत् शुद्ध वायु, ग्राम दाह, नगर दाह यावत् सन्निवेश दाह, प्राणियों का क्षय,

गामदाहाइवा नगरदाहाइवा जाव सन्निवेसदाहाइवा पाणक्खय जणक्खय कुलक्खय धणक्खय वसणभूतमणारियाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ४९ ॥ अत्थिणं भंते ! एगरुयदीवे डिंबाइवा डमराइवा कलहाइवा बोलाइवा खाराइवा वेराइवा विरुद्धरज्जाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ववगय डिंबडमर कलह बोलखार वेरविरुद्धरज्जविवज्जियाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५० ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ महाजुद्धाइवा महासंगामाइवा महासत्थपडणाइवा महापुरिसपडणाइवा महारुधिरपडणाइवा, नागबाणातिवा, खलबाणातिवा, तामस बाणातिवा, दुब्भूइयाइवा कुलरोगाइवा गामरोगाइवा, नगररोगाइवा मंडलरोगाइवा

मनुष्यों का क्षय, कुल का क्षय, धन क्षय, व्यसन कष्टभूत ऐसे दुष्ट उत्पात हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् उक्त कुछ भी नहीं है ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुकद्वीप में दिम्ब-स्वदेश का नाश डमर-अन्यदेशों की तरफ से हुवा उपद्रव, क्लेश, दुःखियों का कलकलाट परस्पर ईर्षा परस्पर हिंसक भाव व राज्य विरुद्ध कर्तव्य है क्या ? यह समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य उक्त सब बातों से रहित हैं ॥ ५० ॥ अहो भगवन् ! एकोरुकद्वीप में बड़ा युद्ध, बड़ा संग्राम, बड़ा शस्त्र पतन, बड़ा पुरुष का मरण बहुत रुधिर का पड़ना नागबाण बाण तामसबाण (आकाश में चलनेवाला)

सीसवेयणाइवा, अत्थिवेयणाइवा कन्नवेयणाइवा नक्कवेयणाइवा, दंतवेयणाइवा, कासाइवा, सासाइवा, जराइवा दाह इवा कच्छूइवा, खसराइवा, कोढाइवा, कुडातिवा, दगोवराइवा, अरिसाइवा, अजिरगाइवा, भगंदलाइवा इंदग्गहाइवा, खंदग्गहाइवा कुमारग्गहाइवा, नागग्गहाइवा जक्खग्गहाइवा भूयग्गहाइवा, उव्वेयगाहाइवा धणुग्गहाइवा एगाहियाइवा, वेयाहियाइवा, तेयाहिय इवा, चउत्थगाहियावा हिययसूलाइवा, मत्थगसूलाइवा, पाससूलाइवा कुच्छिसूलाइवा, जोणिसूलाइवा, गाममारीवा जाव सन्निवेसमारीवा, पाणक्खय जाव वसणभूतमणायरि यवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय रोगायकाणं तेमणुयगणा पण्णत्ता

प्राणियों के क्षय करनेवाले व्यसन भूत अनार्य कार्य क्या वहां पाते हैं? यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! वहां दुर्भूत, कुल रोग, ग्राम राग, नगर रोग, मंडल राग, मस्तक वेदना, आंखों की वेदना, कान की वेदना, नासिका की वेदना, दांत की वेदना खांसी, श्वास, ज्वर, दाह, खुजली, खसर, कोढ जलोदर, मसा, अजीर्ण, भगंदर, इंद्रग्रह, स्कंध ग्रह, कुमार ग्रह, नाग ग्रह, यक्ष ग्रह, भूत ग्रह, उद्वेग ग्रह, धनुर्वायु एकांतर ज्वर, दो दिन के अंतर से ज्वर, तीन दिन के अंतर से ज्वर, चार दिन के अंतर से ज्वर, हृदय शूल, मस्तक शूल, पार्श्व शूल, कुक्षिशूल, योनि शूल, ग्राम में मरकी यावत् सन्निवेश में मरकी कि जिस से प्राणियों का क्षय यावत् व्यसन भूत

समणाउसो ! ॥ ५१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ अइवासाइवा मंदवासाइवा सुवुट्ठीइवा, मंदवुट्ठीइवा उदवाहाइवा पवाहाइवा, दगुब्भेयाइवा, दगुप्पीलाइवा, गामवहाइवा जाव सन्निवेसवहाइवा, पाणक्खय जाव वसणभूतमणारियाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय रोगायंका तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥५२॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीवे २ आयागराइवा तवागराइवा सीसागराइवा सुवण्णागराइवा, रयणागराइवा वइरागराइवा, वसुहारावा हिरण्णवासाइवा, सुवण्णवासाइवा, रयणवासाइवा, वइरवासाइवा, आभरणवासाइवा, पत्तवास पुप्फवास फलवास वीयवास गंधवास

कष्टरूप अनार्य दोष है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य रोग रहित हैं॥५१॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में अतिवृष्टि मंद वृष्टि, उत्तम वृष्टि, अल्प वृष्टि, पानी का प्रवाह, (गांवडूबे वैसा) यावत् सन्निवेश प्रवाह कि जिस से प्राणियों का क्षय यावत् व्यसनभूत दुष्ट अनार्य दोष है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां मनुष्यों पानी के उपद्रव रहित है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में लोहे के आगर, ताम्बे के आगर, सीसे के आगर, सुवर्ण के आगर, रत्न के आगर, हीरे के आगर, वसुधारा धन की वर्षा, चांदी की वर्षा, सुवर्ण की वर्षा, रत्न की वर्षा वज्र हीरे की वर्षा, आभरण की वर्षा, पत्र की वर्षा, बीज की वर्षा, पुष्प, फल, माल्य, गंध, चूर्ण, धोवा, की वर्षा, रत्नकी

मज्जवास वस्त्रवास चुन्नवास खीरवुट्ठीइ रयणवुट्ठीइवा हिरण्णवुट्ठीइवा, सुवण्ण तहेव जाव चुन्नवुट्ठ इवा सुकालाइवा उकालाइवा सुभिक्खाइवा दुभिक्खाइवा अप्पग्घाइवा महग्घाइवा कयाइवा विक्कयाइवा, सणिहीइवा, सचयाइवा, निधिइवा, निहाणाइवा, चिरपोराणाइवा, पहीणसामियाइवा, पहीणसेउयाइवा, पहीणगोत्तागाइ जाइ इमइ गामागर नगर खेड कब्बड मडंब दोणमुह पट्टणासम सवाह सन्निवेसेसु सिंघाडग तिग चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह महेसु नगरनिद्धमणेसु सुसाण गिरिकदर सति सलोवट्ठाण भवणगिहेसु सन्निखित्ता चिट्ठति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥ ५२ ॥ एगुरुय दीवेण

वृष्टि, चांदी की वृष्टि, सुवर्ण की वृष्टि यावत् चूर्ण की वृष्टि, सुकाल, दुष्काल, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, अल्प मूल्य वाली व बहु मूल्य वाली वस्तु, लेना व देना संग्रह करना अथवा संग्रह कर बेचना, धन समुख निधान समुख ऐसे धन के भोगने वाले का नाश हुवा होवे उन के गोत्र का भी विच्छेद होवे वैसे धन ग्राम नगर, खेट, कर्बट, मडप द्रोण मुख, पाटण संबाह व सन्निवेश के शृंगाटक के स्थान, तीन रास्ते मीले वैसे स्थान, चार रास्ते मीले वैसे स्थान, चच्चर, चतुर्मुख, राज्य मार्ग नगर की खाल, स्मशान पर्वत की शीला, गुफा व भवन में गडे हुवे धन इत्यादि सब हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है उक्त सब वस्तुओं वहां नहीं हैं ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुक द्वीप में मनुष्य की कितनी स्थिति कही

भंते ! दीवे मणुयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं ॥ ५४ ॥ तेणं भंते ! मणुया कालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छति कहिं उववज्जति ? गोयमा! तेणं मणुया छम्मासा सेसाउआ मिहुणाइं पसवंति अउणासीइं राइंदियाइं मिहुणाइं सारक्खति संगोवंति सारक्खित्ता उस्ससित्ता णिस्ससित्ता कासित्ता छिंतित्ता अक्किट्ठा अव्वहिया अपरियाविया सुहसुहेणं कालमासे कालंकिच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, देवलोग परिग्गहियाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो!

है ? अहो गौतम ! जघन्य पल्योपम के असंख्यातवे भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवा भाग ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! वे मनुष्यों काल के अवसर में काल करके कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जब उनका छ मास आयुष्य शेष रहता है तब उनका मिथुनक (पुत्र व पुत्री) का जोडा प्रसव होता है ७९ दिन पर्यंत उनकी प्रतिपालना करते हैं, अच्छी तरह रखते हैं यों अच्छी तरह रखतेहुए व युगल युगलनी श्वासोश्वास लेते हुए खांस व छींक खाते हुए किंचित्मात्र भी बाधा पीडा बिनासुख पूर्वक काल के अवसर में काल करके भुवनपति वाणव्यन्तरदेव में उत्पन्न होते हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों !

॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण आभासिय मणुयाण आभासिय दीवे नाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ तहेव चेव चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लातो चरिमताओ लवणसमुद्द तिन्नि जोयण सेस जहा एगुरुयाण निरवसेस सव्वं ॥ ५६ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण वेसाणिय मणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणपच्चच्छिमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्दति तिन्निजोयणा सेसे जहा एगुरुयाण

द्वों में उत्पन्न होने का यह मनुष्य समुदाय कहा ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के आभासिक मनुष्य का आभासिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में चुल्लहिमवन्त पर्वत रहा हुवा है, उस के दक्षिणपूर्व ईशानकून के चरमांत से लवण समुद्र में तीन सो योजन जावे वहां आभासिक द्वीप कहा है शेष अधिकार सब एकरुक द्वीप जैसे जानना ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के वेषाणिक मनुष्यों का वेषाणिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरु पर्वत से दक्षिणदिशा में चुल्लहिमवत वर्षधर पर्वत से दक्षिणपश्चिम नैऋत्यकून के चरिमांत से तीनसो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां वेषाणिक द्वीप रहा हुवा है इस का शेष सब अधिकार एकरुक द्वीप

॥ ५७ ॥ कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं नंगोलियमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तर पच्चच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं तिण्णिजोयण सयाइं सेसं जहा एगुरुय मणुस्साणं ॥ ५८ ॥ कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं हयकण्णमणुस्साणं हयकन्नदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगुरुयदीवस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवण समुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं उगाहित्ता एत्थणं दाहिणिल्लाणं हयकन्नमणुस्साणं हयकन्न दीवे नामं दीवे पण्णत्ते, चत्तारि जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं बारससया पन्नट्ठा किंचि

ऐसे मानना ॥५७॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के नांगोलिक मनुष्यका नांगोलिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम! मेरुपर्वतका दक्षिणमें चुल्लहिमवंत पर्वतकी उत्तर पश्चिम चायव्यकून के चरिमांतसे तीनसो जोजन समुद्र में जावे वो वहां नांगोलीक द्वीप कहा हुवा है इस का कथन एकोरुकद्वीप जैसे जानना ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के हय कर्ण मनुष्य का हय कर्ण द्वीप कहां है ? अहो गौतम ! एकोरुकद्वीप के चरिमांत से लवण समुद्र में चारसो योजन जावे तब वहां हयकर्ण द्वीप चार सो योजन का लम्बा चौडा है बारह सो पेंसठ योजन में कुच्छ कम की परिधि कही है, एक पद्मवर वेदिका व

विसेसूणाइ परिक्खेवेण एगाए पउमवर वेइयाए अवसेस जहा एगुरुयाण ॥ ५९ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण गयकन्नमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! आभासियदीवस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ, सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६० ॥ एव गोकन्नमणुस्साण पुच्छा ? वेसालिय दीवस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६१ ॥ सुकुलिकन्नाण पुच्छा ? गोयमा ! नगोलियदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ

वनखण्ड सहित है शेष अधिकार एकरूकद्वीप जैसे जानना ॥ ५९ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के गजकर्ण मनुष्य का गजकर्ण द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! आभासिकद्वीप के अग्निकून के चरिमांत से लवण समुद्र में चार सो योजन जावे तो वहां गजकर्ण नामकद्वीप रहा हुवा है इस का कथन हयकर्ण जैसे जानना ॥ ६० ॥ अहो भगवन् ! गोकर्ण द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! वैशालिक द्वीप के नैऋत्यकूने के चरिमांत से चार सो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां गोकर्ण द्वीप रहा हुवा है इस का कथन हयकर्ण जैसे जानना ॥ ६१ ॥ सकुलिकर्ण द्वीप की पृच्छा, अहो गौतम ! नांगोलिक द्वीप के वायव्यकून के चरिमांत से चार सो योजन लवण

चरिमंताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइं सेसं जहा॰ हयकन्नाणं ॥ ६२ ॥ आयसमुहाणं पुच्छा ? हयकन्नदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पंचजोयण सयाइं उगाहित्ता इत्थणं दाहिणिल्लाणं आयसमुह मणुस्साणं आयसमुह दीवेनाम दीवे पण्णत्ते, पंचजोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं आसमुहाईणं छसया, आसकन्नाईणं सत्त, उक्कामुहाईणं अट्ठ घणदंताईणं जाव नवजोयणसयाइं, ॥ एगुरुय परिक्खेवो नवचेव सयाइं, अउणपन्नाइं बारसबनट्ठ इ हयकन्नाण॰ आसकन्नाईणं परिक्खेवो आयसमुहाईणं

समुद्र में जावे वो वहां शकुलीकर्ण द्वीप कहा है इस का कथन हय कर्ण द्वीप जैसे जानना ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! आदर्श मुख द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! हय कर्ण द्वीप की ईशानकून के चरिमांत से लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के आदर्श मुख मनुष्य का आदर्श मुख द्वीप कहा हुवा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है आदर्शमुख, मेघमुख, अयो मुख व गोमुख ये चार द्वीप पांचसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वमुख, हस्तीमुख, सिंहमुख व व्याघ्र मुख ये चारों छ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हयकर्ण, व कर्णप्रावरण, ये चार द्वीप सातसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, उल्का मुख, मेघ मुख, विद्युन्मुख व विद्युद्दंत ये चार द्वीप

पन्नरसेकासिए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खवेण,एवं एतेण कमेण उवउज्जिय२ णेयव्वा,चत्तारि२एगप्पमाणा णाणत्तं, उग्गाहे विक्खंभे परिक्खवे पढमबिति ततिय चउक्काण उग्गाहो विक्खंभो परिक्खेवोय भणिओ, चउत्थे चउक्के छ जोयण सयाइ, आयाम विक्खंभेण, अट्ठारसत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेण ॥ पचम चउक्के सत जोयण सयाइ आयामविक्खंभेण, बावीसतेरसुतरे जोयणसए परिक्खवेण ॥ छट्ठ चउक्क अट्ठ जोयण आयाम विक्खंभेण पणवीस अगुणत्तीसे

आठ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, घणदंत, लष्टदंत, गूढदंत व शुद्धदंत, ये चार द्वीप नव सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं अब इन की परिधि कहते हैं एकरूकादि चारों द्वीप की नव सो गुनपचास योजन की परिधि कही, दूसरा हयकर्णादि चारों द्वीप की बारहसो पैंसठ योजन की परिधि है तीसरा आदर्श मुखादिक चारों द्वीप की पन्नरह सो इक्यासी योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, चौथा चौक अश्वमुखादिक चारों द्वीप में अठारसो सत्ताणवे योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, पांचवा चौक अश्वकर्णादिक द्वीप की बावीस सो तेरह योजन की परिधि है, छट्ठा चौक उल्कमुखादिक अन्तर्द्वीप की पच्चीस सो उनतीस योजन की परिधि है सातवा चौक घनदंतादिक चार अंतरद्वीप की नव सो योजनका लम्बा चौडा व दो हजार आठसो पैंताळीस योजन की परिधि है, और भी द्वीप की जितनी चौडाइ है उतने योजन ही

चरिमताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइं सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६२ ॥ आयसमुहाण पुच्छा ? हयकन्नदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पचजोयण सयाइं उगाहित्ता इत्थण दाहिणाण आयसमुह मणुस्साण आयसमुह दीवेनाम दीवे पण्णत्त, पचजोयणसयाइं आयामविक्खमण आसमुहाईण छसया, आसकन्नाईण सत्त, उक्कामुहाईण अट्ठ घणदत्ताईण जाव नवजोयणसयाइं, ॥ एगुरुय परिक्खवो नवचेव सयाइं, अउणपन्नाइ बारसवनट्ठ इ हयकन्ना० आसकन्नाईण परिक्खेवो आयसमुहाईण

समुद्र में जावे तो वहां शकुंभिकर्ण द्वीप कहा है इस का कथन हय कर्ण द्वीप जैसे जानना ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! आदर्श मुख द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! हय कर्ण द्वीप की ईशानकून के चरिमांत से लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के आदर्श मुख मनुष्य का आदर्श मुख द्वीप कहा हुवा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है आदर्शमुख, मेघमुख, अजो मुख व गोमुख ये चार द्वीप पांचसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वमुख, हस्तीमुख, सिंहमुख व व्याघ्र मुख ये चारों छ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हयकर्ण, व कर्णप्रावरण, ये चार द्वीप सातसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, उल्का मुख, मेघ मुख, विद्युन्मुख व विद्युद्दन्त ये चार द्वीप

पव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्द तिन्नि जोयणसयाइ उगाहित्ता एव जहा दाहिणिल्लाण तहा उत्तरिल्लाण भाणियव्व, णवर सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स विदिसासु, एव जाव सुद्धदत दीवेति जाव सेत अतरदीवका ॥ ६४ ॥ सेकित अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तिसतिविहा पण्णत्ता तजहा-पचहिं हेमवएहिं एव जहा पन्नवणापदे जाव पचहिं उत्तरकुराहिं ॥ सेत्त अकम्मभूमगा ॥ ६५ ॥ से किं त कम्मभूमगा? कम्मभूमगा पण्णरसविहा पण्णत्ता तजहा पचहिं भरहेहिं पचहिं एरवएहिं पचहिं महाविदेहेहिं । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा आयरिया मिलच्छा, एव

पर्वत की ईशानकून के चरिमांत से तीन सो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां एकरुकद्वीप कहा हुवा है यों जैसे दक्षिण दिशा के एकरुकद्वीप का अधिकार कहा वैसे ही उत्तर दिशा के एकरुकद्वीप का जानना परत यहां शिखरी पर्वत का कथन करना यावत् शुद्धदंत पर्यंत कहना यह अतरद्वीप का कथन हुवा ॥ ६४ ॥ अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अकर्मभूमि के तीस भेद कहे हैं तद्यथा पांच हेमवय, पांच एरण्यवय, पांच हरिवास, पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु व पांच उत्तरकुरु यह अकर्म भूमि का कथन हुवा ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! कर्मभूमि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कर्मभूमि के पन्नरह भेद कहे हैं तद्यथा पांच भरत, पांच एरवत व पांच महाविदेह इन के सक्षेप से दो भेद कहे

जोयणसते परिक्खेवेण ॥ सत्तमचउक्के णव जोयण सयइ आयामविक्खंभेण दो जोयण सहस्साइ अट्ठपणताले जोयणसए परिक्खेवेण, जस्सय जो विक्खंभो उग्गाहो तस्स तचिओचेव पढम बीताण परिरतो ऊणो, सेसाण आहिउउ, सेसाजहा एगुरुय दीवस्स जाव सुद्धदंत दीव, देवलोग परिग्गहाण ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ॥ ६२ ॥ कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण एगुरुय मणुस्साण एगुरुयदीवे नामदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण सिहरिस्स वासहर

लवण समुद्र में अवगाहे हुवे हैं जैसे जगती से तीनसो योजन लवण समुद्र में प्रथम चौक का अतरद्वीप तीनसो योजन के लम्बे चौडे हैं, उस से चारसो योजन लवण समुद्र में जावे तो दूसरा चौक के अतरद्वीप चारसो योजन के लम्बे चौडे हैं यों यावत् छठे चौक से नवसो योजन लवण समुद्र में जावे तब सातवा चौक के अतरद्वीप नवसो योजन के लम्बे चौडे हैं प्रथम चौक की लम्बाइ चौडाइ से दूसरे चौक की लम्बाइ चौडाइ सो योजन की अधिक, इस से तीसरे चौक की सो योजन की अधिक यों अधिक २ सब चौक की जानना यह सब अधिकार एकरुक द्वीप जैसे जानना ये मनुष्य देवलोकगामी कहे हुए हैं अर्थात् मरकर देवता में उत्पन्न होते हैं ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! उत्तरदिशा के एकरुक मनुष्य का एकरुक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर में शिखरी

कहिण भते! भवणवासी देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए एव जहा पन्नवणाए जाव भवणा पासाइया॥ तत्थण भवणवासीण देवाण सत्तभवण कोडीओ बावत्तरिं भवणवाससयसहस्सा भवति तिमक्खया ॥ तत्थण बहवे भवणवासी देवा परिवसति, असुरा नाग सुवन्नाय जहापन्नवणाए जाव विहरति ॥ कहिण भते! असुरकुमाराण देवाण भवणा पण्णत्ता पुच्छा ? गोयमा ! एव जहा पन्नवणा ठाणपदे जाव विहरति ॥ कहिण भते ! दाहिणिल्लाण असुरकुमाराण देवाण भवणा पुच्छा ? एव जहा ठाणपदे जाव चमरे तत्थ

अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड कहा है वहां से लगाकर यावत् भवनपति के भवन उन को रहने योग्य कहे हैं वहां तक सब पन्नवणा सूत्र अनुसार जानना यहां सात क्रोड बहत्तर लाख भवन कहे हैं इन सब भवनों में असुरकुमार नागकुमार वगैरह दश जाति के भवनवासी देव रहते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार देव के भवन कहां कहे हैं ! अहो गौतम ! पन्नवणा के स्थान पद में जैसा कथन किया वह सब यहां जानना अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के असुरकुमार के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! इसका कथन पन्नवणा सूत्र के स्थानपद जैसा जानना

जहा पण्णवणापद जाव सेत्त गब्भवक्कंतिया ॥ सेत्त मणुस्सा ॥ ४ ॥ १ ॥ सेकिंत देवा? देवा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा भवणवासी, वाणमंतर, जोइसिया वेमाणिया ॥ १ ॥ सेकिंत भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता तंजहा-असुरकुमारा जहा पन्नवणापदे देवाण भेओ तहा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववातिया पंचविहा प० तंजहा—विजया वेजयंता जाव सव्वट्ठसिद्धगा ॥ सेत्त अणुत्तरोववाइया ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! भवनवासि देवाणं भवणा पण्णत्ता ?

है आर्य व म्लेच्छ यों जैसे पन्नवणा पद में कथन किया वैसे ही यहां जानना यह गर्भज मनुष्य का कथन हुवा यह मनुष्य का कथन हुवा ॥ ४ ॥ १ ॥

अहो भगवन् ! देव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! देव के चार भेद कहे हैं भवनवासी, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी व वैमानिक ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भवनवासी देव किस को कहते हैं ? अहो गौतम ! भवनवासी देव के दश भेद कहे हैं तद्यथा—असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार वगैरह सब पन्नवणा पद में जैसे देवता का भेद कहा वैसे ही सब अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक के पांच भेद कहे हैं विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित व सर्वार्थ सिद्ध यह अनुत्तरोपपातिक का भेद हुवा ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! भवनवासी देवों के भवन कहां कहे हैं ? और भवनवासी देव कहां रहते हैं ?

बत्तीस देवसाहस्सीतो पण्णत्ताओ ॥ ५ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो अब्भिंतरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धुट्ठादेवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए तिण्णि देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अड्ढाइज्जा देवीसया पण्णत्ता ॥ ६ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? अब्भिंतरियाए

हजार देव व बाह्य परिषदों में बत्तीस हजार देव कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र की आभ्यतर परिषदा में कितनी देवियों, मध्य परिषदा में कितनी देवियों व बाह्य परिषदा में कितनी देवियों कही हुई हैं? अहो गौतम ! उनकी आभ्यतर परिषदा में ३५० देवी, मध्य परिषदा में ३०० देवी और बाह्य परिषदा में २५० देवियों कही है ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र की आभ्यतर परिषदा के देवताओं की कितनी स्थिति कही है? मध्य परिषदा के देवों कितने काल की स्थिति कही और बाह्य परिषदा के देवों कितने काल की स्थिति कही ! आभ्यतर परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही, मध्य परिषदा की देवी

असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ जाव विहरइ ॥३॥ असुरिंदस्स असुररन्नो कति-
परिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा समिया चंडा, जाया
अब्भितरिया समिया, मज्झचंडा, बाहिं जाया ॥ ४ ॥ चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स
असुररन्नो अब्भंतर परिसाए कतिदेवसाहस्सीतो पण्णत्ताओ, मज्झिम परिसाए
कतिदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिर परिसाए कतिदेव साहस्सीतो पण्णत्ताओ ?
गोयमा! चमरस्सणं असुरिंदस्स अब्भिंतर परिसाए चउवीस देव साहस्सीतो पण्णत्ताओ
मज्झिमियाए परिसाए अट्ठावीस देव साहस्सीतो पण्णत्ताओ, बाहिरयाए परिसाए

यावत् यहां असुरकुमार का चमर नामक इन्द्र रहता है यावत् विचरता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! चमर
नामक असुर का इन्द्र व असुर का राजा को कितनी परिषदा कही है ? अहो गौतम ! तीन परिषदा
कही है तद्यथा—समिता, चण्डा व जाया आभ्यंतर परिषदा समिता, मध्य परिषदा चंडा व बाह्य परि-
षदा जाया ॥४॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा की आभ्यंतर परिषदा के कितने हजार
देव कहे हैं मध्य परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं व बाह्य परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं ?
अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा में चउवीस हजार देव, मध्य परिषदा में अट्ठाईस

तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा-समिया चंडा जाया, अब्भितरिया समिया मज्झिमिया चंडा, बाहिरिया जाया ? गोयमा ! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुर रन्नो अब्भितर परिसा देवाणं वाहिता हव्वमागच्छंति णो अव्वाहिता, मज्झिम परिसाए देवा वाहिता हव्वमागच्छंति अव्वाहितावि, बाहिर परिसादेवा अव्वाहिता हव्वमागच्छंति॥ अब्भंतरचणं गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया अण्णयरेसु उच्चावएसु कज्जे कोडुंबेसु समुप्पन्नेसु अब्भितरियाए सद्धिं समइ संपुच्छणा बहुले विहरइ, मज्झिमियाए परिसाए सद्धिंपयं एवपवमाणं विहरति, बाहिरयाए परिसाए सार्द्धं पयं पचंडमाणे २ विहरइ,

परिषदा किस लिये कही जिस में आभ्यतर समिता, मध्य की चंडा व बाह्य की जाया ? अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा के आभ्यंतर परिषदा के देव बोलाये हुवे आते हैं परंतु विना बोलाये हुवे नहीं आते हैं, मध्य परिषदावाले बोलाये हुवे व विना बोलाये हुवे दोनों तरह आते हैं और बाह्य परिषदावाले विना बोलाये हुवे आते हैं. दूसरा कारन यह है कि चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा को उच्चम, मध्यम कार्य, अपनी राज्यधानी का कार्य, कुटुम्ब संबंधी कार्य इत्यादि कार्य होने पर वे आभ्यंतर परिषदा के देवों साथ सम्मति मीलाते हुवे और उनको पूछते हुवे रहते हैं, मध्य परिषदावाले देवों को संक्षेप में कह देते हैं और बाह्य परिषदा वाले देवों को बात कह कर कार्य करने का आदेश

परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाण परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स अभिंतरियाए परिसाए देवाण अड्ढाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता, अभिंतरियाए परिसाए देवीण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण पलिओवम ठिई पन्नत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स

की कितनी स्थिति कही, व बाह्य परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा के देवों की अढाइ पल्योपम की स्थिति कही, मध्य परिषदा के देवों की दो पल्योपम की स्थिति कही व बाह्य परिषदा के देवों की देढ पल्योपम की स्थिति कही आभ्यंतर परिषदा की देवी की देढ पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी की एक पल्योपम व बाह्य परिषदा की देवी की आधे पल्योपम की स्थिति कही है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र की तीन

ताओ चेव जहा चमरस्स ॥ १३ ॥ धरणस्सण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए सट्ठिं देवसहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए सत्तरिदेवसहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए असितिं देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भिंतर परिसाए पण्णतरं देवीसयं पण्णत्तं मज्झिमियाए परिसाए पन्नासं देवीसयं पण्णत्तं बाहिरियाए परिसाए पणवीसं देवीसयं पण्णत्तं ॥ १४ ॥ धरणस्सणं रन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? अब्भिंतरियाए परिसाए देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए

अहो गौतम ! तीन परिषदा कही है इस का सब कथन चमरेन्द्र जैसे जानना ॥ १३ ॥ धरणेन्द्र को आभ्यतर परिषदा में ६० हजार देव, मध्य परिषदा में ७० हजार देव व बाह्य परिषदा में ८० हजार देव आभ्यतर परिषदा में १७५ मध्य परिषदा में १५० व बाह्य परिषदा में १२५ देवियों कही है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! धरणेन्द्र की आभ्यतर परिषदा के देवों की कितनी स्थिति कही, मध्य परिषदा की कितनी स्थिति कही व बाह्य परिषदा की कितनी स्थिति कही ? आभ्यतर परिषदा के देवी की कितनी स्थिति कही मध्य परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही व बाह्य परिषदा की देवीकी कितनी

मज्झिमाए परिसाए तिन्नि वलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, वाहिरयाए परिसाए अड्डाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीण अड्डाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण दोपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, बाहिरयाए परिसाए देवीण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता॥ सेस जहा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रन्नो ॥ ११॥ कहिण भंते! नागकुमाराण देवाण भवणा पण्णत्ता ? जहा ठाणपदे जाव दाहिणावि पुच्छिया वा जाव धरण नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ जाव विहरइ ॥ १२ ॥ धरणस्सण भंत ! णागकुमारिंदस्स णागकुमार रन्नो कइपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! तिन्निपरिसाओ

व बाहिर की परिषदा के देवों की अढाइ पल्योपम की आभ्यंतर परिषदा की देवी की अढाइ पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी की दो पल्योपम व बाहिर की परिषदा की देवी की देढ पल्योपम की स्थिति कही शेष चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा जैसे जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार देवता के भवनों कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा में स्थान पद में जैसा कहा वैसा यहां सब जानना यावत् दक्षिण दिशा की भी पृच्छा करना यहां धरण नामक नागकुमार का इन्द्र व नागकुमार का राजा रहता है यावत् विचरता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! धरण नामक नागकुमारेन्द्र को कितनी परिषदा कही है ?

कइदेव साहस्सियाओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए कइदेव सहस्सियाओ पण्णत्ताओ, अब्भिंतरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए कइदेवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! भूयाणिंदस्सण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए पन्नास देव सहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए सट्ठिदेव सहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए सत्तरि देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए दो पणवीस देवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए दो देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए पण्णत्तरि देविसय पण्णत्त ॥ १६ ॥ भुयाणदस्सण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमार

कहा वैसे ही यहां जानना यावत विचरते हैं अहो भगवन् ! भूतान नामक नाग कुमार का इन्द्र व नाग कुमार का राजा को आभ्यंतर परिषदा में कितने देव, मध्य परिषदा में कितने देव व बाह्य परिषदा में कितने देव कहे हैं आभ्यंतर परिषदा में कितनी देवियों, मध्य परिषदा में कितनी देवियों व बाह्य परिषदा में कितनी देवियों कही हैं ? अहो गौतम ! भूतानेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा में ५० हजार मध्य में ६० हजार व बाह्य परिषदा में ७० हजार देव कहे हैं आभ्यंतर परिषदा में २२५, मध्य परिषदा में २०० व बाह्य परिषदा में १७५ देवियों कही हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! भूतानेन्द्र के

देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! धरणस्सरन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण साइरेग अद्धपलिउवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता। अब्भितरियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता मज्झिमाए परिसाए देवीण साइरेग चउब्भागपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण चउभागपलिओवम ठिई अट्ठो जहाचमरस्स, ॥ १५ ॥ कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण नागकुमाराण जहा ठाणपदे, जाव विहरइ॥भूयाणदस्सण भंते!नागकुमारस्स णागकुमाररन्नो अब्भितरियाए परिसाए

स्थिति कही ? अहो गौतम ! धरणेन्द्र के आभ्यंतर परिषदा के देवों की साधिक आधा पल्योपम, मध्य परिषदा के देवों की आधा पल्योपम व बाह्य परिषदा के देवों की कुच्छ कम आधा पल्योपम आभ्यंतर परिषदा की देवी की कुच्छ कम आधा पल्योपम मध्य परिषदा की देवी की साधिक पल्योपम का चौथा भाग व बाहिर की परिषदा की चौथा भाग की स्थिति कही शेष सब चमरेन्द्र जैसे जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर दिशा के नाग कुमार देव कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्थान पद में

चउभाग पलिओवम ठिई पण्णत्ता, अट्ठो जहा चमरस्स, ॥ १७ ॥ अवसेसाण वेणुदेवादीण महाघोस पज्जवसाणाण ठाणपय वत्तव्वयाणिरवसेस भाणियव्वा, परिसाओ जहा धरणभूयाणदाण दाहिणिल्लाण जहा धरणस्स उत्तरिल्लाण जहा भूयाणदस्स परिमाणवि ठितीवि ॥ १८ ॥ कहिण भंते ! वाणमंतराण देवाण भवण पण्णत्ता जहा ठाणपदे जाव विहरति ॥ कहिण भंते ! पिसायकुमाराण भवणा पण्णत्ता? जहा ठाणपद जाव विहरति ॥ काल माहाकालाय तत्थ दुवे पिसाय कुमार रायाणो परिवसति जाव विहरति ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण पिसाय कुमाराण जाव विहरति ॥ काले यत्थ पिसाय कुमारिंदे पिसाय कुमार राया परिवसति महिड्ढिए जाव

देवी की साधिक पल्योपम का चौथा भाग कार्य सब चमरेन्द्र जैसे कहना ॥ १७ ॥ शेष वेणुदेवेन्द्र से महाघोपेन्द्र पर्यंत सब वक्तव्यता स्थानपद जैसे जानना परिषदाका अधिकार दक्षिण दिशा का धरणेन्द्र व उत्तर दिशा का भूतानेन्द्र जैसे जानना यह भवनपति का अधिकार हुआ ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यंतर देवों के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा सूत्र के स्थानपद में जैसा अधिकार है वह सब यहां जानना यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! पिशाच कुमार के भवनों कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! इस का कथन भी पन्नवणा सूत्र के स्थानपद से जानना यावत् काल व महा काल ऐसे

रस्सो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! भूयाणदस्सण अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण देसूण पलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण सातिरेग अद्ध पलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण सातिरेग

आभ्यतर परिषदा के देवों की, मध्य परिषदा के देवों की, बाह्य परिषदा के देवों की, आभ्यतर परिषदा की देवियों की, मध्य परिषदा की देवियों की व बाह्य परिषदा की देवियों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! भूतानेन्द्र के आभ्यतर परिषदा के देवों की कुछ कम एक पल्योपम की, मध्य परिषदा वाले की सात्रिक आधा पल्योपम व बाह्य परिषदावाले की आधा पल्योपम की स्थिति कही है आभ्यतर परिषदा की देवी की आधा पल्योपम, मध्य परिषदा की कुछ कम आधा पल्योपम व बाह्य परिषदा की

अब्भितरियाए परिसाए एक देवीसयं पण्णत्त, मज्झिमियाए परिसाए एक्कदेवीसयं पण्णत्त बाहिरियाए परिसाए एक्क देवीसय पन्नत्त ॥ कालस्सण भंते ! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररन्नो अब्भितर परिसाए देवाण कवतिय कालठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता बाहिरियाए परिसाए देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीण केव- तिय काल ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! कालस्सण पिसाय कुमारिंदस्स पिसाय कुमाररण्णो अब्भितर परिसाए देवाण अद्ध पलिओवम ठिती पण्णत्ता, मज्झिमाए देवाण देसूण अद्ध पलिओवम ठिती पण्णत्ता,

कहा है ? अहो गौतम ! कालेन्द्र को आभ्यतर परिषदा के आठ हजार देव, मध्य परिषदा के दश हजार देव व बाह्य परिषदा के बारह हजार देव कहे हैं और तीनों परिषदा में साथ एकसो २ देवियों कही हैं अहो भगवन् ! काल नामक पिशाच राजा को आभ्यतर परिषदा के देवों की, मध्य परिषदा के देवों की व बाह्य परिषदा के देवों की, आभ्यतर परिषदा की देवीयों की, मध्य परिषदा की देवीयों की व बाह्य परिषदा की देवीयों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! आभ्यतर परिषदा के देवों की आध

विहरति। कालस्सण भंते! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ तजहा ईसा तुडिआ दढरहा अब्भितरिया ईसा, मज्झिमिया तुडिया बाहिरिया दढरहा कालस्सण भंते! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कतिदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ जाव बाहिरिया परिसाए कतिदेवीसया पण्णत्ता? गोयमा! कालस्सण पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमार रायस्स अब्भितर परिसाए अट्ठदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमाए परिसाए दस देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ,

दो पिशाच कुमार के राजा कहे हुवे हैं यावत् विचरते हैं अहो भगवन्! दक्षिण दिशा के पिशाच कुमार के वास कहां कहे हैं? स्थानपद जैसे कहना यावत् विचरते हैं, यहां काल नामक पिशाचकुमारेन्द्र व पिशाचकुमार राजा है, वह महर्द्धिक यावत् विचरता है अहो भगवन्! काल नामक पिशाच कुमारेन्द्र पिशाच राजा को कितनी परिषदा कही है? अहो गौतम! तीन परिषदा कही हैं ईषा, त्रुटिता व दढरथा जिन में आभ्यतर ईषा, मध्य त्रुटिता व बाह्य दढरथा अहो भगवन्! काल नामक पिशाचेन्द्र को आभ्यतर परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं यावत् बाह्य परिषदा की कितनी देवियों

सउद उप्पित्ता दसुत्तरे जोयणसए बाहल्लेण एत्थण जोतिसियाण देवाण तिरियमसखिज्जा जातिसिय विमाणावास सयसहस्सा भवतीति, मक्खाय, तेण विमाणा अद्ध कविट्ठ सठाण सठिया एव जाव जहाठाणपदे जाव चदिम सूरिया तत्थ जोतिसिंदा जोइसरायाणो परिवसति महिड्ढिया जाव विहरति ॥ सूरस्सण भते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ तजहा- तुबा तुडिया पव्वा, अब्भतरिया तुबा, मज्झिमिया तुडिया, बाहिरिया, पव्वा, सेस जहा कालस्स परिमाण, ठितीवि अठो जहा चमरस्स चदस्सवि एवचेव ॥ २० ॥ कहिण भते! दीव समुद्दा के महालयाण भत! दीवसमुद्दा कि सठियाण भते ! दीवसमुद्दा किमाकार भाव

कविठ के सस्थानवाले हैं यावत् इस का सब कथन स्थानपद जैसे कहना यावत् उन के चद्र व सूर्य दो इन्द्र हैं वे यहां रहते हैं यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा सूर्य को कितनी परिषदाओं कही है ? अहो गौतम ! तीन परिषदाओं कही है तुम्बा, तुडिया व पर्वा आभ्यतर तुम्बा, मध्य तुडिया व बाह्य पर्वा, शेष सब काल इन्द्र जैसे जानना कार्य सब चमरेन्द्र जैसे जानना जैसे सूर्य का कहा वैसे ही चद्र का कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र कहां है, द्वीप समुद्र

बाहिरियाए परिसाए देवाण सातिरेग चउब्भाग पलिउवम ठिती पण्णत्ता, अब्भित-रियाए परिसाए देवीण सातिरेग चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता मज्झिम परि-साए देवीण चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता बाहिर परिसाए देवीण देसूण चउ-ब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता, अट्ठो जाव चमरस्स एव उत्तरिल्लस्सवि एव निरतर जाव गीयजसस्स ॥ १९ ॥ कहिण भते ! जोतिसियाण देवाण विमाणा पण्णत्ता, कहिण जोतिसिया देवा परिवसति ? गोयमा ! उर्द्धिदिव समुद्दाण, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमि भागातो सत्तणउतेजोयण

पल्योपम, मध्य परिषदा के देवों को कुच्छ कम आधा पल्योपम, व बाह्य परिषदा के देवों की साधिक पल्योपम का चौथा भाग आभ्यतर परिषदा की देवीयों की साधिक पल्योपम का व चौथा भाग, मध्य परिषदा की देवीयों की चौथा भाग व बाह्य परिषदा की देवीयोंकी पल्योपम के चौथे भागमें कुच्छ कमकी स्थिति है कार्य सब चमरेन्द्र जैसे कहना ऐसे ही उत्तर दिशा के इन्द्रका कहना यों गीतयश पर्यंत सब इन्द्रों का कहना॥१९॥ अहो भगवन्! ज्योतिषी देव के विमान कहां कहे हैं व ज्योतिषी देव कहां रहते हैं? अहो गौतम ! द्वीप समुद्र की ऊपर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के समभूमि भाग से ७९० योजन ऊपे जावे तब वहां ११० योजन के जाडपन में तीर्छे असंख्यात लाख ज्योतिषी के विमान कहे हुए हैं वे विमानों सर्व

॥ २१ ॥ तत्थणं अयं जंबुद्दीवेणाम दीवे सव्वदीव समुद्दाणं अब्भिंतरए सव्व खुड्डाए वट्टे तेल्लापूय संठाण संठिये वट्टे रहचक्कवाल संठाण संठिये, वट्टे, पुक्खर कण्णिया संठाण संठिये वट्टे पडिपुन्नचंद संठाण संठिये, एक्कं जोयणसयसहस्स आयाम विक्खंभेणं, तिण्णिजोयण सयसहस्साइं सोलसहस्साइं दोण्णियसया सत्तावीसे जोयणसते तिण्णियकोसे अट्ठावीसंच धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्ध अंगुलंच किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता॥ सेणं एकाए जगतीए सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, साणं जगती अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले बारस जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे अट्ठजोयणाइं विक्खंभेणं, उप्पिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूलेविच्छिण्णा, मज्झे

पद्मवर वेदिका और एक२ वनखण्ड वेष्टित है लोक में स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप व समुद्र है ॥२१॥इन सबकी बीच में सब से छोटा जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है, यह तेल पूडे के संस्थानवाला है, रथ चक्र जैसा गोलाकार, पुष्कर की कर्णिका जैसा, प्रति पूर्ण चंद्र जैसा संस्थानवाला है एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा है तीन लक्ष सोलह हजार दो सत्तावीस योजन तीन कोश, एकसो अठ्ठाइस धनुष्य व १३॥ अंगुल से कुच्छ अधिक उस की परिधि है इस की चारों तरफ एक जगती है यह जगति आधा योजन की ऊंची है, मूल में बारह योजन की चौडी, मध्य में आठ योजन की चौडी व ऊपर चार

पहोयाराण भंते ! दीव समुद्दा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवा लवणादियासमुद्दा सठाणया ता एकविहिविहाणा वित्थारतो अणेगविहिविहाणा दुगुणादुगुण पडुप्पाए माणा २ पवित्थरमाणा २ ओभासमाणा वीयीया, बहुउप्पल पउम कुमुद णलिण सुभगा सोगंधिया पोंडरीया महापोंडरीय सतपत्त सहस्सपत्तय फुल्लके- सरोवचिता, पत्तेय २ पउमवर वेइया परिक्खित्ता पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता, अभिंतरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा सयभुरमण पज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो

कितने कहे हैं ? द्वीप समुद्र कैसे संस्थानवाले हैं, ? और उन का कैसा आकार भाव (स्वरूप) कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप व लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र हैं वे सब एक संस्थानवाले हैं और विस्तार में अनेक प्रकार के हैं विस्तार में प्रथम द्वीप से प्रथम समुद्र दुगुना, प्रथम समुद्र से दूसरा द्वीप दुगुना, उस से दूसरा समुद्र दुगुना यों एक द्वीप से दूसरा समुद्र दुगुना और समुद्र से द्वीप दुगुना विस्तार में रहे हुवे हैं उन में जो समुद्र हैं वे कल्लोल से सुशोभित है और द्वीप में अनेक दूर प्रमुख रहे हुवे हैं उन में उत्पल पद्म, चंद्र विकासी, सूर्य विकासी, कमल, नलिन, सुभग, सोगंधिक, पुंडरीक, महा पुंडरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र, वगैरह कमल, पुष्प केसरा सहित हैं प्रत्येक द्वीप को एक २

पउमवर वेदिया अद्ध जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण,पचधणुसायाइ विक्खभेण,सव्वरयणामइ जगती समिया परिक्खेवेण तीसेण पउमवरवेदियाए इमेवारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा—वयरामया नम्मा रिट्ठामयापतिाणट्ठा वरुलिया मया खभा, सुवण्ण रूप्पमया फलगा, वइरामयी सधी, लोहितक्खमइओ सूईओ नाणामया कलवरा, कलेवरसघाडा, णाणा मणिमया रूवा, रूवसघाडा अकामया पक्खा पक्खवाहाओ, जोतिरसामयावसा वसकवेल्लुयाओ, रययामयी पट्टिया, जातरूवमयी ओहाडणी, वईरामयी उवरिं पुञ्छणी, सव्वसेयरययामतेछादणे ॥ २४ ॥ साण पउमवरवेदिया

जगती के चारों तरफ वेष्टित हैं,अथात् जगती जितनी ही घेरावमें है इस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं इस की वज्र रत्नमय नीव है, आरिष्ट रत्नमय नीव का ऊपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय स्थम है, सोने चांदी के पटिये हैं, उस की सधी वज्ररत्न से पूरी हुई है लोहिताक्ष रत्न की उन पटियों की बीच में सूइयों है, विविध प्रकार के कलेवर व कलेवर के मार्ग हैं, विविध प्रकार के मणिमय रूप व रूप सघात है, अंक रत्नमय पक्ष (देश) व पक्ष बाहा है, ज्योतिषी रत्नमय बंश व बंशवालिका (खुटियों) हैं, उस पर चांदी की पटडी है, उस पर सुवर्ण का ढक्कन है, उस पर वज्र रत्न का निबड ढक्कन है, उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है ऐसी पद्मवर वेदिका है ॥ ७५ ॥ यह पद्मवर वेदिका एक

सक्खित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छ संठाण संठिया, सव्ववइरामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका णिक्कंकडछाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ २२ ॥ साणं जगती एक्केणं जालकडएणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, सेणं जालकडएणं अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं, सव्वरयणामए, अच्छे सण्हे घट्ठे मट्ठे नीरये निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे ससिरीए सउज्जोवे पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥ २३ ॥ तीसेणं जगतीए उप्पिं बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगा महं पउमवर वेदिया पण्णत्ता, साणं

योजन की चौडी है मूल में विस्तारवाली, मध्य में संक्षिप्त बनी हुई व ऊपर संकुचित बनी हुई है, सब वज्र रत्नमय, सुकुमाल, घटारी, मटारी, रज रहित, निर्मल, रज रहित, कांति की व्याघात रहित, प्रभा सहित, शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २२ ॥ उस जगती की चारों तरफ एक जाल कटक (गवाक्ष) है यह अर्ध योजन का ऊंचा पांच सो धनुष्य का चौडा व सब रत्नमय, स्वच्छ, मृदु, घटारा, मठारा, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाला, प्रभा शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २३ ॥ उस जगती की मध्य बीच में एक पद्मवर वेदिका है यह पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊंची व पांच सो धनुष्य की चौडी है, सब रत्न मय है

पउमवर वेदिया अद्ध जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पचधणुसायाइ विक्खंभेण,सव्वरयणामई जगती समिया परिक्खेवेण तीसेण पउमवरवेदियाए इमेवारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—वयरामया नम्मा रिट्ठामयापतिाणट्ठा वरुलिया मया खभा, सुवण्ण रूप्पमया फलगा, वइरामयी सधी, लोहितक्खमइओ सूईओ नाणामया कलेवरा, कलेवरसघाडा, णाणा मणिमया रूवा, रूवसघाडा अंकामया पक्खा पक्खवाहाओ, जोतरसामयावंसा वसकवेल्लुयाओ, रययामयी पट्टिया, जातरूवमयी ओहाडणी, वईरामयी उवरिं पुच्छणी, सव्वसेयरययामतेछादणे ॥ २४ ॥ साण पउमवरवेदिया

जगती के चारों तरफ व्याप्त हैं,अर्थात् जगती जितनी ही घेरावमें है इस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं इस की वज्र रत्नमय नीव है, अरिष्ट रत्नमय नीव का ऊपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय स्तंभ है, सोने चांदी के पाटिये हैं, उस की संधी वज्ररत्न से पूरी हुई है लोहिताक्ष रत्न की उन पटियों की बीच में सूइयों है, विविध प्रकार के कलेवर व कलेवर के सांचे हैं, विविध प्रकार के मणिमय रूप व रूप संघात है, अंक रत्नमय पक्ष (देश) व पक्ष बाहा है, ज्योतिषी रत्नमय वंश व वंशवालिका (खुटियों) हैं, उस पर चांदी की पटडी है, उस पर सुवर्ण का ढक्कन है, उस पर वज्र रत्न का निबद्ध ढक्कन है, उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है ऐसी पद्मवर वेदिका है ॥ २५ ॥ यह पद्मवर वेदिका एक

एगमेगेण हेमजालेण एगमेगेण खिंखिणिजालेण, एव घटाजालेण जाव मणिजालेण, एगमेगेण पउमवर जालेण सव्वरयणामएण सव्वतो समता सपरिक्खित्ता ॥ तेण जाल तवणिज्जलंबूसरा सुवण्ण पयरगमंडिया णाणा मणिरयण विविधहार सोहित समुदया, ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता पुव्वावर दाहिण उत्तरा गतेहिं वाएहिं मदाय मदाय एतिया खतिया कंपिता खोभिता चालिया फंदिया घट्टिया उदीरिया एतेसिं उरालेणं मणुन्नेण कण्णमन निव्वुत्ति करेण सद्देण सव्वतो समता आपूरेमाणा २ सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥ २५ ॥ तीसेण पउमवर

सुवर्ण की माला, घुघरे की माला, यावत् मोतियों की माला, व कमल की माला से परिवेष्टित है वे मालाओं सब रत्नमय हैं उन मालाओं का रक्त सुवर्ण के झूमखे है, सुवर्ण का मकरक [सूत्र] हैं, विविध प्रकार के मणि, रत्नों के विविध प्रकार के हार व अर्ध हार से शोभित है किंचित् परस्पर अलग २ है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण के मंदर वायु से कंपायमान होती हुई, क्षुब्ध होती हुई, चलित होती हुई, किंचित् चलती हुई, व उदीरणा करती हुई वे मालाओं उदार मनोज्ञ कर्ण व मन को प्रियकारी शब्द से चारों तरफ पूरती हुई अतीव २ शोभती है ॥ २५ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत

वेइयाए तत्थतत्थ देसे देसे तहिंतहिं बहवे हयसघाडा गयसघाडा, नरसघाडा किण्णरसघाडा किंपुरिससघाडा महारगसघाडा गधव्वसघाडा उसभसघाडा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पका निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा ॥ २६ ॥ तीसेण पउमवर वेदियाए तत्थ २ देसे १ तहिं २ बहवे हयपतीउ तहेव जाव पडिरूवाओ ॥ एव हयवीहीओ जाव पडिरूवाओ ॥ एव हयमिहुणाइ जाव पडिरूवाइ ॥ २७ ॥ तीसेण पउमवर वेइयाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे पउमलयाओ नागलयाओ एव असोग चपग चूय वाण वसातिय अतिमुत्तग-कुंद-सायलयाओ णिच्चकुसुमियाओ जाव सुविभत्त

घोरे के युगल, गज के युगल, नर के युगल, किन्नर के युगल, किंपुरुष के युगल, महोरग के युगल, गधर्व के युगल, व वृषभ के युगल रहे हुवे हैं व सब रत्नमय स्वच्छ, मृदु, घटारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पक रहित, निरुपहत छायावाले प्रभा शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ २६ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत हय की पंक्तियों यावत् प्रतिरूप हैं ऐसे ही हय वीथि यावत् प्रतिरूप है सो कहना ऐसे ही हय मिथुन यावत् प्रतिरूप है सो कहना ॥ २७ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत पद्मलता, नागलता, ऐसे ही अशोक, चपक, आम्र, लता, छण नामक वृक्ष,

विद्दमजरीविडेमक घरीआ सव्वरयणामताओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णीरयाओ णिम्मलाओ निप्पकाओ निक्कंकम छायाओ सप्पभाओ ससिरियाउ सउज्जोयाओ पासादिआओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ २८ ॥ तीसेण पउमवर वेदियाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे अक्खया सोत्थिया पण्णत्ता, सव्वरयणामया अच्छा ॥ २९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ पउमवर वेइया ? गोयमा ! पउमवर वेइयाए तत्थ २ देसे २ तहिं वेदियासु वतियवाहासु वेतियासीसफलएसु वेतिया पुडतरेसु खंभेसु खंभवाहासु खंभसीसेसु खंभपुड-

बासंति, मति मुक्त कुंदलता व श्यामलता हैं व सब कुसुमित (पुष्पवाली) यावत् सुविभक्त व पिंड मंजरीरूप शिखर धारन करनेवाली हैं सब रत्नमय, स्वच्छ कोमल, घटारी, मठारी, रज रहित, निर्मल, कर्दम रहित निरुपहत छायावाली, प्रभा, शोभा व उद्योत सहित प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ २८ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर अक्षय (चावल के) स्वस्तिक कहे हुए हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका क्यों कहा ? अहो गौतम ! पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर वेदिका के पार्श्व में, वेदिका के पटिये के शीर्ष में वेदिका के पुटांतर में, स्तंभ में, स्तंभ पार्श्व में स्तंभ शीर्ष में, स्तंभ पुटांतर में, सीलों में, सीलों के मुख में, सीलों के पटिये में, सीलों के पुटांतर में,

तरेसु, सूयीसु सूयीमुहेसु सूयफलएसु सूयपुडतरेसु, पक्खेसु पक्खवाहेसु पक्खपरतरेसु बहुय उप्पलाइ पउमाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ सव्वरयणामयाइ अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ नीरयाइ निप्पंकाइ निक्कंकडछायाइ सप्पभाइ सस्सिरियाइ सउज्जोयाइ, पासादीयाइ दरिसणिज्जाइ, अभिरूवाइ पडिरूवाइ, महया २ वासिक्कछत्त समासाइ पण्णत्ताइ समणाउसो ! से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ पउमवरवेदिया २ ॥ अदुत्तरचणं गोयमा ! पउमवरवेदिया २, सासते नामधेज्ज पण्णत्ते, जं णकयाविणासि जाव णिच्चे ॥ ३० ॥ पउमवर वेदियाणं भंते ! किं सासता असासता ? गोयमा !

पक्ष में, पक्षबाहा में, व पक्ष के पातर में बहुत उत्पल पद्म यावत् लक्ष पांखडी वाले पुष्प रहे हुवे हैं वे सब रत्नमय, अच्छे, श्लक्ष्ण, घसारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाले, प्रभा, शोभा व उद्योत सहित प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे वर्षाकाल में पानी रखने का महा पात्र अथवा छत्र समान हैं अहो गौतम ! इस लिये पद्मवर वेदिका शब्द की प्राप्ति हुई है अथवा तो पद्मवर वेदिका का नाम शाश्वत है यह अतीत काल में नहीं थी ऐसा नहीं यावत् नित्य है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका क्या शाश्वत है

सिय सासता सिय असासता ॥ केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता ॥ २१ ॥ पउमवर वेइयाण भंते ! कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! णकयावि णासि नकयातिणत्थि नकयाति णभविस्सति । भुविंच भवतिय भविस्सतिय धुवा णितिया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवर वेदिया ॥२२॥ तीसेण जगतीए उप्पि बाहिं पउमवर वेइयाए एत्थण एगे महंवणसंडे पण्णत्ते

या अशाश्वत है ? अहो गौतम ! स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है अहो भगवन् ! किस लिये ऐसा कहा कि स्यात् शाश्वत स्यात् अशाश्वत है? अहो गौतम ! द्रव्य आश्रिय शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वत है अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि पद्मवर वेदिका स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका का कितना काल तक रहने का कहा ? अहो गौतम ! पहिले नहीं थी वैसा नहीं, वर्तमान नहीं है वैसा नहीं व भविष्य काल में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में थी, वर्तमान में है व भविष्य काल में होगी वैसी ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय अव्यय अवस्थित, व नित्य पद्मवर वेदिका है ॥ २२ ॥ उस जगती की ऊपर व पद्मवर वेदिका से बाहिर

देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवाल विक्खंभेणं जगतिसमये परिक्खेवेण किण्हे किण्होभास जाव अणेग रगह रहजाण उग्ग परिमोयण सूरम्मे पासादिये सण्हे लण्हे, घट्ठे मट्ठे णीरए निम्मले निप्पंकइच्छाए सप्पभाए ससिरिए सउज्जोवे पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥३३॥ तस्सण वणसंडस्स अंतो बहु समरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा मुइंग पुक्खरेइवा सरतलेतिवा करयलेतिवा आयसमंडलेतिवा चंदमंडलेतिवा सूरमंडलेतिवा उरब्भचम्मेतिवा उसभचम्मेतिवा, वराह चम्मेतिवा, सीहचम्मेतिवा वग्घचम्मेतिवा, विचम्मेतिवा, दीवियचम्मेतिवा, अणेगसकुकीलग सहस्सवितते आवड पच्चावड सेढी सोत्थिय सोवत्थिय

एक बड़ा वनखण्ड कहा हुआ यह वनखण्ड कुच्छ कम दो योजन का चक्रवाल में चौड़ा है जगती जितना ही गोलाकार में है यह कृष्ण वर्ण वाला यावत् कृष्णाभास है यावत् अनेक शकट रथ पालखी प्रमुख रहने का स्थान है रमणिक, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥३३॥ उस वनखण्ड में एक बड़ा रमणीय भूमिभाग है जैसे मुरजका तल (वादित्र विशेष) मृदगकातल, तलावकातल, करतल, काच का तल, चन्द्र मंडल सूर्य मंडल, मेंढे का चर्म, वृषभ का चर्म, वराहका चर्म, सिंहका चर्म, व्याघ्र का चर्म, छागका चर्म व चित्तेका चर्म समान तल है एक आकार वाले महस्र खीलाओं को तपाकर टीपने से जैसे समतल वाला होता है वैसे ही आवर्त, प्रत्यावर्त, श्रेणि प्रश्रेणि स्वस्तिक, पुष्पमान वर्धमान, मत्स्य,

पुस्समाण वद्धमाण मच्छडक मकरडक जारामरा पुप्फावलि पउमपत्ता सागरतरग वासति पउमलय भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सस्सिरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पचवण्णेहिं तणेहिय मणिहिय उवसोभिये तजहा-किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ जे त किण्हा तणाय मणीय तीसेण अयमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए जीमूतेतिवा अजणेतिवा खजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलियातिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा आगासथिग्गलेइवा कण्हा सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबधुजीवयेतिवा भवेतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण किण्हाण तणाण मणीणय

कच्छ, मरामर, पुष्पवेली, पद्म, पत्र, समुद्र तरग, वासतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों ये सब प्रकार की श्री व उद्योत सहित, विभिन्न प्रकार कि कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व मणि से शोभनिक है ॥ ३३ ॥ इन में कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन करा है जैसे मेघ, घटा, अजन, खजन काजल, मषी, मसी की गोली, नील, नील, की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण राख कृष्ण आकाश तल, कृष्ण अशोक वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बधु जीव उसा क्या इसका कृष्ण वर्ण होता है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक प्रभाव, इष्ट मनोहर, कंत

एतो इट्ठयराएचेव कततराएचेव मणामतराएचेव वण्णेण पण्णत्ते ॥ ३९ ॥ तत्थण जे ते णीलगा तणाय मणीय तेसिण इमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते से जहानामए भिंगेतिवा भिंगपत्तेतिवा चासेतिवा चासपिच्छेतिवा सुयेतिवा सुयपिच्छेतिवा णीलीतिवा, णीलीभेदेतिवा णीलीगुलियातिवा, सामाएतिवा उच्चनएतिवा, वणराईतिवा हलधरवसणेतिवा, मोरग्गीवातिवा, पारेवयग्गीवातिवा, अयसी कुसमेतिवा, वाणकुसुमेतिवा, अजणकेसिया कुसमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा णीलासो तेतिवा णीलकणवीरेतिवा, णीलबंधुजीवेतिवा, भवेयारूवेसिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण निलगाण तणाणय मणीणय एतो इट्ठयराचेव कततराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते

व मणाम है ॥३९॥ नीले वर्ण वाले तृण व मणि का ऐसा स्वरूप कहा? जैसे भृंग, भृंग की पांख नील चास, नील चास की पांख, तोता, तोता की पांख, नील, नील वस्तु का भेद, नील वस्तु का समूह, सामा (धान्य विशेष) दांत का कालावर्ण, वन की घटा समूह, बलदेव के वस्त्र, मयूर ग्रीवा, पारापत ग्रीवा, अलसी के पुष्प, सणवृक्ष के पुष्प, अंजनकेसिका (वृक्ष विशेष) उस के पुष्प, नीला कमल, नीला अशोक वृक्ष, नीली कणेर नीला बंधु जीव, इत्यादि वस्तु समान क्या इसका नीलावर्ण है? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिकतर

पुरसमाण वद्धमाण मच्छक मकरडक जारमारा पुष्पावलि पउमपत्ता सागरतरग वासंति पउमलय भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पंचवण्णेहिं तणेहिय मणिहिय उवसोभिये तंजहा किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ जे ते किण्हा तणाय मणीय तेसिण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए जीमूतेतिवा अंजणेतिवा खंजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलियातिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा आगासथिग्गलेइवा कण्हा सोएतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबंधुजीवयेतिवा भवेतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिणं किण्हाणं तणाणं मणीणय

कच्छ, मराकर, पुष्पवल्ली, पद्म, पत्र, समुद्र तरंग, वासंतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों ये सब प्रकार की श्री व उद्योत सहित, विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व मणि से शोभनिक है ॥ ३३ ॥ इन में कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन कहा है जैसे मेघ, घटा, अंजन, खंजन, काजल, मसी, मसी की गोली, नील, नील, की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण वाल कृष्ण आकाश तल, कृष्ण अशोक वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बंधु जीव क्या क्या इसका कृष्ण वर्ण होता है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक श्याम, इष्ट मनोहर, कंत

तत्थण जे ते हालिद्दगा तणाएचेव मणीमताएचेव वण्णेग पण्णत्ते ॥ ३४ ॥
पण्णत्त से जहा नामए चपाति य मणीय तेसिण इमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते से
हामेएतिवा हालिद्दगुलियातिवा, तिवा चासेतिवा चासपिच्छेतिवा सुयेतिवा सुयपिच्छेतिवा
चिहुरेतिवा, चिहुरगरागेतिवा णीलीगुलियातिवा, सामाएतिवा उच्चनएतिवा,
सुवसिप्पिएतिवा, वरपुरिसवसणेतिवा, मोरग्गीवातिवा, पारेवयग्गीवातिवा, अयसी
कुहुंठियाकुसुमेतिवा, तडउडाकुसुमेतिवा अजणकेसिया कुसमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा णीलासो
कुसुमेतिवा सुहिरण्णकुसुमेतिवा बधुजीवेतिवा, भवेयारूवेसिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण
रतो इट्ठयराचेव कततराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते

जो पीछे मणि व तृण है उस का वर्णन जैसे पीला वर्ण नीकसे वैसा, हल्दी, हल्दी व मणि का ऐसा स्वरूप कहा ? जैसे मृग, मृग की पाख नील चाम, चिकुर रग (द्रव्य विशेष), चिकुर सयोगपांख, नील, नील वस्तुका भेद, नील वस्तुका समुह, सामा (धान्य म.धन, वर पुरुप सा वासुदेव के वस्त्र, उपुस, बलदेव के वस्त्र, मयूर ग्रीवा, पारापत ग्रीवा, अलसी के पुष्प, के पुष्प, तोरई क पुष्प, सुवर्ण यूथिका पन विशेष) उस के पुष्प, नीला कमल, नीला अशोक वृक्ष, नीली कणेर कोरटक क पुष्प, कोरटक के पुष्प की माफ उसका नीलावर्ण है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिकतर

॥ ३५ ॥ तत्थण जे ते लोमकरडक जरामरा पुक्खरेलि पउमपत्ता सागरतरग वासति पण्णत्त से जहा नामए एहिं सरिसरिएहिं सउब्भोवेहिं नाणाविह पचवण्णेहिं णररुहिरातिवा, वराहरुहिरेतिवा ये तजहा-किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ तिवा जातिहिंगुलएतिवा हितीसेण अयमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए मणितिवा, लक्खारसएतिवा खजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलि-तिवा, जासुयणकुसुमेइवा, लगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा रत्तासोगेतिवा, रत्तकणीयारो सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबधुजीवयेतिवा समट्ठ, तेसिण लोहियगाण तणाणमट्ठे समट्ठ, तेसिण किण्हाण तणाण मणीणय

नीला यावत् मनोहर है॥३५॥ अब यह मुद्र तरग, वासतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों शशक का रुधिर, मेंढे का रुधिर, म , विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व इन्द्रगोप जीव, वाल (उदय होता) , ए कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन करते हैं अकुर, कोहिलास मणि, लाख का र , मसी, मसी की गोली, नील, नील, की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण पुष्प, सिंदुरु पुष्प, प टस के पुष्प, वृक्ष, कृष्ण कणिका, व कृष्ण बधु जीव ऐसा क्या इसका कृष्ण वर्ण क्या है ? यह अर्थ समर्थ नहीं, कृष्ण तृण व मणि का वर्ण इस से भी अधिक श्याम, इष्ट मनोहर, कांत

पोंडरीयदलेतिया, सिंदुवार वरमल्लदामेतित्रा, सेतासोएतित्रा सेयकणवीरेतिवा, सेय वधुजीवातिवा, भवे एयारूवेसिया ? णोतिणट्ठे समट्ठे, तेसिण सुक्किलाण तणाण मणीणय एतो इट्ठतराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥३८॥ तेसिण भतेतणाणय मणीणय केरिसये गधे पण्णत्ते से जहा नामए—कोट्ठापुडाणवा पत्तपुडाणवा, चोयपुडाणवा, तगरपुडाणवा, एलापुडाणवा, हिरमेवपुडाणवा, चदणपुडाणवा, कुकुमपुडाणवा, उसीर पुडाणवा, चवयपुडाणवा, मरुयगपुडाणवा, दमणगपुडाणवा, जातिपुडाणवा जुहिय पुडाणवा, मल्लियपुडाणवा णो मल्लियपुडाणवा, वासतियपुडाणवा, केतियपुडाणवा

पद्म, वर्षा का मल, जात पुष्प की माल्य, श्वेत आशोक वृक्ष, श्वेत कर्णिका व श्वेत बधु जीव ऐसा क्या उन का वर्ण है ? यह अर्थ समर्थ नहीं हैं इस से अधिक इष्ट यावत् मनामतर उन मणि तृण का श्वेत वर्ण जानना अहो भगवन् ! उन तृण व मणि की गंध कैसी कही है ? अहो गौतम ! जैसे कोइ पुडा, सुगंधि पान का पुडा, चोयक (गंध द्रव्य विशेष) का पुडा, एलायची का पुडा, तगर का पुडा, बाल खसखस का पुडा, चदन का पुडा कुंकुम का पुडा, उशीर का पुडा, चपक का पुडा मरुपका का पुडा, दमण॥ का पुडा, जाई का पुडा, जूई का पुडा, मल्लिका का पुडा, नव मल्लिका का पुडा, व.सवोछवा का पुडा, केतकी का पुडा, कर्पूर का पुडा, व पाडल का पुडा इत्यादि में से मंद वायु वावे

तिवा, पीयासोएतिवा पीयकणवीरेतिवा पीयबंधुजीएतिवा, भवेएयारूवे सिया? णो इणट्ठे समट्ठे, तेण हालिद्दा तणायमणीय एतो इट्ठयरा चेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥ २७ ॥ तत्थण ज ते सुक्किलगा तणायमणीय तेसिण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते-से जहा नामए अंकतिवा संखेतिवा चंदेतिवा कुंदेतिवा दगरयेतिवा हंसावलीतिवा कोंचावलीतिवा हारावलीतिवा बलयावलीतिवा चंदावलीतिवा सारतियबलाहयेतिवा धतधोय रूप्पपट्टेतिवा, सालि पिट्ठरासीतिवा कंदपुप्फ रासीतिवा, कुमुदरासीतिवा, सुक्कछिवाडीतिवा, पेहुणमिंजाइवा, भिसितिवा, मुणालियातिवा, गयदंतेतिवा, लवंगदलेतिवा,

बंधु जीव समान क्या है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है इन का वर्ण उक्त सब वस्तुओं से भी इष्टतर यावत् मनामतर पीले वर्ण में कहा है ॥ २७ ॥ शुक्ल तृण व मणि का कैसा वर्ण वास कहा है जैसे अंकरत्न, दक्षिणावर्त शंख, चंद्र, मुचकुंद के पुष्प, पानी के कन, हंसपक्षी की श्रेणी, क्रौंच की श्रेणि, मोती के हारकी श्रेणी, बगले की श्रेणी, चंद्रावलि [पानि में चंद्र प्रतिबिंब की श्रेणी] शरद काल में होवे हुवे श्वेत बद्दल, अग्नि से धमा हुवा चांदी का पट, तुष रहित चांवल, मचकुंद पुष्प का पुंज, मोरपींछ का गर्भ, श्वेत कमल का पुंज, शुष्क छिवाडी वृक्ष के पुष्प, पद्मनीकंद, हस्ती के दांत, लवंग पत्र पोंडरीक

अंकेसुपइट्ठियाए चंदणासार कोणानक्खपरिघट्टियाए कुसलणरनारि संपग्ग हिताए, पदोसपच्चूसकालसमयंसि मंदाय २ एईयाए वेईयाए खोभियाए फंदियाए घट्टियाए उदीरियाए उरालामणुन्ना कण्ण मणनिव्वुत्तिकरा सव्वतो समंता सद्दा अभिणिस्सवंति भवेतारूवेसिया ? नोतिणट्ठे समट्ठे ॥ से जहानामए किण्ण-राणवा किंपुरिसाणवा महोरगाणवा गंधव्वाणवा भद्दसालवणगयाणवा नंदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाणवा पंडगवणगयाणवा हिमवंत मलय मंदरगिरिगुहा समण्णा गयाणवा एगोसहिताण समुहागयाण सन्निसन्नाण सन्निविट्ठाण पमुदिय पक्कीलियाण

नहीं है तीसरा दृष्टांत कहते हैं—किन्नर, किंपुरुष, महोरग व गंधर्व भद्रशालवन, नंदन वन, सोमनस वन व पंडग वन में अथवा हिमवंत पर्वत पर, मलयाचल पर्वतपर, मेरुपर्वतकी गुफा में एकत्रित मीलकर वहां सम्यक् प्रकारसे प्रमुदित व क्रीडावंत बनकर गीतरति नामक गंधर्व हर्ष सहित गद्य, पद्य, कथ्य, पदबंद,व प्रवर्तक को मंद २ स्वर से सप्तस्वर व आठ रस सहित, छ दोष रहित, अग्यारह अलंकार गुण सहित व

१ प्रथम से ही दीर्घ स्वर से गाना, २ मध्य भाग में मंद २ स्वर से गाना, ३ १ षड्ज, २ रिषभ ३गांधार ४ मध्यम ५ पंचम ६ धैवत और निषध यह सप्तस्वर ४ शृंगार प्रमुख आठ रस हैं ५ १ भीति-अधिक त्रासित मन से भयभीत बनते हुए गाना २द्रुत दोष-त्वरा से गाना, ३उप्पिच्छ दोष आकुल व्याकुल बनकर गाना ४उत्ताल दोष-तालस्थानको अतिक्रम करके गाना, ५ काक स्वर दोष-सानुनासिक गाना ६ अनुनासिक दोष-नाक म स स्वर नीकालकर गाना यह सप्तदोष

अत्तकम्मस्स आइण्ण वरतुरग सुसपयुत्तस्स कुसल नरत्थेय साराहि सुसपगहित्तस्स सरसय वत्तीसतोण परिमंडियस्स सककडवहेंसगस्स सव्वावसर पहरणावरण भरिय जोहजुद्ध सज्जस्स रायगणंसिवा अंतेउरंसिवा रम्मंसिवा मणिकोट्टिमतलंसिवा अभिक्खण अइट्टिज्जमाणस्सवा णियट्टिज्जमाणस्सवा पल्ढवरतुरगस्स चडवेगाइ दढस्स उरालामणुन्ना कण्णमणाणिवुतिकरा सव्वतोसमता अभिणिस्सवति भवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ से जहा नामए वेयालियाए वीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए

प्रकार के आयुध, ढाल प्रमुख प्रहरण और योधा को युद्ध करने योग्य ऐसा युद्ध रथ है उसे राजा के अंगन में अंत पुर में, महेल में, मनोहर मणिबद्ध भूमितल में, वारंवार अति वेग से फीरावे इसतरह उत्तम लक्षणवाले अश्वों से फिराते हुवे उस रथ में से मनोज्ञ व सुखकारी सब दिशी में स्पर्शता हुवा शब्द नीकलता है तो अहो भगवन् ! ऐसा शब्द उस तृण में से नीकलता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वह दूसरा दृष्टांत कहते हैं जैसे प्रभात में वैताल्य की वीणा, गंधार स्वर की मूर्च्छा सहित अपने अंक में अच्छे तरह रखी हुई चंदन की वीणा, कोई कुशल पुरुष या स्त्री प्रभात काल में मंदस्वर से बजावे इस तरह मूर्च्छा प्राप्त करते हुए, व उदीरते हुए उदार मनोज्ञ सुख उत्पन्न करनेवाला शब्द सब दिशाओं में स्पर्शता हुवा नीकलता है अहो भगवन् ! उस तृण का क्या ऐसा शब्द होता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ

खुड्डखुड्डियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ गुंजालियाओ दीहियाओ सरपंतीओ सरसर त्रिलपंतीओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकुलाओ वइरामय पासाणाओ वेरुलि-मणिफालिय पडलपच्चोयडाओ नवणीयतलाओ सुवण्णसुब्भरययमणि वालुयाओ सुहोयार सुउत्ताराओ णाणामणि तित्थसुबद्धाओ चाउक्कोणाओ समतीराओ अणुपुव्व सुजायवप्प गंभीर सीयलजलाओ, संछण्णपत्तभिसमुणालाओ बहुउप्पल कुमुय णलिण सुभग सोगंधित पोंडरिया महापोंडरिय सतपत्त सहस्सपत्तफुल्ल केसरोवइयाओ छप्पयपरिभुज्ज-

स्थान २ पर बहुत छोटी बावडियों, पुष्करणियों, गुंजालिकाओं, दीर्घिकाओं, सरपंक्तिओं, बिलपंक्तिओं रही हुई है व निर्मल स्फटिक रत्न जैसी सुकुमाल है उन के किनारे रत्नमय है, वज्ररत्नमय पाषाण है जिस से उन के दोनों भाग बने हुवे हैं, सुवर्णमय तल हैं, वैडूर्य व स्फटिक रत्नमय तट है, सुवर्ण व चांदी मय वालु है, उन में सुख पूर्वक प्रवेश कर सकते हैं व बाहिर नीकल सकते हैं, विविध प्रकार की मणियों से चारों कूने बांध हुए हैं, समान तीर हैं, जल स्थान गंभीर है, उन का जल शीतल है, वहां जल में आच्छादित कमल पत्र, कमलकंद व कमल नाल हैं, उत्पल कमल, चंद्र विकाशी कमल, नलिन कमल, सुभग, सोगंधिक, पुंडरीक, महा पुंडरीक, शतपत्र, सहस्र पत्र, पुष्प व केसरा सहित है वे कमल भ्रमर से भोगवे हुवे हैं स्वच्छ निर्मल जल से परिपूर्ण है, अनेक प्रकार के मत्स्य कच्छ उन में परिभ्र

गीयरतिगधव्व हरिसियमणाण गज्ज पज्ज कत्थ गेय पेय देय पायवद्ध उक्खित्तय पवत्तय मंदाय रोवियत्रेसाण सत्तसरसमण्णगाय अट्ठरससुसपउत्त छद्दोसविप्पमुक्क एक्कारस गुणालंकार अट्ठगुणोववेय गुंजत वंस कुहरोवगूढ रत्तंतिरथाण करणसुद्ध मधुर सम सललिय सकुहरवसनती तलताल लयगह ससपउत्त मणोहर रमउयरि-भिय पयसंचार हरभिसमह अणुतिरिय चारुरूव दिव्व नट्ट सज्जगेय गीयाण भवेया रूवेसिया ? हंतासिया ॥ ४१ ॥ तस्सण वणखडस्स तत्थ तत्थ देसे २ तहिं २ बहवे

आठ गुण सहित गुणावमान, बांसकी समान पूर्वोक्त स्वरूपवाला उर शुद्ध, कंठ शुद्ध व शिर शुद्ध ये तीन प्रकार से शुद्ध मधुर स्वर से ललित, मनोहर मृदु स्वर सहित, मनोहर पद के गीत सहित, मनोहर सुनने को आनंद होवे वैसा उत्तम मनोहर रूप, वाला देवता संबंधी नाटक व सुनने योग्य गायन करे ऐसा उस तृण का स्वर है क्या ? हां गौतम ! ऐसा उस तृण का शब्द है ॥ ४१ ॥ उस वनखण्ड में

१ पूर्ण गुन-स्वर कला से पूर्ण गाना, २ रक्तगुन-गायन करने योग्य राग से अनुरक्तपने गाना, ३ अलंकृत गुन अन्योन्य स्वर विशेष से अलंकार जैसे शोभता हुवा गाना, ४ व्यक्त गुन-अक्षर स्वर स्फुट करके प्रगटपने गाना, ५ अविघुष्ट गुन-विपरीत स्वर से बकवाद रहित गाना, ६ मधुर गुन-जैसे वसंतमास में कोकिला का मधुर स्वर होवे वैसा गाना, ७ समगुन-ताल वंश स्वरादिक को अनुकूल गाना, ८ सुललित गुन-स्वरघोलना से ललित पना सहित गाना

निम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खभा,सुवन्नरुप्पमया फलगा, वइरामयासंधी लोहितक्खमइउ सूईंआ नाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ, तेसिणं तिसो-वाण पडिरूवगाण पुरतो पत्तेय२ तोरणा पण्णत्ता, तेणं तोरणा णाणामणिमया णाणा मणिमएसु खभेसु उवणिविट्ठ सन्निविट्ठ विविहमुत्ततरोवइत्ता, विविहतारारूवोवइत्ता, ईहा-मिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग किण्णर रुरुसभ चमर कुंजर वणलय पउमलय भत्तिचित्ता खंभुग्गय वइरवेदियाइ, परिगताभिरामा, विज्जाहर जमल जूयलजंत जुत्ताविव, अच्चिसहस्स मालणीया रूवसहस्सकलिया भिसमीणा भिब्भिसमीणा चक्खुल्लोयणलेसा

विविध प्रकार के अवलम्बनबाहा हैं, उन त्रिसोपान के आगे प्रत्येक पंक्तियों पर तोरण हैं वे विविध प्रकार के मणि रत्नों के हैं, मणिमय स्तंभ पर रहे हुवे हैं, विविध प्रकार के मुक्ता फल से वष्टित हैं, विविध प्रकार के ताराओं सहित हैं, ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, पक्षी, मगर, मत्स्य, सर्प, किन्नर रूरू, शरभ, चमर, कुंजर, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक मनोहर चित्रों से चित्रे हुवे हैं स्तंभ पर वज्रमय वेदिका है, जिस से मनोहर तोरण दिखाता है स्तंभ में सूर्य के तेज से अधिक तेजस्वी विद्याधर के युगल हैं सहस्र कीरणवाला सूर्य समान है उस से देदीप्यमान है, विशेष तेज से देदीप्यमान

माण कमलाओ अच्छ विमल सलिल पुण्णाओ, पडिहत्थ भमत मच्छ कच्छभ अणेग सउणगण मिहुण परिवरिताओ पत्तेय२ पउमवर वेदिया परिक्खित्ताओ पत्तेय२ वणसंड परिक्खित्ताओ, अप्पेगतियाओ आसवोदाओ अप्पेगतियाओ वारुणोदाओ, अप्पेगतियाओ खीरोदाओ, अप्पगतीआ घओदाओ अप्पेगइयाओ इक्खुदाआ, अप्पेगतियाओ पगयातीआ उदगरसेण पण्णत्ताओ, पासादियाओ ॥४२॥ तासिणं खुड्डग खुड्डियाण वावीण जाव बिलपंतियाण तत्थ २ देसे २ तहिं २ जाव तिसोवाण पडिरूवगा पण्णत्ता ॥ तेसिणं तिसोपाण पडिरूवगाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते, तंजहा-वयरामया

मण करते हैं, अनेक पक्षीयों के समुह वहां रहते हैं प्रत्येक बावडी को एक २ पद्मवर वेदिका है, और प्रत्येक को एक २ वनखण्ड है किसनीक बावडियों का पानी चद्रहासादिक मदिरा जैसा है, कितनीक का वारुणी समुद्र जैसा है कितनीक का क्षीर समुद्र जैसा है, कितनीक का घृत जैसा है, कितनीक का पानी इक्षु रस जैसा है, कितनीक का पानी अमृत जैसा है, वे प्रासादिक दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ ४२ ॥ उन छोटी बावडीयों यावत् बिलपंक्तियों में स्थान २ पर त्रिसोपान [छोटे २ पंक्ति] है इन का इस तरह वर्णन कहा है उन पंक्ति की भूमि वज्ररत्नमय है, अरिष्ट रत्न का मूल है, वैडूर्य रत्न के स्तम है, सोने व चांदी के पाटिये हैं, वज्ररत्न की संधी है, लोहिताक्ष रत्न के सीके हैं,

निप्पका निक्ककडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४६ ॥ तेसिण खुड्डियाण वावीण जाव बिलपंतियाण तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उप्पाय पव्वयगा, णियति पव्वयगा, जगति पव्वयगा, दारुपव्वयगा, दगमडवगा, दगमचगा, दगमालगा, दगपासगा, उसमरदगा, खडहरदगा आदोलगा पक्खदोलगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा मट्ठा णीरया णिम्मला निप्पंका णिक्ककडछाया सप्पभा सस्सिरिया सज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४७ ॥ तेसुण उप्पायपव्वतेसु जाव पक्खदोलगेसु बहवे

स्वच्छ सुकुमाल, घटारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाले, प्रभा, व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ ४६ ॥ उन वापदी यावत् बिलपंक्तियों में उस देश विभाग में उत्पात पर्वत हैं वहांपर व्यंतर देव व देवियों वैक्रय रूप बनाकर क्रीडा करते हैं वैसे ही नियति पर्वत, जगति पर्वत, दारुक पर्वत स्फटिक रत्न के मंडप, स्फटिक के मांचे दग माल, दग प्रासाद हैं वे ऊंचे हैं परंतु लम्बाइ व चौडाइ में छोटे हैं, वहां मनुष्यों का मन आंदोलन होजावे वैसे होने से आंदोलक है पक्षियों वहां झूलते हैं इस से वह पक्षी का आंदोलक है वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥४७॥ वहां उत्पात पर्वतपर यावत् पक्षांदोलक पर बहुत हंस के आकार वाले आसन, गरुडासन,

सुहफासा सस्सिरियरूवा पासादिया॥४३॥तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पन्नत्ता सोत्थिय सिरिवच्छ नंदियावत्त वद्धमाण भद्दासण कलस मच्छ दप्पण सव्वरतना मया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ ४४ ॥ तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे कण्हचामरज्झया नीलचामरज्झया जाव सुक्किलचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरदंडा जलयामलगंधिया सुरूवा पासादिया ॥ ४५ ॥ तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला, उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला

है, चक्षु को देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्शवाला सश्रीक व चित्त का प्रसन्नकारी है॥४३॥ उन तोरणों पर आठ २ मंगलक कहे हैं, तद्यथा १ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स, ३ नंदावर्त ४ वर्धमान ५ भद्रासन ६ कलश ७ मत्स्य युग्म व ८ दर्पण ये सब रत्नमय स्वच्छ, सुकुमाल यावत् प्रतिरूप हैं॥ ४४ ॥ उन तोरण पर बहुत प्रकार की कृष्ण चमर की ध्वजा, नील चमर की ध्वजा, लाल चमर की ध्वजा, पीत चमर की ध्वजा, श्वेत चमर की ध्वजा हैं वे स्वच्छ, सुकुमाल, चांदी का पट्ट व वज्र रत्न का दंड वाली हैं कमल समान गंध वाली सुरूप व प्रासादिक हैं ॥ ४५ ॥ उन तोरणोंपर छत्रपर छत्र ध्वजापर ध्वजा, घंटा युगल, चमर, युगल, अनेक, उत्पल कमल, यावत् लक्ष पत्र कमल रहे हैं वे सब रत्नमय

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ दसे २ तहिं २ बहवे जाइमडवगा जूहिया-मडवगा मल्लिया मडवगा णोमालियामडवगा वासंतिमडवगा दहिवासुया मडवगा सूरिल्लि मडवगा, तंबोली मडवगा, मुद्दिया मडवगा, णागलया मडवगा, अतिमुत्त मडवगा, अफोया मडवगा, अमेत्ता मडवगा, मालुया मडवगा, सामलया मडवगा, निच्च कुसमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमडवएसु जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइके मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासंति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

हंसासणाइं गरुलासणाइं कोंचासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मयूरासणाइं, उसभासणाइं सीहासणाइं पउमासणाइं दिसासोवत्थियासणाइं, सव्वरयणामयाइं, अच्छाइं सण्हाइं लण्हाइं घट्ठाइं मट्ठाइं णीरयाइं निम्मलाइं निप्पंकयाइं, जाव ससिरीयाइं, सउज्जोयाइं. पासादियाइं दरिसणिज्जाइं अभिरूवाइं, पडिरूवाइं ॥ ४८ ॥ तस्सणं वणसंडस्स तत्थ २ देसे तहिं २ बहवे आलिघरा मालियाघरा कयलिघरगा, लयघरगा, अच्छणघरगा, पेच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा सालयघरगा जालय घरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गंधव्वघरगा आयसघरगा,सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला, णिप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा-

क्रौंचासन, उन्नतासन, नम्रासन, दीर्घासन, भद्रासन, पक्षासन, मयूरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन, दिशास्वस्तिकासन बिछे हुवे हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ, कोमल, घट्टारे, मट्टारे, रज रहित निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांति वाले, प्रभा, श्री व उद्योत सहित प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥४८॥ उस वनखण्ड में स्थान २ पर बहुत आलिनामक वनस्पतिगृह, मालिगृह, कदलीगृह, लतागृह, आस्थानगृह, प्रेक्षणगृह, मज्जनगृह, प्रसाधनगृह, गर्भगृह मोहनगृह, पट्टशालगृह, जालगृह, पुष्पगृह, कुसुमगृह, चित्रगृह,

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहिया-मंडवगा मल्लिया मंडवगा णोमालियामंडवगा वासंतिमंडवगा दहिवासुया मंडवगा सूरिल्लि मंडवगा, तंबोली मंडवगा, मुद्दिया मंडवगा, णागलया मंडवगा, अतिमुत्त मंडवगा, अफाया मंडवगा, अमेत्ता मंडवगा, मालुया मंडवगा, सामलया मंडवगा, निच्च कुसुमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमंडवएसु जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइके मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासंति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

हसासणाइ गरुलासणाइ कौंचासणाइ उण्णयासणाइ पणयासणाइ दीहासणाइ भद्दासणाइ पक्खासणाइ मयूरासणाइ, उसभासणाइ सीहासणाइ पउमासणाइ दिसासोवत्थियासणाइ, सव्वरयणामयाइ, अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ णीरयाइ निम्मलाइ निप्पकयाइ, जाव ससिरीयाइ, सउज्जोयाइ पासादियाइ दरिसणिज्जाइ अभिरूवाइ, पडिरूवाइ ॥ ४८ ॥ तस्सण वणसडस्स तत्थ २ दसे तहिं २ बहव आलिघरा मालियाघरा कयलिघरगा, लयघरगा, अच्छणघरगा, पेच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा सालयघरगा जालय घरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गधव्वघरगा आयसघरगा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला, णिप्पका निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा-

क्रौंचासन, उन्नतासन, नम्रासन, दीर्घासन, भद्रासन, पक्षासन, मयूरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन, दिशास्व स्वकासन विछे हुवे हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ, कोमल, घटारे, मटारे, रज रहित निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांति वाले, प्रभा, श्रीय उद्योत सहित प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥४८॥ उस वनखण्ड में स्थान २ पर बहुत आलिनामक वनस्पतिगृह, मालिगृह, कदली गृह, लतागृह, आस्थानगृह, प्रेक्षणगृह, मज्जनगृह, प्रसाधनगृह, गर्भगृह, मोहनगृह, पट्टशालगृह, जाल गृह, चालीगृह, कुसुमगृह, चित्रगृह,

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव मायघरएसु बहूइ हसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइ सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ दसे २ तहिं २ बहवे जाइमडवगा जूहिया-मडवगा मल्लिया मडवगा णोमालियामडवगा वासंतिमडवगा दहिवासुया मडवगा सूरिल्लि मडवगा, तबोली मडवगा, मुद्दिया मडवगा, णागलया मडवगा, अतिमुत्त मडवगा, अफाया मडवगा, अमेचा मडवगा, मालुया मडवगा, सामलया मडवगा, निच्च कुसमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमडवएस जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मडप, जूइ के मडप, मल्लिका के मडप, नवमालिका के मडप, वासंति के मडप, दधिवासुकी के मडप, सूरिल्ली मडप, नागरवल्लि के मडप, द्राक्ष के मडप, नागलता मडप, अतिमुक्त के मडप, आस्फोट मडप, अभिचा वनस्पति के मडप, मालुका मडप व श्यामलता मडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मडप यावत् श्यामलता मडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हस के

मज्झेएत्थ बहवे पुढवी सिलापट्टगा पण्णत्ता तंजहा-हंसासण संठिता कोंचासणसंठिता गरुलासण संठिता उण्णयासण संठिता पणयासण संठिता, परितासण संठिया, दीहासण संठिया, भद्दासण संठिता, पक्खासण संठिया, चमरासणसंठिया, सीहासणसंठिया, पउमासणसंठिया दिसासोवत्थियासणसंठिया पण्णत्ता ॥ तत्थ बहवे वरसयणासणविसिट्ठ संठाण संठिया पण्णत्ता समणाउसो ? आईणगरुय बूर णवणीत तूलफास मउया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ५२ ॥ तत्थण बहवे

संस्थान वाले, गरुडासन के संस्थान वाले, उन्नतासन के संस्थान वाले, नम्रासन के संस्थानवाले परितासन संस्थान वाले दीर्घासन के संस्थान वाले, भद्रासन के संस्थान वाले, पक्षासन के संस्थान वाले, चमरासन वाले, वृषभासन के संस्थान वाले, सिंहासन के संस्थान वाले, पद्मासन के संस्थानवाले व दिशा स्वस्तिकासन के संस्थानवाले हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे बहुत शयनासन विशिष्ट संस्थान वाले कहे हुवे हैं उस का स्पर्श मृगचर्म, बूर वनस्पति, मक्खन, व अर्कतूल जैसा सुकुमाल है वे सब रत्नमय स्वच्छ, कोमल यावत् प्रतिरूप हैं. ॥ ५२ ॥ वहां बहुत वाणव्यंतर

वाणमतरा देवा देवीओय आसयति सयतिय चिट्ठति निसीदति तुयट्टति रमाति ललति कीलयाति मोहयाति पुरापोराण सुचिन्नाण सुपरक्कताण सुभाण कताण कल्लाण कम्माण फलवित्तिविसेस पच्चणुब्भवमाणा विहराति ॥ ५३ ॥ तीसेण जगतीये उप्पि अतो पउमवरवेदियाण एत्थण एगे महं वणसंडे पण्णत्ते, देसूणाइं दो जोयणाइं विक्खंभेण वेइयासमएण परिक्खेवेण किण्हे किण्होभास वणसंडवन्नओ तणसद्दविहूणो णेयव्वो तत्थण बहवे वाणमतरा देवा देवीओय आसयति सयति चिट्ठति निसीयाति तुयट्टति रमाति ललति कीडति पुरापोराणाण सुचिन्नाण सुपरिक्कताण सुभाण कताण कम्माण कल्लाण फलवित्तिविसेस पच्चणुब्भवमाणा विहराति ॥ ५४ ॥ जंबुद्दी-

देव, व देवियों आते हैं बैठते हैं, सोते हैं खेलते हैं, क्रीडा करते हैं, मोहित होते हैं और पूर्व भव में अच्छी तरह आचरण किये हुए कल्याणकारी कर्मोंका फल भोगते हुवे विचरते हैं ॥ ५७ ॥ उस जगती के ऊपर व पद्मवर वेदिका की अंदर एक बडा वनखण्ड है यह कुच्छ कम दो योजन का चौडा है और वेदिका समान परिधिवाला है यह कृष्ण वर्णवाला व कृष्णाभास वगैरह वनखण्डका वर्णन तृण शब्द रहित सब कहना यहां बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों बैठते हैं सोते हैं, खेलते हैं व क्रीडा करते हैं पूर्व भव में आचरण किये हुए कल्याणकारी शुभ कर्मोंका फल भोगते हुवे विचरते हैं ॥ ५८ ॥ अथ

घस्सण भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा– विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजयेणाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयालीस जोयणसहस्साइं आबाहाए जंबूद्दीवे २ पुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्द पुरिच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीताए महाणदीया उप्पि एत्थण जंबुद्दीवस्स २ विजयेनाम दारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण, तावतियं चेव पवेसेण

जम्बूद्वीप के द्वार का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप को कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप को विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ऐसे चार द्वार कहे हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अवगाह कर आवे वहां जम्बूद्वीप के पूर्व के अंत में लवण समुद्र से पूर्व दिशा के पश्चिम विभाग में सीता महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा व चार योजन का चौड़ा है चार योजन का प्रवेश है श्वेत वर्ण का है प्रधान कनकमय शिखर है वहां व्याघ्रमृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यन्तरदेव,

सेता वरकणगथूभियाए ईहामिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग किंनर रुरु सरभ चमर कुंजर वणलयपउमलयभत्तिचित्ते खभुग्गतवइरवेदियाए परिगताभिरामे विज्जाहरजमलजुयलजंतजुतइव अच्चिसहस्स मालिणीए रूवगसहस्स कलिते भिसमीणे भिब्भिसमीणे चक्खुलोयणलेसे सुहफासे सस्सिरियरूवे वण्णओ दारस्स तंजहा—वयरामयाणिम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खभा जायरूवोवचिता पाईर पंचवण्ण मणिरयण कोट्टिमतले हंसगब्भमये एलुए, गोमेज्जमते इंदखीले, लोहित

रुरु, सरभ, चमरी गाय, अष्टापद वनलता व पद्मलता, इत्यादिक चित्रों से चित्रित हैं स्थंभपर उत्तम वेदिका है यह मनोहर है वे स्थंभ विद्याधर के युगल के आकार सहित हैं सूर्य के हजारों कीरणों के तेज से उस का तेज अधिक है हजारों प्रकार के रूप सहित हैं, विशेष तेजसे देदीप्यमान चक्षु को देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्श है सश्रीक रूप है वज्ररत्न की उस की नीव है अरिष्टरत्नमय प्रतिस्थान है वैडूर्य रत्नमय स्थंभ है सुवर्ण वृद्धि उत्तम प्रकार के पांच वर्ण वाले मणिरत्नों से भूमितल बना है हंसगर्भ रत्नमय देहली है गोमेद्य रत्नमय मनोहर इन्द्र कील-भागका भाग है लोहिताक्ष रत्नमय चारसाख है ज्योतिष रत्नमय द्वार के उपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय कमाड है वज्ररत्नमय संधी है लोहिताक्ष

घस्सण भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तज्जहा—
विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स
विजयेणाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयालीस
जोयणसहस्साइं आबाहाए जम्बूद्दीवे २ पुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्द पुरिच्छिमद्धस्स
पच्चत्थिमेण सीताए महाणदीया उप्पिं एत्थणं जंबुदीवस्स २ विजयेनाम दारे पण्णत्ते
अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण, तावतियं चेव पवेसेण

जम्बूद्वीप के द्वार का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप को कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप को विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ऐसे चार द्वार कहे हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के पूर्व के अंत में लवण समुद्र से पूर्व दिशा के पश्चिम विभाग में सीता महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा व चार योजन का चौडा है चार योजन का प्रवेश है, श्वेत वर्ण का है प्रधान कनकमय शिखर है वहां ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यन्तरदेव,

ल्लुयाओ, रयतामयी पट्टिका, जातरूवमयी उडाहणी, वइरामयी उवरि पुंछणी सव्वसेत रययामयेच्छायणे, अकामए कणगकूड तवणिज्जथूभियाए, से ते सखतल विमल णिम्मल दधिपण गोखीर फणरययणिकरप्पगासे तिलगरयणद्धचदचित्ते णाणामणिमयदामालंकिए, अतो बहिं च सण्हे, तवणिज्ज रुइल वालुया पत्थडे, सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासादीये ॥५६॥ विजयस्सण दारस्स उभतोपासिं दुहतो णिसिहियाए दोदो चदणकलस परिवाडीओ पण्णत्ताओ, तण चदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा, चदण

आच्छादन है उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है, अकरत्नमय पक्षबाहा है, सुवर्ण का शिखर है, उस पर सुवर्णमय भूमिका है, श्वेत दक्षिणावर्त शंख का ऊपर भाग, निर्मल दधि का पिंड, गाय का दुध, समुद्र फेन, चांदी का पुंज समान उस का श्वेत प्रकाश है, तिलक रत्न व अर्ध चंद्र सहित अनेक प्रकार के चित्र हैं, विविध प्रकार के रत्न की माला से द्वार का मुख शोभित है, आभ्यंतर व बाह्य सुकोमल है, उस द्वार में सुवर्णमय वालु है शुभ स्पर्श है सश्रीक रूपवाला है प्रसन्नकारी, देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है ॥ ५६ ॥ उस विजय द्वार की दोनों बाजु दो २ चबुतरे हैं उस पर चंदन से लेपन कराये हुवे दो २ कलश हैं वे कलश उत्तम कमल पर स्थापन किये हुवे हैं, सुगंधी उत्तम पानी से परिपूर्ण भरे

खमईउ दारविंडाओ जोतिरसामता उंचा। वेरु लियामया कवाडा, वइरामया लाधीसधी लोहितक्खमइ सूयीओ नानामणिमया समुग्गया वइरामइ अग्गला अग्गलपासाया वइ-रमती आवतणपेढिया अकुत्तर पासके निरंतरित घणकवाडे भित्तीसुचेव भित्तीगुलिया छप्प-न्नो तिण्णि होंति गोमाणसीततिया णाणामणिरयण वालरूवग लीलट्ठिय सालभंजियाए, वइरामया कूडा रययामए उस्सेह सव्वतवणिज्जमये उल्लोये णाणामणि रयणजाल पंजरमणि वंसग लोहितक्ख पडिवंसरयत भोम्मे अंकामया पक्खबाहाउ, जोतिरसामया वंसा वंसकवेल्लुय

रत्नमय तोरण हैं विविध प्रकार के मणिमय समुद्रक हैं वज्ररत्नमय अर्गला है अर्गला का स्थान भी वज्र रत्नमय है वज्ररत्नमय आवर्तन है अंकरूपमय रत्न के दो पासे हैं अंतर रहित निबिड अखण्ड कमाड हैं, १६८ भाँते के चबुतरे हैं, उन पर १६८ सिके हैं विविध प्रकार के मणिमय बालरूप लीला सहित पुतलियों हैं, वज्ररत्नमय शिखर है, चांदीमय ऊपर की पीठिका है सब सुवर्णमय है विविध प्रकार के मणिमय रत्न की जाल का गवाक्ष है, मणिमय ऊपर का वंश है, लोहिताक्षरत्नमय प्रतिवंश हैं, चांदीमय भूमिका है अंकरत्नमय पक्ष बाहु है और अन्य भी स्तंभ हैं, ज्योतिष रत्नमय वंश है, ज्योतिष रत्नमय कवलु है, चांदी की पट्टी है, सुवर्णमय पतली लकडियों हैं, वज्ररत्नमय तृण समान

घारितमल्लदामकलावा जाव सुक्किलसुत्तवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा तेण दामा तव णिज्जलबूसगा सुवण्णपतरगमंडिता णाणामणिरयण विविहहार जाव सिरीये अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठति, तेसिण नागदंतकाण उवर अण्णाओ दो दोनागदंत परिवाडीओ पण्णत्ताओ एतोमेण नागदंतगाण मुत्ताजालंत भूसिगा तहेव जाव समणाउसो तेसुण नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसुण रयणामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलिया मइओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ ताओण धूवघडीओ कालागुरु पवरकुंदुरुक्क तुरुक्कधूव मघमघंतगंधद्धुताभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ

उन नागदंत में बहुत कृष्ण वर्णवाले यावत् शुक्ल वर्णवाले सूत्र से बंधी हुई लम्बी पुष्पकी मालाओं के समुह लगाये हुवे हैं, उन मालाओं को सुवर्ण के लुम्बक हैं, वे सुवर्णकी पत्री से मंडित हैं, वे विविध प्रकार के मणि रत्नमय व विविध प्रकार के हार से यावत् शोभा में अतीव २ शोभते हुवे रहते हैं ॥ ५९ ॥ उन नागदंत पर दूसरे दो २ नागदंत की परिपाटी कही है वे मोतियों की माला से सुशोभित है वगैरह पूर्ववत् उस का वर्णन जानना उन नागदंत को बहुत रत्नमय सिके हैं, उन सिकें में अति शोभनिक वैडूर्य रत्नमय धूप के कुरूछे हैं वे कृष्णागुर कुंदरुक वगैरह उत्तम धूप से मघमघायमान व उत्कृष्ट

कयवच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, महया महिंद कुंभसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५७ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहतो णिसीहियाते दोदो णागदंत परिवाडीओ, तेण णागदंतगा मुत्ताजालंतरूसिया हेमजालगवक्ख जालखिंखि णिजाल घंटाजाल परिक्खित्ता, अब्भुग्गता अभिणिसिट्ठा तिरियसु सपरिग्गहिता अहेपण्णगद्धरूवा पण्णगसंठाण संठिया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, महता २ गजदंत समाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५८ ॥ तेसुण णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टव

हुवे हैं, कलश पर बावने चंदन के छींटे डाले हुवे हैं, उस के कंठ में सूत के धागे बंधे हुवे हैं, उन को कमल के ढक्कन हैं, वे सब रत्नमय स्वच्छ सुकोमल यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे बडे महेन्द्र कुंभ समान है ॥ ५७ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उन पर दो २ गजदंत समान खीले हैं. उसे बहुत मोतियों की माला, लम्बायमान सुवर्ण की माला, गवाक्ष के आकार से रत्न की माला व घुघरमाल प्रमुख लगाइ हैं, वे गजदंत किंचिन्मात्र ऊंचे हैं सन्मुख नीकले हुवे हैं, तीर्च्छे भित्ति प्रदेश में अच्छी तरह रहे हुवे हैं, नीचे अर्ध सर्प के आकारवाले हैं, वे सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वैसे नागदंत हाथी के दांत समान कहे हैं ॥ ५८ ॥

इत्थग्गाहितग्गसालाओ, घेल्लितग्गासिरयाओ पसत्थलक्खणसंवेल्लितग्गसिरया, ईसिं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठितेहिं, लूसेमाणीतोइव चक्खूलोयणलेस्साहिं अण्णमण्ण खिज्ज-माणीआइव पुढवि परिणामाओ सासय भावमुवगताओ चंदाणाओ चंदविला-सिणीओ चंदद्ध समनिडालाओ चंदाहियसोमदसणीओ उक्काइवजोएमाणीओ विज्जुघणमरीचि सूरदिप्पंततेअ अहियरसंनिकासाओ सिंगारागार चारुवेसाओ पासाइया तेयसा अतीव २ उवसोभेमाणीओ २ चिट्ठति ॥ ६१ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहतो निसीहियाए दो दो जालकडगा पण्णत्ता, तेण

प्रमाण युक्त वेणि वाले केश हैं, अशोक वृक्ष को किंचित् मीलता हुवा शरीर है बाये हाथ से अशोक वृक्ष की शाखा ग्रहण की है, किंचित् कटाक्ष से देव मनुष्य के मन हरण करती हुई व देखने से हास्य करती होवे वैसी पुतलियों पृथ्वीमय शाश्वत भाव में प्राप्त है अर्थात् शाश्वती हैं उन का मुख चंद्र समान है चंद्र समान विलास है, चंद्र समान ललाट है, चंद्र से भी अधिक सौम्य दर्शन वाली है, उल्कापात जैसे उद्योत करने वाली है, मेघविद्युत से देदीप्यमान है, सूर्य से भी देदीप्यमान प्रकाश वाली हैं सोलह शृंगार व आकार से मनोहर वेष वाली है देखने योग्य यावत् प्रतिरूप हैं व तेज से

उरालेण मणुण्णाण घाण मण णिव्वुइकरेण गधेण, तेएपएसु सव्वओ समता आपूरेमाणीओ २ अतीव २ सिरीए जाव चिट्ठति ॥ ६० ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पसिं दुहतो णिसीहियाए, दो दो सालभजिया परिवाडीओ पण्णत्ताओ, ताओण सालभजियाओ लीलट्ठियाओ सुपतिट्ठियाओ सुअलंकियाओ णाणाराग वसणाओ णाणामल्लपिणिद्धाओ मुट्ठीगेज्झसु मज्झियाओ आमेलग जमल जुयल वट्टिय, अब्भुणयपीणरतितसठियपउहराओ रत्तावकाओ असियकेसीओ मिदुविसय पसत्थलक्खण सवेल्लितग्गासिरयाओ ईसिं असागवर पायव समुट्ठिताओ वाम-

गध से मनोहर हैं, श्रेष्ठ सुगध वाले हैं गधवर्ती भूत हैं उदार मनोज्ञ घाण व मन को आनद करने वाली गध से सब दिशी में चारों तरफ पूर्ण हुइ यावत् अत्यत शोभती है ॥ ६० ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उनपर दो पूतलियों की पक्ति है वे पूतलियों अपनी लीला में रही हुई है अच्छी तरह स्थापन की हुई है अच्छी तरह अलकृत बनाइ हैं विविध प्रकार के वस्त्र पहिनाये हुए है, विविध प्रकार की मालाओं कण्ठ में पहिनाइ है, मुष्टिमे ग्रहण करने योग्य कटि प्रदेश पकडा हुवा है, शिखर समान गोल तथा दृढ पीन युक्त पयोधर है, नत्र का अर्ध भाग रक्त है, श्याम वर्ण के काले केश है, कोमल निर्मल अच्छे

साओ सुस्सराओ सुस्सरणिघोसाओ ते पदेसे उरालेण मणुण्णेण कण्णमणनिव्वुइकरेण सद्देण जाव चिट्ठति ॥६३॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहओ निसीहियाए दो दो वणमाला परिवाडीओ पण्णत्ताओ, ताओण वणमालाओ नाणादुमलय किसलय पल्लव समाउलाओ छप्पय परिभुज्जमाण कमलसोभत सस्सिरीयाओ पासाइयाओ ४ ॥ तिपदेसे उराले जाव गंधेण आपूरेमाणीओ २ जाव चिट्ठति ॥ ६४ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहता निसीहिताए दो दो पगठगा पण्णत्ता, तेण पगठगा चत्तारि जोयणाइं आयामविक्खंभेण दो जोयणाइं बाहल्लेण सव्ववइरामता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ६५ ॥ तेसिण एय ओगाःण उवरिं पत्तेय २

विमाग उदार मनोज्ञ व कर्ण को सुख उत्पन्न करे वैसा शब्द से यावत् रहा हुवा है ॥ ६३ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे पर दो २ वनमाला की परिपाटी कही है वे वन लता विविध प्रकार के वृक्षलता व अंकूरों सहित हैं उनको भ्रमर भोगवते हैं जिस से मनोहर व देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है वहां का प्रदेश भी उपर यावत् गंध से पूरता हुवा यावत् रहता है ॥ ६४ ॥ विजयद्वार के दोनों बाजु दो चबुतरे पर दो २ बारकने वाले चबुतरे हैं वे चार योजन के लम्बे चौडे व दो योजन के जाडे हैं सब वज्ररत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥ ६५ ॥ उन प्रत्येक बारकूने

जाल कडगा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घट्ठा नीरिया निम्मल णिक्कपा निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासदीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ६२ ॥ विजयस्सण दारस्स उभतोपासिं दुहओ निसीहियाए दोदो घटा परिवाडीओ पण्णत्ताओ, तासिण घटाण अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा– जबूणतामती घटाओ वइरामतीउलालाओ,णाणामणिमया घटा पासगा तवाणि ज्जमतीओ सकलाओ रययामइउरज्जूओ ताउण घटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हसस्सराओ, कोंचस्सराओ,णदिस्सराओ,णदिघोसाओ,सीहस्सराओ सीहघोसाओ मजुस्सराओ मजुघो

बत्पन्न २ सुशोभित बनी हुई रहती हैं ॥ ६१ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं जिनपर दो पालि कटक-कडा के समुह हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६२ ॥ विजयद्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उनपर दो घंटा हैं इन का इस तरह वर्णन है जम्बूनद रत्न की घंटा है वज्र रत्नमय लोलक है, विविध प्रकार के मणियों के पासे कहे हैं सुवर्ण की सकल है, चांदी की रस्सी है, इस घंटा का ओघस्वर है, मेघ समान स्वर है हंस समान स्वर है, क्रौंच समान स्वर है, नंदी जैसा घोष है, सिंह जैसा घोष है, सिंहस्वर है, सिंह घोष है, सुस्वर है, सुघोष है, यहां का

पासतीया ॥ ६६ ॥ तेसिण पासायवडेंसगाण पत्तेय २ अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते सेजहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा जाव मणीहिं उवसोभिए मणीण गधोवण्णो फासोय णेयव्वो ॥ तेसिण पासायवडेंसगाण उल्लोया पउमलया जाव सामलया भत्तिचित्ता सव्वतवणिज्जमता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ६७ ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओण मणिपेढियाओ जोयण आयाम विक्खभेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्व रयणामईओ जाव पडिरूवाओ॥ ६८ ॥ तासिण मणिपेढियाण उवरि पत्तेय २

मनोहर रूप वाले, दर्शनीय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६६ ॥ उन प्रत्येक प्रासादावतसकमें बहुत सम रमणीय भूमि भाग है यथा दृष्टांत आलिंग पुष्करनामक वादित्र के तल समान यावत् मणि से सुशोभित भूमि भाग है इन का वर्ण गंध स्पर्श पूर्ववत् जानना वहां प्रासादावतसक में पद्मलता यावत् श्यामलता नामक वनस्पति के चित्रों है वे सब सुवर्णमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६७ ॥ उस रमणीय भूमि भाग के मध्य बीच में मणिपीठिका रही हुई है वे एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजन की जाडी है वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है, ॥ ६८ ॥ प्रत्येक मणि पीठिका उपर एक २ सिंहासन हैं इस का वर्ण न

पासाय वडिंसगा पण्णत्ता, तेण पासायवडेंसगा चत्तारि जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दो जोयणाइ आयामविक्खंभेण अब्भुग्गयमूसित पहसिताविव विविहमणिरयण भत्तिचित्ता, वाउद्धयविजयवेजयती पडाग छत्तातिछत्तकलिता तुगा गगणतल मभिलघमाणसिहरा, जालतर रयणपंजर मिलियव्व मणि कणय थूभियग्गा वियसिय सयवत्तपोंडरीय तिलकरयणद्ध चदचित्ता णाणामणिमयदामालंकिया अतोय बाहिंच सण्हा तवणिज्जरुइल वालुया पच्छडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा

प्रत्येक चबुतरे पर एक २ प्रासादावतंसक है, वे चार योजन के ऊंचे हैं, दो योजन के लम्बे चौडे हैं सब दिशा में प्रसरी हुई कांति युक्त है, विविध प्रकार के चन्द्रकांतादि मणि व कर्केतनादि रत्न की रचना से आश्चर्यकारी हैं, वायु से कंपित विजय वैजयंत नामक ध्वजा है, व छत्र उसपर छत्र इस से सहित हैं, आकाश उल्लंघन करते होवे इतने ऊंचे उस के शिखर हैं, गौखों की जालियों में शोभा निमित्त रत्न स्थापन किये हैं पंजर में से बाहिर निकाले जैसा अर्थात् जैसे किसी ढकी हुई वस्तु को खोलने से प्रकाश वाली दीखती है वैसे प्रकाशमय है मणि कनकमय शिखर है विकसित शतपत्र व पुंडरीक तिलक रत्न व अर्धचंद्र वगैरह से वे आश्चर्यकारी हैं विविध प्रकार के मणिमय माला से अलंकृत है, अन्दर बाहिर का प्रासाद का द्वार सुकोमल है, इस में लाल सुवर्ण की वालु बिछाइ हुइ है, सुखकारी स्पर्श सश्रीक

पासाईया ॥ ६८ ॥ तेसिणं सीहासणाणं उप्पिं पत्तेय २ विजयदूसे पण्णत्ते, तेणं विजयदूसा सेया सख कुंद दगरय अमत महियफेण पुंजसण्णिकासा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ६९ ॥ तेसिणं विजयदूसाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ वइरामया अंकुसा पण्णत्ता, तेसुणं वइरामएसु अंकुसेसु पत्तेयं पत्तेयं कुंभिक्का मुत्तादामा पण्णत्ता, तेणं कुंभिक्का मुत्तादामा अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमित्तेहिं अद्ध कुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, तेणं दामा तवणिज्ज लबूसका सुवण्ण पयरमंडिता जाव

नस का स्पर्श देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है ॥ ६८ ॥ उस सिंहासन पर अलग २ विजय दूष्य (छत में बांधने का) है वह विजय दूष्य श्वेत शंख, मुचकुंद, पानी के कन, अमृत, समुद्र फेन इत्यादिक समान श्वेत वर्ण का है सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप है ॥ ६९ ॥ उस विजय दूष्य के मध्य भाग में अलग २ वज्ररत्नमय अंकुश कहे हुए हैं उन अंकुशों में कुंभ प्रमाण मोति की मालाओं कही है, कुंभ प्रमाण मोती की मालाओं की पास अन्य अर्ध कुंभ प्रमाण मोती की मालाओं है, चारों तरफ वींटी हुई हैं ये मालाओं सुवर्ण के लुंबके वाली, सुवर्ण के प्रतर से मंडित यावत् रही

साहासण पण्णत्त,तासण साहासणाण अयमयारूव वण्णावास पण्णत्त तजहा-तवाणज्जमया चक्काला,रययामया, सीहा सोवण्णियापादा णाणामणिमयाइ पायपीढगाइ, जंबूणयामयाइ गत्ताइ वइरामयासंधी, नाणामणिमये वच्चे ॥ तेण सीहासणा ईहामिय उसभ जाव पउलय भत्तिचित्ता सुसारसारोवइतविविहमणिरयणपादपीठा अच्छरगमलयमउगमसुरग नत्तयकुसत लिच्वसीहकेसरपच्चच्छुत्ताभिरामा उयविपक्खामदुगुल्लपट्टपडिच्छणया सुविरति तरयत्ताणा रत्त सुयसंवुता सुरम्मा आतीणगरुयबूरणवणीततूलमउफासा,

करते हैं सिंहासन के चक्कवाल (पाये) के नीचे का प्रदेश सुवर्णमय है, चांदी का सिंहासन है, मणिमय पाये हैं, विविध प्रकार के रत्नमय पाये का बंधन है, जम्बूनद रत्नमय गात्र हैं, वज्र रत्नमय संधी पूरी हुई है, विविध रत्नमय सिंहासन का तला है यह सिंहासन हस्ती मृग यावत् पद्मलता के चित्रों से चित्रित हैं उत्तम प्रकार के श्रेष्ठ विविध मणिरत्नों की पाद पीठिका है, कोमल मसुरमय, मखमल दर्भ तथा सिंह की केसरी समान सुकोमल वस्त्र के आच्छादन से मनोहर दीखता है सुंदर अलसी का वस्त्र, कपास का वृक्ष व रेशम के वस्त्र का रजत्राण (आच्छादन) है और भी रत्न का अलसीमय पर्वमय वस्त्र से सिंहासन अच्छी तरह ढका हुआ है, वे वस्त्र मक्खन, अर्क, तूल, रूइ समान कोमल है

तोरणाण पुरतो दो दो हयसघाडगा जाव उसभसघाडगा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा,॥एवं पतीउ वीहीओ मिहुणा दो दो पउमलयाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो अक्खय सोवत्थिया पण्णत्ता तेण अक्खय सोवत्थिया सव्व रयणामया जाव पडिरूवा तासिण तोरणाण दो दो दो चदणकलसा पण्णत्ता तेण चदणकलसा वरकमल पतिट्ठाणा जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा समणाउसो! तेसिण तोरणाण दो दो भिंगारगा प० वरकमल पइट्ठाणा जाव सव्वरयणामया, पण्णत्ता अच्छा जाव पडिरूवा महया २ मत्तगय महामुहागिई ते समाणा पण्णत्ता समणाउसो!॥७२॥तसिण तोरणाण पुरतो दो दो आतसगा पण्णत्ता,तेसिण आदसगाण

भागे दो दो घोड के समुह यावत् वृषभ के समुह कहे हैं ये सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है यों सब पूर्ववत् पंक्तियों, दो २ वाथडियों, दो मिथुन (स्त्री पुरुष के) यावत् दो पद्म लताओं हैं यहां पर्यंत कहना ये सब वज्ररत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं, उन तोरणों के आगे अक्षत स्वास्तिक कहे हैं ये रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं उन तोरणों के आगे दो कलश कहे हुवे हैं ये चदन कलश श्रेष्ठ प्रधान कमल में रहे हुवे यावत् सब वज्ररत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे कलश मदोन्मत्त हस्ती की मुखाकृति समान हैं॥ ७२ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ काच के आरीसे हैं

चिट्ठति ॥ ७० ॥ तेसिण पासायवडिंसगाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पण्णत्ता— सोत्थियसीहे तहेव जाव छत्ता ॥ ७१ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहओ निसीहियाए दो दो तोरणा पण्णत्ता, तेण तोरणा णाणामणिमया तहेव जाव अट्ठट्ठ मंगलगाधया छत्ताइछत्ता ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो सालिभंजियाओ पण्णत्ताओ जहेव हेट्ठा तहेव ॥ तेसिण तोरणाणं पुरतो दो दो णागदंतगा पण्णत्ता, तेण णागदंतगा मुत्ता जालंत भूसिया, तहेव ॥ तेसुण णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्त वट्टवग्घारित मल्ल दामकलावा जाव चिट्ठति ॥ तेसिण

हुए हैं ॥ ७० ॥ उन प्रासादावतंसक पर बहुत प्रकार के आठ २ मंगल कहे हैं स्वस्तिक, सिंहासन यावत् छत्र ॥ ७१ ॥ उन, विजयद्वार की दोनों बाजु दो २ चबुतरे कहे हैं उनपर दो २ तोरण हैं वगैरह यावत् आठ २ मंगल में छत्र पर छत्र पर्यंत कहना उन तोरणों की आगे दो २ पुतलियों कहा है इन का वर्णन जैसे पूर्वोक्त पुतलियों का कहा वैसे ही जानना उन तोरणों के आगे दो २ नागदंत कहे हैं वे मोतियों की मालाओं से अलंकृत बने हुए हैं वगैरह पूर्वोक्त जैसे सब जानना उन नागदंत को बहुत कृष्ण वर्ण के सूत्र से बंधी हुई पुष्प की मालाओं के समुह यावत् रह हुवे है उन तोरणों के

अच्छोदयपडिहत्थाओ णाणाविह पचवण्णस्स फलहरितगस्स बहु पडिपुण्णाओ विवि-चिट्ठति सव्वरयणामईओ जाव पडिरूवाओ महया २ गोलिंगचक्क समाणाओ पण्णत्ता समणाउसो! ॥ ७६ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो सुपइट्ठगा पण्णत्ता, तेण सुपतिट्ठगा णाणाविह पसाहणगभडविरतियाए सव्वोसहिया पडिपुण्णा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७६ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो मणगुलियाउ पण्णत्ताओ, तासुण मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसुण सुवण्णरुप्पमयेसु फलयेसु बहवे वइरामया णागदतगा पण्णत्ता, तेण नागदतगाणं

पानी से भरी हुई हैं अनेक प्रकार के पांच वर्ण के फल से प्रतिपूर्ण है वे पात्री सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवत श्रमणों वे पात्रियों गाय प्रमुख को चांटा देने के टोपले जितनी बडी है ॥ ७५ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ सुप्रतिष्ठक भाजन विशेष है वे अनेक प्रकार के आभरण से भरे हुए हैं सब औषधि से प्रतिपूर्ण है सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७६ ॥ उन तोरणों के आगे दो मनोगुलिका है उन में बहुत सुवर्णमय रजतमय पटियें है उन पटियों में बहुत वज्र रत्नमय नागदत हैं. उन का कथन पूर्ववत् मानना उन नागदतों में बहुत चांदी के सिके हैं उन चांदी

अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते ,तंजहा-तवणिज्जमता पयभगा वेरुलियमया च्छरुहा, वइरामयावारगा, णाणामणिमया वलक्खा अकामता मंडला अणोग्घसिय निम्मलाए छायाए सततोसिम समणुबद्धा चंदमंडल पडिणिगासा महता २ अद्धकाय समाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ७३ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो वइरणाभथाला पण्णत्ता,तेणं थाला अच्छतिच्छडिय सालि तंदुलणह संदट्ठबहु पडिपुण्णा, चिट्ठंति सव्वजंबूणयामया अच्छा जाव पडिरूवा, महता २ रहचक्क समणा पण्णत्ता समणा-उसो ! ॥ ७४ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दोदो पातीओ पण्णत्ताओ, ताओण पातीओ

इस का वर्णन करते हैं सुवर्ण रत्नमय मंडक पीठ विशेष है, वैडूर्य रत्नमय प्रतिबंध है, वज्ररत्नमय रावा,विविध मणि रत्नमय भूसका आदि रूप अवलंबन, अंक रत्नमय काच है जिस की बिना मांजे ही स्वच्छ कांति है, इस से सब दिशा में अनुबंध सहित है चंद्रमंडल समान व अर्धकाया समान वे आरीसे कहे हैं ॥ ७३ ॥ उन तोरणों को आगे वज्र की नामी समान दो थाल कहे हैं उन में शुद्ध स्फटिक समान तीनवार शुद्ध किये हुवे चावल भरे हुवे हैं वे चावल व थाल सब जम्बूनद रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं. वे बडे २ रथ के चक्र समान हैं ॥ ७४ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ पात्रि हैं वे निर्मल

तोरणाण पुरतो दो दो हय कठगा जाव दो दो उसम कठगा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७८ ॥ तेसुण हयकठएसु दो दो पुप्फचगेरीओ एव मल्लच गेरीओ गध—वण्ण—चुण्ण—वत्थ—आभरण—चगेरीओ सिद्धत्थचगेरीओ लोमहत्थ चगेरीओ सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो पुप्फ पडलाइ जाव लोमहत्थ पडलाइ सव्वरयणामयाइ अच्छाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ७८ ॥ तेसिण तोरणाण पुरता दो दो सीहासणाइ पण्णत्ता तेसिण सीहासणाण अयमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तहेव जाव पासादिया ॥ ८० ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो रूपछत्ताइछत्ता पण्णत्ता ॥ तेणछत्ता वेरुलियभिसत

आगे दो घोडे के आकार वाले यावत् वृषभ के आकार वाले घोडले हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७८ ॥ हयकठ यावत् वृषभ कठ में दो २ पुष्प की चंगेरी ऐसे ही माला, गंध, वर्ण, चूर्ण, वस्त्र, आभरण, सरसु की चगेरी, पुंजनी की चंगेरी हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७८ ॥ उन तोरणों के आगे दो पुष्प के पुंज यावत् पुंजनी के पुंज रहे हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७९ ॥ उन तोरणों के आग दो सिंहासन हैं जिन का कथन पूर्ववत् जानना यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८० ॥ उन तोरणों के आगे दो चांदी के छत्र हैं उन को वैडूर्य रत्न निर्मल दण्ड है, जम्बूनद

मुघा जालतरूसिता हेम जाव गयदत समाणा पण्णत्ता ॥ तेसुण वइरामएसु णागद-तएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता, तेसुण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वायकरगा पण्णत्ता, तेण वायकरगा किण्हसुत्त सिक्कागवच्छिया जाव सुकिल सुत्तसिक्काग वच्छिता बहवे वायकरगा पण्णत्ता सव्ववेरुलियामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥७६॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो चित्तारयण करडा पण्णत्ता से जहा नामए चाउरत चक्कवट्टिस्स चित्तेरयणकरडे वरुलिय मणिफालिय पडलत्थाय डेताए पभाए त पदेसे सव्वतो समताओ भासइ उज्जोवेइ पभासेइ एवामेव तिविचित्त रयणकरडगा वेरुलियपडल पच्छायडा साए पभाए ते पदेसे सव्वतो समताओ भासेति जाव पभासेति॥७७॥ तेसिण

के सिके में पवन डालने के घडे हैं, वे घडे कृष्ण यावत् श्वेत वर्ण के सूत्र से ढके हुवे हैं वे सब वैडूर्य रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७६ ॥ उन तोरणों के आगे २ दो २ आश्चर्यकारी रत्न के करंडिये हैं जैसे चारों दिशा को विजय करने वाले चक्रवर्ती राजाको आश्चर्यकारी रत्नका करंडिया होता है और उस को वैडूर्य व स्फटिक रत्न का ढक्कन होता है, वह अपनी आसपास चारों दिशी में प्रकाश करता है, वैसे ही वहां आश्चर्यकारी रत्नों के करंडिये हैं उनको भी वैडूर्य व स्फटिक रत्न का ढक्कन है और वे वहां चारों तरफ उद्योत करते हैं, प्रकाश करते हैं यावत् तपते हैं ॥ ७७ ॥ उन तोरणों के

समुग्गा हिंगुलसमुग्गा मणोसिलासमुग्गा अंजणसमुग्गा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ८३ ॥ विजयेण दारेण अट्ठसय चक्कज्झयाण अट्ठसय मगरज्झयाण अट्ठसयगरुलज्झयाण, अट्ठसयजुगज्झयाण, अट्ठसयछत्तज्झयाण अट्ठसयपिच्छ ज्झयाण, अट्ठसयसउणीज्झयाण, अट्ठसयसीहज्झयाण, अट्ठसयउसभज्झयाण अट्ठसयसेयाण, चउविसाणाण नागवरकेऊण एवमेव सपुव्वावरेण विजयदारे आसीयकेउसहस्स भवतिचिं मक्खाय ॥ ८४ ॥ विजयदारे नव भोम्मा पण्णत्ता

(तेल के सीसे) कोष्ट के सीसे, पत्र के सीसे, तगर के सीसे, पलास के सीसे, हरताल के सीसे, हिंगुलक के सीसे, मनःशिला के सीसे व अंजन के सीसे हैं ये सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८३ ॥ विजय द्वार पर एक सो आठ ध्वजा चक्र के चिन्हवाली है, मगर के चिन्हवाली १०८ ध्वजा हैं, गरुड के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, धूसरे के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, छत्र के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, पीछ के आकार की १०८ ध्वजाओं हैं, शकुनी पक्षी के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, सिंह के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, वृषभ के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, और श्वेत चार दंतवाले हस्ती के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं यों सब मीलकर विजय द्वार पर एक हजार अस्सी ध्वजाओं हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा है ॥ ८४ ॥ विजय द्वार में नव भूमि कही हैं उन की

विमलदंडा जंबूणय कनिका वइरसंधी मुत्ता जालपरिगता अट्ठसहस्स वर कंचणसलागा दद्दरमलयसुगंधी सव्वउय सुरभीसीयल छाया मंगल भत्तिचित्ता चंदागारोवमा छत्ता ॥ ८१ ॥ तेसिं तोरणाणं पुरतो दो दो चामराओ पण्णत्ताओ ताओणं चामराओ णाणामणि कणगरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जल विचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखककुंद,गरय अमयमहियफ्फेण पुंजसण्णिगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥८२॥ तेसिणं तोरणाणं पुरओ दो दो तेल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयसमुग्गा तगरसमुग्गा एलासमुग्गा हरियाल-

रत्न की कर्णिका है, वज्र रत्नमय संधी है, मोतियों की माला से चारों तरफ व्याप्त हैं, एक हजार आठ सुवर्ण शलाका से बने हुवे हैं, दर्दर चंदन अथवा मलय चंदन जैसा सुगंधित है, सब ऋतु के सुगंध वाली शीतल छाया है, आठ मंगलिक के चिन्ह चित्रित किये हैं, और चंद्र जैसे वर्तुलाकार हैं ॥ ८१ ॥ उन तोरण की आगे दो चमर कहे हैं उन चमरों को विविध मणि रत्न वाला निर्मल व बहु मूल्य सुवर्ण का आश्चर्य कारी दंड व श्वेत है, शंख, अंकरत्न, मुचकुंद के पुष्प, पानी के कन, अमृत व समुद्र के फेन जैसी कान्तीवाले चांद सूक्ष्म वालों के बन रहे हैं, वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८२ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ तेल समुद्र

पुरत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चउण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण चत्तारि भद्दासणा पन्नत्ता॥ तस्सण सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स अभिंतरियाए परिसाए अट्ठण्ह देवस्स साहस्सीएण अट्ठभद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ तस्सण सीहासणस्स दाहिणाण एत्थण विजयस्स देवस्स मज्झिमियाए परिसाए दसण्ह देवसाहस्सीण दसभद्दासण साहस्सीओ पण्णत्ताओ, तस्सण सीहासणस्स दाहिणपच्चच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स बाहिरियाए परिसाए बारसण्ह देवसाहस्सीण बारस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तस्सण सीहासणस्स पच्चच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स सत्तण्ह अणियाहिवईण सत्त भद्दासणा पण्णत्ता, तस्सण सीहासणस्स पुरत्थिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण एत्थण विजयस्स देवस्स सोलस आयरक्खदेव साहस्सीण सोलसभद्दासणसाहस्सीओ, पण्णत्ताओ तंजहा पुरच्छिमेण

आभ्यन्तर परिषदा के देवों के आठ हजार भद्रासन कहे हैं, दक्षिणदिशा में मध्य परिषदा के दश हजार देवों के दश हजार भद्रासन कहे हैं, नैऋत्यकोन में बाह्य परिषदा के बारह हजार देव के बारह हजार भद्रासन कहे हुवे हैं उस बडे सिंहासन की पश्चिमदिशामें विजयदेव के सात अनिकाधिपति के सात भद्रासन कहे हुवे हैं, उसकी पूर्व,दक्षिण,पश्चिम व उत्तर यों चार दिशाओंमें विजयदेव के सोलह हजार आत्मरक्षक देव के सोलह हजार भद्रासन कहे हुवे हैं पूर्व में ~ हजार, दक्षिण में चार हजार, पश्चिम में चार

तेसिण भोम्माण अतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता जाव मणीण फासो ॥ तेसिं भोम्माण उप्पिं उल्लोया पउमलया भत्तिचित्ता जाव सव्वतवणिज्जमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ८५ ॥ तेसिण भोम्माण बहुमज्झदेसभाए जे से पचमे भोम्मे तस्सण भोम्मस्स बहुमज्झ देसभाए तत्थण एगे महं सीहासणे पण्णत्ते, सीहासण वण्णओ विजयदूसे जाव अकुसे जाव दामाचिट्ठति ॥ ८६ ॥ तस्सण सीहासणस्स अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चउण्ह सामाणिक साहस्सीण, चत्तारि भद्दासण साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ तस्सण सीहासणस्स

बीच में सम रमणीय भूमिभाग है यावत् मणि स्पर्श है यह चपकलता, पद्मलता यावत् श्यामलता के विविध प्रकार के चित्र युक्त यावत् सुवर्णमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥ ८५ ॥ उन नव भूमि के मध्य भाग में जो पांचवी भूमि है उस के मध्य भाग में एक सिंहासन है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् विजय दूष्य से ढका हुवा यावत् अंकुश यावत् पुष्प की माला वगैरह सब पूर्ववत् जानना ॥ ८६ ॥ उस सिंहासन से वायव्यकून, उत्तरदिशा व ईशानकून में विजय नामक देव के चार हजार सामानिक देव के चार हजार भद्रासन कहे हुवे हैं, उस सिंहासनसे पूर्वमें चार अग्रमहिषियों के परिवार सहित चार भद्रासन कहे हुवे हैं, उस की अग्निकून में विजय देवता के

वुच्चति विजएणं दारे ? विजेएणदारं गोयमा ! विजएणामं देवेमहिड्डीए जाव महज्जुईए जाव महाणुभावे पलिओमाठितीये परिवसति ॥ सेणं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं, सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं आनियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेव साहस्सीणं॥विजयस्सणं दारस्स विजयाएराय-हाणीए अण्णेसिंच बहूणं विजयाए रायहाणि वत्थव्वगाणं देवाणं देवीणय आहेवच्च जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति विजएदारे, अदुत्तरं चणं गोयमा ! विजयस्स दारस्स सासए नामधिज्जे पण्णत्ते जण्ण

अहो गौतम ! विजय द्वार का विजय नामक देव अधिपति है वह महर्द्धिक महा द्युतिवत यावत् महा प्रभाववाला व पल्योपम की स्थितिवाला है वह चार हजार सामानिक, परिवार सहित, चार अग्रमहिषी, तीन परिषदा, सात आनिक, सात आनिक के अधिपति व सोलह हजार आत्म रक्षक देव, विजय द्वार, विजय राज्यधानी और विजय राज्यधानी में रहनेवाले अन्य बहुत देवों व देवियों का अधिपतिपना करता यावत् दीव्य भोग उपभोग भोगता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये विजय द्वार कहा है और दूसरा कारन यह भी है कि विजय द्वार का शाश्वत नाम है यह कदापि नहीं था वैसा नहीं

चत्तारि साहस्सीओ पण्णत्ताओ एव चउसुवि जाव उत्तरेण चत्तारि साहस्सीओ अवसेसेसु भामेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता ॥ ८७ ॥ विजयस्स उवरिमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया तंजहा-रयणेहिं वइरेहिं, वेरुलिएहिं, जाव रिट्ठेहिं॥ विजयस्सण दारस्स उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता तंजहा-सोत्थियय सिरिवच्छ जाव दप्पणा, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ विजयस्सण दारस्स उप्पिं बहवे कण्हचामरज्झया जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ विजयस्सण दारस्स उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता तहेव ॥ ८८ ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति

हजार व उत्तर में चार हजार, शेष आठ भूमि में एक २ भद्रासन कहा है ॥ ८७ ॥ विजय द्वार के ऊपर का भाग सोल प्रकार के रत्नों से सुशोभित है तद्यथा—कर्केतरत्न २ वज्र, ३ वैडूर्य, ४ लोहिताक्ष, ५ मसाल गर्भ, ६ हंसगर्भ, ७ पुलक, ८ सोगंधिक, ९ ज्योतिष रत्न, १० अंक, ११ अंजन, १२ रजत, १३ जातरूप, १४ अंजन पुलक, १५ स्फटिक और १६ रिष्ट विजय द्वार पर आठ २ मंगल हैं स्वस्तिक, श्रीवत्स यावत् आदर्श ये सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं विजय द्वार पर कृष्ण चामर की ध्वजा यावत् रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है विजय द्वार पर बहुत छत्र पर छत्र प्रमुख रहे हुवे हैं, यह सब पूर्ववत् जानना॥८८॥अहो भगवन् ! विजयद्वार ऐसा नाम क्यों कहा?

विजएण दारे ? विजेएणदार गोयमा ! विजएणाम देवमाहड्ढीए जाव महज्जुईए जाव महाणुभावे पलिओमाठितीये परिवसति ॥ सेण तत्थ चउण्ह सामाणियसाहस्सणीण चउण्ह अग्गमहिसीण, सपरिवाराण तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह आनियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सणि॥विजयस्सण दारस्स विजयाएराय-हाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयाए रायहाणि वत्थव्वगाण देवाण देवीणय आहेवच्च जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति विजएदारे, अदुत्तर चण गोयमा ! विजयस्स दारस्स सासए नामधिज्जे पण्णत्ते जण्ण

अहो गौतम ! विजय द्वार का विजय नामक देव अधिपति है वह महर्द्धिक महा द्युतिवत यावत् महा ममाववाला व पल्योपम की स्थितिवाला है वह चार हजार सामानिक, परिवार सहित, चार अग्रमहिषी, तीन परिषदा, सात अनिक, सात आनिक के आधिपति व सोलह हजार आत्म रक्षक देव, विजय द्वार, विजय राज्यधानी और विजय राज्यधानी में रहनेवाले अन्य बहुत देवों व देवियों का अधिपतिपना करता यावत् दीव्य भोग उपभोग भोगता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये विजय द्वार कहा है और दूसरा कारन यह भी है कि विजय द्वार का शाश्वत नाम है यह कदापि नहीं था वैसा नहीं

कयाइ णासि णकयाइ णत्थि, णकयाइण भविस्सइ जाव अवट्ठिये णिच्चे विजयद्दारो ॥ १९ ॥ कहिण भंते ! विजयस्सण देवस्स विजया नाम रायहाणी पण्णत्ता? गोयमा! विजयस्स दारस्स पुरच्छिमेणं तिरियमसंखिज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता, अण्णंमि जंबूद्दीवे २ बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता, एत्थण विजयस्स देवस्स विजयाणाम रायहाणी पण्णत्ता बारस जोयण सहस्साइ आयामविक्खंभेण सत्तत्तीस जोयण सहस्साइ णवय अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता ॥ साण एगेणं पगारेण सव्वतो समता संपरिक्खित्ता, सेण पगारे सत्ततीस जोयणाइ अट्ठ

कदापि नहीं है वैसा नहीं कदापि व नहीं होगा वैसा नहीं यावत् अवस्थित नित्य शाश्वत विजय द्वार है॥ १९ ॥ अब विजय देवता का विजया राज्यधानी का कथन करते हैं अहो भगवन्! विजय देव की विजया राज्यधानी कहां है? अहो गौतम ! विजय द्वार से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां दूसरा जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है उस में बारह हजार योजन जावे तब विजय देवता की विजया राज्यधानी है यह बारह योजन की लम्बी चौडी है, और सेंतीस हजार नव सो अडतीस योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है उस के चारों तरफ एक प्राकार (कोट) रहा हुवा है, वह ३७॥योजन का ऊंचा है,मूल में १२॥योजन का

जोयण चउद उच्चतेण, मूले अद्धतरस जोयणाइ विक्खंभेण, मज्झे छजे यणाइ सक्कोसाइ विक्खंभेण, मूलविच्छिण्णे,मज्झेसंखित्त,उप्पिं तणुए, बाहिं वट्टे, अतो चउरसे गोपुच्छ संठाण संठिते, सव्वकणगमये अच्छे जाव पडिरूवे ॥१००॥ सेण पागारेण णाणाविह पंचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोभिते तंजहा—किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं, तेण कविसीसगा अद्धकोस आयामेण, पंचधणुसयाइ विक्खंभेण, देसूण अद्धकोस उड्ढं उच्चत्तेण,सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥१०१॥ विजयाएण रायहाणीए एकामेक्काए बाहाए पणुवीसं२दारसत भवति तिमक्खाय॥ तेण दारा बीवट्ठी जोयणाइ

चौडा है, मध्य में ६। योजन का चौडा है, और ऊपर तीन योजन आधा गाउ का चौडा है मूल में विस्तारवाला, मध्य में संकुचित व ऊपर पतला है बाहिर गोल व अंदर चौकूना है गाय पुच्छ के आकारवाला है, सब सुवर्णमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है ॥ १०० ॥ यह प्राकार विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल यों पांच वर्णवाले कपिशीर्ष (कांगूरे) से सुशोभित है ये कांगूरे आधा कोश के लम्बे पांच सो धनुष्य के चौडे, आधा कोश में कुच्छ कम के ऊंचे, सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १०१ ॥ विजया राजधानी की एक २ बाजु में १२५ द्वार हैं वे द्वार ६२॥ योजन के ऊंचे, ३१। योजन के

भोम्मा तेसिणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओजाव दामा जहा हेट्ठा ॥ एत्थण अवसेसेसु भोमेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता, तेसिण दाराण उत्तिमगागारा सोलस विहहिं रयणेहिं उवसोभिता तचेव जाव छत्ताइछत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पचदारसता भवति तिमक्खाया ॥१०६॥ विजयाएण रायहाणीए चउद्दिसिं पच जोयण सताइ अबाहाए एत्थण चत्तारि वणसडा पण्णत्ता तजहा—असोयवणे, सत्तवण्णवणे, चपगवणे, चूतवणे ॥ पुरच्छिमेण असोगवण, दाहिणेण सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेण चपगवणे, उत्तरेण चूयवणे ॥ तेण

मानना यहां शेष सब भवनों में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं उस द्वार पर का भाग सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनीक हैं यह सब कथन पूर्ववत् जानना यावत् छत्रपर छत्र हैं यों सब मीलकर विजया राज्यधानी के पांचसो द्वार कहे हैं ऐसा अनत तीर्थंकरोंने कहा हैं ॥ १०६ ॥ विजया राज्यधानी के चारों दिशी में पांचसो२ योजन दूर चार वनखण्ड कहे हैं जिन के नाम १ अशोकवन २ सप्तपर्ण वन, ३ चपकवन, और ४ आम्रवन है, पूर्वदिशा में अशोकवन, दक्षिण दिशा में सप्तपर्णवन, पश्चिमदिशा में चपकवन और उत्तरदिशा में आम्रवन है ये वनखण्ड बारह हजार योजन से कुछ

वणसंडा साइरेगाइ दुवालस जोयण सहस्साइं आयामेण, पंच २ जोयण सताइ विक्खंभेणं पण्णत्ता, पत्तेय २ पागार परिक्खित्ता, किण्हा किण्होभासा, वणसंडवण्णओ भाणियव्वो जाव बहवे वाणमंतरा देवा देवीओय आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीदंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति कीडंति मोहेंति पुरपोराणाण सुचिण्णाण सुपरक्कंताण सुभाण कडाण कम्माण फलवित्ति विसेस पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥१०७॥ तेसिण वणसंडाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ पासायवडिंसया पण्णत्ता, तेण पासाय वडिंसगा बावट्ठिं २ जोयणाइं अद्ध जोयण च उड्ढं उच्चत्तेण, एक्कतीस जोयणाइं कोसंच आयामविक्खंभेण, अब्भुग्गयमूसिया तहेव जाव अतो बहु समरमणिज्जा

अधिक लम्बे हैं, पांचसो योजन के चौडे हैं प्रत्येक को पृथक् २ प्राकार (कोट) है, वे कृष्ण वर्ण वाले कृष्ण भास वगैरह वनखण्ड का वर्णन जानना यहांपर बहुत देव देवियों बैठते हैं, सोते हैं, खडे रहते हैं, खेलते हैं क्रीडा करते हैं, मुग्ध होते हैं व अपने पूर्वभव के संचित किये हुए शुभ कर्म के फल का अनुभव करते हुवे विचरते हैं ॥ १०७ ॥ उन वनखण्डों के बीच में प्रासादावतंसक कहे हुए हैं वे ६२॥ योजन के ऊंचे ३१। योजन के लम्बे चौडे, किंचित् नमे हुए वैसे ही यावत् अंदर बहुत रमणीय

भोम्मा तेसिणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओजाव दामा जहा हेट्ठा ॥ एत्थण अवसेसेसु भोमेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता, तेसिण दाराण उत्तिमगागारा सोलस विहेहिं रयणेहिं उवसोभिता तचेव जाव छत्ताइछत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पचदारसता भवंति तिमक्खाया ॥१०६॥ विजयाएण रायहाणीए चउद्दिसिं पंच जोयण सताइ अबाहाए एत्थण चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता तंजहा—असोयवणे, सत्तवण्णवणे, चंपगवणे, चूतवणे ॥ पुरच्छिमेण असोगवणे, दाहिणेण सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेण चंपगवणे, उत्तरेण चूयवणे ॥ तेण

मानना यहां शेष सब भवनों में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं उस द्वार पर का भाग सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनीक हैं यह सब कथन पूर्ववत् मानना यावत् छत्रपर छत्र हैं यों सब मीलकर विजया राज्यधानी के पांचसो द्वार कहे हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा हैं ॥ १०६ ॥ विजया राज्यधानी के चारों दिशी में पांचसो२ योजन दूर चार वनखण्ड कहे हैं जिन के नाम १ अशोकवन २ सप्तपर्ण वन, ३ चंपकवन, और ४ आम्रवन है, पूर्वदिशा में अशोकवन, दक्षिण दिशा में सप्तपर्णवन, पश्चिमदिशा में चंपकवन और उत्तरदिशा में आम्रवन है ये वनखण्ड बारह हजार योजन से कुच्छ

बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव पंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए ॥ तणसद्दवि-हुणे जाव देवाय देविओय आसयंति जाव विहरति ॥ ११० ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्ज भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगमहं उवारियलणे पण्णत्ते बारस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं, तिण्णिजोयणसहस्साइं सत्तयपंचाणउतेजोयणसते किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेणं, अद्धकोस बाहल्लेणं सव्वजंबूणयामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ १११ ॥ सेणं एगाए पउमवरवेइयाए एगेणं वणसंडेणं सव्वतोसमंता संपरिक्खित्तो पउमवरवेतियाए वण्णओ, लणसमियापरिक्खेवेणं वणसंड वण्णओ जाव विहरति ॥ सेणं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवाल विक्खंभेणं उवरितलेणं

पांच प्रकार के मणिरत्नों से सुशोभित है, यहां तृण शब्द छोडकर सब वर्णन करना वहां देवता देवियों विश्राम करते हैं यावत् विचरते हैं ॥ ११० ॥ उस बहुत सम रमणीय भूमि भाग के मध्य में एक बडा उपकारिक लयन (राज्यसभा) कहा है यह बारह सो योजन का लम्बा चौडा है तीन हजार सात सो पचाणवे योजन से कुच्छ अधिक की परिधि कही है, आधा कोश की जाडाइ है वे सब जम्बूनद रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है, उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है यह उस पद्मवर वेदिका व उस राजसभा को परिवेष्टित रहा हुवा वनखण्ड का वर्णन पूर्ववत् जानना यह वनखण्ड कुच्छ

भूमिभागा पण्णत्ता उल्लोया पउमभत्तिचित्ता भाणियव्वा ॥ १०८ ॥ तेसिण पासाय वडिंसगाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता वण्णावासा सपरिवारा ॥ तेसिण पासाय वडिंसगाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलज्झया छत्ताइछत्ता ॥ तत्थण चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति तजहा असोए सत्तिवण्णे चपए चूए, तेण साण २ वणसंडाण साण २ पासाय वडिंसगाण साण सामाणियाण, साण २ अग्गमहिसीण, २ साण २ परिसाण, साण २ आयरक्खदेवाण आहेवच्च जाव विहरति ॥ १०९ ॥ विजयाएण रायहाणीए अतो

भागवाले कहे हुए हैं उस में चद्रमा पद्मलता वगैरह चित्रों कहे हुए हैं ॥ १०८ ॥ उन प्रासादावतसक के मध्य भाग में पृथक् २ सिंहासन कहे हुवे हैं, उन का परिवार सहित सब वर्णन कहना उन प्रासादाव तसक पर आठ २ मगलध्वजा व छत्रातिछत्र कहे हुवे हैं वहां चार महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं जिन के नाम-अशोक, सप्तपर्ण, चंपक व चूत वे अपने २ वनखण्ड में अपने २ प्रासादावतसक में, अपने २ सामानिक, अग्रमहिषी, परिषदा व आत्मरक्षक देवों का आधिपतिपना करते हुए विचरते हैं ॥ १०९ ॥ विजया राजधानी की अदर बहुत सम रमणीय भूमिभाग कहा हुवा है यावत्

॥ ११२ ॥ तस्सणं पासायवडेंसगस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणि फासा, उल्लोया ॥ तस्सण बहु समरमणिज्जे भूमिभागस्स बहु मज्झदेसभाए एक्का मह मणिपेढिया पण्णत्ता, दो जोयणाइं आयाम विक्खभेण जोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पि एत्थण एगेमह सीहासणे पण्णत्ते एव सीहासण वण्णओ सपरिवारो ॥ तस्सण पासाय वडेंसगस्स उप्पि बहवे अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्तातिछत्ता, सेण पासाय वडेंसए अन्नेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समतासपरिक्खित्ते, तेण पासाय

॥ ११२ ॥ उस प्रासादावतसक के मध्य में बहुत समरमणीय भूमिभाग कहा है यावत् मणिस्पर्शवाला है उस के मध्य भाग में एक मणिपीठिका है वह दो योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी है सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणि पीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का परिवार सहित वर्णन करना उस प्रासादावतसक पर आठ २ मंगलिक ध्वजा, छत्रपरछत्र हैं उस प्रासादावतसक की आसपास अन्य उससे आधी उंचाइ के प्रमाण वाले चार प्रासादावतसक कहे हैं वे ३१ ॥ योजन के ऊंचे व पनरह योजन अढाइ कोस के लम्बे चौडे व गगन तलको अवलम्बन

समे परिक्खेवेण ॥ १११ ॥ तस्सण उवरियालेणस्स चउदिसिं चत्तारि तिसोवाण पडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ ॥ तेसिण तिसोवाण पडिरूवगाण पुरत्थ पत्तेय २ तोरणा पण्णत्ता छत्ताइछत्ता ॥ ११२ ॥ तस्सण उवरियलेणस्स उप्पिं बहुसमर-मणिज्जेभूमिभागे पण्णत्ते जाव मणिहिं उवसोभिते मणिवण्णओ गंधोभासो ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए तत्थण एगेमहं मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते सेण पासायवडेंसए बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणच उड्ढं उच्चत्तेण, एक्कतीस जोयणाइं कोसच आयामविक्खंभेण अब्भुग्गय मूसिय पहसिते तहेव

कम दो योजन के चक्रवाल में चबुतरा समान है ॥ १११ ॥ उस उपकारिका लयन को चारों तरफ चार पांवथे हैं, वे वर्णन करने योग्य है, उन प्रत्येक पांवथे के आगे पृथक् २ तोरण यावत् छत्रातिछत्र है ॥ ११२ ॥ उस उपकारिका लयन के ऊपर बहुत समरमणीय भूमि भाग है यावत् मणि से शोभित है यहां मणि का वर्णन पूर्ववत् जानना गंधभास पर्यंत कहना उस रमणीय भूमिभाग के मध्य बीच में एक बडा मूल प्रासादावतंसक कहा है वह साडी बासठ योजन का ऊंचा, सवा एकतीस योजन का लम्बा चौडा और गगनतल के अवलम्बन करता होवे वैसा सब अधिकार पूर्ववत् जानना

तेसिण पासायवडिंसगाण भतो बहु समरमणिजाणं भूमिभाग उल्लोया ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तय २ पउमासणा पण्णत्ता ॥ तेभिण पासायाण अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेण पासायवडेंसका अण्णेहिं चउहिं २ तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता ॥ तेण पासायवडिंसका देसूणाइ अट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण देसूणाइ चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण अब्भुगत भूमिभागा उल्लोया भद्दासणाउवरि मगल ज्झया छत्तातिछत्ता ॥११४॥ तस्सण मूलपासायवडिंसगस्स उत्तरपुरच्छिमेण एत्थेण

ध्वजा व छत्रपर छत्र हैं इन प्रासादावतसक के आगे पृथक् २ इस से आधी ऊचाइ के प्रमान वाले अन्य चार २ प्रासादावतसक कहे हैं ये कुच्छकम आठ योजन के ऊंचे व कुच्छ कम चार योजन के लम्बे चौडे हैं, गगन तल को अवलम्बन करके रहे हुवे होवे वैसे दीखते हैं उन मे पृथक्२ भद्रासन कहे हैं उन पर आठ २ मगल, ध्वजा व छत्रपरछत्र हैं यों सब मीलकर ८५ प्रासादावतसक की पंक्ति होती है मूल अन्दर का एक, उस की आस पास चार, इन चार की आसपास १६ सो इन की आसपास ६४ यों सब मीलकर ८५ हुए ॥ ११४ ॥ उस मूल प्रासादावतसक से ईशान कून में विजय देव

वडेसका एकतीस जोयणाइ कोसच उड्ढ उच्चत्तेण अद्ध सोलस्स जोयणाइ अद्ध कोसच आयाम विक्खंभेण अब्भुग्गय तहेव ॥ तेसिण पासाय वडेंसगाण अतो बहु समरमणिज्ज भूमिभागा उल्लोता ॥ तेसिण बहु समरमणिज्ज भूमिभागाण बहुमज्झ देसभागे पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता ॥ तासिण अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेण पासाय वडेंसका अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासाय वडेंसएहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, तेण पासायवडेंसगा अद्ध सोलस जोयणाइ अद्ध कोसच उड्ढ उच्चत्तेण, देसूणाइ अट्ठजोयणाइ आयामविक्खभेण अब्भुग्गय तहेव

करत होवे वैसे हैं प्रासादावतसक के अंदर बहुत समरमणीय भूमिभाग है उस के मध्य भाग में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं उन को आठ २ मंगल, ध्वजा छत्रातिछत्र कहे हैं इन चार प्रासादावतंसक में प्रत्येक भद्रासन कहे हैं उन से अर्ध ऊंचाइवाले चार २ प्रासादावतंसक कहे हैं यह पनरह योजन व आधा कोस के ऊंचे हैं और कुच्छकम आठ योजन अर्थात् सात योजन सवा तीन कोस के लम्बे चौडे गगन तल को अवलम्बन कर के रहे होवे वैसे दीखाइरते हैं उन प्रासादावतंसक में बहुत समरमणीय भूमि भाग कहा है इस के मध्य बीच में पृथक् २ भद्रासन कहे हुए हैं. इन प्रासादोपर आठ २ मंगल,

रूवग सहस्स कलियाभिसमाणी मिब्भिसमाणि चक्खुलोयण लेसा सुहफासा सस्सिरिय रूवा कचणमणिरयणथूभियागा (थूभियागा) नाणाविह पचवण्ण घटा पडाग पाडमडितग्ग सिहरा धवलामिरीइकवय विणिमुयती लाउल्लोइय महिया गोसीस-सरसचदण दद्दरदिन्न पचगुलियतला उवचियचदणकलसा चदणघडसुकयतोरण पडि दुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउल वट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा पचवरण सरससुरभिमुक्क पुप्फपुजावयारकलिया कालागुरुपवरकुंदरुक्कधूव मघमघत गधुद्धुयाभिरामा सुगध वरगध गधवट्टिभूता अच्छरगणसघसविकिन्ना दिव्वतुडिय मधुरसद्द सपइआ,

सुशोभित है, हजारों रूप के भेद से सहित है, तेजसे देदीप्यमान है, विशेष देदीप्यमान है, चक्षु से देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्श है, शोभनिक रूप है, सुवर्ण, मणि व रत्न के उस के शिखर हैं, विविध प्रकारके पांच वर्ण की घंटा पताका स शोभनीक इस का शिखर है, प्रकाश करनेवाले श्वेत कीरणों उस में से नीकलते हैं, गोमय (गोबर) से उस का भाग लींपा हुवा है, गोशीर्ष चदन, रक्त चदन व दर्दर चदन से पांचों अंगुलियों के छापे लगाये हैं, वहां चदन कलश स्थापन किये हैं, प्रतिद्वार के आगे चदन के घट का तोरण अच्छी तरह स्थापन किया है, नीचे भूमि पर विस्तीर्ण वर्तुलाकार लम्बी लटकती हुई पुष्पमालाओं का समूह है, पांच वर्ण के सुगंधित पुष्प का पुंज है, कृष्ण चदन, श्रेष्ठ कुंदरुक धूप से

विजयस्स देवस्स समासुधम्मा पण्णत्ता, अद्धतेरस जोयणाइं आयामेण सक्का साइं छ जोयणाइं विक्खंभेण णवजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण अणेग खंभसतसंनिविट्ठा अब्भुग्गय सुकय वइरवेदिया, तोरणवर रतिय सालिभंजिया, सुसिलिट्ठ विसिट्ठ लट्ठ संठियपसत्थवेरुलियविमलखंभा णाणामणिकणगरयणवइरयउज्जल बहुल बहुसम सुविभत्तचित्त रमणिज्ज कुट्टिमतला, ईहामिय उसभ तुरगणर विहग वालग किण्णर रुरु सरभ चमर कुंजर वणलय पउमलय भत्तिचित्ता खंभुग्गयवइरवेइया रिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंविअच्चिसहस्समालणीया

की सुधर्मा सभा है वह १२॥ योजन की लम्बी है और ६। योजन की चौडी है, नव योजन की ऊंची है अनेक स्तंभ उस में रहे हुवे हैं अति रमणीय देखनेवाले को सन्मुख दीखसके वैसी वज्रमय वेदिका है, वहां अच्छी तरह बनाए हुए तोरण व पूतलियों हैं, सुबद्ध मनोहर संस्थानवाली हैं, प्रशस्त वैडूर्य रत्नमय स्तंभ हैं, उस सभाका विविध प्रकार के मणि, कनक, रत्न व वज्ररत्नसे उज्ज्वल, बहुसम, निबड आश्चर्यकारी व मनोहर कुट्टिम भूमि तल है ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगरमच्छ, पक्षी, सर्प, किंनार वाणव्यंतर देव, रुरु, सरभ, चमर, हाथी, वनलता व पद्मलता के विविध प्रकार के चित्रों हैं स्तंभ पर रही हुई वज्रमय वेदिका से चारों दिशि में मनोहर है, विद्याधरों के युगल जैसे हजारों कांति की मालाओं से

भूमिभाग वण्णओ ॥ तेसिण मुहमडवाण उवरिं पत्तेय २ अट्ठट्ठ मगलगा पण्णत्ता तजहा सात्थिय जाव मच्छा ॥ तेसिण मुहमडवाण पुरओ पत्तय २ पेच्छाघर मडवगा पण्णत्ता, तेण पेच्छाघर मडवगा अद्धतेरस जोयणाइ आयामेण जाव दोजोयणाइ उड्ड उच्चत्तेण जाव मणिफासा ॥ ११७ ॥ तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता, तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ मणिपेढिया पण्णत्ता, ताओण मणिपेढियाओ जोयणमेग आयाम विक्खभेण अद्ध जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमइओ जाव पडिरूवा ॥ ११८ ॥

साधिक दो योजन के ऊचे हैं इन मुख मडप में अनेक स्थम रहे हुवे हैं यावत सब भूमिभाग का वर्णन करना इन मुख मडप पर स्वास्तिक यावत् मत्स्य के आठ २ मगल कहे हैं इन प्रत्येक मुख मडप के आगे पृथक् प्रेक्षाघर मडप कहे हैं ये प्रेक्षाघर मडप १२॥ योजन के लम्बे दो योजन के ऊचे यावत् मणिस्पर्श वाले कहे हैं ॥ ११७ ॥ इन के मध्य में पृथक् वज्ररत्न के अखाड़े कहे हैं इन की बीच में पृथक् मणिपीठिका कही हैं ये मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजन की जाडी है, सब मणिमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ११८ ॥ इन मणिपीठिका पर पृथक्

सव्वरयणामती अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ११५ ॥ तीसेण सोहम्माए सभाए तिदिसिं तओदारा पण्णत्ता तजहा पुरच्छिमेण दाहिणेण उत्तरेण तेण दारा पत्तेय २ दो दो जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेणएगजोयण विक्खमेण तावइय चेव पवेसेण सेयावर कणग थूभियागा जाव वण्णमालादारवण्णओ, तसिण दाराण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्ताइ छत्ता ॥११६॥ तेसिण दाराण पुरओ तिदिसिं ततो मुहमडवा पण्णत्ता, तेण मुहमडवा अद्ध तेरस जोयणाइ आयामेण छजोयणाइ सकोसाइ विक्खभेण, साइरेगाइ दो जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण तेण मुहमडवा अणेग खभसय सन्निविट्ठा जाव उल्लोया

मघमघायमान गंध वाली है, सुगधमय श्रेष्ठ गध वाली है, गधवर्तीभूत है, अप्सराओं के समुदाय सहित है, दीव्य त्रुटितादि वादित्र के मधूर शब्द सहित है, यह सभा सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ११८ ॥ इस सुधर्मा सभा की तीन दिशा में तीन द्वार कहे हैं पूर्व दक्षिण व उत्तर में ये द्वार दो योजन के ऊंचे एक योजन के चौडे व एक योजन के प्रवेश वाले हैं श्वेत श्रेष्ठ कनक के स्तभ हैं यावत् वनमाला युक्त हैं इन द्वार पर बहुत आठ २ मगल ध्वजा व छत्रपरछत्र कहे हैं ॥ ११६ ॥ इन द्वार के आगे तीन दिशा में तीन मुख मंडप कहे हैं ये मुख मडप १२॥ योजन के लम्बे हैं छ योजन व एक कोश के चौडे हैं

सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तेसिण चेइय थूभाण उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा बहुकिण्हा चामरज्झया पण्णत्ता छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण चेतियथूभाण चउद्दिसिं पत्तेय २ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओण मणिपेढियाओ जोयण आयाम-विक्खमेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमया जाव तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय२ चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेह पमाणमित्ताओ पलियंक णिसण्णाओ थूभाभिमुहीओ सन्निविखित्ताओ चिट्ठति तजहा उसभ वद्धमाण चंदाणण वारिसेण॥ १ २ ०॥ तेसिण चेतिय थूभाण पुरतो तिदिसिं पत्तेय २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ, ताओण मणिपेढियाओ दो जोयणाइ आयामविक्खभण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमईओ अच्छाओ

कहे हुवे हैं उन चैत्यस्तूप की चार दिशा में चार मणिपीठिकाओं हैं यह मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी, आधा योजनकी जाड, सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है उन प्रत्येक मणिपीठिका पर पृथक्२ जिन प्रतिमा हैं ये जिन के शरीर प्रमान ऊंची, स्तूप के सन्मुख मुख रख रही हुई हैं इन जिन प्रतिमा के नाम वृषभ, वर्धमा, चद्रानन, व वारिसेन ॥ १२० ॥ चैत्यस्तुप के आगे तीन दिशाओं में पृथक् २ मणिपीठिकाओं कही है ये दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी है

तासिण मणिपढियाण उप्पिं पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओ जाव दामा ओपरिवारा ॥ ११९ ॥ तेसिण पेच्छाघर मडवाण उप्पिं अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण पच्छाघर मडवाण पुरतो तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ॥ताओण मणिपेढियाओ दो जोयणाइ आयामविक्खभेण, जोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमइओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय २ चईय थूभा पण्णत्ता तेण चेइयथूभा दो जोयणाइ आयामविक्खभेण साइरेगाइ दो जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण सेया सख ककुदद्गरयअमतमहित फेणपुज सन्निकासा

सिंहासन कहे हैं यहां पूर्ववत् सिंहासन का वर्णन कहदेना यावत् पुष्प की मालाओं कही हुई है ॥११९॥ उन प्रेक्षाघर मडप पर आठ २ मंगल, ध्वजा व छत्रातिछत्र कहे हैं इन की आगे तीन दिशाओं में तीन मणिपीठिका हैं ये दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी है सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं, इन पर पृथक् २ चैत्यस्तूप कहे हैं, ये दो योजन के लम्बे चौडे और साधिक दो योजन के ऊंचे हैं श्वेत शंख, कुदरक, पानी के कन, अमृत व समुद्र के फेन समान स्वच्छ निर्मल उज्वल यावत् प्रतिरूप हैं उन चैत्यस्तूप पर आठ २ मंगल हैं बहुत कृष्ण वर्ण वाले चामर, ध्वजा व छत्रातिछत्र

विविहसाहप्पसाहवरुलिय पत्त, तवणिज्ज पत्तबेंटा, जंबुणयरयमउय पल्लव सुकुमाल पवाल सोभत वरकुहरग्ग सिहारा, विचित्त मणिरयणसुरभि कुसमफल भरियणमियसाला सच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया अमयरससमरसफला अहियणयण मणणिवुत्तिकरा पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥१२३॥ तेसिणं चेइयरुक्खा अन्नेहिं बहूहिं तिलयलवय छत्तोवग सिरीस सत्तवण्ण दहिवण्ण लोद्धव चंदण निंब कुडय कयंब पणस तालतमाल पियाल पियंगु पारावयरायरुक्ख नंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता तेणं तिलय जाव नंदिरुक्खा मूलवंतो कंदवंतो जाव सुरम्मा, तेणं तिलया जाव

पत्र हैं, सुवर्णमय पत्र के बींट हैं, जम्बूनद रत्नमय लालवर्णवाले मृदु मनोज्ञ पल्लव हैं, सुकोमल प्रवाल से सुशोभित प्रधान अंकुर के अग्रशिखर हैं, विचित्र प्रकार के मणि रत्नमय सुगंधित पुष्प फल से उन की शाखा नम्न बनी हुई हैं, छाया युक्त, कांति सहित, सश्रीक, उद्योत सहित, अमृत रस समान फलवाले मन व नयन को आनंद करनेवाले, प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥१२३॥ इन वृक्षों की चारों तरफ अन्य अनेक तिलक वृक्ष, छत्रोपगाय, सिरीष वृक्ष, सप्तछद के वृक्ष दधिपर्ण के वृक्ष, लोध्र वृक्ष, धव वृक्ष, चंदन वृक्ष, कुटज वृक्ष, कदंब वृक्ष, फणस वृक्ष, ताड वृक्ष, तमाल वृक्ष, प्रियाल वृक्ष, प्रियगु वृक्ष, पारावत वृक्ष, नंदीवृक्ष व इत्यादि वृक्ष रहे हुवे हैं वे तिलक वृक्ष यावत्

लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ निप्पंकाओ णीरइयाओ जाव पडिरूवाओ॥१२१॥तासिण मणि पेढियाण उप्पि पत्तेय २ चेतियरुक्खा पण्णत्ता,तेसिण चेतियरुक्खा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण,अद्ध जोयणाइ उव्वेहेण,दो जोयणाइ खधो अद्ध जोयणाइ विक्खभेण छज्जोयणाइ विडिमा,बहुमज्झदेसभाए अद्ध जोयणाइ आयाम विक्खभेण, सातिरेगाइ अद्ध जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ताइ ॥ १२२ ॥ तेसिण चेतियरुक्खाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा-वइरामयमूल रययसुपइठिया सुविडिमा, रिट्ठामय विपुलकदा, वेरुलियरुचिलक्खधासु जाय वरजाय रूव पढमगविसालसाला, णाणामणिरयण

सब मणिमय स्वच्छ, श्लक्ष्ण, घठारी, मठारी, पंक रहित रज रहित यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२१ ॥ प्रत्येक मणि पीठिकापर चैत्य वृक्ष हैं ये चैत्य वृक्ष आठ योजन के ऊंचे हैं आधा योजन जमीन अंदर हैं दो योजन का स्कंध हैं, आधा योजन का स्कंध जाडपनेमें हैं, छ योजन की शाखा है, वह शाखा बीच में आधा योजन की चौडी है और वे वृक्ष सब मीलकर आठ योजन से कुच्छ अधिक कहे हैं ॥ १२० ॥ इन चैत्य वृक्षों का ऐसी वर्णन कहा है इन का वज्ररत्नमय मूल है, चांदी की शाखा है रिष्ट रत्न के स्कंध है, वैडूर्य रत्नमय कंद है, अच्छी तरह निष्पन्न हुई मूल से विस्तार युक्त सुवर्णमय शाखा है, विविध प्रकार के मणि व रत्नमय विविध प्रकार की शाखा व प्रति शाखा है, वैडूर्य रत्नमय

मट्ठ सुपतिट्ठिया विसिट्ठा अणेगवर पचवण्ण कुडाभिसहस्स परिमाडियाभिरामा वाउद्धुय विजय वेजयती पडाग छत्तातिछत्त कालिया, तुगागगणतल ममिलघमाण-सिहरा पासादीया जाव पडिरूवा ॥ १२६॥ तेसिं महिंदज्झयाण उप्पि अट्ठट्ठ मगल ज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १२७ ॥ तेसिण महिंदज्झयाण पुरतो तिदिसिं तओ णदा-पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, ताओण पुक्खरिणीओ अद्धतेरस जोयणाइ आयामेण, सक्कोसाइ छ जोयणाइ विक्खभेण दस जोयणाइ उव्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणी वण्णओ पत्तेय २ पउमवरवेतियाओ परिक्खित्ताओ, पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ताओ वण्णओ जाव पडिरूवाओ ॥ १२८ ॥ तेसिण णदाण पुक्खरिणीण

सुशोभित हैं मनोहर हैं, वायु से उडती हुई, विजय, वैजयन्ती नामक पताका और छत्र पर छत्र से युक्त हैं गगन तल को उल्लघन करती होवे इतने उन के शिखर ऊचे हैं प्रसन्नकारी यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२६ ॥ इस महेन्द्र ध्वजा पर आठ २ मगल ध्वजा व छत्र पर छत्र है ॥ १२७ ॥ महेन्द्र ध्वजा के आगे तीन दिशा में तीन नदा पुष्करणी हैं ये साढे बारह योजन की लम्बी प्रथा छे योजन की चौडी व दश योजन की ऊडी है यह स्वच्छ, सुकोमल वगैरह सब पुष्करणीका वर्णन पूर्ववत् जानना प्रत्येक वावडिको एक २ पद्मवर वेदिका वेष्टित है और प्रत्येक वेदिका को एक २ वनखण्ड है यावत् यह प्रतिरूप है

नदिरुक्खा अण्णेहिं बहुहिं पउमलयाहिं जाव सामलयाहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता, ताओण पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्च कुसुमियाओ जाव पडिरूवाओ तेसिण चेइयरुक्खाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलकाझया छत्तातिछत्ता ॥ १२४ ॥ तेसिण चेतियरुक्खाण पुरओ तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ जोयण आयाम विक्खभेण अद्धजोयण बाहलेण सव्वमणिमयीओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥१२५॥ तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तय २ महिंदज्झया अट्ठुट्ठमाइं जोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेण अद्धकोस उव्वेहेण अद्धकोस विक्खभेण वइरामय वट्टलट्ठ संठिय सुसिलट्ठ परिघट्ठ

नंदी वृक्ष मूल वाले यावत् सुरम्य हैं इन तिलक वृक्ष यावत् नंदि वृक्ष की आसपास बहुत पद्मलता यावत् श्यामलता विंटी हुई रही हैं, वे पद्म लता यावत् श्यामलता सदैव पुष्प वाली यावत् प्रतिरूप हैं चैत्य वृक्ष पर आठ मंगल, ध्वजा व छत्रपरछत्र है ॥ १२४ ॥ इन चैत्यवृक्षों के आगे तीन दिशाओं में तीन मणिपीठिकाओं हैं वे एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२५ ॥ इन प्रत्येक मणिपीठिका पर पृथक् महेन्द्र ध्वजा है, वह साढे सात योजन ऊंची आधा कोस ऊंडी व आधा कोस की चौडी हैं वज्र रत्नमय वर्तुलाकार हैं, अच्छी तरह से सी हुई, मसलित की हुई, समचित व स्निग्ध है, और भी वह महेन्द्र ध्वजा अन्य सहस्र ध्वजाओं से

सुधम्माए छगोमाणसीय साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ एव पच्चत्थिमेणवि दो साहस्सीओ, दाहिणेण एग सहस्स एव उत्तरेणवि॥तासुण गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता जाव तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसूण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धुवघडीयाओ पण्णत्ताओ,ताओण धूवघडीयाओ कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्क जाव घाणमण णिव्वुइ करेण गंधेण सव्वओ समंता आपूरेमाणीओ चिट्ठंति ॥ १३१ ॥ सभाएणं सुधम्माए अंतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीणं फासो उल्लोया पउम-

प्रतिरूप हैं ॥ १३० ॥ सुधर्मा सभा में छ गोमानसीका—शैय्या रूप स्थानक हैं जिन में पूर्व में दो हजार, पश्चिम में दो हजार, दक्षिण में एक हजार व उत्तर में एक हजार इन गोमानसीका में सा चांदी क पटिये हैं यावत् उन वज्ररत्न के नागदंत पर चांदी के [illegible] हैं उस चांदी क सिके पर वैडूर्य रत्न की धूपघटी कही है उस में प्रधान कृष्णागर, कुंदरुक प्रमुख रख हुवे हैं यावत् नासिका व मन को सुख उत्पन्न करे वैसा गंध से सब स्थान पुरा हुवा है ॥ १३१ ॥ सुधर्मा सभा में बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यावत् मणिका स्पर्श है, चद्रमा व पद्मलता के चित्रों हैं यावत् सब सुवर्णमय स्वच्छ

पच्चेय २ तिदिसिं तओ तिसोमाण पडिरूवगा पण्णत्ता ॥ तेसिण तिसोमाण पडिरूवगाण वण्णतो तोरण वण्णओ भाणियव्वो जाव छत्तातिछत्ता ॥ १२९ ॥ सभाएण सुधम्माए छमणगुलिया साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा—पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ पच्चत्थिमेण दो साहस्सीओ दाहिणेण एग साहस्सीओ उत्तरेण एग साहस्सीआ, तासुण मणगुलियासु बहवे सुवण्ण रुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसुण सुवण्ण-रुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा जाव सुक्किलवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा जाव तेणदामा तवणिज्ज लंबूसगा जाव चिट्ठति ॥ १३० ॥ सभाएण

॥ १२८ ॥ उन प्रत्येक नंदा पुष्करणी से तीन दिशा में तीन २ त्रिसोपान हैं वे यावत् प्रतिरूप हैं त्रिसोपान व तोरण का वर्णन पूर्ववत् करना यावत् छत्रातिछत्र है ॥ १२९ ॥ सुधर्मा सभा में छ मनो गुलिका नामक पीठिका (बैठने के चबूतरे) कही हैं जिस में पूर्व दिशा में दो हजार, पश्चिम दिशा में दो हजार, दक्षिण दिशा में एक हजार व उत्तर दिशा में एक हजार है उन पीठिका पर सोने चांदी के बहुत पटिये हैं, उन पटियों पर वज्रमय नागदंत कहे हैं इन वज्रमय नाग दांत में कृष्ण वर्णवाले यावत् शुक्ल वर्णवाले सूत्र से गुंथी हुई पुष्पों की माला के समुदाय हैं इन को काल सुवर्ण के झूमके हैं यावत्

सुधम्माए छगोमाणसीय साहस्सीओ पण्णत्ताओ तजहा पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ एव पच्चत्थिमेणवि दो साहस्सीओ, दाहिणेण एग सहस्स एव उत्तरेणवि॥तासुण गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता जाव तेसुण बइरामएसु नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसूण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धुवघडीयाओ पण्णत्ताओ,ताओण धूवघडीयाओ कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्क जाव घाणमण णिव्वुइ करेण गधेण सव्वओ समता आपूरेमाणीओ चिट्ठति ॥ १२१ ॥ सभाएण सुधम्माए अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासा उल्लोया पउम-

प्रतिरूप हैं ॥ १२० ॥ सुधर्मा सभा में छ गोमानसीका-शैय्या रूप स्थानक हैं जिन में पूर्व में दो हजार, पश्चिम में दो हजार, दक्षिण में एक हजार व उत्तर में एक हजार इन गोमानसीका में सा चांदी के पटिये हैं यावत् उन वज्ररत्न के नागदांत पर चांदी के [illegible] हैं उस चांदी के सिके पर वैडूर्य रत्न की धूपघटी कही है उस में प्रधान कृष्णागर, कुंदरुक प्रमुख रख हुवे हैं यावत् नासिका व मन को सुख उत्पन्न करे वैसा गंध से सब स्थान पुरा हुवा है ॥ १२१ ॥ सुधर्मा सभा में बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यावत् मणिका स्पर्श है, पद्मा व पद्मलता के चित्रों हैं यावत् सब सुवर्णमय स्वच्छ

लय भत्तिचित्ता जाव सव्व तवणिज्जमए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ तस्सण बहुसमरम-णिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता, साण मणिपेढिया दो जोयणाइं आयामविक्खंभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई ॥१३२॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थणं माणवए णाम चेतिय खंभे पण्णत्ते अद्धट्ठमाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चतेण अद्धकोस जाव उव्वेहेण अद्धकोस विक्खंभेण छकोडिए छलंसे छविग्गहिए वइरामयवट्टलट्ठ संठिते, एवं जहा महिंद-ज्झयस्स वण्णओ जाव पासादीए ॥ १३३ ॥ तस्सण माणवकस्स चेतियखंभस्स उवरिं छक्कोसे उगाहित्ता हेट्ठावि छक्कोस वज्जित्ता मज्झे अद्धपंचमेसु जोयणे सुवण्ण

यावत् प्रतिरूप है उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में एक मणि पीठिका कही है यह दो योजन की लम्बी चौडी, एक योजन की जाडी यावत् मणिमय है ॥ १३२ ॥ उस मणिपीठिका पर एक माणवक नामक चैत्य स्थंभ है यह साडेसात योजन का ऊंचा, आधा कोश का ऊंडा, आधा कोश का चौडा है इस को छ कोटि-कूने हैं, छ हांस व छ बाधे, हैं व छ स्थानक से सुशोभित है वज्ररत्नमय वर्तुलाकार वाला वगैरा महेन्द्र ध्वजा जैसा वर्णन जानना यावत् प्रसन्नकारी है ॥ १३३ ॥ इस माणवक चैत्य स्थंभ को छ कोश उपर व छ कोश नीचे छोडकर बीच के साडे चार योजन में सोने चांदी के पटिये में

रुप्पमयफलगेसु बहवे वइरामयाणाग दंता पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु रययामया सिक्कगा पण्णत्ता, तेसुण रययामयसिक्कएसु बहवे वयरामयगोलवट्ट समुग्गका पण्णत्ता, तेसुण वइरामए गोलवट्ट समुग्गए बहवे जिणस्स कहाओ सनिक्खित्ताओ चिट्ठति, जेण विजयस्स देवस्स अण्णेसिंच बहूण वाणमंतराण देवाण देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ थूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ ॥ माणवकस्सण चेतियस्सखंभस्स उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १३४ ॥ तस्सण माणवकस्स

बहुत वज्ररत्न के नागदांत (खूटे) कहे हैं इन नागदांत में चांदी के सिके कहे हैं उन रुपामय सिके में समुद्गक (डब्बे) रखे हैं उस में अच्छी तरह से जिनदाढां रखी हुई हैं विजय देवता, अन्य बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों को ये दाढा अर्चना, वंदना व पूजा करने योग्य हैं, सत्कार करने योग्य हैं, सन्मान देने योग्य है, उन को यह कल्याणकारी, मंगलकारी, देव समान, चैत्य समान व पर्युपासना करने योग्य है × उस माणवक चैत्य स्तंभ पर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपरछत्र कहे हैं ॥१३४॥ उस माणवक

× यह दाढारूप शाश्वत पुद्गल वस्तु जानना परन्तु तीर्थंकर की दाढा नहीं है जैसे इस मनुष्य लोक में ऐहिक सुख के लिये देवतादिक की सेवा करते हैं वैसे ही देवताओं को इन दाढा की

चेतियखभस्स पुरत्थिमेण एत्थण एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता साण मणिपेढिया दो जोयणाइं आयामविक्खंभेण, जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमहं सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ॥तस्सण माणवगस्स चेतियखभस्स पुच्चत्थिमेण एत्थण एगामहं मणिपेढिया पन्नत्ता, साण मणिपेढि एग जोयण आयामविक्खंभेण अद्ध जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ १३५ ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमहं देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्सण

चैत्य स्तम से पूर्व में एक बडी मणिपीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणिपीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना उस माणवक चैत्य स्तम से पश्चिम में एक बडी मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी व सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है ॥ १ ॥ उस मणिपीठिका पर एक बडा देव शयन (देवशैय्या) कहा है इस का इस तरह वर्णन करते हैं, विविध मणिमय प्रतिपाद हैं

सभा केवल संसार निमित्त है देवताओं का यह जीत व्यवहार है भव्य, अभव्य, समदृष्टि मिथ्यात्वी सब इन का पूजन करते हैं यहां पर दाढा मात्र देवता को ही पूजने योग्य ग्रहण की है

देवसयणिज्जस्स अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—नाणामणिमया पडिपादा, सोवण्णियापादा, नाणामणिमया पायसीया, जंबूणदमया गत्ताइं, वइरामया संधी, नाणामणिमयेवेच्चे, रययामयातूली, लोहियक्खमया बिब्बोयणा, तवणिज्जमयी गंडोवहाणीया॥ सेणं देवसयणिज्जे सालिंगणवट्टिए दुहओ बिब्बोयणे दुहओउण्णये मज्झणये गंभीरे गंगा-पुलिणवालुउद्दालसालिसये, उवचियखोमदुगुल्लपट्ट पडिच्छयणे, सुविरइरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आइणगरूत बूर णवणीय तूलफासे मउए पासादीए ॥ १३६ ॥

सुवर्णमय पाद, विविध मणिमय पांव के ऊपर के भाग, जम्बूनद रत्नमय उस के अंग [इस ऊपले] वज्र रत्नमय संधी, अनेक प्रकार के मणिमय निवार, रत्नमय तलाइ, लोहिताक्ष रत्नमय तकिये, और सुवर्णमय गालमसूर है यह देव शैय्या शरीर प्रमाण हैं, मस्तक व पांव की पास दो तकिये रखे हैं, मस्तक व पांव की पास कुच्छ ऊंचा है, और बीच में गंभीर है, गंगा नदी की वालु में पांव रखने से जैसे अधो गमन होवे वैसे ही है विचित्र क्षौमदुगुल वस्त्र, कपासका वस्त्र दुकल, पट्टकुल से बनाया हुवा वस्त्र देव दुष्य से वह आच्छादित हुई है, अच्छी तरह बनाये हुवे रजस्त्राण व वस्त्र सहित है, लाल वस्त्र से वह पलंग ढका हुवा है, मनोहर है, मृगचर्म, बूर, मक्खन, अर्कतूल जैसा स्पर्श है देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है॥१३६॥

चेतियखंभस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता साणं मणिपेढिया दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई जाव पडिरूवा ॥ तीसेणं मणिपेढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ॥तस्सणं माणवगस्स चेतियखंभस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पन्नत्ता, साणं मणिपेढि एगं जोयणं आयामविक्खंभेणं अद्धं जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ १२५ ॥ तीसेणं मणिपेढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्सणं

चैत्य स्तंभ से पूर्व में एक बडी मणिपीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की मोटी मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणिपीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का वर्णन पूर्ववत् मानना उस माणवक चैत्य स्थंभ से पश्चिम में एक बडी मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की मोटी व सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है ॥ १ ॥ उस मणिपीठिका पर एक बडा देव शयन (देवशैय्या) कही है इस का इस तरह वर्णन करते हैं, विविध मणिमय प्रतिपाद हैं

सब केवल संसार निमित्त है देवताओं का यह जीत व्यवहार है भव्य, अभव्य, समदृष्टि मिथ्यात्वी सब इन का पूजन करते हैं यहां पर दाढा मात्र देवता को ही पूजने योग्य ग्रहण की है

पासादिया ॥ सभाएण सुधम्माए उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १३८ ॥ सभाए सुधम्माए उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण एगेमहं सिद्धायतणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयणाइं आयामेण छ जोयणाइं सकोसाइं विक्खंभेण नवजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण जाव गोमाणसिया वत्तव्वया जावेव सभाए सुहम्माए वत्तव्वया साचेव निरवसेसा भाणियव्वा तहेव दारा, मुहमंडवा, पेच्छा घरमंडवा, थूभा, चेइयरुक्खा, महिंदज्झया, णंदाउयपुक्खरिणीओ सुधम्मा सरिसप्पमाण, मणगुलिया सुदामा गोमाणसी धूवघडियाओ तहेव भूमिभागे उल्लोयण जाव मणिफास ॥ १३९ ॥ तस्सण सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता दो जोयणाइं

सभा पर आठ मंगल २ ध्वजा व छत्रपरछत्र हैं ॥ १३८ ॥ सुधर्मा सभा की ईशान कून में एक बड़ा सिद्धायतन कहा हुवा है वह साढे बारह योजन का लम्बा सवाछे योजन का चौड़ा, नव योजन का ऊंचा यावत् गोमानसीक की वक्तव्यता कहना जैसी सुधर्मा सभा की वक्तव्यता कही वह सब निरवशेष यहां कहना द्वार, मुखमंडप प्रेक्षाघर मंडप, स्तूप, चैत्य वृक्ष, महेन्द्र ध्वजा, नंदा पुष्करणी, सुवर्ण समान पीठिका, पुष्पदाम, शैय्या, धुपादे सब वैसे ही जानना वैसे ही भूमिभाग में यावत् ऊपर के भाग में यावत् मणिस्पर्श पर्यंत कहना ॥ १३९ ॥ उस सिद्धायतन के मध्य भाग में एक बड़ी मणिपीठिका कही

तस्सण देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेण मणिपेढिया पण्णत्ता, तेण मणिपेढिया जोयण-मेग आयामविक्खंभेण, अद्धजोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमयी जाव अच्छा ॥ तेसिण मणिपाढयाए उप्पि एगे मह खुड्डमहिंदज्झये पण्णत्ते अट्ठट्ठमाइ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण अद्धकोस उव्वेहेण अद्धकोस विक्खभेण वइरामयवट्ट लट्ठसठिते तहेव जाव मगलरुया छयातिछत्ता ॥ १३७ ॥ तस्सण खुड्डमाहिंदज्झयस्स पच्चत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चुप्पालये नाम पहरणकोसे पण्णत्त, तत्थण विजयस्स देवस्स फलिहरयणप-मोक्खा बहवे पहरणरयणा सण्णिक्खित्ता चिट्ठति, उज्जलसुणीसिय सुतिक्खधारा

उस देव शैय्या की ईशानकून में एक मणिपीठिका है यह मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी है आधा योजन की जाडी है सब मणिमय यावत् स्वच्छ है उस मणिपीठिका पर एक बडी क्षुल्लक नाम महा ध्वजा है, यह साडेसात योजन ऊंची, आधा कोश ऊंडी व आधा कोश चौडी है वज्ररत्नमय, वर्तुला कार अच्छा तरह घोसी हुई वगैरह सब पूर्ववत् जानना यावत् मंगल रूप व छत्रातिछत्र है ॥ १३७ ॥ उस क्षुल्लक मा-हेन्द्र ध्वजा स पश्चिम दिशा में विजयदेव का चौपाल नामक प्रहरण कोष [शस्त्रभंडार] है वहां विजयदेवता के स्फटिक प्रमुख बहुत शस्त्ररत्न रखे हैं, वे उज्वल, तेजवत व तीक्ष्णधार वाले हैं प्रसन्नकारी हैं सुघर्षी

अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा—तवणिज्जमती हत्थतला, पायतला, अकामयाइ णहाइ अतोलोहियक्खपरिसयाइ, कणगामयापादा, कणगामयागोफा, कणगमईओ जघाओ, कणगामयाजाणु, कणगामयाउरू, कणगमईओ, गायलट्ठीओ तवणिज्जमईउ णाभीओ, रिट्ठमईओ रामराजीओ, तवणिज्जमया चुचुया, तवणिज्जमया सिरिवच्छा, कणगमईओ गीवाओ, रिट्ठामयमसू सिलप्पवालमयाओट्ठा, फलिहमयादता, तवणिज्जमईओ जिहाओ, तवणिज्जमया, तालुया, कणगमईओ नासाओ, अतो लोहितक्ख परिसेयाओ, अकामयाइ अत्थीणि, अतो लोहितक्ख परिसेताति, पुला,

उस में लोहिताक्ष रत्नमय रखा है, सुवर्णमय पांव, घूटण, जघा, जानु, उरु, गात्र हैं तपनीय की नाभि हैं, रिष्ट रत्नमय रोमराजी है तपनीयमय स्तनके (चुचु) अग्रभाग हैं रक्त सुवर्णमय हृदय है, कनकमय ग्रीवा रिष्ट रत्नमय दाढी, प्रवालमय ओष्ठ, स्फटिक रत्नमय दांत, रक्त सुवर्णमय तालूआ, कनकमय नासिका उस में लोहिताक्ष रत्न की रेखा है अक रत्नमय चक्षु जिन में लोहिताक्ष रत्नमय रेखा हैं पुलाक रत्नमय दृष्टी, रिष्ट रत्नमय ताराओं, भांपण व भ्रमर हैं कनकमय कपाल, कर्ण व ललाट है, वज्र रत्नमय मस्तक है, रक्त सुवर्णमय केश की भूमि (मस्तक की टट) है, रिष्ट रत्नमय मस्तक के केश हैं प्रत्येक जिन प्रतिमा पीछे छत्र धारण करने वाली प्रतिमा कही हैं, वे प्रतिमा हिम, चांदी, मुचकुंद के पुष्प समान

आयामविक्खंभेण, जोयणाइं बाहल्लेण सव्वमणियाए अच्छा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमहं देव छंदए पण्णत्ते, दो जोयणाइं आयाम विक्खंभेण साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण सव्वरयणामए अच्छे ॥ तत्थण देवछंदए अट्ठसत जिण पडिमाण जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताणं सन्निक्खित्त चिट्ठइ ॥१४०॥ तेसिण जिणपडिमाण

है यह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी सब मणिमय व स्वच्छ है, उस मणिपीठिका पर एक बडा देव छंदक कहा है यह दो योजन का लम्बा चौडा है साधिक दो योजन ऊंचा है, सब रत्नमय स्वच्छ है उस में एकसो आठ जिन प्रतिमा जिन शरीर प्रमाण ऊंची रही हुई हैं +॥१४०॥ उन जिन प्रतिमा का ऐसा वर्णन कहा है रक्त सुवर्णमय हाथ व पांव के तल हैं, अंक रत्नमय नख हैं,

---

+ श्लोक—अरिहंतापि जिनो चेव, जिनो सामान्य केवला ॥ कंदर्पोपि जिनाश्चेव, जिनो नारायणो हरि ॥ १ ॥

अर्थ—हेमचन्द्राचार्यकृत हेम नाममाला में-१ अर्हन्त २ केवली ३ कामदेव व ४ नारायण इन चार को जिन कहे हैं इस से यह प्रतिमा कामदेव की मानी जाती है, तथा स्थानागजी सूत्र में-१ अवधि ज्ञानी, २ मन पर्यव ज्ञानी व ३ केवल ज्ञानी, तीन प्रकार के जिन कहे हैं जिस से यह प्रतिमा अवधि ज्ञानी जिन की जानी जाती है

उववाइजी सूत्र में श्रीमहावीर भगवान के शरीर के वर्णन में चूचू का कथन नहीं आया है और यहां चुचु का कथन आया जिस से यह तीर्थंकर की प्रतिमा नहीं है

पुज सण्णिकासाओ सुहमरयतदीहवालाओ धवलाओ चामराओ सलील उहारमाणीओ २ चिट्ठति॥ तासिण जिणपडिमाण पुरतो दो दो नागपडिमाओ जक्खपडिमाओ भूतपडिमाओ कुडधारपडिमाओ विणउणयाओ, जलिउडाओ, सणिक्खित्ताओ चिट्ठति, सव्वरययामईआ अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णिरयाओ णिप्पकाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण जिणपडिमाण पुरतो अट्ठसत घटाण, अट्ठसत चदणकलसाण, एव भिंगारगाण आयसाण थालाण, पातीण, सुपतिट्ठकाण, मणगुलियाण, वायकरगाण, वितारयण करडगाण, हयकठाण जाव उसभकठाण, पुप्फचगरीण, जाव लोमहत्थचगेरीण, पुप्फपडलगाण, अट्ठसय तेलसमुग्गाण, जाव धूवकडुच्छुयाण सण्णिक्खित्त चिट्ठति ॥ सिद्धायतणस्सण उप्पिं बहवे अट्ठ मगलगा झया छत्तातिछत्ता, उत्तिमागारा, सालसविहेहिंरयणेहिं उवसो-

मठारी, रज व पक रहित यावत् प्रतिरूप हैं उन जिन प्रतिमा आगे १०८ घंट १०८ चन्दनकलश, १०८ भृगार, १०८ आरिसा, १०८ स्थाल, १०८ पात्री, १०८ सुप्रतिष्ठक व १०८ मनोगुलिका १०८ पंखे १०८ मनोहर रत्न करंड १०८ हयकंठ यावत् १०८ वृषभकंठ १०८ पुष्पकी चगेरी, १०८ पुष्प के पटल, १०८ तेल समुद्ग, यावत् १०८ धूप के कुडछे रहे हुवे हैं सिद्धायतन के उपर बहुत आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र हैं उत्तम आकार वाले व सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनिक हैं तद्यथा-रत्न

कामइओ दिट्ठीओ रिट्ठामईओ तारगाओ, रिट्ठामयाइ अच्छिपत्ताइ, रिट्ठामईओ भमूहाओ, कणगामयाकवोला, कणगामयासवणा, कणगामयानिडाला, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमईओ केसत केसभूमिओ रिट्ठामया उवरिमुद्धया ॥ तासिणं जिणपडिमाणं पाच्छितो पत्तेय २ छत्ताधारपडिमाओ पण्णत्ताओ ताओणं छत्ताधार पडिमाओ हिमरयत कुंदुप्पगासाइं कोरिंटमल्लदामाइं धवलाइं आयवत्ताइं सलील उहारेमाणीओ २ चिट्ठंति ॥ तासिणं जिणपडिमाणं उभओपासिं पत्तेय २ चामर धारपडिमाओ पण्णत्ताओ ताओणं चामरधारपडिमाओ चंदप्पहवेरुलियणाणामणिकणगरयण विमल महरिहतवणिज्जुज्जल विचित्तदंडाओ, चिल्लीयाओ संखंककुंददगरय महितफेण

कोरंटक वृक्ष के श्वेत पुष्पों वाला छत्र धारण कर लीला सहित खडी रही है इन प्रत्येक जिन प्रतिमाओं के दोनों बाजु पृथक् चामर धारन करने वाली प्रतिमा हैं ये प्रतिमा चंद्रप्रभा वैडूर्य रत्न, विविध प्रकार के मणि व कनक रत्न वाले निर्मल महा मूल्य वाले सुवर्णमय उत्तम दंड वाले शंख, अंकरत्न, मुचकुंद, पानी के कन, अमृत व समुद्र फैन समान उज्ज्वल सुखकारी चांदी के बाल वाले श्वेत चामरों लेकर लीला करती हुई रही है, इन प्रत्येक प्रतिमा के आगे दो२ नाग प्रतिमा दो२ भूत प्रतिमा, और दो२ कुंडधार प्रतिमा विनय से नमती हुई हाथ जोडती हुई रही है वे सब रत्नमय, स्वच्छ, श्लक्ष्ण सुक्ष्म, मकारी,

सेण हरए अद्ध तेरस जोयणाइ आयामेण सकोसाइ छ जोयणाइ विक्खभेण, दस जोयणाइ उव्वहेण, अच्छे सण्हे वण्णओ जहेव णदापुक्खरिणीण जाव तोरण वण्णओ ॥ १४३ ॥ तस्सण हरतस्स उत्तरपुरत्थिमेण एत्थण एगामह अभिसेय सभा पण्णत्ता जहा सभासुधम्मा तचेव निरवसेस जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उल्लोए, तत्थेव तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता, जोयण आयामाविक्खभेण सव्वमणिमया अच्छा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण मह सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ, अपरिवारो, तत्थण विजयस्स देवस्स सुबहुअभिसेक्क भडेसण्णिक्खित्ते चिट्ठति ॥

द्रह कहा है वह साढे बारह योजन का लम्बा, सवा छे योजन का चौडा, दश योजन का ऊंचा स्वच्छ वगैरह वर्णन योग्य है इस का वर्णन नदा पुष्करणी जैसे जानना यावत तोरण का वर्णन कहना ॥१४३॥ उस द्रह से ईशानकून में एक बडी अभिषेक सभा है, इस का वर्णन सुधर्मासभा जैसे गोमानसी भूमि भाग पर्यंत कहना उस भूमि भाग के मध्य में एक मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी यावत् सब मणिमय स्वच्छ है उस मणिपीठिका ऊपर एक बडा सिंहासन कहा है वह परिवार रहित है ऐसा वर्णन जानना वहां विजय देव के अभिषेक कराने के भंड उपकरण कलशादि रखे हुवे हैं

मिया तजहा—रयणेहिं जाव चिट्ठंति ॥ १४० ॥ तस्सण सिद्धायतणस्स उत्तर पुर-
च्छिमेण एत्थण एगामह उववायसभा पण्णत्ता जहा सुहम्मासभा, तहेव जाव गोमा-
णसीओ उववातसभाएवि दारा मुहमंडवा सभभूमिभाग तथेव जाव मणिफासा॥तस्सण
बहुसमरमणिज्जस्स भूमभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता
जायण आयमविक्खंभेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा ॥ तीसेण
मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमहं देवसयणिज्जे पण्णत्ते तस्सण देवसयणिज्जस्स वण्णओ,
उववाए सभाएण उप्पिं अट्ठट्ठमंगलज्झया छत्तातिछत्ता जाव उत्तिमागारा
॥ १४२ ॥ तीसेण उववाय सभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगेमहं हरए पण्णत्ते

यावत् रहे ॥ १४१ ॥ उस सिद्धायतन से ईशान कून में एक बडी उपपात सभा है, इस का कथन सुधर्मासभा जैसे यावत् गोमाणसीका पर्यंत कहना उपपातसभा, द्वार, मुखमंडप, समभूमिभाग यावत् मणि स्पर्श पर्यंत कहना उस रमणीय भूमि भाग के मध्य भाग में एक बडी मणिपीठिका है यह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी है सब मणिमय व स्वच्छ है उस मणिपीठिका ऊपर एक बडी देव शैय्या है इस का वर्णन पूर्ववत् जानना उपपात सभा पर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र कहे हैं, यावत् उत्तम आकार वाले हैं, ॥ १४२ ॥ उस उपपात सभा से ईशानकून में एक बडा

तत्थ विजयस्स देवस्स एगेमहं पोत्थयरयणे सन्निक्खित्ते चिट्ठति ॥ तत्थण पोत्थर यणस्स अयमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तंजहा—रिट्ठामईओ कठियाओ, रययामयाइं पत्ताकाइं, रिट्ठामयाइं अक्खराइं, तवणिज्जमये दोरे, णाणामणिमयेगंठी, वेरुलियमय लिव्वासणे, तवणीज्जमई सकला, रिट्ठामये छदणे, रिट्ठामई-मसी, वइरामई लेहिणीधम्मिये सत्थे ॥ ववसियसभाएण उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा-ज्झया छत्ताातिछत्ता, उतिमागाराति ॥ १४६ ॥ तीसेण ववसाय सभाएण उत्तर पुरत्थिमेण, एत्थण एगामहं नदा पुक्खरिणी पण्णत्ता, जं चेव पमाणं हरयस्स तचेव सव्वं ॥ १४७ ॥ तीसेण नदाए पुक्खरिणीए उत्तरपुत्थिमेण, एत्थण एगे

देव का एक पुस्तक रत्न रहा हुवा है उस पुस्तक रत्न का इस तरह वर्णन है—रिष्ट रत्नमय पुठे हैं, चांदी के लिखने के पत्र हैं, रिष्ट रत्नमय अक्षर हैं, सुवर्णमय धागा है, विविध प्रकार के मणि की ग्रन्थी है, वैडूर्य रत्नमय दवात है, रक्त सुवर्णमय सकल है, रिष्ट रत्नमय दवात का ढकन है, रिष्ट रत्नमय मसी (स्याही) है, वज्र रत्नमय लेखिनी है, यह शास्त्र धार्मिक है अर्थात् कुलधर्म के आचार उसमें लिख हुवे हैं व्यवसाय सभा उपर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्र पर छत्र हैं उत्तम आकारवाली है ॥ १४६ ॥ उस व्यवसाय सभा से ईशानकून में नंदा पुष्करणी है इस का कथन जैसे द्रहका कहा वैसे जानना ॥१४७॥

अभिसेय सभाए उप्पि अट्ठट्ठ मगलए जाव उत्तमागारा सोलसविधेहिं रयणेहिं ॥ १४४ ॥ तीसेण अभिसेय सभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगामहं अलकारिय सभा पण्णत्ता अभिसेयसभा वत्तव्वया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उप्पि सीहासण अपरिवार, तस्सण विजयस्स देवस्स सव्वहु अलकारिए भडसनिक्खित्ते चिट्ठति, अलकारिय उप्पि मगलगाज्झया जाव उत्तिमागारा ॥ १४५ ॥ तीसेण अलकारिएसभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगामहं ववसायसभा पण्णत्ता अभिसेय सभा वत्तव्वा जाव सीहासण अपरिवार

अभिषेक सभा पर आठ २ मंगल कहे हैं यावत् उत्तम आकार वाली है सोलह प्रकार के रत्नों युक्त है ॥ १४४ ॥ उस अभिषेक सभा से ईशानकूनमें एक बडी अलंकार सभा है इसका सब कथन गोमाणसी का मणिपीठिका पर्यंत अभिषेक सभा जैसे कहना उपर परिवार रहित सिंहासन है उसपर विजय देव के अलंकार के लिये वस्त्रादि भर रखे हुवे हैं अलंकारिक सभा उपर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र कहे हैं यावत् उत्तम आकारवाली है ॥ १४५ ॥ उस अलंकार सभा से ईशानकून में एक बडी व्यवसाय सभा है इस का वर्णन परिवार रहित सिंहासन पर्यंत अभिषेक सभा जैसे कहना वहां विजय

चिंतिने पत्थिये मणोगएसकप्पे समुप्पज्झित्था किं मे पुव्विसेय किं मे पच्छासेय किं मे पुव्वकरणिज्ज किं मे पच्छाकरणिज्ज, किं मे पुव्विंवा पच्छावा हियाए सुहाए खमाए णीससाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु एवं सपेहेति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगादेवा विजयस्स देवस्स इम एतारूव अब्भत्थिय चिंतिय पत्थिय मणोगय सकप्प समुप्पणे जाणित्ता जेणामेव से विजएदेवे तेणामेव उवागच्छित्ता विजय देव करतलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेंति जएण विजयेण वद्धावित्ता एव वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाण

पर्याप्ति स प्राप्त होने पर ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुआ कि पहिले मुझे क्या मगलकारी है, पीछे क्या मगलकारी है, पहिले क्या करने योग्य है, पीछे क्या करने योग्य है, पहिले व पीछे क्या हित, सुख, क्षमा, निश्रय के लिये व अनुगामी होगा ऐसा वह विजय देवता विचार करने लगा, विजय देवको ऐसा सकल्प अध्यवसाय, चिंता, प्रार्थना व मनोगत सकल्प उत्पन्न हुवा जानकर उनके सामानिकदेव व आभ्यतर परिषदा के देव उन की पास आये और उनोंने विजय देव को हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन करके दोनों हाथ की अजलि एकत्रकर जय विजय शब्द से वधाये, जय विजय शब्द से वधाकर ऐसा बोले आप को

महा मणिपेढे पण्णत्ते, दो जोयणाइ आयामविक्खमेण, जोयण बाहल्लेण सव्वरयना मये अच्छे जाव पडिरूव ॥ १४८ ॥ तेण कालेण तेण समएण विजयदेवे विजयाए रायहाणीए उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिते अगुलस्स असखेज्ज भागमित्तीये बोदीये विजय देवत्ताये उववण्णे ॥ तएण से विजयदेवे अहुणोववण्ण मेत्ताय चेव समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति भाव गच्छति तजहा आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणापाणपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावगयस्स समाणस्स इमे एतारूवे अज्झत्थिये

उप नदा पुष्करणीसे ईशानकूनमें एक बडी मणिपीठिका है यह दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥१४८॥ अब विजय देवका वर्णन करते हैं उसकाल उससमयमें विजय नामक देव विजया राज्यधानीकी उपपातसभामें देव शयन के देव दूष्य वस्त्रके नीचे अगुलके असख्यातवे भाग की अवगाहना के शरीर वाला विजय राज्यधानी के इन्द्रपने उत्पन्न हुवा वह विजय देव तत्काल का उत्पन्न हुवा पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्ति भाव को प्राप्त हुवा इन पांच पर्याप्ति के नाम—आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोश्वास पर्याप्ति, व भाषा मन पर्याप्ति विजय देव को पांच

जाव अणुगामियत्ता ते भविस्सति तिकट्टु महता २ जयजय सद्द पउजति॥ ततेण से विजये देवे तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाण देवाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे जाव हियते, देवसयणिज्जाओ अब्भुट्ठित्त दिव्व देवदूसजुयल परिहेइ देवसभिज्जाओ पच्चोरुहति देवसयणिज्जाओ पच्चोरुहित्ता उववायसभाओ पुरत्थिमेण दारेण निग्गच्छति २ त्ता जेणेव हरये तेणेव उवागच्छति २ त्ता हरय अणुपदाहिण करेमाणे २ पुरत्थिमेण तोरणेण अणुपविसति २ त्ता पुरत्थिमिल्लेण तिसोमाण पडिरूवएण पच्चोरुहति २ हरय उगाहति उगाहित्ता जलावगाहण करेति जलावगाहण करित्ता जलमज्जण करेति जलमज्जण करित्त जलकिड्डकरेति जलकिड्डं

मयोग किया यह विजय देव सामानिक परिषदवाले देवों की पास से एसा सुनकर हृष्ट तुष्ट हुवा, देव शयन में से उठकर दीव्य देव दूष्य युग्म [वस्त्र] परिधान किया देव शैय्या में से नीचे उतर कर उपपात सभा के पूर्व के द्वार से बाहिर नीकलकर जहाँ द्रह है वहां आया उस को प्रदक्षिणा करता हुवा पूर्व दिशा के तोरण से प्रवेश किया पूर्व दिशा के पावथिये से नीचे उतरकर द्रह के पानी में पडा वहां जल मजन किया, जलक्रीडा की, जलक्रीडा करके स्वच्छ बना उस द्रह में से नीकल कर जहां अभिषेक

विजयाए रायहाणीए सिद्धायतणंसि अट्ठसत जिणपडिमाणं जिणुस्सेह पमाणमेत्ताणं सण्णिक्खित्त चिट्ठति, सभाए सुधम्माए माणवए चेतियखंभे वयरामयेसु गोलवट्ट समुग्गकेसु बहुओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओणं देवाणुप्पियाणं अण्णेसिं च बहुणं विजय रायहाणि वत्थव्वाणं देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारयणिज्जाओ सम्माणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेतियं पज्जुवासणिज्जाओ एतणं देवाणुप्पियाणं पुव्विंपि सेयं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छापि सेयं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं पच्छाकरणिज्जं एयण्णं देवाणुप्पिया पुव्विंवा

विजया राज्यधानी में सिद्धायतन में जिनशरीर के अवगाहना जितनी १०८ जिन प्रतिमा रही हुई है, और सुधर्मासभा क अंदर माणवक चैत्य में वज्ररत्नमय गोल डब्बे में जिन दाढा हैं वे आप का और अन्य बहुत विजय राज्यधानी के देव देवियों को अर्चनीय, पूजनीय, सत्कार सन्मान योग्य, कल्याणकारी, मंगलकारी, देव संबंधी, चैत्य समान पूजने योग्य हैं आपको यह पहिले भी कल्याणकारी है पीछे भी कल्याणकारी है, पहिले करने योग्य है, पीछे भी करने योग्य है आप का यह पहिले पीछे हित के लिये यावत् अनुगामी होगा यों कहकर बड़े २ जय २ शब्द का

आणाए विणएण वयण पडिसुणेति २ त्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति २ त्ता वेउव्विय समुग्घाएण समोहणति २ त्ता असखेज्जाइ जोयणाइ दंड णिसराति तजहा- रयणाए जाव रिट्ठाण अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति २ अहासुहुमे पोग्गले परितायंति २ त्ता दोच्चपि विउव्विय समुग्घाएण समोहणति दोच्चपि वेउव्विय समुग्घाए समोहणित्ता अट्ठसहस्स सोवण्णियाण कलसाण अट्ठसहस्स रुप्पमयाण कलसाण अट्ठसहस्स मणिमयाण कलसाण, अट्ठसहस्स सुवण्णरुप्पमयाण कलसाण, अट्ठ सहस्स सुवण्णमणिमयाण कलसाण अट्ठसहस्स रुप्पमणिमयाण कलसाण,

किया फीर ईशानकून में जाकर वैक्रय समुद्घात से असख्यात योजन का दंड किया और रत्न यावत् रिष्ट रत्नमय शुभ पुद्गल ग्रहण किये यथा बादर पुद्गल दुर किये और सूक्ष्म ग्रहण किये, पुन दूसरी बार भी वैक्रेय समुद्घातकी, दूसरीबार वैक्रेय समुद्घात करके १००८ सुवर्ण कलश, १००८ चांदी के कलश १००८ मणि के कलश, १००८ सुवर्ण व चांदि के कलश, १००८ सुवर्ण व मणि के कलश, १००८ चांदी व मणि के कलश, १००८ सुवर्ण चांदी व मणि के कलश १००८ मौक्तिक के कलश, १००८ भृंगारक (झारा) ऐसे ही १००८ आरीसे, १००८ थाल, १००८ पात्री, १००८ पुष्प चंगेरी यावत् पूंजनी की चंगेरी,

करित्ता आयत चोक्खे परमसूइभूए हरताओ पच्चुत्तरित्ता जेणामेव अभिसेयसभा तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता अभिसेयसभ पयाहिण करेमाणे पुरत्थिमिल्लेण दारेण अणुपविसइ २ त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २ त्ता सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगा देवा अभिओगिए देवे सद्दावेति २ त्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तुब्भे विजय देवस्स महत्थ महग्घ महारिह विपुल इदाभिसेय उवट्ठवेह ॥ १४९ ॥ ततेण ते अभिओगादेवा सामाणियपरिसोववण्णएहिं एव वुच्चममाणा हट्ठ जाव हियया करयल परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी देवाणुप्पिय ? तहत्ति

सभा की वहां आया उस की प्रदक्षणा करके उस में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और सिंहासन की पास आकर उस पर पूर्वाभिमुखकर बैठा ॥ उस समय विजय देवता के सामानिक परिषदा वाले देवोंने आभियोगिक देवों को बुलाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय ! तुम विजय देव के लिये महा अर्थ वाला महद्ध, महामूल्य वाला विस्तीर्ण इन्द्राभिषेक की तैयारी करो ॥ १४९ ॥ सामानिक परिषदा वाले देवों की पास से ऐसा सुनकर वे आभियोगिक देव हृष्ट तुष्ट हुए यावत् हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन किया मस्तक पर अंजली कर के ऐसा बोले 'यथातथ्य' यों विनय पूर्वक उन की आज्ञा का स्वीकार

दिव्वाए देवगईए तिरिय मसखेज्जाण दीवसमुद्दाणमज्झमज्झेण वीइवयमाणा२ जेणेव खीरोदेसमुद्द, तेणेव उवागच्छाति तेणेव उवागच्छित्ता खीरोदगगेण्हाति २ त्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ गेण्हाति गेण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदे समुद्दे तेणेव उवागच्छाति उवागच्छित्ता, पुक्खरोदग गेण्हाति पुक्खरोदग गेण्हित्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सतसहस्सपत्ताति गेण्हाति गेण्हित्ता जेणेव समयखत्ते जेणेव भरहेरवयाति वासाइ जेणेव मागध वरदाम पभासाइ तित्थाइ तेणेव उवागच्छति२त्ता तित्थोदग गेण्हाति, तित्थोदग गिण्हित्ता, तित्थमट्टिय गेण्हाति तित्थमट्टिय गेण्हित्ता जेणेव गगा सिंधु रत्ता रत्तवतीओ सालिलाओ तेणेव उवागच्छाति २ त्ता, सलिलोदग

ग्रहण किये वहां से मनुष्य क्षत्र में भरत एरवत क्षेत्र के मागध, वरदाम व प्रभास जो तीर्थ हैं वहां आये, वहां से तीर्थोदक व तीर्थकी मृत्तिका ग्रहण की और वहा से गगा, सिंधु रक्ता व रक्तावती नदी थी वहां आये वहां उन सरिताओं का पानी लिया, और उन के दोनों किनारों की मृत्तिका भी ली वहां से चुल्लहिमवत पर्वत व शिखरी पर्वत की पास आये वहां सब ऋतु के पुष्प, सब कषाय रस, सब पुष्प, सब गंध, सब माला, सब गुच्छा यावत सब औषधि व सरसव ग्रहण किये वहां से पद्मद्रह व पुंडरीक द्रहथे वहां आये उस में से पानी लिया और उत्पल यावत् लक्षपत्र कमल भी ग्रहण किये वहां से हेमवय

अट्ठसहस्स सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं अट्ठसहस्स भोमेज्ज कलसाणं अट्ठसहस्स भिंगाराणं एवं आयसगाणं, थालाणं, पातीणं सुपतिट्ठकाणं, चित्ताणं, रयणकरंडगाणं, पुप्फ चंगेरीणं जाव लोमहत्थ चंगेरीणं, पुप्फ पडलगाणं जाव लोमहत्थ पडलगाणं, अट्ठसहस्स सीहासणाणं, छत्ताणं चामराणं, अवपडगाणं वट्टकाणं, भिप्पीणं, पोरकाणं, पीणगाणं, तेलसमुग्गाणं, अट्ठसहस्स धूवकडुच्छाणं विउव्वति, तेसा भावियए विउव्विएय कलसेय जाव धूवकडुच्छएय गेण्हति गेण्हइत्ता विजयाओ रायहाणीओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव उद्धत्ताए

१००८ पुष्प यावत् पूजनीके पटल, १००८ सिंहासन, १००८ छत्र, १००८ चामर १००८ तेल के गोल १००८ धूप के कुडछ का प्रक्षेप करे अब उन स्वाभाविक (शाश्वत) कलश व विकुर्वणा करे और १००८ धूप के कुडछ का प्रक्षेप करे अब उन स्वाभाविक (शाश्वत) कलश व विकुर्वणा वाले कलश यावत् धूप के कुडछे ग्रहण कर विजया राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट यावत् अद्भुत शीघ्र देवगति से तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र का उल्लंघन करते हुए जहां क्षीर समुद्र है वहां आये वहां आकर उस में से क्षीरोदक ग्रहण किया और वहां और उत्पल यावत् सहस्रपत्र ये उन्हे ग्रहण करके वहां से पुष्करोदधि समुद्र की पास आये और उस में से क्षीरोदक व उत्पल यावत् सहस्रपत्र

महाहिमवतरुप्पिवासहर पव्वया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सव्वपुप्फे तचेव जेणेव महापउमदहा महापुडरीयदहा तेणेव उवागच्छति २ त्ता जाइ तत्थ उप्पलाइ तचेव, जेणेव हरिवास रम्मगवासीर्ति जेणेव हरिकाता हरिससलिला नरकाता नारिकाताओ तेणेव उवागच्छति २ त्ता सलिलोदग गण्हति २ त्ता तचेव, जेणेव वियडावती गधावती वट्टवेयड्ढ पव्वया तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्व पुप्फेय तचेव जेणेव णिसढ णीलवत वासहर पव्वता तणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय तचेव, जेणेव तेगिछिदहकेसरीदहा तेणेव उवागच्छति २ त्ता दहोदग गेण्हति २ त्ता तचेव जेणेव पुव्वविदेह अवरविदेह वासाणि जेणेव सीयासीओयाओ महानईओ जहानईसु

पानी व उन की मृत्तिका ग्रहण की वहां से विकटापाति व गधापाति नामक वर्तुलाकार वैताढ्य पर्वत थे वहां आये वहां से सब पुष्प वगैरह लिये फीर वहां से निषध नीलवत वर्षधर पर्वत थे वहां आये वहां से सब पुष्प यावत् सरसव लिये वहां से तिगिच्छ द्रह व केसरी द्रह थे वहां आये उस में से पानी और उत्पल यावत् लक्षदलादि ग्रहण किये वहां से जहां पूर्व महाविदेह व पश्चिम महाविदेह क्षेत्र में सीता सीतोदा महानदियों थी वहां आये वहां का अधिकार अन्य नदियों जैसे कहना वहां से सब चक्रवर्ती विजय में जहां मागध, वरदाम व प्रभास ये तीन तीर्थों और जहां सब अंतर नदियों है

गेण्हति २ त्ता उभयो तटमट्टिय गेण्हति तटमट्टिय गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवंत सिहरिवास धरपव्वता तणेव उवागच्छति २ त्ता, सव्वतुवरेय सव्वपुप्फेय सव्व गंधय सव्वमल्लय सव्वोसहिं सिद्धत्थएय गेण्हति २ त्ता जेणेव पउमदह पुंडरीयद्दह, तेणेव उवागच्छति २ त्ता दहोदग गेण्हति २ त्ता जाति तत्थ उप्पलाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं गेण्हति ताइं गेण्हत्ता जेणेव हेमवय एरणवयाति वासाति जेणेव रोहिया रोहितसा सुवण्णकूला रुप्पकूलाओ तेणेव उवागच्छति २ त्ता सलिलोदग गेण्हति २ त्ता उभयो तडमट्टिय गिण्हति २ त्ता जेणेव सद्दावति मालवत परियागावट्टवेयड्ढ पव्वता तेणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय गेण्हति २ त्ता जेणेव

एरणवय क्षेत्र में, वहां रोहिता रोहितासासुवर्णकुला व रूप्यकूला नदी थी वहां आये उन में से पानी व उनके दोनों तट की मिट्टि ग्रहण की वहां से शब्दापाति व माल्यवन्त वर्तुलाकार वैताढ्य पर्वत जहां हैं वहां आये वहां सब वृक्ष के पुष्प यावत् सब औषधि व सरसव ग्रहण कर महा हिमवंत व रुपि पर्वत पर आये वहां सब पुष्प वगैरह पूर्ववत् जानना वहां से महा पद्म द्रह व महा पुंडरिक द्रह में वहां आये वहां से द्रह का पानी व पुष्पादि वगैरह लिये वहां से हरिवर्ष, रम्यक् वर्ष में हरीकांता, हरिसलिला, नरकंता व नारीकांता इन चार नदियों की पास गये, वहां से

गोसीसचदण दिव्वच सुमणदाम ददरमलय सुगधिगधिएयगधे गेण्हति २ त्ता, एगतो मिलति २ त्ता जबुद्दीवस्स पुरच्छिमिल्लेण दारण णिगच्छति २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देवगतीए तिरिय मसखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झ मज्झेण वीतीवयमाणा जेणेव विजया रायहाणी तणेव उवागच्छति २ त्ता विजय रायहाणिं अणुप्पयाहिण करेमाणा २ जेणेव अभिसेयसभा जेणेव विजएदेवे तेणेव उवागच्छति २ त्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए मजुलिकट्टु जएण विजएण वद्धावेंति २ त्ता विजयस्स देवस्स त महत्थ महग्घ महरिह विपुल अभिसेय उवट्ठवेंति ॥ १५० ॥ ततेण विजय देव चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ, तिण्णिपरिसाओ, सत्तअणिया

पूर्वद्वारसे नीकलकर उस उत्कृष्ट यावत् दीव्य देवगतिसे नीरछे असख्यातद्वीप समुद्र उल्लघकर विजया राज्यधानी के पास आये विजया राज्यधानीको प्रदक्षणा करके जहां अभिषेक सभा व जहां विजयदेव था वहां आये दो हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन दिया और अजलि करके विजय देवता को बधाये इस तरह विजय देवता का महाअर्थ वाला महर्घ्य, व महा मूल्य वाला अभिषेक तैयार किया, ॥ १५० ॥ अब चार हजार सामानिक देव, परिवार सहित चार अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिकाधिपति, सोलह

जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव ...मागह वरदाम पभासाइ तित्थाइ जेणेव सव्व-
तरणदीओ सलिलोदग गेण्हति २ त्ता तमेव जेणव सव्ववक्खारपव्वता सव्वतुवरेय
तथव जेणेव मदरे पव्वए जेणेव भद्दसालवणे तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय
जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय गण्हति २त्ता जेणेव णदणवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता
सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरसच गोसीसचदण गेण्हति २ ता जेणेव
सोमणसवणे तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय
सरस च गोसीस चदण दिव्व च सुमणदाम गेण्हति २ त्ता जेणेव
पंडगवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरस च

वहां आये उन में से पानी व मृत्तिका ग्रहण की वहां से सब वक्षस्कार पर्वत की पास आये उन में से सब ऋतु के पुष्प यावत् सरसव ग्रहण किये वहांसे मेरू पर्वतपर जहां भद्रासालवन है वहां आये, इसमें सब ऋतु के पुष्प यावत् मंगलिक वस्तु ग्रहण किये, वहां से नंदनवन में आये उस में से भी सब ऋतु के पुष्प यावत् रसपत्र ग्रहण किये और श्रेष्ट गोशीर्ष चंदन, व दीव्य पुष्पों की मालाओं ग्रहण की वहां से पंडकवन में आये, उसमें से सब रस यावत् सब औषधि, सरस श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन, दीव्य पुष्प की मालाओ, दर्दर व मलय से सुगंधित बनी हुई वस्त्र ग्रहण की फीर सब देवता एकत्रित मीलकर जम्बूद्वीप के

महयाबलेण महयासमुदएण, महतातुडिय जमगसमगपडुप्पवादित रवेण सख पणव पडह भेरि झल्लरि खरमुही दुदुहि हुडुक्क निग्घोसणादिएण महतामहता इदाभिसेगेण अभिसिंचति ॥१५१॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स महता इदाभिसेकंसि वट्टमाणसि अत्थेगतियादेवा णच्चोदग णातिमट्टिय पविरल फुसित दिव्व सुरभिरयरेणुविणासण गधोदगवास वासति, अत्थगतियादेवा णिहतरय णट्टरय भट्ठरय उवसतरय पसतरय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणि सब्भितरबाहिरय आसितसम्मज्जितोव-

ढाल, भेरी, झल्लर मृदग, दुदुभि व गोमुख इत्यादि वादित्र से उद्घोषणा करते हुवे महान इन्द्राभिषेक विजय नामक देव का किया ॥१५१॥ जिस समय विजय देवता का महा अभिषेक होता था उस समय कितनेक देवता विजया राज्यधानी में बहुत पानी नहीं व बहुत मृत्तिका नहीं ऐसा पानी के कनवाला मेघ वर्षाते थे, कितनेक दीव्य सुगंधित व रजरेणु का विनाश करने वाला मद गंधादिक की वर्षा करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी को रज रहित, नष्ट रज, भ्रष्ट रज, उपशांत रज वाली करते थे, अर्थात् राज्यधानी में से रज स्वच्छ करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी के अंदर व बाहिर पानी का छिटकाव करते थे पूजते थे, लिपते थे इसतरह करके उसका मार्ग पवित्र पुष्प पुंजयुक्त करते थे कितनेक देवता वहां मांचापर मांचा इस तरह बांधते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी को अनेक प्रकार के रंगवाली विजय, वैजयंती

सप्तमणियाहिवती सोलसमस्सरक्खेदवसाहस्सीओ अन्नय बहवे विजयरायहाणिवत्थव्वगा वाणमंतरदेवाय देवीओय तहिं साभाविते उत्तरवेउव्वितेहियवर कमलपतिट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चंदणकयचच्चातेहिं आविद्धकंठे गुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं करतलसुकुमाल परिग्गाहिएहिं अट्ठसहस्स सोवण्णियाण कलसाण रुप्पमयाण मणिमयाण जाव अट्ठसहस्स भोमज्जाण कलसाण सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फे-हिं जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलण सव्वसमुदएण सव्व-परिवारेणं सव्वायरेण सव्वविभूतीये सव्वविभूसाए सव्वसंभमेण सव्वतोरोहेण सव्वणाड-एहिं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेण सव्वदिव्वतुडियाणिणायेण महया इड्ढीए महयाजुत्तीए

हजार आत्म रक्षकदेव और अन्य बहुत वाणव्यंतर देव व देवियोंने स्वाभाविक व उत्तर वैक्रेय वाले, श्रेष्ठ कमल में स्थापन किये हुए, सुगंधित श्रेष्ठ पानी से परिपूर्ण, चंदन से चर्चित, कण्ठ में सूत्र बंधा हुवा पद्म उत्पल के ढक्कन वाले, सुकोमल हस्ततल में ग्रहण किये हुए १००८ सुवर्ण कलश, १००८ चांदी के कलश यावत् १००८ मृत्तिका के कलश सब ऋतु के तुवर पुष्प यावत् सब औषधि से सिद्धार्थक (सरसव) से सब ऋद्धि द्युति, बल, समुदय, आदर, विभूति, विभूषा, संभ्रम आरोह, नाटक, सब पुष्प, गंध, माल्य व अलंकार, सब त्रुटित का निनाद, महाऋद्धि महाद्युति महाबल, महा समुदय युक्त, मुख देवोंने बजाये हुए वादित्र शंख, पणव

सरससुरभिमुक्कपुप्फ पुजोवयारकलित करेंति, अप्पेगातियादेवा विजय रायहाणिं कालाग-रुपवर कुदुरुक्कतुरुक्कधूव डज्झत धूवमघमघत गधद्धुताभिराम सुगधवरगध गधियगध वट्टिभूय करेंति, अप्पगातेयादेवा हिरण्णवास वासाति, अप्पेगतियादेवा सुवण्ण वासंवासति, अप्पेगातिया देवा रयणवास वासाति वइरवास वासाति, पुप्फवास, मल्लवास, गधवास, चुण्णवास-वत्थवास आभरणवास वासति अप्पेगतियादेवा हिरण्णविधिं भाएति एव सुवण्ण विधिं रयणविधिं वयरविधिं, मल्लविधिं, चुण्णाविधिं गधविधिं वत्थविधिं आभरणविविभाएात अप्पगातियादेवा चउविह वातित वादेति तजहा—तत वितत घण झूसिर, अप्पेगातिया

करते थे, कितनेक रत्न की वर्षा करते थे, कितनेक पुष्प की माला, गध, चूर्ण, वस्त्र व आभरण की वर्षा करते थे, कितनेक देवता हिरण्य विधि-हिरण्य रूप मगलिक प्रकार करते थे, कितनेक सुवर्ण विधि, रत्न विधि, वज्र विधि, माल्य विधि, चूर्ण विधि, गध विधि, वस्त्र विधि व आभरण विधि करते थे कितनेक देवता तत, वितत घण व शूसिर यह चार प्रकार के वादित्र बजाते थे, कितनेक देवता चार प्रकार के गीत गाते थे, तद्यथा १ उत्क्षिप्त सो प्रथम से आरभ करना, २ प्रवर्तक प्रस्ताविक गीत में प्रवर्तना, ३ मदायित मूर्च्छना सहित गाना और ४ रोचितावसान यथोचित लक्षण से गाना कितनेक देवता चार प्रकार के अभिनय बतलाते हैं तद्यथा—१ दृष्टांतिक २ प्रातिश्रुतिक ३ सामतविनीपातिक और ४ लोक मध्याव

लिच सितसुक्कसमट्ठरत्थतरावणवीहीय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं मचातिमचकलिय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं णाणाविहरागरजित ठसित जय विजय वेजयति पडाग ।तिपडागमडित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं लाउल्लाइयमहिय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं गोसीससरस-रत्तचदण दद्दरदिण्ण पचगुलितल करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं उवचिय चदणघडसुकउतोरण पडिदुवारदेसभाग करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं आसत्तो सत्त विपुलवट्टवग्घारितमल्लदाम कलाव करेंति अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं पचवण्ण

नामक पताकापर पताका से मंडित करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानीको गोमय प्रमुखसे लींपते थे व चद्रुवा सहित करते थे, कितनेक देवता गोशीर्ष चदन मंडित रक्त चदन व दर्दर चदन से पांच अंगुलीयुक्त छापे देते थे कितनेक देवता विजया राज्यधानी के प्रतिद्वार के देश भाग में चदन चर्चित घडे का तोरण करते थे, कितनेक देवता ऊपर ऊचे से नीचे तक लटके वैसी लम्बी विस्तीर्ण पुष्प की माला से विजया राज्यधानीको कलित करते थे कितनेक देवता पांचवर्ण के श्रेष्ठ सुगंधित पुष्पों की पुजवाली राज्यधानी करते थे कितनेक देवता कृष्णागर उत्तम कुंदरुक, तुरुक्क जलाकर सुगंधसे मघमघायमान करते थे और श्रेष्ठ सुगंध से गंधित गंध गुटिकाभूत करते थे, कितनेक देवता चांदी की वर्षा करते थे, कितनेक सुवर्णकी वर्षा

सरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं कालागरुपवर कुंदुरुक्कतुरुक्कधूव डज्झत धूवमघमघत गंधुद्धुताभिराम सुगंधवरगंध गंधियगंधवट्टिभूयं करेंति, अप्पेगतियादेवा हिरण्णवासं वासंति, अप्पेगतियादेवा सुवण्ण वासंवासंति, अप्पेगतिया देवा रयणवासं वासंति वइरवासं वासंति, पुप्फवासं, मल्लवासं, गंधवासं, चुण्णवासं वत्थवासं आभरणवासं वासंति अप्पेगतियादेवा हिरण्णविधिं भाएंति एवं सुवण्णविधिं रयणविधिं वयरविधिं, मल्लविधिं, चुण्णविधिं गंधविधिं वत्थविधिं आभरणविधिं भाएंति अप्पेगतियादेवा चउव्विहं वातितं वादेंति तंजहा—ततं विततं घणं झूसिरं, अप्पेगतिया

करते थे, कितनेक रत्न की वर्षा करते थे कितनेक पुष्प की माला, गंध, चूर्ण, वस्त्र व आभरण की वर्षा करते थे, कितनेक देवता हिरण्य विधि-हिरण्य रूप मंगलिक प्रकार करते थे, कितनेक सुवर्ण विधि, रत्न विधि, वज्र विधि, माल्य विधि, चूर्ण विधि, गंध विधि, वस्त्र विधि व आभरण विधि करते थे कितनेक देवता तत, वितत, घण व झूसिर यह चार प्रकार के वादित्र बजाते थे, कितनेक देवता चार प्रकार के गीत गाते थे, तद्यथा १ उत्क्षिप्त सो प्रथम से आरंभ करना, २ प्रवर्तक प्रस्ताविक गीत में प्रवर्तना, ३ मंदायित मूर्च्छना सहित गाना और ४ रोचितावसान यथोचित लक्षण से गाना कितनेक देवता चार प्रकार के अभिनय बतलाते हैं तद्यथा—१ दृष्टांतिक २ प्रातिश्रुतिक ३ सामंतविनीपातिक और ४ लोक मध्यावसान

देवा चउव्विहंगेय गायति तजहा—उक्खित्तय, पवत्तय, मदय, रोइ, वसाग ॥ अप्पे गतियादेवा चउव्विह अभिणय अभिणयति तजहा—दिट्ठतिय, पाडतिय, सामतोव-णिवातिय, लोगमज्झावसाणिय ॥ अप्पगातिया देवा दुत नट्टविधिं उवदसेति अप्पेगातिया देवा विलंबित, णट्टविधिं, उवदसेति, अप्पेगतियादेवा दुतविलंबितणाम णट्टविधिं उवद-सेति, अप्पगातिया देवा अंचिय णट्टविधिं उवदसेति, रिभिय णट्टविधिं उवदसति, अप्पेगातिया देवा अंचितरिभित णामदिव्व णट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतियादेवा आरभड नट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतियादेवा भसोल नट्टविहिं उवदसेति, अप्पेगतियादेवा

मानिक. कितनेक देवता दुत नामक नाटक बताते थे कितनेक देवता विलंबित नामक नाटक बताते थे, कितनेक देवता दुत विलंबित नाटक बताते थे, कितनेक देव अंचित नाटक बतलाते थे, कितनेक देव रिभित नाटक बतलाते थे कितनेक अंचित रिभित नाटक बतलाते थे, कितनेक आरभट नाटक बतलाते थे कितनेक भसोल नाटक बतलाते थे कितनेक आरभट भसोल नाटक बतलाते थे, कितनेक देवता उत्पात निपात, वर्त, संकुचित, प्रसारित, गमनागमन, भांत सभ्रांत नामक दीप्य नाटक बतलाते थे, कितनेक देवता शरीर पुष्ट बनाते थे, कितनेक देवता बूत्कार रूप बताते थे, कितनेक देवता तांडव नृत्य करते थे, कितनेक देवता लास्य रूप नृत्य करते थे, कितनेक देवता पुष्ट होते थे, बूत्कार रूप बनाते थे, तांडव नृत्य

आरभड भसोल भामदिव्व नट्टविधिं उवदसेंति, अप्पेगतिया देवा उप्पायणिवाय पवत्त सकुचिय पसारिय रयगरइय भत समत णाम दिव्व नट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतिया देवा पीणेंति, अप्पेगतिया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा तडवेंति, अप्पेगतिया देवा लासति अप्पेगतिया देवा आफोडेंति, अप्पे गतिया देवा वग्गेंति, अप्पेगतिया तिवति छिदति अप्पगतियादेवा अप्फोडेंति, वग्गति तिवति छिदति, अप्पेगतियादेवा हयहेसिय करेंति, अप्पेगतिया

करते थे व हास्य रूप करते थे, कितनेक देवता आस्फोट करते थे, कितनेक देवता परस्पर सहम होते थे, कितनेक देवता त्रिपदी छेदते थे, और कितनेक देवता आस्फोट करना सहम होना व त्रिपदी छेदना ये तीनों करते हैं, कितनेक देवता अश्व जैसे हेपारव करते थे, कितनेक देवता हाथी जैसे गुलगुलाट करते थे, कितनेक देवता रथ जैसे घणघणाट शब्द करते थे, कितनेक देवता अश्व जैसे हेपारव, हाथी जैसे गुलगुलाट व रथ जैसे घणघणाट ये तीनों शब्द करते थे, कितनेक देवता ऊंचे उछलते थे, कितनेक देवता नीचे गीरते थे, कितनेक देवता कठोर शब्द करते थे, कितनेक देवता ऊंचे उछलना, नीचे गीरना व कठोर शब्द करना ये तीनों करते थे, कितनेक

हत्थिगुलगुलाइय करेंति, अप्पेगतियादेवा रहघणघणाइय करेंति, अप्पेगतिया देवा उच्छेलेंति, अप्पेगतियादेवा पच्छोलेंति, अप्पेगतियादेवा उक्किट्ठीओ करेंति,अप्पेगतिया देवा उच्छालेंति पच्छालेंति उक्किट्ठीओ करेंति,अप्पेगतियादेवा सीहणाद णदांति अप्पेगतिया देवा पाददद्दर करेंति, अप्पगतियादेवा भूमिचवेढदलयति, अप्पेगतियादेवा सीहणाद पाददद्दरयभूमिचवेढ दलयति,अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति,अप्पेगतियादेवा बुक्कारेंति अप्पेगतिया थक्कारेंति अप्पेगतियादेवा पुक्कारेंति,अप्पेगतियादेवा वक्कारेंति,अप्पेगतियादेवा नामाइ

सिंहनाद करते थे, कितनेक पांव से दर दर शब्द करते थे कितनेक भूमि चपटा करते थे कितनेक सिंहनाद, दादर शब्द व भूमि चपेटा ये तीनों साथ करते थे कितनेक देवता हकार शब्द करते थे कितनेक बुत्कार शब्द करते थे,कितनेक थपकार शब्द करते थे कितनेक पूत्कार शब्द करते थे, कितनेक वकार शब्द करते थे,कितने नाम से बोलाते थे, कितनेक हकार, बूत्कार थपकार, पूत्कार, वकार शब्द व नाम से बोलाना यों सब साथ करते थे, कितनेक ऊंचे उछलते थे, कितनेक नीचे गीरते थे, कितनेक तीर्च्छे गीरते थे,कितनेक ऊंचे उछलना, नीचे गीरना व तीर्च्छे गीरना यों तीनों करते थे, कितनेक तपते थे,कितनेक जलते थे व कितनेक प्रतपते थे, कितनेक तपना, जलना व प्रतपना ये तीनों करते थे, कितनेक

साहेंति, अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति थक्कारेंति वुक्कारेंति नामाति साहेंति, अप्पेगतिया देवा उप्पयाति उप्पतति, अप्पेगतियादेवा णिवयाति अप्पेगतियादेवा परिवयाति, अप्पेगतियादेवा उप्पयाति परिवयाति, अप्पेगइया देवा जलंति, अप्पेगतियादेवा तवंति, अप्पेगतियादेवा पवंति अप्पेगइया देवा जलंतितवंतिपवंति अप्पेगतिया देवा गज्जंति, अप्पेगइया देवा विज्जुयायंति, अप्पेगइया देवा वासं वासंति, अप्पेगइया देवा गज्जंति विज्जुयायंति वासंवासंति, अप्पेगइया देवा सन्निवाय करेंति अप्पेगइया देवा वुक्कालिय करेंति, अप्पेगइया देवा कहकहेंति अप्पेगतिया देवा, दुहुदुहु करेंति, अप्पेगतिया देवा देवसण्णिवाय देवउक्कलित देवकहकह देवदुहदुहक करेंति अप्पेगतियादेवा वुज्जोय करेंति, अप्पेगतिया देवा विज्जुयार करेंति, अप्पेग-

गर्जना करते थे, कितनेक विद्युत करते थे, कितनेक वर्षा करते थे कितनेक गर्जना, विद्युत व वर्षा तीनों करते थे, कितनेक सन्निपात करते थे, कितनेक उत्कालिक करते थे, कितनेक कुह कहाट करते थे कितनेक दुह दुहाट करते थे कितनेक सन्निपात उत्कालिक कुह कहाट व दुहदुहाट करते थे कितनेक उद्योत करते थे कितनेक विद्युत् की तरह चमका करते थे कितनेक वस्त्र की वर्षा करते थे कितनेक देव उद्योत, विद्युत् तरह चमका व वस्त्र की वर्षा यों तीनों करके नाटक करते थे नाटक के

पचीस भेद कहे हैं इस का वर्णन रायप्रसेणी सूत्र में विस्तार पूर्वक है परन्तु यहां इसका किंचित कथन करते हैं १ आठ प्रकार के मंगलिकाकार नाटक—१ स्वस्तिक २ श्रीवत्स ३ नंदावर्त ४ वर्धमान ५ भद्रासन ६ कलश, ७ मत्स्य ८ दर्पन, २ आवर्त, प्रत्यावर्त, श्रेणि, प्रश्रेणि, स्वस्तिक, पुष्पमान, वर्धमान, मत्साडक, जारगार, पुष्पावलि, पद्मपत्र, सागर तरंग, वासंति लता, पद्मलता, इन चित्रों के आलेखना अभिनय प्रकाररूपाकार है ऐसा दूसरा नाटक विधि, ३ ईहामृग, ऋषभ, तुरंग, नर, मकर, विहग, व्याल, किन्नर, ससका सरभ, भ्रमर, कुंजर, वनलता, पद्मलता के विचित्र चित्र यह तीसरा नाटक विधि, ४एकचक्र दो चक्र,एक चक्रवाल, दो चक्रवाल, चक्रारधी चक्रवाल ऐसा चौथा नाटक विधि५ चंद्रावलि प्राविभक्ति सूर्यावलि प्रविभक्ति, वलयावलि प्रविभक्ति, तारावलि प्रविभक्ति, मुक्तावलि प्रविभक्ति, रत्नावलि प्रविभक्ति, कनकावलि प्रविभक्ति, हंसावलि प्रविभक्ति, एकावलि प्रविभक्ति, यह पांचवा नाटक विधि ६ चंद्रोद्गम प्रविभक्ति, सूर्योद्गम प्रविभक्ति यों उद्गमन प्रविभक्ति नामक छट्ठा नाटक विधि ७ चंद्रागमन प्रविभक्ति, सूर्यागमन प्रविभक्ति यों आगमन प्रविभक्ति नामक सातवा नाटक विधि, ८ चंद्रावरण प्रविभक्ति, सूर्यावरण प्रविभक्ति, यों आवरण नामक आठवा नाटक विधि ९ चंद्रास्तमन प्रविभक्ति, सूर्यास्तमन प्रविभक्ति यों अस्तमन प्रविभक्ति नामक नवमा नाटक विधि १० चंद्र मंडल प्रविभक्ति, सूर्य मंडल प्रविभक्ति, नाग मंडल प्रविभक्ति, यक्ष मंडल प्रविभक्ति, भूत मंडल प्रविभक्ति, राक्षस मंडल प्रविभक्ति, महोरग मंडल प्रविभक्ति, गंधर्व मंडल प्रविभक्ति, यह मंडल प्रविभक्ति नामक दशवा

नाटक विधि ११ अनुपम मंडल प्रविभक्ति, सिंह मंडल प्रविभक्ति, हय विलंबित, गज विलंबित, हय विलसित, गज विलसित, मत्त हय विलसित, मत्त गज विलसित, मत्त हय विलंबित, मत्त गज विलंबित और द्रुत विलम्बित नामक इग्यारहवा नाटक विधि १२ शकट प्रविभक्ति, सागर प्रविभक्ति, नाग प्रविभक्ति, सागर नाग प्रविभक्ति नामक बारहवा नाटक विधि १३ नंदा प्रविभक्ति, चंपा प्रविभक्ति, नंदा चंदा प्रविभक्ति नामक तेरहवा नाटक विधि १४ मत्स्यांडक प्रविभक्ति, मकरांडक प्रविभक्ति, जार प्रविभक्ति, मार प्रविभक्ति, मत्स्यांडक, मकरांडक, जार मार प्रविभक्ति नामक चौदहवा नाटक विधि, १५ ककार, खकार, गकार, घकार व ङकार प्रविभक्ति नामक पन्नरहवा नाटक विधि १६ चकार, छकार, जकार, झकार व ञकार प्रविभक्ति नामक सोलहवा नाटक विधि १७ टकार, ठकार, डकार, ढकार व णकार नामक सतरहवा नाटक विधि १८ तकार, थकार, दकार, धकार, नकार प्रविभक्ति नामक अठारहवा नाटक विधि, १९ पकार, फकार, बकार, भकार व मकार प्रविभक्ति नामक उन्नीसवा नाटक विधि २० अशोक पल्लव प्रविभक्ति, आम्र पल्लव प्रविभक्ति, जम्बू पल्लव प्रविभक्ति और कोशांब पल्लव प्रविभक्ति नामक बीसवा नाटक विधि २१ पद्मलता प्रविभक्ति, नागलता प्रविभक्ति, अशोक लता प्रविभक्ति, चंपकलता प्रविभक्ति, चूतलता प्रविभक्ति वनलता प्रविभक्ति, वासंतिलता प्रविभक्ति, अतिमुक्तलता प्रविभक्ति, श्यामलता प्रविभक्ति यों लता प्रविभक्ति नामक इक्कीसवा नाटक विधि है २२ द्रुत नामक बावीसवा नाटक विधि २३ विलम्बित नामक तेवीसवा नाटक विधि २४ द्रुत विलम्बित नामक चौवीसवा नाटक विधि २५ अंचित नामक

गतियादेवा चेलुक्खेव करेंति, अप्पेगतियादेवा वुञ्जाय विज्जुत्तार चेलुक्खेव करेंति, अप्पेगतियादेवा उप्पलहत्थगता जाव सहस्सपत्तहत्थगता घटहत्थगता कलसहत्थगता जाव धूवकडुच्छुय हत्थगया हट्टतुट्ठा जाव हरिसवससविसप्पमाण हियया विजयाए रायहाणीए सव्वतो समता आधावति परिधावति ॥ १५२ ॥ ततेण

पचीसवा नाटक विधि २६ रिभित नामक छब्बीसवा नाटक विधि २७ अचिल रिभित नामक सत्तावीसवा नाटक विधि २८ आर्भट नामक अट्ठावीसवा नाटक विधि २९ मशोल नामक गुनतीसवा नाटक विधि ३० भरमट मशोल नामक तीसवा नाटक विधि ३१ उत्पात, निपात प्रसक्त, संकुचित, प्रसारित, रचित, सम्भ्रान्त नामक इकतीसवा नाटक विधि और ३२ श्री श्रमण भगवत महावीर स्वामी के पूर्व भवका कथन करते हुए पहिले के मनुष्य भव, देव भव, चरम देव भव, चरम चवण, भरत क्षेत्र, अवसर्पिणी, तीर्थंकर जन्माभिषेक, चरम बालभाव, चरम यौवन, चरम काम भोग, चरम दीक्षा, चरम तप का आचरण चरम ज्ञान का उत्पन्न होना, चरम तीर्थ प्रवर्तना व चरम निर्वाण, इन सब के रूप प्रकाश करे यह बत्तीसवा नाटक विधि इस तरह बत्तीस प्रकार के नाटक कितनेक देव करते हैं कितनेक देव उत्पल कमल हाथ में लेकर यावत् सहस्र पत्र कमल हाथ में लेकर, कलश हाथ में लेकर, यावत् धूपदान हाथ में लेकर हृष्ट तुष्ट बने हुवे यावत् हर्ष से विकसित हृदयवाले बनकर विजया राजधानी में चारों तरफ फीरते थे॥१५२॥

विजयदेव चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ जाव सोलस आयरक्खदेव साहस्सीओ, अण्णेवि बहवे विजयरायहाणिवत्थव्वा वाण-मतरादेवाय देवीओय तहिं वरकमल पतिट्ठाणेहिं जाव अट्ठ सहस्सेण सोवाणियाण कलसाण तचत्र जाव अट्ठसहस्सेण भामज्जाण कलसाण सव्वोदगेहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएहिं सव्वड्ढिए जाव निग्घोसणाएण महता२इंदाभिसयेण अभिसिंचति, महया२इंदाभिसेयेण अभिसिंचित्ता पत्तेग२सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी—जय २ नंदा जय २ भद्दा जय २ नंदा भद्द ते

चार हजार सामानिक देवता, चार परिवार सहित चार अग्रमहिषी यावत् सोलह हजार आत्म रक्षक देव और विजया राज्यधानी के अन्य बहुत देव व देवियोंने श्रेष्ठ कमल में रहे हुवे यावत् १००८ सुवर्ण कलश यावत् १००८ मृत्तिकाके कलश के सब पानी, मृत्तिका, सब ऋतु के पुष्प यावत् सब वादित्र के शब्द से विजय देवता को इन्द्राभिषेक किया बडा इन्द्राभिषेक किये पीछे मस्तक पर आवर्तरूप अंजली करके प्रत्येक एसा आशिर्वचन बोलने लगे जयजय नंदा, जयजय भद्र, जयजय नंदा भद्र, तुम नहीं जिते हुवेका विजय करो, जिन पर जय किया है उन की प्रतिपालन करो, शत्रु पक्ष कि जिस का जय नहीं किया है

आणिय जिणाहि जियपालयाहि, अजिय जिणाहि जियसत्तुपक्ख जित च पालहि मित्तपक्ख, जियमज्झ साहित देवाणिइवसग्ग इदोइव, देवाण, चदोइव ताराण, चमरो इवअसुराण, धरणोइव नागाण भरहो इव मणुयाण, बहूणिपलिओवमाणि बहुणिसा-गरोवमाइ बहूणिपलिओवमसागरोवमाणि, चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण विजयस्सदारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयरायहाणिवत्थव्वाण वाणमतराण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव आणाईसर सेणावच्च कारमाण पालेमाणे विहराहि तिकट्टु महता २ सद्देण जयेण जयसद्द पउजति ॥ १५२ ॥ ततेण स विजयदेवे महया इदाभिसेण अभिसित्ते समाण

वस पर विजय करो, विजय किये हुवे मित्र पक्ष की प्रतिपालना करो, विजय किये हुवे देव सभा में उपसर्ग रहित रहो देव में इन्द्र समान, तारों में चन्द्र समान, असुर में चमर समान, नाग में धरणेन्द्र समान, मनुष्य में भरत समान, बहुत पल्योपम बहुत सागरोपम, बहुत पल्योपम सागरोपम तक चार हजार सा-मानिक यावत् आत्म रक्षक देव विजयद्वार विजया राज्यधानी, और विजया राज्यधानीमें रहनेवाले अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियों पर आज्ञा ईश्वरपना व सेनापतिपना करते हुए पालते हुवे यावत् विचरते रहो यों कहके जयाजयकारी शब्दों बोलने लगे ॥ १५२ ॥ विजय देव को परान अभिषक हुवे पीछे वह अपने

सीहासणाओ अब्भुट्ठइ २ त्ता अभिसेयसभाओ पुरत्थिमेण दारेण पडिणिक्खमेति २ त्ता जेणामेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति २ त्ता अलंकारियसभं अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ पुरत्थिमेण दारेण अणुपविसति २ त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २ त्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे॥ तत्तेण तस्स विजय देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगादेवा अभियोगेदेवे सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! विजयस्स देवस्स अलंकारिय भंड उवणेह॥ ततेण अलंकारिय भंड जाव उवट्ठावेंति ततेण से विजएदेवे तप्पढमयाए पम्हलसुमालाए दिव्वाए सुरभीए

सिंहासन से उठा और अभिषेक सभा के पूर्वद्वार से नीकलकर अलंकारिक सभा तरफ गये उस की प्रदक्षिणा करके पूर्व के द्वार से उस में प्रवेश किया वहां सिंहासन की पास जाकर उस पर पूर्वाभिमुख से बैठा उस समय सामानिक व आभ्यंतर परिषदा वाले देवोंने आभियोगी देवों को बुलवाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय! विजय देव के अलंकार के भंड (करंडिये) शीघ्रमेव ले आवो उनोंने अलंकारिक भंड लाकर रखदिये तब सब से पहिले विजय देवने रोम सहित सुकोमल दीव्य सुगंधी कापायित वस्त्र से अपने गात्रको पूछा तत्पश्चात् गोशीर्ष चंदन से गात्रों का अनुलेपन किया, फीर नासिका के वायु से उडे

अजियं जिणाहि, जियपालयाहि, अजियं जिणाहि जियसत्तुपक्खं जितं च पालेहि मित्तपक्खं, जियमज्झे साहित देवाणिरुवसग्गं इंदोइव, देवाणं, चंदोइव ताराणं, चमरो इवअसराणं, धरणोइव नागाणं भरहो इव मणुयाणं, बहूणिपलिओवमाणि बहूणिसा-गरोवमाइं बहूणिपलिओवमसागरोवमाणि, चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं विजयस्सदारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिंच बहूणं विजयरायहाणिवत्थव्वाणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहि तिकट्टु महता २ सद्देणं जयेणं जयसद्दं पउंजंति ॥ १५२ ॥ ततेणं से विजयदेवे महया इंदाभिसेणं अभिसिंचे समाणे

बल पर विजय करो, विजय किये हुवे मित्र पक्ष की प्रतिपालना करो, विजय किये हुवे देव सभा में उपसर्ग रहित रहो देव में इन्द्र समान, तारों में चंद्र समान, असुर में चमर समान, नाग में धरणेन्द्र समान, मनुष्य में भरत समान, बहुत पल्योपम बहुत सागरोपम, बहुत पल्योपम सागरोपम तक चार हजार सा-मानिक यावत् आत्म रक्षक देव विजयद्वार विजया राजधानी, और विजया राजधानीमें रहनेवाले अन्य बहुत वाणव्यन्तर देव व देवियों पर आज्ञा ऐश्वरपना व सेनापतिपना करते हुए पालते हुवे यावत् विचरते रहो यों करके जयविजयकारी शब्दों बोलने लगे ॥ १५२ ॥ विजय देव को महान अभिषेक हुवे पीछे वह अपने

कप्परुक्खयपि, अप्पाणं अलंकिय विभूसिय करित्ता दद्दरमलय सुगंधगंधितेहिं गंधाहिं गायाइं भुकुडेति २ त्ता दिव्वंच सुमणदामं पिणिधति, ततेणं से विजये देवे केसालंकारेण वत्थालंकारेण मल्लालंकारेण आभरणालंकारेण चउव्विहेणं अलंकारेण अलंकित विभूसिए समाणे पडिपुण्णलंकारेण सीहासणाओ अब्भूट्ठेति २ त्ता अलंकार सभाउ पुरत्थिमिल्लेणं, दारेणं पडिनिक्खमति २ त्ता जेणेव ववसाय सभा तेणव उवागच्छति २ त्ता ववसायसभं अणुप्पदाहिणं करेमाणे २ पुरत्थिमिल्लणं दारेणं अणुप्पविसति २ त्ता जेणेव सीहासणं तेणेव उवागच्छति २ त्ता सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥१५४॥ तएणं तस्स विजयस्स देवस्स अभियोगियदेवा पोत्थयरयणं उवणेति॥ततेणं से विजए

कल्प वृक्ष समान स्वतः को अलंकृत विभूषित किया तत्पश्चात् दर्दर, व मलय नामक चन्दन की सुगंध से अपने शरीर का सत्कार किया, सत्कार करके दीव्य मनोहर पुष्प माला पहिने, तत्पश्चात वह विजय देव केशालंकार, वस्त्रालंकार, माल्यालंकार, आभरणालंकार यों चार प्रकार के अलंकार से विभूषित बनकर प्रतिपूर्ण अलंकार सहित सिंहासन से नीचे उतरा और अलंकारिक सभा के पूर्व द्वार से नीकलकर व्यवसाय सभा के निकट गया वहां उस की प्रदक्षिणा करके पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और जहां सिंहासन था वहां आया वहां सिंहासन पर पूर्वाभिमुख से बैठा ॥ १५४ ॥ वहां विजय देवता के आभि

गंधकासाईए गाताइं लूहेति २ त्ता सरसेण गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ २ त्ता तआणंतरं च णं णासाणीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगधवलं कणगखचितकम्मं आकासफालिहसारसप्पहं अहतं दिव्वं देवदूसजुयलं णियंसेइ २ त्ता, हारं पीणद्धेइ २ त्ता अद्धहारं पिणद्धइ २ त्ता एवं एकावलिं पिणिधित्ता, एवं एतेणं अभिलावेणं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं कडगाइं तुडियाइं अंगयाइं केयूराइं, दससुद्दियाणंतकंपि कडिसुत्तगंधे कडिसुत्तकं मुरविं कंठमुरविं पालंबंति कुंडलाइं चूडामणिचित्तरयणकडं मउडं पिणिधेइ मउडं पिणिधित्ता, गंठिम वेढिम पूरिम संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खयंपि अप्पाणं अलंकिय विभूसितं करेति

वैसा वस्त्र को मनोहर सब वर्ण व स्पर्श युक्त घोडे की लाल से भी अत्यंत सुकमाल, श्वेत, सुवर्णमय तार सहित, आकाश अथवा स्फटिक रत्न जैसी प्रभावाले अखंडित दीव्य दूष्य वस्त्र का युगल उनने पहिना वे वस्त्र पहिन कर हार, अर्ध हार, एकावलि, मुक्तावलि, कनकावलि, रत्नावलि, हार, कडे, त्रुटित, अंगद व केयूर पहिने, दश अंगुलियों में दश मुद्रिका, कटि मेखला, कंठ में मंगलिक सूत्र, कुंडल, और अनेक रत्न जडित चूडामणि नामक मुकुट पहना, ग्रथीम माला प्रमुख, वेष्टिम विंटे हुवे गेंद प्रमुख, पुरिम वांसकी सलाका डालकर बनाई हुई और संघातिम-जोडकर बनाई हुई ऐसी चार प्रकार की पुष्प माला से

जाइ तत्थउप्पलाइ पउमाइ जाव सतसहस्स पत्ताइ ताइ गिण्हति २ त्ता णदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ २ त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थगमणाए, तएणतस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ जाव अण्णे बहवे वाण-मतराय देवादेवीओ अप्पगातिया उप्पलहत्थगता जाव सत्तपत्त सहस्सपत्तहत्थगया विजय देव पिट्ठितो अणुगच्छति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स बहवे आभिओगियादेवा देवीओय कलस हत्थगता जाव धूवकुडुच्छय हत्थगता विजय देव पिठतो अणुगच्छति ॥ ततेण से विजएदेवे चउहिं सामाणिय

में से नीकल कर सिद्धायतन की पास जाने लगा विजय देवताकी पीछे चार हजार सामानिक यावत् अन्य बहुत वाणव्यतरदेव व देवियों हाथ में उत्पल कमल लक्षपत्र कमल लेकर चले तत्पश्चात विजयदेव के बहुत आभियोगिकदेव व देवियों हाथ में कलश यावत् धूपादि लेकर उस पीछे के जाने लगे अब विजय देव चार हजार सामानिक यावत् विजया राज्यधानीके अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियोंकी साथ परिवरा हुवा सब वादित्र के शब्द से सिद्धायतन के पास गया वहां सिद्धायतन को प्रदक्षिणा देकर पूर्वद्वार से प्रवेश किया और जहां देवछंद रहा हुवा है वहां जिन प्रतिमा को देखते ही प्रणाम किया जिन प्रतिमा को मोर

देवे पोत्थयरयण गिण्हइ २त्ता पोत्थरयण मुयति २त्ता पोत्थयरयण विहाडेति २ त्ता पोत्थयरयण वाएइ २ त्ता धम्मिय ववसायपि गेण्हति२त्ता पोत्थरयण पडिनिक्खमति २ त्ता सीहासणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता ववसायसभातो पुरत्थिमिल्लेण दारेण पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव णंदा पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति २त्ता णंदापुक्खरिण अणुप्पयाहिण करेमाणा पुरत्थिमिल्लेण तोरणेण अणुपविसति २ त्ता पुरत्थिमिल्लगति सेमाणपडिरूवेण पच्चोरुहति २ त्ता हत्थपाद पक्खालेति २ त्ता एगमह सेत रजतामय विमलसलिल पुण्णमत्तगय महामुहाकिति, समाण भिंगार पगिण्हति २त्ता

वैमानिक देव पुस्तक रत्न लाये विजय देवताने पुस्तक रत्न हाथ में लिया, उसे छोडा, फीर उस खोलकर पुस्तक रत्न बांचा, अपने कुलधर्म के व्यवसाय योग्य पदार्थ ग्रहण किये फीर उसे नीचे रखकर सिंहासन से नीचे उतरा और व्यवसाय सभाके पूर्वद्वार से बाहिर नीकलकर नंदापुष्करणीके निकट गया वहां उसे प्रदक्षणा कर के पूर्व के तोरण से प्रवेश किया और पूर्व के त्रिसोपान (पक्तिये) से उस में उतरा वहां हस्त पाद का प्रक्षालन किया, एक बडा श्वेत चांदीमय, निर्मल पानी से परिपूर्ण हाथी के मुखाकार समान एक भृंगार (झारी) ग्रहण किया, और वहां जो उत्पल, पद्म यावत् सहस्रपत्र य उन को भी ग्रहण किये, फीर नंदा पुष्करणी

दिव्वाइ देवदूसजुयलाइ णियसेइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिय मल्लेहिय अच्चेहिय अच्चेहि त्ता पुप्फारुहण गंधारुहण चुण्णारुहण आभरणारुहण करेति २ त्ता आसत्तो सत्त- विउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलाव करेति, असत्ते सत्तविउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलाव करेत्ता अच्छाहिं सण्हेहिं सएहिं रएतामएहिं अच्छरसतंडुलेहिं जिणपडिमाण पुरतो अट्ठट्ठमंगलए आलिहति तंजहा—सोत्थिय सिरिवच्छे जाव दप्पण, अट्ठट्ठमंगलगे आलेहित्ता कयग्गाहगहित करयलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णेण कुसुमेण मुक्कपुप्फ पुजोवयार कलितं करेति २ चंदप्पभ वइर वेरुलिय विमल दंड कंचणमणिर

करने जैसे हाथ से ग्रहण करते हुवे नीचे गिरे हुवे पुष्पों को छोडकर पांच वर्ण के पुष्पों का पुंज किया, चंद्रप्रभा, वज्र व वैडूर्य रत्नमय विमल दंडवाला, कंचन मणि रत्न जैसा विविध प्रकारसे जडा हुवा और मनोहर कृष्णागर, कुंदरूक्क तुरुक्क के धूप से सुगंध पृष्टि करता हुवा वैडूर्य रत्नमय धूपका कडछा लेकर धूप दिया, धूप देकर विशुद्ध छंदादिक दोष रहित ग्रंथ युक्त महा अर्थवाले १०८ महा वृत्तवाले श्लोक से स्तुति की फीर सात आठ पांव पीछा जाकर बांया जानु खडा रखकर दहिणा जानु नीचे रखा तीन वार मस्तक धरणितल पर लगाया फीर किंचित् ऊंचा बनकर कहे, तुटित से स्तंभित भुजा ऊंची

साहस्सीहिं जाव अण्णेहिय बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए जाव निग्घोसणाइए रवेणं जेणेव सिद्धाययणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सिद्धायतणं अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेण दारेण अणुपविसइ २ त्ता देवच्छदए तेणेव उवागच्छति २ त्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति २ त्ता जिणपडिमाओ लोमहत्थएणं पमज्जति लोमहत्थएणं पमज्जित्ता सुरभिणा गंधोदएणं न्हाणेइ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणित्ता दिव्वाए सुरभीए गंधकासाईए गाताइं लूहिते लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिंपइ २ त्ता जिणपडिमाणं अहयाइं सेताइं

पीछ की पूजनी से पुंजी, सुगंधित गंधोदक से प्रक्षालन किया, दिव्य सुगंधित गंध कापायिक वस्त्र से उन के गात्रों पुंछे, गोशीर्ष चन्दन से गात्रों पर लेपन किया, जिन प्रतिमा को अखंडित श्वेत उज्वल देव दूष्य वस्त्र — पहिनाये, अग्रउत्तम प्रधान सुगंधित द्रव्य व पुष्प की माला से अर्चनाकर, पुष्प चढाये, उत्तम सुगंधी पद व चढाये, चूर्णवास चढाये, वस्त्र चढाये, आभरण चढाये, ऊंचे से पृथ्वी तल पर्यंत लम्बी होती हुई पुष्प मालाओं का कलाप किया किंचित् भत मुकुपाल चांदीमय अत्यन्त निर्मल अक्षत (चांवल) से आठ २ मंगलिक का आलेखन किया, तद्यथा १ स्वास्तिक श्रीवत्स यावत् दर्पण कलपत्र ग्रहण

* जिन प्रतिमा को वस्त्र पहिनाये हैं इसलिये यह तीर्थंकर की प्रतिमा नहीं है

तणस्स बहुमज्झदेसभाये तेणेव उवागच्छति २ त्ता दिव्वाये उदगधाराए अब्भु-क्खेति २ सरसेण गोसीस चदणेण पचगुलितलेण मडल आलिहेत्ता चच्च दलइत्ता कयग्गाहग्गहित करतलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णेण कुसुमेण मुक्कपुप्फ पुजो-वयार कलित २ धूव दलयति २ त्ता जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्लेणदारे तेणेव उवागच्छइ लोमहत्थय गण्हति दारविग्गयउ सालिभजिआओय वालरूवयेय लोमहत्थयेण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ सरसेण गोसीसचदणेण पचगुलितलेण अणुलिंपति चच्चये दलयति २ पुप्फारुहण जाव आभरणारुहण करेति २ आसत्तोसत्तविपुल जाव मल्लदाम कलाप करेति २ कयग्गाहग्गहिय जाव पुजोवयार कलित करेति २ त्ता

लेकर द्वारशाख, सालभिका और व्याल प्रमुख रूप को पूजे, दीव्य पानी की धारा मे उन का प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चदन से पांचों अगुलियों के छापे से लेपन किया, अर्चना की, यहां पुष्प चढाये यावत् आभरण चढाय नीचे लम्बी लटकती हुई मालाओं का कलाप किया केशकलाप ग्रहण करने जैसे हाथ में से गीर गये हुवे पुष्पों का छोडकर पांच वर्णवाले पुष्पों का समुह किया और वहां धूप दिया फीर वहां से मुख मडप के मध्य भाग में आया उस को मोरपींछ की पूजनी स स्वच्छ किया, दीव्य पानी की धारा स प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गाशीर्ष चंदन से पांच अगुलीतल से मडल का आलेखन किया, चदन से चर्चा की, यावत धूप दिया फीर वहां से मुख मंडप के पश्चिम दिशा के द्वार के पास

यण भत्तिचित्त कालागरु पवर कुंदरुक्क तुरुक्कधूवगंधुत्तमाणुविद्ध च धूमवट्टिं विणि-मुयत वेरुलियमत कडुच्छुय पग्गहिय पयत्तेण धूव दाऊण जिणपडिमाण अट्ठसय विसुद्धगथ जुत्तेहिं महावित्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं सथुणइ २ त्ता सत्तट्ठ पयाइ उसरति २ त्ता वाम जाणु अचति २ त्ता दाहिण जाणु धरणितलसिनिहट्टु धरणितलसि णिवाडेति २ त्ता तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलसि णामेइ २ इसिं पच्चुण्णमति २ कडयतुडिय थभियाओ भूयाओ पडिसाहरति करतलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थये अजलिकट्टु एव वयासी—णमोत्थुण अरहताण भगवताण जाव सिद्धिगइ णामधेय ठाण सपत्ताण, तिकट्टु वदित्ता णमसित्ता जेणेव सिद्धाय-

उठाइ दोनों हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन किया, मस्तक से अंजली करके ऐसा बोला अरिहंत भगवंत यावत् सिद्धगति को प्राप्त सिद्ध भगवान को मेरा नमस्कार होवे यों नमस्कार करके सिद्धायतन के मध्य भाग में आया वहां दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, वहां रस सहित गोशीर्ष चंदन से पांच अंगुली के छापे देकर मंडल की आलेखना की पर्चा पूजा की केशपाश ग्रहण करने जैसे हाथ में से पडे हुवे पुष्पों का त्याग कर शेष पांच वर्णवाले पुष्पों का पुंज किया और धूप दिया वहां से सिद्धायतन का दक्षिण दिशा का द्वार था वहां आया वहां मोर पीछ की पूंजनी हाथ में

लोमहत्थएण पमज्जइ २त्ता दिव्वाये उदगधाराये सरसगोसीस चंदणेण पुप्फ रुहण जाव आसत्तो कयग्गाह धूव दलयति जेणेव मुहमंडवस्स पुरच्छिमिल्ले दारे तंचेव सव्व भाणियव्व जाव दारसव्व, भाणियव्वं, जेणेव दाहिणिल्ले दारे तंचेव पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामये अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं गेण्हति २ त्ता अक्खाडगं च मणिपाढियं च सीहासणं च लोमहत्थगेण पमज्जइ २ त्ता दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खे २ पुप्फारुहण जाव धूव दलयति २, जेणेव पेच्छाघरमंडवपच्चत्थिमिल्लेदारे दारच्चणिया, उत्तरिल्लाखंभपंति तहेव, पुरत्थिमिल्ले दारे दाहिणिल्लेदारे तहेव, जेणेव चेइय थूभे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं गेण्हति २ त्ता चेइयथूभं लोम-

मध्य भाग में वज्र रत्नमय अखाडे पर रही हुई मणिपीठिका का सिंहासन के पास आया उसकी मोरपींछ की पूंजनी से प्रमार्जन की, दीव्य उदक धारा से प्रक्षालन किया, पुष्प चढाये यावत् धूप किया फीर वहां से प्रेक्षाघर मण्डप के पश्चिम द्वार के पास आया यहां द्वार पूजा का सब कथन करना वहां से उत्तर दिशा का स्थम पंक्ति की पास आया वहां भी वैसा ही किया वहां से पूर्व दिशा के द्वार के पास आया वहां भी वैसे ही किया, वहां से दक्षिण दिशा के द्वार के पास आया वहां भी वैसे ही किया वहां से चैत्य स्तूप की पास आया वहां मोर पींछ की पूंजनी ग्रहण की मोर पींछ की पूंजनी से

धूवं दलयति २ जेणेव मुहमडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ बहुमज्झ-देसभाये लोमहत्थेण पमज्जति२त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइति२ सरसेण गोसीस चदणेणं पचगुलितलेण मडलग आलिहति चच्चये दलयाति २ कयग्गाहि जाव धूव दलयति २ जणेव मुहमडवगस्स पचत्थिमिल्लेण दारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोम-हत्थग गेण्हति २ दारविग्गाउसयमालभ जियाओ वालरूवएय लोमहत्थेयेण पमज्ज-ति २ धिव्वाए उदगधाराये अब्भुक्खेति २ सरसेण गोसीस चदणेण जाव चच्चेय दलयति जाव पुप्फारोहण असत्तोसत्तकयग्गाह धूवदलयति २ जेणेव मुहमडवगस्स उत्त-रिल्लाण खमपाति तणेव उवागच्छइ लोमहत्थग गिण्हति२त्ता खभेय सालिभजियाउय

माया, वहां पूजनी की ओर द्वार, पारसाख व पुतलियों को पूजनी से पूजी दीव्य पानी की धारा से सम की प्रक्षालना की, श्रेष्ठ गोशीर्ष चदन से पर्चना की यावत् पुष्पचढाये व धूप किया वहां से मुख मडप के उत्तर दिशी के द्वार की स्थम पंक्ति की पास आया वहां हाथ में मार पूजनी लेकर स्थम व शालभिका की प्रमार्जना की, दीव्य उदक धारा से प्रक्षालन किया गोशीर्ष चन्दन से पांच अगुलितल स मडल का आलेखन किया वहां पुष्प चढाये यावत् धूप किया फीर वहां स मुखमडप के पूर्व द्वार की स्थम पक्ति की पास आया वहां पूर्ववत् सब कथन करना, यावत् दक्षिण द्वार पर्यंत सब द्वार कहना फीर वहां से प्रेक्षाघर मंडप के बहुत

तोरणेय, सालिभंजियाओय वालरूवएय लोमहत्थएण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराए सरसेण गोसीसचंदणेणं अणुलिंपति २ पुप्फारुहण जाव धूवं दलयति २ सिद्धायतणं अणुप्पयाहिणं करेमाणे जेणेव उत्तरिल्लाणंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ २त्ता तंचेव महिंदज्झया चेतियरुक्खे चेतियथूभे पच्चात्थिमिल्ला मणिपेढिया जिणपडिमा उत्तरिल्ला पुरत्थिमिल्ला दक्खिणिल्ला पेच्छाघरमंडवस्सवि तहेव जहा दक्खिणिल्लस्स पच्च-त्थिमिल्लदारे जाव दक्खिणिल्लाण खंभपंती मुहमंडवस्सवि तिण्हदारेण अच्चणिया भाणिऊण दक्खिणिल्लाण खंभपंती उत्तरेदारे पुरच्छिमेदारे सेस तेणेव कमेण जाव

चंदन से विलेपन किया, पुष्पारोपण किया यावत् धूप किया यह सिद्धायतन के दक्षिण द्वार की पूजा हुई अब सिद्धायतन को प्रदक्षिणा करता हुआ उस के पीछे के भाग से उत्तर दिशा के द्वारवाली नंदा पुष्करणी की पास आया वहां अनुक्रम से महेन्द्र ध्वजा, चैत्य वृक्ष, चैत्य स्तूप, पश्चिम दिशा की मणि पीठिका, जिन प्रतिमा, उत्तर, पूर्व व दक्षिण दिशा की मणिपीठिका व प्रतिमा की पूजा की वहां से प्रेक्षाघर मंडप के पास गया उस का कथन दक्षिण दिशा के प्रेक्षाघर जैसे कहना वहां से पश्चिम दिशा के द्वार के पास गया यावत् दक्षिण दिशा की स्तंभपंक्ति, मुखमंडप के तीनों द्वार की अर्चना कहना यावत् दक्षिण दिशा के प्रेक्षा स्तंभपंक्ति की अर्चना की यों क्रमशः सब करते हुवे यावत्

हरएण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराए सरसेण पुप्फारहण आमत्तोसत्त जाव धूवं दलयति २ जेणेव पञ्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ २ जिण-पडिमाए आलोए पणामं करेति २ त्ता लोमहत्थगं गेण्हति २ त्ता तचेव सव्वं जं च जिणपडिमाणं जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं वंदति नमंसति, एवं उत्तरिल्लएवि एवं पुरत्थिमिल्लाएवि दाहिणिल्लाएवि, जेणेव चेइयरुक्खे दारविही, जेणेव मणिपेढियाविही जेणेव महिंदज्झए, दारविही, जेणेव दाहिणिल्लाए नंदापुक्खरिणि तेणेव उवागच्छइ २ लोमहत्थगं गेण्हति २ चेइयाउयति सोमाणं पडिरूवयेय,

चैत्य स्तूप की प्रमार्जना की दीव्य उदकरस से प्रक्षालन किया पुष्प चढाये यावत् धूप किया वहां से पश्चिम दिशा की मणिपीठिका के पास जहां जिन प्रतिमा थी वहां आया जिन प्रतिमा को देखते प्रणाम किया यावत् जिन प्रतिमा का जो अधिकार है वह सब यहां कहना यावत् सिद्ध गति में प्राप्त हुए अरिहंत को नमस्कार होवो यों वंदना नमस्कार किया ऐसे ही उत्तर, पूर्व व दक्षिण की मणिपीठिका व जिन प्रतिमा का जानना फीर वहां से चैत्य वृक्ष के पास आया, वहां द्वार विधि जैसे पूजा की वहां से महेन्द्र ध्वजा की पास आया उस की भी वैसे ही पूजा की वहां से दक्षिण दिशा की नंदा पुष्करणी के पास आया वहां मोर पींछ की पूंजनी ग्रहण की, वहां वेदिका, पांवाथिय, तोरण पुतली व व्याल रूपक इन सब की पूंजनी से प्रमार्जना की, दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, श्रेष्ठ गोशीर्ष

विहाडेइ २ त्ता जिणसकहा लोमहत्थयेणं पमज्जति २ त्ता सुरभिणा गंधोदएण तिसत्तखुत्तो जिणसकहाओ पक्खालेति सरसेण गोसीस चंदणेण अणुलिंपइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहिय अच्चणिचा धूव दलयाति २ त्ता वइरामयेसु गोलवट्ट समुग्गयेसु पडिनिक्खमेति, वइरामएसु गोलवट्ट समुग्गयेसु पडिणिक्खमित्ता पुप्फारुहण जाव आभरणारुहण करइ माणवक चेतियखंभे लोमहत्थएण पमज्जति २ दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खेति २ त्ता सरसेण गोसीस चंदणेण दलयाति २ पुप्फारुहण जाव आसत्तोसत्तकयग्गाधूव दलयति २ जेणव सभाएसुधम्माए बहुमज्झदेसभाए तचेव जेणव सीहासणे

की, श्रेष्ठ गोशीष चंदन से लेपन किया श्रेष्ठ प्रधान गंध माला से अर्चना की और धूप किया, फीर वज्र रत्नमय गोल डब्बे में जिन दाढा रखदी और उस पर पुष्पारोपण यावत् आभरण का आरोपण किया माणवक चैत्य स्थंभ की प्रमार्जना की, दिव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से लेपन किया, पुष्प का आरोपण यावत् धूप किया वहां से सुधर्मा सभा के मध्य भाग में आया वहां उस ही प्रकार अर्चना की यावत् जहां सिंहासन है वहां आया, वहां आकर अर्चना कर वैसे ही द्वार की अर्चना कर वहां से देव शैय्या के पास आया वहां से छोटी महेन्द्र ध्वजा के पास आया, वहां से

पुरत्थिमिल्ला णंदापुक्खरिणि जेणेव सभासुधम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाये॥ १५५ ॥ ततेण तस्स विजय देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ एयप्पभितिं जाव सव्वट्ठि-सिद्धेय जाव णाइयरवेण २ जणेव सभासुहम्मा तणव उवागच्छति २ त्ता सभं सुहम्म अणुप्पयाहिणी करेमाण २ पुरच्छिमिल्लेण दारेण अणुप्पविसति २ आलोए जिणसकहाण पणाम करेंति जणेव मणिपेढिया जणेव मणिवय चेतियखंभे जणेव वइरामया गोलवट्टसमुग्गका तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता वइरामये गोलवट्ट समुग्गये लोमहत्थण पमज्जइ २ वइरामए गोलवट्ट समुग्गये

पूर्व में नंदा पुष्करणी के पास सुधर्मा सभा में आने के लिये उद्यत हुआ ॥ १५५ ॥ विजय देवता के चार हजार सामानिक यावत् सब ऋद्धि सहित यावत् वादिंत्र के शब्द से वह विजय देव सुधर्मा सभा की पास आया इस को प्रदक्षिणा करके पूर्व के द्वार से उस में प्रवेश किया वहां जिन दाढा को देखते ही प्रणाम किया वहां से जहां मणिपीठिका, जहां माणवक चैत्य स्तंभ व जहां वज्ररत्नमय गोल डब्बे थे वहां आया वहां पूंजनी ग्रहण की वज्ररत्नमय गोल डब्बे की पूंजनी से प्रमार्जना की, गोल डब्बे खोल दिये और जिन दाढा की पुंजनी से प्रमार्जना की, सुगंधी पानी से जिनदाढा की इक्कीस वार प्रक्षालना

अणुलिंपति २ त्ता अग्गेहिंवराहिं गधेहिंय मल्लेहिय अच्चणेति मल्लेहिय अच्चाणित्ता सीहासण लोमहत्थएण पमज्जति जाव धूव दलयति सेस तहेव नदा जहा हरयस्स तहा जेणेव मणिपेढिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आभिओगिएदवे सद्दावेति २ त्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसुय तिएसुय चउक्केसुय चउम्मुहेसुय महापहे पासाएसुय पागारेसुय अट्टालएसुय चारियासुय गोपुरेसुय तोरणेसुय वावीसुय पुक्खरिणीसुय जाव बिलपंति, गोमुय आरामेसुय उज्जाणेसुय काणणेसुय वणेसुय वणसडेसुय वणराईसुय अच्चणिय करेह करेत्ता, ममयेमाणत्तिय

तीन सभा में सिंहासन की अर्चना करना और द्रह की पूजा नंदापुष्करणी जैसे करना वहां से व्यवसाय सभा में आया वहां पुस्तक रत्न मारपींछ की पुंजनी से पुंजा दीव्य उदकधारा से प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से लेपन किया, श्रेष्ठ प्रधान गंध व माला से अर्चन किया फीर सिंहासन की पूंजनी से प्रमार्जना की यावत् धूप किया शेष सब पूर्ववत् जानना नंदा पुष्करणी जैसे द्रह का करना वहां से मणि पीठिका के पास जाकर आभियोगिक देव को बुलाये और ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय! शुभ विजया राजधानी में शृंगाटक, त्रिक, चोक, चतुर्मुख, महापथ, प्रासाद, प्राकार (कोट) अट्टालक, चरिका (रास्ते) गोपुर, तोरण, वावडी, पुष्करणी, यावत् बिल, गोमुख, बगीचा, उद्यान, कानन, वन, वनखण्ड

तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव दारचणिता जेणेव देवसयणिज्जे तचेव जेणेव खुड्ड महिंदज्झये तचेव जेणेव पहरण कोसे चोप्पाल तणेव उवागच्छति २ त्ता पत्तेय पहरणाई लोमहत्थएण पमज्जति २ त्ता सरसेण गोसीसचदणेण तहेव सव्व सेसवि दक्खिण दारवि आदि करेतु तहेव णेयव्वजाव पुरत्थिमिल्लाणदापुक्खरणी सव्वाण सभाण जहा सुधम्माए सभाए तहा अच्चणिया उववाय सभाए णवरि देवसयणिज्जस्स अच्चणिया, सेसासु सीहासणेण अच्चणिया हरयस्स, जहा णदाए पुक्खरिणीए अच्चणिया ववसायसभाए पोत्थरयण लोमहत्थ॰ दिव्वाए उदग धाराए सरसेण गोसीस चदणेण

वहां कोश योठ फलानामक कोप है वहां आया वहां प्रत्येक शस्त्र को मारपीछे की पुजनी से पूजा, श्रेष्ठ गोशीर्ष चन्दन से विलेपन किया, यों सब पूर्ववत् जानना सुधर्मासभा से नंदापुष्करणी पर्यंत ऐसे ही कहना सिद्धायतन जैसे दक्षिणद्वार मुख मंडप, चैत्य स्तूप, चार जिन प्रतिमा, चैत्यवृक्ष, माहेन्द्र ध्वजा, और नंदापुष्करणी की अर्चना की ऐसे ही सुधर्मासभा के उत्तर दिशा के द्वार से पूर्वोक्त कही इतनी वस्तु का पूजन किया ऐसे ही पूर्वदिशी का जानना सब सभा का सुधर्मा सभा जैसे कहना उपपात सभा का वैसे ही कहना परंतु इस में देव शैय्या भी कहना और

ततेण से विजये देवे चउहिं सामाणिय देवसाहस्सीहिं जाव सोलसेहिं आयरक्ख देवसाहस्सीहिं सव्विड्ढीए जाव णादितेण जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति २ त्ता सभ सुहम्म पुरत्थिमेण दारेण पविसति अणुपविसित्ता जेणेव मणिपढिया तेणेव उवागच्छाति २ सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ १५७ ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेण पत्तेय २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसियति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पुरत्थिमेण पत्तेय २ पुव्वणत्थे भद्दासणेसु णिसीयति॥ ततेण तस्स

चार हजार सामानिक यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देव की साथ सब ऋद्धि यावत् वादित्र के शब्द से जहां सुधर्मा सभा है वहां जाने लगा सुधर्मा सभा में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और मणिपीठिका के पास आकर सिंहासन पर पूर्वाभिमुख से बैठा ॥ १५८ ॥ तत्पश्चात् विजय देवता के चार हजार सामानिक देव अनुक्रम से आये, और ईशानकून में पूर्वोक्त भद्रासन पर बैठे तत्पश्चात् उस की चार अग्रमहिषी पूर्व दिशा में पहिले वर्णन किये हुवे भद्रासन पर बैठी, उस के पीछे आभ्यन्तर परिषदा के आठ हजार देव पृथक् २ अग्नि कोन में भद्रासन पर बैठे, दक्षिण दिशा में भद्रासन पर मध्य परिषदा के

खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥ ततेण ते अभिउगियादेवा विजयेण देवेण एव वुत्ता समाणा जाव हट्ठतुट्ठा विणएण पडिसुणेंति विणएण पडिसुणेत्ता विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसु जाव अच्चणिय करेत्ता जेणेव विजये देवे तेणव उवागच्छति २ एयमाणिय पच्चप्पिणति ॥ १५६ ॥ ततेण विजयेदेवे तेसिण अभिउगियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ चित्तमाणदिये जाव हियये जेणेव णदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ त्ता पुरच्छिमिल्लेण तोरणाण जाव हत्थपाय पक्खालेत्ता आयते चोक्खेपरमसुइभूय णदा पुक्खरिणीओ पच्चुतरति २ त्ता जेणेव सभासुहम्मा तणेव पहारेत्थगमणाए ॥१५७॥

वनराजी में जाकर उस की अर्चना करो, इतना करके मुझ मेरी आज्ञा पीछा दो विजय देवता से ऐसी बात सुनकर आभियोगिक देवता हृष्ट तुष्ट हुए उन के वचन विनय पूर्वक श्रवण किये, और विजया राज्यधानी में शृंगाटक यावत् वनराजी में अर्चना करके उनको उनकी आज्ञा पीछी दी ॥ १६४ ॥ आभियोगिक देवकी पास से ऐसा सुनकर वह विजय देवता हृष्ट तुष्ट व आनंदित हुवा, वहां से नंदा पुष्करणी के पास आकर पूर्व के तोरण से यावत् हाथ पांव का प्रक्षालन किया, वहां शुचिमय बनकर नंदा पुष्करणी में से नीकलकर सुधर्मा सभा की ओर जाने लगा, ॥ १६७ ॥ वह विजय देव

उप्पीलिय सरासण पट्टिया पीणद्धगेवेज्जबद्ध आविद्धविमलवर चिण्हपट्टा गाहिया उद्दढप्पहरणि तिणयाइं तिसंधीणि वइरामय कोडिणि धणूइ अभिगिज्झपडियाइत कंडकलावा तजहा-णीलपाणिणो, पीयपाणिणो, रत्तपाणिणो, चावपाणिणो, चारुपाणिणो चम्मपाणिणो, खग्गपाणिणो, दंडपाणिणो, पासपाणिणो, णील-पित रत्त चाव-चारु-चम्म खग्ग-दंड पास वरधरा आयरक्खगा, गुत्ता गुत्तपालिया, जुत्ता जुत्तपालिया, पत्तेय २ समयाविउणट किंकर भूताविव चिट्ठांति ॥ १५९ ॥ विजयस्सण भंते ! देवस्स केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एग पलिओवम ठिती पण्णत्ता ॥

ऐसा धनुष्य हाथ में लेकर संपूर्ण शर कलाप (भाथे) भरे हुवे हैं, कितनेक के हाथ में हरे वर्ण की छडी-वाले धनुष्य हैं, कितनेक के हाथ में पीले वर्णवाले धनुष्य हैं, कितनेक के पास लाल वर्णवाले धनुष्य हैं कितनेक के हाथ में मनोहर आयुध है, कितनेक के हाथ में चर्म के कोडे हैं, कितनेक के हाथ में खड्ग हैं, कितनेक के हाथ में दंड हैं, कितनेक के हाथ में पाश है, ऐसे ही नीले, पीले, लाल धनुष्यवाले, मनोहर आयुधवाले, चर्म, खड्ग, दंड, पाश धारन करनेवाले, अंग रक्षक, गुप्त रक्षा करनेवाले, सेवक के गुणों से युक्त, परिवार सहित पृथक् २ समान मात्रा से नमते हुए किंकरभूत बनकर रहते हैं ॥ १५९ ॥ अहो भगवन् ! विजय देव की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! विजयदेव की एक पल्योपम की स्थिति

विजयस्स देवस्सदाहिणपुरत्थिमेण अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठदेवसाहस्सीओ पत्तेय २ जाव णिसीयति एव दक्खिणेण मज्झिमियाए परिसाए दसदेव साहस्सीओ जाव णिसीयति दाहिण पच्चत्थिमेण बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पत्तेय २ जाव णिसीयति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स पच्चत्थिमेण सत्तअणियाहिवई पत्तेय २ जाव णिसीयति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स पुरत्थिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ पत्तेय २ पुव्वणत्थेसु आसणेसु णिसीयति तंजहा-पुरत्थिमण चत्तारिसाहस्सीउ जाव उत्तरेण ॥ ततेण आयरक्खा सण्णद्धबद्धवम्मिय कतिया

दश हजार देव, नैऋत्यकून में बाह्य परिषदा के बारह हजार देव पृथक् २ सिंहासन पर बैठे, पश्चिम दिशा में उस के सात अनिकाधिपति पृथक् २ भद्रासन पर बैठे, सोलह हजार आत्मरक्षक पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर में पूर्व स्थापित भद्रासन पर बैठे तथथा—पूर्व दिशा में चार हजार, दक्षिण दिशा में चार हजार, पश्चिम दिशा में चार हजार व उत्तर दिशा में चार हजार इन का वर्णन करते हैं. वे आत्म रक्षक देव सनद्धबद्ध आयुध से सज्ज बने हुवे हैं, कवच धारन किये हुवे हैं, सरासन धनुष्य की पट्टी ऊंची की है, कंठ में आभरण धारण किये, विमल उत्तम सुभट के चिन्हपट उन के हाथ में हैं, उन्न आयुध व प्रहरण ग्रहण किये हैं, तीन स्थान नीचे नमे हुवे हैं, तीन संधी हैं, उन की वज्रमय संधी हैं

दाहिणेण जाव वेजयते देवे ॥ ९ ॥ कहिण भते ! जबूदीवस्स जयंतेणाम दारे पण्णत्ते, ? गोयमा ! जबुदीवे २ मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण पणयालीस जोयण सहस्साइ जबूदीवे पच्चत्थिमापरते लवणसमुद्द पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीतोदाये मह नदीय उप्पिं एत्थण जबूदीवस्स जयते नामदारे पण्णत्ते ॥ तचेव सोपमाण, जयते देवे पच्चात्थमेण से रायहाणीए जाव महिड्ढीए ॥ २ ॥ कहिण भते ! जबूदीवस्स अपराजिए णामद्दार पण्णत्ते ? गोयमा ! मदरस्स उत्तरेण पणयालीस

भगवन् ! वैजयत देव की वैजयता राज्यधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप से असंख्यातवा जम्बूद्वीप नामक द्वीप में विजयता राज्यधानी है इस का वर्णन विजया राज्यधानी जैसे जानना विजयत नामक द्वार व विजयता राज्यधानी का, विजयत नामक देव का कथन विजय देव जैसे जानना ॥२॥ अहो भगवन् ! जयत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत स पश्चिम दिशा में ४५ हजार योजन जावे तब जम्बूद्वीप के पश्चिम के अत में पश्चिम के लवण समुद्र से पूर्व में सीतोदा महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का जयत नामक द्वार कहा है इस का सब वर्णन विजय जैसे जानना इस का जयत नामक देव अधिपति है पश्चिम दिशा में राज्यधानी है यावत् महर्द्धिक है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का अपराजित नामक द्वार कहा कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ४५

विजयस्सणं भंते! देवस्स सामाणियाणं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता ॥ एवं महिड्डीए एवंमहाजुत्तीये एवं महब्बले एवं महायसे एवं महासुक्खे एवं महाणुभागे विजयदेवे॥१६०॥ कहिणं भंते! जंबूद्दीवस्स दीवस्स वेजयं णामदारे पण्णत्ते? गोयमा! जंबूदीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं पणयालीसं जोयणा सहस्साइं अबाहाये जंबूदीवदीवे दाहिणपेरंते लवणसमुद्दस्स दाहिणिद्धस्स उत्तरेणं एत्थणं जंबूदीवस्स २ वेजयं नामदारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सच्चेवसव्वा वत्तव्वया जावणिच्चे ॥ १ ॥ कहिणं भंते! णयहाणीये

कही अहो भगवन्! विजय देवता के सामानिक देव की कितनी स्थिति कही है? अहो गौतम! एक पल्योपम की स्थिति कही विजय देवकी ऐसी महाऋद्धि, ऐसी महाद्युति, ऐसा बल, ऐसा महायश ऐसा महासुख व ऐसा महानुभाग कहा है यह विजय देवता का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥१६०॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है? अहो गौतम! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अबाधा से आवे वहां दक्षिण दिशा के अंत में दक्षिण दिशा के लवण समुद्र से उत्तर में जम्बूद्वीप नामक द्वीप का वैजयंत नामक द्वार है वह आठ योजन का ऊंचा, चार योजन का चौडा है इस की वक्तव्यता सब विजय द्वार जैसी जानना यावत् नित्य है ॥ २ ॥ अहो

॥ ५ ॥ जंबुद्दीवस्सणं भंते ! दीवस्स पदेसा लवण समुद्द पुट्ठा ? हंता पुट्ठा, तेणं भंते ! किं जंबुद्दीवे २ लवणसमुद्दे ? गोयमा ! जंबुद्दीवेणं दीवे णो खलु ते लवणसमुद्दे ॥ लवण समुद्दस्स पदेसा जंबूदीवं दीवं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा, तेणं भंते किं लवणसमुद्दे जंबूद्दीवे दीवे ? गोयमा ! लवणाणं समुद्दे, णो खलु ते जंबूद्दीवे दीवे ॥ ६ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे जीवा उद्दाइत्ता २ लवणसमुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगतिया पच्चायंति अत्थेगतिया णो पच्चायंति ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे

वर्णन हुवा ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के प्रदेश लवण समुद्र को क्या स्पर्शकर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! स्पर्श कर रहे हुवे हैं अहो भगवन् ! वे प्रदेश क्या जम्बूद्वीप के हैं या लवण समुद्र के हैं ? अहो गौतम ! वे जम्बूद्वीप के हैं परंतु लवण समुद्र के नहीं हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के प्रदेश क्या जम्बूद्वीप को स्पर्श कर रहे हैं ? हां गौतम ! स्पर्शकर रहे हैं अहो भगवन् ! वे क्या लवण समुद्र के हैं या जम्बूद्वीप के हैं? अहो गौतम ! वे लवण समुद्र के हैं परंतु जम्बूद्वीप के नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के एकेन्द्रियादिक जीव मरकर लवण समुद्र में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होवे हैं और कितनेक नहीं भी उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के जीव वहां से

जोयणसहस्सं अबाहाए जंबूदीवे उत्तरपेरंते लवणसमुद्दस्स उत्तरद्धस्स दाहिणेणं एत्थणं जंबूदीवे २ अपराइए णामदारे पण्णत्ते तचेव पमाणं रायहाणी उत्तरेणं जाव अपराइए देवे चउण्ह अण्णमि जंबूदीवे ॥ ४ ॥ जंबूदीवस्सणं भंते ! दीवस्स दारस्सय दारस्सय एसणं केवतिय अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! अउणासीतिं जोयण सहस्साइं बावण्णं च जोयणाइं देसूणंच अद्धं जोयणं दारस्स अबाहाए अंतरे पण्णत्ते

हजार योजन अबाधा से जावे वहां इस से उत्तर दिशा के अंत में उत्तरार्ध लवण समुद्र से दक्षिण में जम्बूद्वीप का अपराजित नामक द्वार कहा है इस का सब प्रमाण विजय द्वार जैसे कहना इस की राज्यधानी उत्तर में है इस का अपराजित देव है चारों राज्यधानी अन्य असंख्यातवे जम्बूद्वीप में है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार पर्यंत कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! गुन्यासी हजार साढे बावन योजन ७९०५२॥ योजन में कुच्छकम का एक द्वार से दूसरे द्वार पर्यंत अंतर कहा है जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२७ योजन ३ कोश, १२८ धनुष्य, व १३॥ अंगुल से कुच्छ अधिक है उस में से चारों द्वार की चौडाइ १६ योजन की व चारों द्वार के बारसाख दो योजन के यों सब मीलाकर १८ योजन पूर्वोक्त परिधि में से नीकालना, इस से ३१६२०९ योजन ३ कोश, १२८ धनुष्य, व १३॥ अंगुल रहे इस के चार भाग करना जिस से ७९०५२ योजन, १ कोश १५३२ धनुष्य ३ अंगुल, ३ यव, बरयूका, इतना एक द्वार से दूसरे द्वार का अंतर जानना यह जम्बूद्वीप के द्वार का

विक्खभेण, तीसे जीवा उत्तरेण पातीण पडिणायये दुहओ वक्खार पव्वय पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्ले वक्खारपव्वए पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल वक्खार पव्वय पुट्ठा, तेवण्ण जोयणसहस्सति आयामेण, तीसे धणुपट्ठ दाहिणेण, सट्ठिजोयणसहस्साइं चत्तारियट्ठार मुत्तरे जोयणसते दुवालसयएक्कूणवीस तिभाए जोयणस्स परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ ८ ॥ उत्तरकुराएण भंते ! कुराए केरिसए

नीलवंत पर्वत की पास चौडी है और पूर्व पश्चिम लम्बी है, दोनों वक्षस्कार पर्वत को स्पर्श कर रही है, पूर्व दिशा के अन्त से पूर्व दिशा के माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत को स्पर्शी हुई है और पश्चिम दिशा के अन्तसे पश्चिम दिशा का गंधमादन वक्षस्कार पर्वत को स्पर्शी हुइ है यह जिव्हा ५३००० योजन पूर्व पश्चिम लम्बी है, (मेरु पर्वत से पूर्व पश्चिम भद्रशाल वन २२००० योजन का लम्बा है इस से ४४००० योजन का भद्रशाल वन कहा उस में मेरु पर्वत के दश हजार योजन मीलाने से ५४००० योजन होवे उस में से ५००-५०० योजन के वक्षस्कार पर्वत के १००० योजन नीकालते शेष ५३००० योजन की जिव्हा कही) इस की धनुष्य पीठ का ६०४१८ $\frac{12}{19}$ योजन की है अर्थात् अर्ध परिधि है गंध मादन व माल्यवंत दोनों ३०२०९ $\frac{6}{19}$ योजन के लम्बे हैं, इस से दोनों के मीलकर ६०४१८ $\frac{12}{19}$ योजन हुए ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र का कैसा भाव कहा है ? अहो गौतम ! वहां बहुत सम

जीवा उद्दाइत्ता र जंबुद्दीवेदीवे पच्चायात ? गोयमा! अत्थेगतिया पच्चायति अत्थेगतिया-नो पच्चायति ॥ ७ ॥ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ जंबुद्दीवेदीवे ? गोयमा ! जंबुद्दीवेदीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण नीलवंतस्स दाहिणेण मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेण गंधमायणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण एत्थण उत्तरकुराणामकुरा पण्णत्ता पाईण पडीणायता उदीण दाहिण विच्छिण्णा अद्धचंद सठाण संठिया, एक्कारस जोयण सहस्साति अट्ठबायाले जोयणसए दोण्णिय एकोणवीसति भागे जोयणस्स

मरकर जम्बूद्वीप में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न हैं कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप ऐसा नाम क्यों किया ? अहो गौतम ! जम्बुद्वीप नामक द्वीप में मेरु पर्वत से उत्तर में, नीलवंत पर्वत से दक्षिण में, माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत से पश्चिम में और गंधमादन वक्षस्कार पर्वत से पूर्वदिशा में उत्तरकुरु नामक कुरु क्षेत्र कहा हुवा है यह पूर्व पश्चिम लम्बा, उत्तर दक्षिण चौड़ा विस्तार वाला व अर्ध चंद्र के संस्थान वाला है ११८४२ $\frac{2}{19}$ योजन का उत्तर दक्षिण में चौड़ा है (महाविदेह क्षेत्र की चौड़ाई ३३६८४ $\frac{4}{19}$ है इस में से मेरु पर्वत की १०००० योजन की चौड़ाई बाद २३६८४ $\frac{4}{19}$ योजन की चौड़ाई रहे उस के दो भाग करने से ११८४२ $\frac{2}{19}$ योजन की चौड़ाई रहे उस की जीवा उत्तर में

तेयली सणिच्चारी ॥ १० ॥ कहिण भंते ! उत्तरकुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणण अट्ठचोत्तीस जोयणसते चत्तारिय सत्तभाग जोयणसहस्स अबाधाए, सीताये-महाणईए उभयोकूले एत्थण उत्तरकुराए कुराए जमगाणामदुव्वे पव्वता पण्णत्ता, एगमेगेण जोयणसहस्स उड्डउच्चत्तेण अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उव्वेहेण मूले एकमेक जोयणसहस्स आयामविक्खंभण मज्झअद्धट्ठमाइ जोयण सताइ आयाम विक्खंभेण, उवरिपंचजोयण सयाइ आयामविक्खंभेण मूलेतिण्णि जोयण सहस्साइ एक बावट्ठ जोयणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइ

के नाम १ पद्म गधा, २ मृग गधा ३ अमपा ४ सखा ५ तेयलीय और ६ शनीचारी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र में जमक नामक दो पर्वत कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! नीलवंत वर्षधर से दक्षिण दिशा में ८३४ 4/7 योजन अबाधा से जाव तो वहां सीता महानदी के दोनों किनारे उत्तरकुरु क्षेत्र में दो जमक पर्वत कहे हैं उन में से एक पूर्व किनारे पर व दूसरा पश्चिम किनारे पर है ये पर्वत एक हजार योजन के ऊंचे, अढाइसो योजन के जमीन में ऊंडे हैं, मूल में एक हजार योजन के लम्बे चौडे, मध्य में साढे सातसो योजन के लम्बे चौडे और उपर पांचसो योजन के लम्बे चौडे हैं मूल

आगार मात्र पडीयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामये आलिंग पुक्खरेतिवा जाव एव सरुअगदीवे वत्तव्वया जाव देवलोग परिग्गहाण, तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! णवर इमणाणत्त छधणु सहस्समूसिया, दो छप्पन्ना पिट्ठकरडयासय, अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति, तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाइ पलिओवमस्स सखेज्जइ भागेण रूणगाइ जहन्नेण तिन्निपलिओवमाइ उक्कोसेण एक्कूणपण्णा रतिंदियाइ अणुपालणा, सेस जहाएगरुयाण ॥ ९ ॥ उत्तर कुराण कुराए छविधा मणुस्सा अणुसज्जति तजहा - पम्हगधा मियगधा अममा सहा

रमणीय भूमि भाग कहा है, जैसे आलिंग पुष्कर वादिंत्र का तला वगैरह सब एकरुक द्वीप जैसी वक्तव्यता यहां जानना यावत् देव गति में जाने वाले वहां के मनुष्यों हैं विशेषता यह है कि यहां छ हजार धनुष्य अर्थात् तीन कोश की शरीर की अवगाहना है २५६ पसली है तीन दिन के अतर से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, उनका आयुष्य जघन्य तीन पल्योपममें से पल्योपम का असख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पूरा तीन पल्योपम यहांपर युगल मनुष्य अपने अपत्य की प्रतिपालना ४९ दिन करते हैं शेष सब अधिकार एकरुक नामक अतरद्वीप जैसे जानना ॥ ९ ॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन

तेयली सणिच्चारी ॥ १० ॥ कहिण भंते ! उत्तरकुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवंतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणेण अट्ठचोत्तीस जोयणसते चत्तारिय सत्तभाग जोयणसहस्स अवाधाए, सीताये महाणईए उभयोकूले एत्थण उत्तरकुराए कुराए जमगाणामदुवे पव्वता पण्णत्ता, एगमेगेण जोयणसहस्स उड्डउच्चत्तेण अड्डाइज्जाइ जोयणसयाइ उव्वेहेण मूले एकमेक जोयणसहस्स आयामविक्खभेण मज्झअद्धट्ठमाइ जोयण सताइ आयाम विक्खभेण, उवरिपंचजोयण सयाइ आयामविक्खभेण मूलेतिण्णि जोयण सहस्साइ एक बावट्ठ जोयणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइ

के नाम १ पद्म गधा, २ मृग गधा ३ ममपा ४ सत्वा ५ तेयलीय और ६ शनीचारी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र में जमक नामक दो पर्वत कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! नीलवंत वर्षधर से दक्षिण दिशा में ८३४$\frac{4}{7}$ योजन अबाधा से जावे तो वहां सीता महानदी के दोनों किनारे उत्तरकुरु क्षेत्र में दो जमक पर्वत कहे हैं उन में से एक पूर्व किनारे पर व दूसरा पश्चिम किनारे पर है ये पर्वत एक हजार योजन के ऊंचे, अढाइसो योजन के जमीन में ऊंडे हैं, मूल में एक हजार योजन के लम्बे चौडे, मध्य में साढे सातसो योजन के लम्बे चौडे और उपर पांचसो योजन के लम्बे चौडे हैं मूल

भागार भाव पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामये आलिंग पुक्खरेतिवा जाव एव एगरूअगदीवे वत्तव्वया जाव देवलोग परिग्गहाण, तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो! णवर इमणाणत्त छधणु सहस्समूसिया, दो छप्पन्ना पिट्ठकरडयासय, अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति, तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाइ पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेण ऊणगाइ जहन्नेण तिन्निपलिओवमाइ उक्कोसेण एक्कूणपण्णा रातिदियाइ अणुपालणा, सेस जहाएगरूयाण ॥ १ ॥ उत्तर कुराए कुराए छविधा मणुस्सा अणुसज्जति तजहा - पम्हगधा मियगधा अममा सहा

रमणीय भूमि भाग कहा है, जैसे आलिंग पुष्कर वादिंत्रका तला वगैरह सब एकरुक द्वीप जैसी वक्तव्यता यहां जानना यावत् देव गति में जाने वाले वहां के मनुष्यों हैं विशेषता यह है कि यहां छ हजार धनुष्य अर्थात तीन कोश की शरीर की अवगाहना है २५६ पसली है तीन दिन के अंतर से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, उनका आयुष्य जघन्य तीन पल्योपममें से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पूरा तीन पल्योपम वहांपर युगल मनुष्य अपने अपत्य की प्रतिपालना ४९ दिन करते हैं शेष सब अधिकार एकरुक नामक अंतरद्वीप जैसे जानना ॥ १ ॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन

यण च उड्ढं उच्चत्तेण एकतीस जोयणाइं कोस च विक्खभेण अब्भूग्गतमूसित वण्णओ भूमिभागओ उल्लोता, दो जोयणाइं मणिपेढियाओ उवरिसीहासणा सपरिवारा जाव जमगा चिट्ठति ॥ ११ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति जमगा पव्वया ? जमगा पव्वया गोयमा ! जमगेसुणं पव्वतेसु तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुखुड्डियाओ वावीओ जाव विलपंतियाओ, तासुणं खुड्डा खुड्डिया जाव विलपंतियासु बहुइं उप्पलाइं जाव सतसहस्स पत्ताइं जमग प्पभाइं जमग वण्णाइं जमगा एत्थणं दो देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसंति, तेणं तत्थ पत्तेयं २ चउण्हं सामाणिय

जानना दो योजन की मणिपीठिका है ऊपर परिवार सहित सिंहासन है यावत् जमक पर्वत रहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जमक ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! जमक पर्वत में स्थान २ पर बहुत वापि यावत् बिलपंक्ति हैं उस में बहुत उत्पल यावत् लक्षपत्र जमक जैसी प्रभावाले सब जमक जैसे वर्णवाले रहते हैं और भी वहां जमक नामक दो महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं वे वहां चार हजार सामानिक यावत् जमक पर्वत व जमका राज्यधानी में रहनेवाले बहुत वाणव्यतर देव व देवियों का आधिपतिपना करते हुवे यावत् चन को पालते हुवे विचरते हैं अहो गौतम ! इसलिये

तिण्णिय बावत्तरे जोयणसते किंचित विसेसूण परिक्खेवेण पण्णत्ता, उप्पिं पण्णरस एक्कासीति जोयण सते किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेण पण्णत्ता, मूलेविच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया, गोपुछ संठाण संठिता सव्व कणगामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, पत्तेय २ पउमवेतिया परिक्खित्ता पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता वण्णओ दोण्णवि तेसिण जमग पव्वयाण उप्पिं बहुसम रमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्त वण्णउ जाव आसयति बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ पासाय वडेंसका पण्णत्ता, तेण पासायवडेंसका बावट्ठि जोयणाइ अद्धजो-

में तीन हजार एकसो बासठ योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, मध्य में दो हजार बहत्तर योजन से कुछ अधिक की परिधि है, और ऊपर पन्दरहसो इक्यासी योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, मध्यमें संकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुछ संस्थान वाले हैं सब सुवर्णमय, स्वच्छ सुकुमाल यावत् प्रतिरूप है प्रत्येक पर्वतको पद्मवर वेदिका और वनखण्ड कहे हैं ये वर्णन योग्य हैं इन दोनों जमक पर्वत पर बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यह भी वर्णन योग्य है यावत् वहां देवों बैठते हैं उस भूमिभाग के मध्य में पृथक् २ प्रासादावतंसक कहे है वे दशा योजन के ऊंचे, ३१। योजन के लम्बे चौडे हैं आकाश तल को अवलम्बन कर रहे होवे वैसे दीखाई देते हैं भूमिभाग पर छत बनी हुई है वगैरह सब पूर्ववत्

पव्वयाण दाहिणेणं अट्ठचोत्तीसे जोयण सये चत्तारिसत्तभाग जोयणस्स अवाधाए सीताए महाणईये बहुमज्झ देसभाए एत्थणं उत्तरकुराए नीलवतद्दहे नाम दहे पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायये पाइणपडीणविच्छिण्णे एगं जोयणसहस्सं आयामेणं पंचजोयण सयाति विक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामए कूले चउक्कोणे समतीरे जाव पडिरूवे उभयोपासिं दोहियपउमवरवेइयाहिं दाहिंवणसंडेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ नीलवंत दहस्सणं तत्थ २ जाव बहवेति सोमाणं पडिरूवका पण्णत्ता वण्णओ भाणियव्वो तोरणेति ॥ १४ ॥ नीलवंत

पर्वत से दक्षिण में ८३४ $\frac{4}{7}$ योजन के दूरी पर सीता महानदी के बीच में उत्तर कुरु का नीलवंत नामक द्रह कहा है यह उत्तर दक्षिण लम्बा व पूर्व पश्चिम चौडा है एक हजार योजन लम्बा पांच सो योजन चौडा व दश योजन ऊंडा है यह स्वच्छ श्लक्ष्ण है रजतमय किनारे हैं, चार कौनवाला, समान तीरवाला यावत् प्रतिरूप है दोनों बाजु दो पद्मवर वेदिका हैं, दो वनखण्ड हैं वे चारों तरफ घेराये हुवे हैं दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना उस नीलवंत द्रह को त्रिसोपान प्रतिरूप है उसका भी वर्णन पूर्ववत् जानना और तोरण भी है उस का वर्णन भी पूर्ववत जानना ॥ १४ ॥ नीलवंत

सहिस्सीण जाव जमगाण पव्वयाण जमगाणय रायहाणीण अण्णेसिंच बहूण वाण-मंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जमग पव्वया २ अदुत्तरचण गोयमा ! जाव णिच्चा ॥ १२ ॥ कहिण भंते ! जमगाण देवाण जमगाओ नाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जमगाण पव्वयाणं उत्तराणतिं तिरिय मसंखेज्ज दीव समुद्द वीतीवतित्ता अण्णमि जम्बूदीवे दीवे बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता एत्थण जमगाण देवाण जमिगाओणाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ, बारसजोयण सहस्साइ जहा विजयस्स जाव महिड्डिया जमगादेवा ॥ १३ ॥ कहिण भंते! उत्तरकुराए उत्तरकुराए नीलवंतद्दहे नामद्दहे पण्णत्ता ? गोयमा! जमगाण

इन पर्वतों का नाम जमक रखा है अथवा अहो गौतम ! इन का शाश्वत नाम है वे भूतकाल में नहीं थे वैसा नहीं यावत् नित्य हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जमक देव की जमका राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! जमक पर्वत से उत्तर में असंख्यात द्वीप समुद्र गये पीछे अन्य जम्बूद्वीप नामक द्वीप आता है उस में बारह हजार योजन गये पीछे जमक देव की जमक नामक राज्यधानी कही है वह बारह हजार योजन की लम्बी चौडी वगैरह विजया राज्यधानी जैसे कहना उस में महर्द्धिक जमक देव रहते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र का नीलवंत द्रह कहां कहा है ? अहो गौतम ! जमक

बाहल्लेणं सव्व कणगामई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ १६ ॥ तीसेणं कण्णियाए उवरिं बहुसमरमणिज्ज देसभाए पण्णत्ते जाव मणीहिं तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमि भागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते कोसंच आयामेणं, अद्धकोसंच विक्खंभेणं, देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेगखंभसतसंनिविट्ठं, सभा वण्णओ ॥ १७ ॥ तस्सणं भवणस्स तिदिसिं तओदारा पण्णत्ता तंजहा पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, तेणं दारा पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेणं तावतियं चेव पवेसेणं सेतावरकणग थूभियागा जाव वणमालाउत्ति ॥ १८ ॥ तस्सणं भवणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंग पुक्खरे-तिवा, जाव मणीणं वण्णओ ॥ १९ ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स

की जाती है सब स्वच्छ, श्लक्ष्ण यावत् प्रतिरूप है ॥ १६ ॥ उस कर्णिका ऊपर बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है वह यावत् मणि से सुशोभित है उस भूमि भाग के मध्य में एक बडा भवन कहा है वह एक कोश का लम्बा आधा कोश का चौडा कुच्छकम एक कोश का ऊंचा अनेक स्थंभ वाला है इस का वर्णन सभा जैसे कहना ॥ १७ ॥ इस भवन के तीन दिशा में तीन द्वार हैं तद्यथा—पूर्व दक्षिण व उत्तर वे द्वार पांच सो धनुष्य के ऊंचे, अढाइसो धनुष्य के चौडे और उतने ही प्रवेश वाले हैं सुवर्णमय शिखर है यावत् वनमाला पर्यंत वर्णन कहना ॥ १८ ॥ उन भवन में बहुत रमणीय भूमिभाग है जैसे

दहस्सण दहस्स बहु मज्झदेसभाए एत्थण एगेमहं पउमे पण्णत्ते, जोयण आयाम विक्खभेण त तिगुणं सविसेस परिक्खेवेण अद्धजोयण बाहल्लेण, दस जोयणाइं उव्वेहेण दो कोसे ऊसिते जलंताओ सातिरेगाइं दस जोयणाइं सव्वग्गेण पण्णत्ते ॥ १५ ॥ तस्सण पउमस्स अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा वइरामयामूला रिट्ठामये कंदे, वेरुलिया मये णाले, वरुलियामया बाहिरपत्ता, जंबूणयमया अब्भिंतरपत्ता, तवणिज्जमया केसरा, कणगामई कण्णिया, णाणामणिमया पुक्खरत्थिभुया, साण कण्णिया अद्धजोयण आयाम विक्खंभेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, कोस

द्रह के मध्य भाग में एक पद्म कमल है यह एक योजन का लम्बा चौडा और उस से तीनगुनी से अधिक परिधि है, आधा योजन का जाडा है दश योजन ऊंडा है, जल उपर दो कोश का ऊंचा है और सब मीलकर साधिक दश योजन का है ॥ १५ ॥ इस पद्म का इस तरह वर्णन करते हैं वज्र रत्नमय मूल है अरिष्ट रत्नमय कंद है, वैडूर्य रत्नमय नाल है, वैडूर्य रत्नमय बाहिर के पत्र हैं जम्बूनद रत्नमय आभ्यंतर के पत्र है, तपनीय सुवर्णमय केशरा है कनकमय कर्णिका है, विविध मणिमय स्थूभिका है उस की कर्णिका आधा योजन की लम्बी चौडी है, इस से तीनगुनी से अधिक की परिधि है, एक कोश

परिक्खेवेण, अद्धकोसे बाहल्लेण सव्व कणगामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण कण्णिया उप्पिं बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा जाव मणीण वण्णो गधो फासो ॥ २० ॥ तस्सण पउमस्स अवरुत्तरेण उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण निलवत दह कुमारस्स देवस्स चउण्ह सामाणिय साहस्सीणं, चत्तारि पउम साहस्सीओ पण्णत्ताओ एव सव्व परिवारो नवरि पउमाण भाणियव्वो, सेण पउमे अण्णेहिं तेहिं पउम-परिक्खेवेण सव्वतो समता सपरिक्खित्ते तजहा—अब्भितरएण मज्झिमएण बाहिरएण अब्भितरएण पउमपरिक्खेवे बत्तीस पउम सयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमएण पउम परिक्खेवो चत्तालीस पउमसय साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरएण पउमपरिक्खेवे अडयालीस पउमसय साहस्सीओ पण्णत्ताओ, एवामेव सपुव्वावरेण एगापउम कोडी

परिधि है, आधा कोस की जाडी है सब कनकमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है उन की कर्णिका पर रमणिक भूमिभाग है यावत् मणिका वर्ण, गध रस व स्पर्श है ॥ २० ॥ उस पद्म कमल के वायव्य कोण उत्तर व ईशान कोण में नीलवंत द्रह कुमार देव के चार हजार सामानिक देव के चार हजार पद्म कहे हैं यों सब परिवार के कमल कहना अब यह पद्म अन्य तीन कमलकी परिधि से वींटा हुवा है आभ्यतर परिधि मध्य परिधि व बाहिर परिधि अभ्यतर परिधि में बत्तीस लाख कमल, मध्य परिधि में चालीस लाख कमल और बाहिर की परिधि में अडचालीस लाख

बहुमज्झदेसभाए एत्थण मणिपेढिया पण्णत्ता, पंच धणुसताइं आयामविक्खंभेण अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं सव्व मणिमती॥तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं एगेमहं देवसयणिज्जे पण्णत्ते, देव सयणिज्जस्स वण्णओ ॥ सेणं पउमे अण्णेणं अट्ठसतेणं तदद्धुच्चप्पमाणमेत्तेणं पउमाणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता तेणं पउमा अद्ध जोयणं आयाम विक्खंभेणं ततिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं कोसं बाहल्लेणं दसजोयणाइं उव्वेहेणं कोसं ऊसिया जलंताओ सातिरेगाइं दसजोयणाइं सव्वेगेणं पण्णत्ताइं तेसिणं पउमाणं अयमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तंजहा—वइरामयामूला जाव णाणामणिमया पुक्खलत्थिभया ॥ ताओणं कण्णियाओ कोसं आयामविक्खंभेणं ततिगुणं स

भांति पुष्कर यावत् मणिका वर्णन जानना ॥ १९ ॥ उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में एक मणि पीठिका है वह पांच सो धनुष्य की लम्बी चौडी अढाइ सो धनुष्य की जाडी व सब मणिमयी है उस मणिपीठिका पर एक बडा देवशयन है वह देवशयन का वर्णन पूर्ववत जानना उस पद्मकमल की चारतरफ १०८ कमल उस से आधी ऊंचाइ वाले कहे हुवे हैं, वे कमल आधा योजन के लम्बे चौडे हैं तीनगुनी से अधिक परिधि है, एक कोश के जाडे हैं, दस योजन ऊंडे हैं, एक कोश पानी से ऊपर है, साधिक दश योजन के सब मिलाकर हैं इन का इस तरह वर्णन किया है वज्ररत्नमय मूल है यावत् विविध मणिरत्नमय पुष्कर स्तुभिका है उन की कर्णिका एक कोश की लम्बी चौडी है उस से तीन गुनी से अधिक

विक्खभेण उवरिं पण्णास जोयणाइ विक्खभेण, मूले तिण्णि सोले जोयणसए किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेण, मज्झ दो'ण्गसत्ततीसे जोयण सते किंचि विसेसाहिता परिक्खेवेण, उवरिंएग अट्ठावन्न जोयणसत किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेण, मूलेविच्छिण्णा मज्झसाखित्ता उप्पि तणुया, गोपुच्छ सठण सठिया सव्वकचणमया अच्छा, पत्तेय २ पउमवरवेतियाइ पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ता ॥ तेसिण कचणग पव्वयाण उप्पि बहु समरमणिज्जे भूमिभागे जाव आसयति, पत्तय २ पासायवडेंमगा सड्ढा बावट्ठिं जोयणिया उड्ढ, एकचीस

ऊचे हैं, मूल में एक सो योजन के चौडे हैं मध्य में पचत्तर योजन के चौडे हैं और ऊपर पचास योजन के चौडे हैं मूल में तीन सो सोलह योजन से अधिक परिधि है, मध्य में दो सो सैतीस योजन से अधिक की परिधि है और ऊपर एक सो अट्ठावन योजन की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, मध्य में सकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुछ सस्थानवाले हैं ये सब कंचनमय स्वच्छ हैं प्रत्येक को एक २ पद्मवर वेदिका व एक २ वनखण्ड हैं उन कचनगिरि पर्वत पर बहुत रमणिय भूमिभाग है यावत् वहां देव बैठते हैं उन कांचनगिरि पर्वत में पृथक् २ प्रासादावतसक हैं वे ६२॥ योजन के ऊचे हैं २१

ओ चीसच पउमसत सहस्सा भवंति तिमक्खाया ॥ २१ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति निलवंतद्दहे ? निलवंतद्दहे गोयमा ! निलवंत दहेण तत्थ २ जाव उप्पलाति जाव सयसहस्स पत्ताइं निलवंतप्पभाति निलवंत वण्णा भाति निलवंत दह कुमारेय, एत्थसोचव गमो जाव णिलवंत दह २ ॥ २२ ॥ निलवंतण पुरात्थिम पच्चत्थिमण दस २ जोयणाति अबाहाए एत्थण दस दस कंचणग पव्वता पण्णत्ता, तेण कंचणग पव्वता एगमेग जोयणसत उड्ढं उच्चत्तेण पणुवीस २ जोयणाति उव्वेहण, मूले एगमेग जोयणसत विक्खंभेण मज्झे पण्णत्तरिं जोयणाइ आयाम

रूपस इन तीनों परिधि के एक क्रोड बीस लाख कमल होते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नीलवंत द्रह ऐसा नाम क्यों रखा ? अहो गौतम ! यहां पद्मकमल यावत् लक्षपत्रकमल हैं, वे सब नीले वर्णवाले, नीली प्रभावाले व नीली कांतिवाले हैं यहां नीलवंत द्रह कुमार नामक नाग कुमार देव रहता है इस का कथन ममद्ध देव जैसा जानना यावत् इस लिये नीलवंत द्रह नाम दिया गया है ॥ २२ ॥ नीलवंत पर्वतसे पूर्व पश्चिम में दश २ योजन के अंतर से अबाधापने दश २ कांचनगिरि पर्वत कहे हुवे हैं वे कांचनगिरि सब मीलकर २ पर्वत होते हैं ये कांचनगिरि पर्वत १०० योजन के ऊंचे हैं, पचीस योजन के

नामाए देवा सव्वेसिं पुरच्छिम,पच्चत्थिमेण कणपव्वता दस २ पकप्पमाण। उत्तरेण रायहाणी। अण्णमि जंबूद्दीवे चंददहे एरावणदहे मालवंतदहे एव एक्केक्को णेयव्वा॥२५॥ कहिण भंते ! उत्तर कुराए जंबू सुदंसणाये जंबूपीढे नाम पीढे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर पुरच्छिमेण नीलवंतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणेण, मालवंतस्स वक्खार पव्वयस्स पच्चत्थिमेण गंधमादणस्स वक्खार पव्वयस्स पुरत्थिमेण सीयाए महा नदीए पुरत्थिमिल्लेकूले एत्थण उत्तरकुराए जंबूपेढे नामपेढे पंचजोयण सयाइं आयाम विक्खंभेण पण्णरस एक्कासीते जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, बहुमज्झ-

य दो द्रह हुवे ऐसे ही चंद्र द्रह, एरावत द्रह व माल्यवन्त द्रह का वर्णन जानना इन के अधिपति देव व उन की राज्यधानी सब का कथन पूर्ववत् जानना ॥ २५॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र में जम्बू सुदर्शन वृक्ष का जम्बू पीठ नामक पीठ कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशानकून में नीलवंत वक्षस्कार पर्वत से दक्षिणदिशा में माल्यवंत ,गजदंताकार नामक वक्षस्कार पर्वत से पश्चिमदिशा में गंधमादन] गजदंता वक्षस्कार पर्वत से पूर्वदिशा में, सीता महानदी के पूर्व किनारे पर उत्तरकुरु क्षेत्र में जम्बूपीठ नामक पीठ कहा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है पन्नरसो इकासी योजन से अधिक परिधि

जोयणाइं कोस च विक्खभेण, मणिपेढिया दो जोयणिया सिंहासणा सपरिवारा ॥ २३ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ कंचणग पव्वया ? गोयमा ! कंचणग पव्वया तेसुण पव्वतेसु तत्थ २ वावीओ उप्पलाइं जाव कंचण वण्णाभाति, कंचणग जाव देवा महिड्डिया जाव विहरति, उत्तरेणं कंचणगाण कंचणिताओ रायहाणीओ अण्णमि जंबू तहेव सव्व भाणियव्वं ॥ २४ ॥ कहिणं भंते ! उत्तरकुराए उत्तरकुरुदहे नामदहे पण्णत्ते ? गोयमा ! नीलवतस्सदहस्स २ दाहिणेणं अट्ठचोती से जोयणसए एवं चेव गमो णेयव्वो, जो नीलवतदहस्स सव्वेसिं सरिसके दहसरिस

योजन के चौडे हैं उन में मणिपीठिका है वह दो योजन की लम्बी चौडी है वहां परिवार सहित सिंहासन है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! कांचनगिरि पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! कांचनगिरि पर्वत पर सब वहां-उत्पल वगैरह यावत् कांचन वर्ण भांति यावत् वहां कांचनग कुमार देव रहता है उत्तर दिशा में कांचनक कुमार देव की कंचनका राज्यधानी कही है वगैरह सब पूर्ववत् जानना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र में उत्तरकुरु द्रह कहां कहा है ? अहो गौतम ! नीलवंत द्रह से ८३४ $\frac{4}{7}$ योजन दूर पर उत्तरकुरुद्रह कहा है इस का सब कथन नीलवंत द्रह जैसे कहना नीलवंत द्रह के नाम द्रह जैसे कहना कंचनक पर्वत पूर्व पश्चिम किनारे पर कहना उत्तर दिशा में राज्यधानी है

ति आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ २७ ॥ तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं एगामहं जंबूसुदंसणा पण्णत्ता अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधे अट्ठ जोयणं विक्खंभेणं, छजोयणाइं विडिमा बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं अट्ठजोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता, वइरामयामूला रययसुपतिट्ठिया विडिमा, एवं चेतियरुक्खस्स वण्णओ जाव सव्वाइं रिट्ठामय विउलखंधा वेरुलियरुइलखंधा, सुजायवरजाय रूवपढमगविसालसाला, णाणामणिरयणविविह साहप्पसाहा वेरुलिय

यावत् प्रतिरूप है ॥ २७ ॥ उस मणि पीठिका पर एक बड़ा जम्बू सुदर्शन वृक्ष है यह आठ योजन का ऊंचा, आधा योजन का भूमि में ऊंडा, दो योजन का स्कंध, आठ योजन का चौड़ा छ योजन की शाखा है मध्य भाग में आठ योजन चौड़ा है और सब मीलकर यह साधिक आठ योजन का है इन के वज्र रत्नमय मूल है, चांदीमय सुप्रतिष्ठित अङ्कुर है, अरिष्ट रत्नमय कंद, वैडूर्य रत्नमय मनोहर स्कंध वगैरह चैत्यवृक्ष के वर्णन जैसा जानना यावत् सुजात उत्तम चांदी की शाखा है, मणि रत्नमय विविध प्रकार की शाखा प्रशाखा है, वैडूर्य रत्नमय पत्र है, रक्त सुवर्णमय पत्र के बींट हैं, जम्बूनद रत्नमय

देसभाए बारसजोयणाइ बाहल्लेण, तदाण तरचण माताए -२ पदेस परिहाणीए सव्वेसु चरमतेसु दोकोसेण बाहल्लेण पण्णत्ते, सव्वकंचणयामये अच्छे जाव पडिरूवे, सेण एगाए पउमवरवेइयाए एगेणय वणसडेण सव्वतो समता सपरिक्खित्ते दुण्णओ दोण्हवि ॥ तस्सण जबुपीढस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता तहेव जाव तोरणा जाव छत्तातिछत्ता ॥ २६ ॥ तस्सण जबूपढस्स उप्पि बहुसमरम णिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा जाव मणि॥तस्सण बहुसमर- मणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता अट्ठजोयणा

है मध्य में बारह योजन का जाडा है, तत्पश्चात थोडा २ कम होता हुवा चरमांत में दो कोश का जाडा है सब कंचनमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है इस को एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड चारों तरफ रहे हुवे हैं इन दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना उस जम्बूपीठ के चारों तरफ चार त्रिसोपान कहे हैं यावत् तोरण व छत्रपर छत्र कहना ॥ २६ ॥ उस जम्बूपीठ पर एक बडी समरमणीक भूमि है जैसे मादल का तल यावत् मणिका स्पर्श उस रमणीय भूमि भाग के मध्य में एक मणि पीठिका कही है वह आठ योजन की लम्बी चौडी अधिक चार योजन की जाडी कही है सब मणिमय स्वच्छ यावत्

मालाओ भूमिभागा उल्लोया मणिपेढिया पचधणुसइया देवसयणिज्जे भाणियव्व ॥२९॥ तत्थ जेसे दाहिणिल्ले साले से एगे मह पासायवडेंसये पण्णत्ते कोस उड्ढं उच्चत्तेण अद्धकोस आयामविक्खंभेण अब्भुग्गय मूसिया अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा उल्लोया ॥ तस्सण बहु समरमणिज्ज भूमिभागस्स बहु मज्झदेसभाए सीहासण सपरिवार भाणियव्व ॥ ३० ॥ तत्थण जे पच्चत्थिमिल्ले साले एत्थण एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते तच्चेव पमाण तहिंपि सीहासण सपरिवार ॥३१॥ तत्थण जेसे उत्तरिल्ले साले तत्थण एगेमह पासायवडेंसए पण्णत्ते तच्चेव पमाण तेहिंपिसीहासण सपरिवार तत्थण जेसे उत्तरिम विडिमरग साले एत्थण एगेमह सिद्धायतण पण्णत्ते कोस आयामेण अद्धकोस

यावत् माला पर्यंत वर्णन पूर्ववत् जानना भूमि भाग है, ऊपर छत है पांचसो धनुष्य की मणिपीठिका है और देव शयन है ॥ २९ ॥ जो दक्षिणदिशा में शाखा है उन पर एक प्रासादावतंसक है वह एक कोश का ऊंचा, आधा कोश का लम्बा चौडा व गगनतल का अवलम्बन करता होवे वैसा है अंदर बहुत रमणीय भूमिभाग है उस भूमिभाग के मध्य भाग में परिवार सहित सिंहासन है ॥३०॥ पश्चिम दिशा के सिंहासन पर एक प्रासादावतंसक है उस का प्रमाण उपरोक्त प्रासादावतंसक जैसे कहना परंतु परिवार रहित सिंहासन कहना ॥ ३१ ॥ जो उत्तर दिशा में शाखा है उस पर एक सिद्धायतन है वह एक कोश का लम्बा, आधा कोश का चौडा, कुछ कम देढ कोश का ऊंचा है उस में अनेक स्तंभ

मत्त, सुवाणिज्ज पवत्रिटा, जम्बूणय रत्तमउयसुकुमालपवाल पल्लवंकुरधरा विचित्त, मणिरयण सुरहिकुसुम फलभारनमियसाला, सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया अहियं मणाणिव्वुइकरा, पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा॥ २८ ॥ जम्बुणण सुदंसणा ते चउदिसिं चत्तारि साला पण्णत्ता तंजहा-पुरत्थिमेण दक्खिणेण - पच्चत्थिमेण उत्तरेण, तत्थ जे से पुरत्थिमिल्ले साले एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते—कोस आयामेण, अद्धकोसं विक्खंभेण, देसूणं कोस उड्ढं उच्चत्तेण, अणेगखंभ सयसन्निविट्ठे जाव धणुसयाइं पमाणं पंचधणुसताति उड्ढंउच्चत्तेणं अड्ढातिज्जाइं विक्खंभेण जाव वण्ण-

लाल मृदु सुकोमल प्रवाल अंकुर हैं विचित्र प्रकार के मणि रत्नमय सुगंधि पुष्प हैं, फल के भार से उन की शाखा नम्र बनी हुई है व छायावंत कांतिवंत, श्रीक, उद्योतवंत, अत्यंत मन को सुखकारी, प्रसन्नकारी अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २८ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष के पूर्वादि चारों दिशि में चार शाखा हैं उन में से पूर्वदिशा की शाखापर एक भवन कहा है वह एक कोश का लम्बा, आधा कोश का चौड़ा, कुच्छ कम एक कोश का ऊंचा व एक स्तंभ वाला है इस का वर्णन करना यावत् भवन के द्वार, पर्यंत कहना इस के द्वार पांचसो धनुष्य के ऊंचे हैं अढाइसो धनुष्य के चौडे हैं और भवने के मध्य भाग में

अट्ठसएण जबुण तदद्धुच्चत्तप्पमाण मेत्ताणं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ॥ ताओणं जबुओ चत्तारि जोयणाइ उडु उच्चत्तेण कोस उव्वेहेण जोयणखंधे, कोसविक्खंभेण तिन्निजोयणाइ विडिमा बहुमज्झदेसभाए चत्तारि जोयणाइ विक्खंभेण सातिरेगाइ चत्तारि जोयणाइ सव्वग्गेण वइरामयमूला सोचेव चेतियरुक्ख वण्णओ ॥ ३४ ॥ जबुएण सुदसणाए अवरुत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेण एत्थण अणाढियस्स देवस्स चउण्ण सामाणिय साहस्सीण चत्तारि जबू साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ जबूएण सुदसणाइ पुरत्थिमेण एत्थण अणाढियस्स देवस्स चउण्ह अग्गमहिसीण चत्तारि जबूओ पण्णत्ताओ एव सपरिवारो सव्वो णेयव्वो ॥ जबूण जाव आयरक्खाण सुदसणातिहिं जोयणसइएहिं

इत्यादि १०८ जम्बू वृक्ष मूल से व्याप्त हैं ये चार योजन के ऊंचे हैं एक कोश के ऊंडे हैं, एक कोश का स्कंध है, वे एक कोश के चौडे हैं तीन योजन की शाखा है, मध्य में चार योजन चौडे हैं सर्वांग साधिक चार योजन के हैं उन का वज्ररत्नमय मूल है वगैरह चैत्य वृक्ष वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ ३४ ॥ जम्बू सुदर्शन से वायव्यकून, उत्तर दिशा व ईशान कून में अनाधृत देवता के चार हजार सामानिक देवता के चार हजार सामानिक जम्बू हैं, जम्बू सुदर्शन से पूर्व दिशी में परिवार सहित चार अग्रम हिषियों के यावत् सोलह हजार आत्म रक्षक देव के जम्बूवृक्षों है, यों सब परिवार कहना. जम्बूवृक्ष के वन के

विक्खंभेण देसूण कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेग सताखंभसंनिविट्ठे वण्णओ, तिदिसं तओदारा पंचधणुसया अड्ढाइज्जधणुसयं विक्खंभेण, मणिपेढिया पंचधणुसइया देवच्छंदओ पंचधणुसय विक्खंभो सातिरेगं पंचधणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, तत्थण देवछंदए अट्ठसयं जिणपडिमा जिणुस्सेहप्पमाणाणं, एवं सव्वासिद्धायतण वत्तव्वया भाणियव्वा जाव धूवकुडच्छुया, उप्पिमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवेए तहेव ॥ १२ ॥ जंबूसुदंसणामूले बारसहिं पउमवरवेदियाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ताओणं पउमवरवेदियाओ अद्धजो-यण उड्ढंउच्चत्तेणं, पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं वण्णओ ॥ १३ ॥ जंबूसुदंसणा अण्णेणं

रहे हुए हैं यह वर्णन योग्य है तीन दिशा में तीन द्वार कहे हैं वे द्वार पांच सो धनुष्य के ऊंचे अढाइ सो धनुष्य के चौडे हैं उस में एक मणिपीठिका है वह पांच सो धनुष्य की लम्बी चौडी है, उस पर देव छंदक कहा हैं वह पांच सो धनुष्य का चौडा है, साधिक पांचसो धनुष्य का ऊंचा है, उस देव छंदक में १०८ जिन प्रतिमा हैं वे जिन प्रमाण ऊंची हैं इस तरह सिद्धायतन की सब वक्तव्यता पूर्ववत् जानना यावत् धूप कुडछे रहे हुवे हैं उसका ऊपरका भाग सोलह प्रकार के रत्नों से सुशोभित है ॥ १२ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष के मूल में बारह पद्मवर वेदिका चारों और रही हुई हैं वह आधा योजन की ऊंची पांचसो धनुष्य की चौडी वगैरह वर्णन युक्त है ॥ १३ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष को चारों तरफ अन्य ऊंचा-

निप्पकाओ णीरयाओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरण छत्ता ॥ तासिण णदापुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभाए एत्थण पासापवडेंसक पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोस विक्खभेण सो चेव से वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार, एव दक्खिण पुरत्थि मण वि पण्णास जोयणा चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तचव पमाण तहेव पसायवडेंसको तप्पमाणो, एव दक्खिण, पच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयणा णवरि भिंगा भिंगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पभा चव, सेस तहेव॥ जबूण सुदसणा उत्तरपुरत्थिमे पढम वणसड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता

ऊडी, स्वच्छ, कोमल श्लक्ष्ण घठारी, मठारी, पक व रज रहित, यावत् प्रतिरूप है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् तोरण व छत्रपर छत्र है उन नदा पुष्करणी के बीच में प्रासादावतसक कहे हैं, एक कोश के लम्बे, आधा कोश के चौडे, वगैरह वर्णन जानना यावत् परिवार सहित सिंहासन कहना ॥ दक्षिणपूर्व ईशानकोन में पचास योजन जाव वहां चार नदा पुष्करणो कही है जिन के नाम— उत्पल गुल्मा, नलिना, उत्पला व उत्पल ज्वाला इन का प्रमाण पूर्ववत् जानना। ऐसे ही दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कोण में पचास योजन जावें वहां चार नदा पुष्करणी हैं जिन के नाम—भृंगा, भृंगणिभा, अजना व कजल प्रभा, शेष सब पूर्ववत् जानना जम्बू सुदर्शन से पश्चिमउत्तर वायव्य कौन में पचास

वणसडेहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता तंजहा पढमेणं दोच्चेण तच्चेण ॥३५॥ जंबूसुदंसणाए पुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं, पन्नासं जोयणाइं, उग्गाहित्ता एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते पुरत्थिमिल्ले भवणे सरिसे भाणियव्वं जाव सयणिज्जं, एवं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं ॥३६॥ जंबूएणं सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं उग्गाहित्ता एत्थणं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा पउमा पउमप्पभा चेव कुमुदा कुमुयप्पभा ॥ ताओणं णंदापुक्खरिणीओ कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं पंचधणुसयाइं उव्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ

योजन के तीन वनखण्ड चारों तरफ वेष्टित हैं प्रथम, द्वितीय व तृतीय ॥ ३५ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष से पूर्व के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे तब वहां एक बड़ा भवन कहा है, इस का वर्णन जैसे पूर्व दिशा में की जम्बू सुदर्शन वृक्ष की शाखा पर भवन का कहा वैसे ही जानना यावत् देव शय्या पर्यंत कहना ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३६ ॥ जम्बू सुदर्शन से ईशानकून के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं जिन के नाम—पद्मा, पद्मप्रभा, कुमुदा, व कुमुदप्रभा, ये नंदा पुष्करणियों एक कोश की लम्बी, आधा कोश की चौड़ी, पांच सो धनुष्य की

णिप्पकाओ णीरयाओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरण छत्ता ॥ तासिण णदापुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभाए एत्थण पासायवडेंसक पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोस विक्खंभेण सो चेव से वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार, एव दक्खिण पुरत्थि मण वि पण्णास जोयणा चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तचेव पमाण तहेव पसायवडेंसको तप्पमाणो, एव दाक्खिण, पच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयणा णवरिं भिंगा भिंगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पभा चव, सेस तहेव॥ जबूण सुदसणा उत्तरपुरत्थिमे पढम वणसड पण्णासं जोयणाइ उग्गाहित्ता

ऊंची, स्वच्छ, कोमल श्लक्ष्ण घठारी, मठारी, पंक व रज रहित, यावत् प्रतिरूप है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् तोरण व छत्रपर छत्र है उन नंदा पुष्करणी के बीच में प्रासादावतंसक कहे हैं, वे एक कोश के लम्बे, आधा कोश के चौडे, वगैरह वर्णन जानना यावत् परिवार सहित सिंहासन कहना ऐसे ही दक्षिणपूर्व ईशानकौन में पचास योजन जाव यहां चार नंदा पुष्करणी कही है जिन के नाम— उत्पल गुल्मा, नलिना, उत्पला व उत्पल ज्वाला इन का प्रमाण पूर्ववत् जानना ऐसे ही दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कौन में पचास योजन जावें वहां चार नंदा पुष्करणी हैं जिन के नाम—मृगा, मृगाणिभा, अंजना व कज्जल प्रभा, शेष सब पूर्ववत् जानना जम्बू सुदर्शन से पश्चिमउत्तर वायव्य कौन में पचास

वणसडेहिं सव्वतो समता संपरिक्खित्ता तंजहा पढमेणं दोच्चेणं तच्चेणं ॥ ३५ ॥ जंबूएणं सुदंसणाए पुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं, पन्नासं जोयणाइं उग्गाहित्ता एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते पुरत्थिमिल्ले भवणे सरिसे भाणियव्वं जाव सयणिज्जं, एवं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं ॥ ३६ ॥ जंबूएणं सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं उग्गाहित्ता एत्थणं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा पउमा पउमप्पभा चेव कुमुदा कुमुयप्पभा ॥ ताओणं णंदापुक्खरिणीओ कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं पंचधणुसयाइं उव्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ

योजन के तीन वनखण्ड चारों तरफ वेष्टित हैं प्रथम, द्वितीय व तृतीय ॥ ३५ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष से पूर्व के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे तब वहां एक बड़ा भवन कहा है, इस का वर्णन जैसे पूर्व दिशा में की जम्बू सुदर्शन वृक्ष की शाखा पर भवन का कहा वैसे ही जानना यावत् देव शैय्या पर्यंत कहना ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३६ ॥ जम्बू सुदर्शन से ईशानकून के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं जिन के नाम—पद्मा, पद्मप्रभा, कुमुदा, व कुमुदप्रभा, ये नंदा पुष्करणियों एक कोश की लम्बी, आधा कोश की चौड़ी, पांच सो धनुष्य की

क्खंधेण,मूलेविच्छिन्ने मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए,गोपुच्छ संठाणसंठिते सव्व जम्बुणयामए अच्छे जाव पडिरूवे, सेणं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते,दोण्हवि वण्णओ,तस्सण कूडस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयति॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एग सिद्धाय तणं कोसप्पमाण सव्वा सिद्धायतणवत्तव्वया, जंबूएणं सुदंसणाए पुरत्थिमस्स भवणस्स दाहिणेणं दाहिणपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं एत्थणं एगेमहं कूडे पण्णत्ते तंचेव पमाण सिद्धायतणंच ॥ जंबूएणं सुदंसणाये दाहिणिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेण

ऊपर पतले है, गोपुंछ संस्थानवाले हैं, सब जम्बूनन्दमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं, उन को एक २ पद्मवर वेदिका व एक २ वनखण्ड चारों ओर हैं दोनों वर्णन योग्य हैं उन कूट पर बहुत सम रमणीय भूविभाग है, यावत् वहां देव बैठते हैं उस भूमिभाग के मध्य में एक सिद्धायतन कोश प्रमाण का है इस सिद्धायतन की वक्तव्यता कहना जम्बू सुदर्शन के पूर्व के भवन से दक्षिण में व दक्षिणपूर्व--अग्निकोण के प्रासादावतंसक से उत्तर में एक बडा कूट है इस का प्रमाण व वक्तव्यता पूर्ववत् जानना यों सिद्धायतन पर्यंत कहना जम्बू सुदर्शन के दक्षिण के भवन से पूर्व में और अग्निकोण के प्रासादावतंसक

एत्थण चत्तारि नंदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा-सिरिकंता सिरिमहिया सिरिचंदा चेव तहय सिरिणिलया, तचेव पमाण तहेव पासाय वडेंसओ ॥ ३७ ॥ जंबूएण सुदंसणातो पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेण उत्तरपुरत्थिमिल्ल पासाय वडेंसगस्स दाहिणेण एत्थण एगेमहं कूडे पण्णत्ते, अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण मूले बारस जोयणाइं आयाम विक्खंभेण, मज्झे अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेण, उवरिं चत्तारि जोयणाइं आयामविक्खंभेण, मूले साइरेग सत्ततीस जोयणाइं परिक्खेवेण मज्झे सातिरेगाइं पण्णुवीस जोयणाइं परिक्खेवेण, उवरिं सातिरेगाइं बारस जोयणाइं परि-

योजन वाले वहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं, उन के नाम, श्रीकांता, श्रीमहिता, श्री चंद्रा व श्रीनिलया. उन का प्रमाण भी वैसे ही जानना, और बीच में एक २ प्रासादावतंसक जानना ॥ ३७ ॥ जम्बू सुदर्शन के भवन से उत्तर में और ईशानकून के भवन से दक्षिण में एक बडा कूट कहा है, वह आठ योजन का ऊंचा है, मूल में बारह योजन का लम्बा चौडा है, मध्य में आठ योजन का लम्बा चौडा है ऊपर चार योजन का लम्बा चौडा है, मूल में साधिक सैंतीस योजन की परिधि है, मध्य में साधिक पचीस योजन की परिधि है, और ऊपर साधिक बारह योजन की परिधि है मूल में विस्तारवाला, मध्य मे संकुचित व

पुरत्थिमेण उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थण एगे महं कूडे पण्णत्ते तचेव पमाण तहेव सिद्धायतणच॥ ३८ ॥जंबू सुदंसणा अण्णेहिं बहुहिं तिलएहिं लवएहिं जाव रायरुक्खेहिं नदी रुक्खेहि जाव सव्वता समता सपरिक्खित्ता॥ जंबूएण सुदंसणाए उवरिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पण्णत्ता तजहा सोत्थिय सिरिवच्छ,किण्हा चामर ज्झया जाव छत्तातिछत्ता ॥ ३९ ॥ जंबूएण सुदंसणाए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता तजहा- सुदंसणा, अमोहाय, सुप्पबुद्धा जसोहरा ॥ विदेहा जंबू सोमणसा, णीतिया णिच्च मंडिया ॥ १ ॥ भद्दाय विसालाय सुजाया, सुमणाविय सुदंसणाए, जंबूते नामधेज्जा दुवालसा ॥ २ ॥ ३९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति जंबू सुदंसणा ? गोयमा !

कूट का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सिद्धायतन कहना ॥ ३८ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष की आसपास अन्य बहुत तिलक लवग यावत् नदी वृक्षों रहे हुवे हैं जम्बू सुदर्शन पर बहुत आठ २ मंगलिक हैं तद्यथा-स्वस्तिक श्रीवत्स, कृष्ण, चमर यावत् छत्रातिछत्र ॥ ३९ ॥ जम्बू-सुदर्शन के बारह नाम कहे हैं १ सुदर्शन,२ अमोघ,३ सुप्रबुद्ध,४ यशोधर ५ विदेह,६ जम्बू ७ सौमनस ८ णियता ९ सुभद्रा, १० विशाला, ११ सुजाया, १२ सुदर्शन ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! सुदर्शन नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! जम्बू सुदर्शन पर जम्बूद्वीप का अधिपति अनादृत नामक महर्द्धिक यावत्

दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थण एगे कूडे ॥ जम्बुए दाहिणल्ल भवणस्स पच्चत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमिल्लपासा, पुरत्थिमेण एत्थण एगे कूडे पण्णत्ते ॥ जंबुतो पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स दाहिणेण दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेण एगे महं कूडे पण्णत्ते, एत चेय पमाण सिद्धायतणच जम्बुए पच्चत्थि भवणस्स उत्तरेण उत्तरपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दाहिणेण एत्थण एग कूडे पण्णत्ते तचेव ॥ जम्बुए उत्तरिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेण उत्तर पच्चत्थि पासायवडेंसगस्स पुरत्थिमेण एग महं कुडे पण्णत्ते तचेव जंबु उत्तर भवणस्स

पश्चिम में एक बड़ा कूट है जम्बू सुदर्शन के दक्षिण दिशा के भवन से पश्चिम में व नैऋत्यकौण के प्रासादावतंसक से पूर्व दिशा में एक बड़ा कूट है जम्बू सुदर्शन के पश्चिम के भवन से दक्षिण में व नैऋत्यकौन के प्रासादावतंसक से उत्तर में एक बड़ा कूट है जम्बू सुदर्शन के पश्चिम के भवन से उत्तर में व वायव्यकौन के प्रासादावतंसक से पूर्व में एक बड़ा कूट कहा है जम्बू के उत्तर दिशा के भवन से पश्चिम में व वायव्यकौण के प्रासादावतंसक से पूर्व में एक बड़ा कूट कहा है जम्बू सुदर्शन वृक्ष से उत्तर दिशा के भवन से पूर्व में व ईशानकौन के प्रासादावतंसक से पश्चिम में एक बड़ा कूट कहा है सब

दीविस्स सासते णामधेज्जे पण्णत्ते जण्णकायायिणासी जाव णिच्च॥ ४१॥ जम्बूद्दीवेण भंते! कति चंदा पभासिसुवा पभासतिवा पभासिस्सतिवा, कतिसूरिया तविंसुवा तवतिवा तविस्सातिवा, कतिणक्खता जोय जोएंसुवा जोयातिवा जोइस्सतिवा कतिमहग्गाहा चारं चरिंसुवा चरातिवा चारिस्सतिवा, केवातिताओ तारागण कोडाकोडीओ सोभेसुवा सोभतिवा सोभिस्सतिवा ? गोयमा ! जम्बूद्दीवेणदीवे दो चंदा पभासिंसुवा ३, दो सूरिया तविंसुवा ३, छप्पण्ण णक्खत्ता जोग जोएंसुवा ३, छावत्तर गहसत चारं चारिंसुवा ३, एगंच सतसहस्स तेत्तीस खलुभव सहस्साइं णवसया

नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है ॥ ४१ ॥ जम्बूद्वीप में कितने चद्रने प्रकाश किया कितने चंद्र प्रकाश करते हैं व कितने चंद्र प्रकाश करेंगे, कितने सूर्य तपे, कितने तपते हैं व कितने तपेंगे, कितने नक्षत्रों ने योग किया, कितने योग करते हैं व कितने योग करेंगे कितने गृह चले, कितने चलते व कितने चलेंगे, कितने ताराओंने शोभा की, कितने तारा शोभा करते हैं व कितने तारा शोभा करेंगे ! अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में दो चद्रने प्रकाश किया दो चंद्र प्रकाश करते हैं, दो चन्द्र प्रकाश करेंगे, दो सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, ५६ नक्षत्रने योग किया, करते हैं व योग करेंगे, १७६ ग्रह चार चरे, चार चरते हैं व चार चरेंगे, एक लाख तेत्तीस हजार पचास कोडाकोड तारागण शोभित हुवे, शोभते व शोभेंगे यह

जंबू सुदंसणाते जम्बूदीवाहिवती अणाढिते नाम देवे महिड्डिए जाव पलिओ-
वम ठितीए परिवसति, सेणं तत्थ चउण्हं सामाणिय साहस्सीण जाव जंबुदीवस्स
जंबूसुदंसणाए अणाढियाते रायहाणीए जाव विहरति ॥ ४० ॥ कहिणं भंते !
अणाढियस्स देवस्स अणाढिया नाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा! जम्बूद्दीवे २ मंदरस्स
पव्वयस्स उत्तरेण तिरि एवं जहा विजयस्स देवस्स जाव समत्त रायहाणीए महिड्डिए
अदुत्तरंचेण गोयमा ! जम्बूदीवे दीवे तत्थ २ देसे २ बहवे जंबु रुक्खा जंबूवणा
जंबू वणसंडा णिच्चं कुसुमिया जाव सिरिए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठति, से
तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति जम्बू द्दीवे दीवे ॥ अदुत्तरचणं गोयमा ! जम्बूदीवस्स

पल्योपम की स्थिति वाला देव रहता है, वह चार हजार सामानिक यावत् जम्बूद्वीप का जम्बू सुदर्शन का
अनादृत राजधानी का अधिपति पना करता हुआ यावत् विचरता है ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! अनादृत
देवकी अनादृत राजधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर में तीर्च्छा वों
सब अधिकार विजय देवकी विजया राजधानी जैसे कहना यावत् महर्धिक है अथवा अहो गौतम !
जम्बूद्वीप में स्थान २ पर जम्बू वृक्ष जम्बू वर्ण वाले जम्बू वनखण्ड सदैव फल फूल वाले यावत् सुशोभित
है अहो गौतम ! इसलिये जम्बूद्वीप नाम कहा है अथवा जम्बूद्वीप का नाम शाश्वत है यह कदापि

सपरिक्खित्ता पिट्ठइ, वण्णओ दोण्हवि, साण पउमवर वेइया अद्ध जोयण उड्ढ उच्चत्तेण, पंचधणुसय विक्खंभेण लवण समुद्द समिया परिक्खेवेण सेस तहेव॥३॥तेण वणसंडे देसूणाइ जाव विहरति ॥४॥ लवणस्सणं भंते ! समुद्दस्स कइदारा पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा विजये, विजयंते, जयंते, अपराजिते ॥ जंबूद्दीवे विजयाइ सरिसा ॥ कहिण भंते ! लवण समुद्दस्स विजए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमापरते धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीओदाए महानदीए उप्पिं एत्थण लवण समुद्दस्स विजय नाम दारे पण्णत्ते अट्ठ

जानना पद्मवर वेदिका आधा योजनकी ऊंची, पांचसो धनुष्यकी चौडी और लवणसमुद्रके जितनी परिधि वाली रही हुई है, शेष वैसे ही कहना ॥ ३ ॥ वनखण्ड भी कुच्छ कम दो योजन का है यावत् विचरते है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ये जम्बुद्वीप के विजय सदृश हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के पूर्व दिशा के अंत में धातकी खण्ड द्वीप से पश्चिम में सीतोदा महा नदी ऊपर लवण समुद्र का विजय द्वार कहा है यह आठ

पण्णासा तारागण कोडीकोडीण सोभिंसवा सोभेंतिवा सोभिस्सातिवा ॥ ४२ ॥ जबूद्दीव णाम दीव लवणे नाम समुद्दे वलयागार सठाण सठिते सव्वओ समता सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ १ ॥ लवणेण भंते ! समुद्दे किं समचक्कवाल सठिये विसम चक्कवाल सठिये ? गोयमा ! समचक्कवाल सठित नो विसम चक्कवाल सठिए॥२॥ लवणेण भंते !समुद्दे केवतिय चक्कवाल विक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ते?गोयमा ! लवणेण समुद्दे दो जोयण सहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण पण्णरस जोयणं सयसहस्साइ एक्कासीइ सहस्साइ सयगाणचत्ताल सय चठयाल किंचि विसेसूण परिक्खेवेण पण्णत्ते सेण एगाए पउमवर वेइयाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समता

जम्बूद्वीप का अधिकार सपूर्ण हुवा ॥ ४२ ॥ अब लवण समुद्र का अधिकार कहते हैं जम्बूद्वीप के चारों तरफ लवण समुद्र वलय के आकार मे रहा हुवा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र क्या समचक्रवाल सस्थान वाला है या विषम चक्रवाल सस्थान वाला है ? अहो गौतम ! समचक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल वाला नहीं है, ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र चक्रवाल मे कितना चौडा है और उस की परिधि कितनी है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र दो लाख योजन का चक्रवाल में चौडा है और पनरह लाख इकासी हजार एक सो गुनपचास योजन में कुच्छ कम की परिधि है उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड चारों तरफ घेरा हुवा है इन दोनों का वर्णन पूर्ववत

लवणा जहा विजयरायहाणीगमो, उद्ध उत्तरहा ॥ लवणस्सण भंते ! समुद्दस्स दारस्सरय एसण केवइय अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसय सहस्साइ पचणउइ सहस्साइ दुण्णिय असीए जोयणसये कोसच दारतरे लवणे जाव अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥ ७ ॥ लवणस्सण भंते समुद्दस्स एएसा धाईय सडं दीव पुट्ठा तहेव जहा जबूदीवे, धायइसडेवि सोचेव गमो ॥ ८ ॥ लवणेण भंते ! समुद्द जीवा उदाइत्ता २ सोचेव विही एव धायइ सडेवि ॥ ९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ लवणे समुद्दे ? गोयमा ! लवणेण समुद्द

दिशा में जयंत का कहना अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अपराजित द्वार कहां कहा है ? वैसे ही राज्यधानी उत्तर में जानना और सब कथन पूर्ववत् कहना अहो भगवन् ! लवण समुद्र के द्वार २ का कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! तीन लाख पचानवे हजार दोसो अस्सी योजन व एक कोश का एक द्वार से दूसरे द्वार तक अंतर कहा है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र को धातकी खण्ड द्वीप स्पर्शा हुवा है ? यों जैसे जम्बूद्वीप लवण समुद्र का कहा वैसे ही कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के जीव वहां से मरकर धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं ? यों जम्बूद्वीप जैसा इस का भी कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का

जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइ विक्खंभेण, एवं तंचेव सव्वं जंबू दीवस्स विजयसारस जाव अट्ठट्ठ मंगलगा ॥ ४५ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ विजय दार ? विजयदारं जो अट्ठो जंबू दीवस्स॥४६॥ कहिण भंते ! लवणगस्स विजयस्स विजयानाम रायहाणी ? गोयमा ! विजयस्स पुरत्थि तिरिमसंखेज्ज अणंमि लवणे धारस्स जंबूद्दीवग सरिसा वत्तव्वया जाव सभ वेजयंतपि अप्पणिज्जेण गमेण लवणस्स दाहिणेण रायहाणी, एवं जयंतेवि, तरनवि रायहाणि पच्चत्थिमेण ॥ कहिण भंते ! लवण समुद्दस्स अपराईए तहेव रायहाणी उत्तरेण अपरायस्स देवस्स अण्णंमि

योजन का ऊंचा, चार योजन का चौडा यों सब जम्बूद्वीप क विजय सदृश यावत् आठ २ मंगल कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! विजय द्वार ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम ! जैसे जम्बूद्वीप के विजय द्वार का कथन किया वैसे ही यहां जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के विजय देव की विजया राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! विजयद्वार से पूर्व तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र का उल्लंघन करे वहां अन्य लवण समुद्र आता है उस में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां विजया राज्यधानी कही है इस का सब कथन जम्बूद्वीप की विजया राज्यधानी जैसे कहना ऐसे ही वैजयंत का कहना, ऐसे ही इस समान वैजयंती नामक लवण समुद्र की राज्यधानी का कथन दक्षिण दिशा में कहना ऐसे ही पश्चिम

तावसुत्रा ३ ॥ चारमुचरे णक्खत्तसय जोएसुत्रा ३ तिण्णि वावण्णा महग्गहसया चारिं चरिसुत्रा दुण्णिय सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा नवयसया तारागण कोडिकोडाण सोभिसुया ३ ॥ ११ ॥ कम्हाण भंते! लवणसमुद्दे चाउद्दट्ठसमुद्दिट्ठा पुण्णमासिणीसु अतिरेगं २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! जंबुद्दीवस्सणं दीवस्स चउदिसिं बाहिरल्लातो वेइयातो लवणसमुद्द पचाणउतिं जोयणसहस्साति उग्गाहित्ताएत्थणं चत्तारि महाअलिंजर संठाण संठिया महति महालया महापायाला पण्णत्ता तंजहा-वलयामुहे केतुवे जुवे, ईसरे ॥ तेणं पाताला एगमेगं जोयण सतसहस्स उव्वेहेणं, मूले दसजोयण

करते हैं व प्रकाश करेंगे वैसे ही चार सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, ११२ नक्षत्रोंने चंद्रमादिक के साथ योग किया, करते हैं व करेंगे, तीन सो बावन ग्रह क्षेत्र में चार चले, चलते हैं व चलेंगे, दो लाख सडसठ हजार नवसो क्रोडा क्रोडा तारे शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे ॥ ११ ॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र का पानी चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या व पूर्णिमा को अत्यंत अधिक २ क्यों वृद्धिपाता है और क्यों कमी होता है ? अर्थात् भरती ओट क्यों होता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के चारोंदिशी में बाहिर की वेदिका के अंतसे लवण समुद्र में ९५ हजार २ योजन जावे वहां महा अलिंजर (कुंभ) के संस्थान वाले चार

उदये अविले रइले लवणे लिंदखारए कडुए अप्पेज्जे बहुण दुप्पय चउप्पय मियपसु पक्खिसरीसवाण णण्णत्थत जोणियाण सत्ताण उठिय, एत्थ लवणा हिवई देव महिड्डीये॥ पलीओवमठीए सेण तत्थ सामाणिय जाव विहरइ, से तेणठेण गोयमा ! एव वुच्चति लवण समुद्दे २ अदुत्तरचण गोयमा ! लवण समुद्दे सासये जाव णिच्चे ॥१०॥ लवणेण भते ! समुद्दे कइचदा पभासिंवा पभासिंवा पभासिस्सतिवा, एव पचवण्हवि पुच्छा ? गोयमा ! लवणसमुद्दे चत्तारि चदा पभासिंसुवा २ चत्तारि सुरिया

पानी लवण जैसा है, निर्मळ नहीं है, पंक कर्दम बहुत है, गोबर का रस जैसा है, खारा पानी है, तीक्ष्ण पानी है, कटुक रस है, पीने योग्य नहीं है, मृग, पशु, पक्षी, सरिसर्प इन को पीने योग्य नहीं है उस में उत्पन्न हुवा जीवों को उस पानी का आहार है, परतु दूसरे के लिये यह आहार नहीं है इस लिये इसका लवण समुद्र नाम कहा है और भी यहां लवणाधिपति महर्द्धिक यावत् पल्योपमकी स्थितिवाला देव रहता है वह सामानिक देव यावत् बहुत वाणव्यंतर देव व देवियोंका आधिपतिपना करता हुवा विचरता है अहो गौतम! इस लिये इस का नाम लवण समुद्र है अथवा लवण समुद्र शाश्वत यावत् नित्य है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में कितने चद्रने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे ? यों सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व ताराओं की भी पृच्छा करना अहो गौतम ! लवण समुद्र में चार चद्रने प्रकाश किया, प्रकाश

मज्झिल्लेतिभागे उवरिल्लेतिभागे तेण तिभागे तेत्तीस २ जोयण सहस्साति तिण्णिय तेत्तीसे जोयणसये जोयणति भागच बाहल्लेण, तत्थण जे से हेट्ठिल्लेभागे एत्थण वायकायते सचिट्ठति, तत्थण जे से मज्झिल्लेतिभागे एत्थण वाउयाएय आउयाएय साचिट्ठति तत्थण जे से उवरिल्लेभागे एत्थण आउयाते सचिट्ठति ॥ १२ ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! लवणसमुद्दे तत्थ २ देसे २ बहवे खुड्डालिंजर सठाण सठिया खुड्डपायाला पण्णत्ता, तेण खुड्डा पायाला एगमेग जोयणसहस्स उव्वेहेण मूले एगमेग जोयणसत विक्खंभेण, मज्झेएगपदेसिया सेढीए एगमेग जोयणसहस्स विक्खंभेणं, उप्पिं मुहमूले एगमेग जोयणसत विक्खंभेण ॥ तेसिण खुड्डा

प्रभंजन इन पाताल कलशों के तीन भाग किये हैं नीचे का भाग, मध्य का भाग व ऊपर का भाग एक २ भाग तेत्तीस हजार तीन सो तेत्तीस योजन व एक योजन के तीन भाग में का एक भाग का जाड़ा है उन में से नीचे के भाग में वायुकाय, बीच के भाग में वायुकाय व अप्काय साथ और ऊपर के भाग में मात्र अप्काय है ॥ १२ ॥ और भी अहो गौतम ! लवण समुद्र में बहुत छोटे आलिंजर के आकार वाले छोटे पाताल कलश हैं व एक हजार योजन के ऊंडे हैं मूल में एक एकसो योजन के चौडे हैं वहां से एक २ प्रदेश बढते २ मध्य में एक हजार योजन के चौडे है वहां से एक प्रदेश कम

सहस्साति विक्खंभेण, मज्झे एगपदेसियाए सेढिए एगमेग जोयणसहस्स विक्खभेण, उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खभेण, तेसिणं महापायालाणं कुड्डा सव्वत्थ समा दसदस जोयणसय बाहाल्ला पण्णत्ता, सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा, तत्थणं बहवे जीवा पोग्गलाय वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति सासयाणं ते कुड्डा दव्वट्ठयाए वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया ॥ तत्थणं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसंति तंजहा काले महाकाले वलंब पभंजणे ॥ तेसिणं महापायालाणं ततोतिभागा पण्णत्ता तंजहा-हट्ठिल्लेतिभागे

पाताल कलश कहे हैं, जिन के नाम १ वडवामुख, २ केतुमुख ३ यूप और ४ ईश्वर ये पाताल कलश एक लाख योजन के मूल में ऊंडे हैं मूल में दश हजार योजन के चौडे हैं, वहां से एकेक प्रदेश की श्रेणि से बढते २ मध्य बीच में एक लाख योजन के चौडे हैं वहां से प्रदेश कम होते २ ऊपर दश हजार योजन के चौडे हैं उन की ठीकरी सर्वत्र समान जाडपने में है, एक हजार योजन की जाडी है यह वज्ररत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है वहां बहुत जीव पुद्गल आते हैं उत्पन्न होते हैं व चवते हैं यह ठीकरी द्रव्य से शाश्वती है, और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वती है वहां महर्द्धिक महा बलवंत यावत् पल्योपम की स्थितिवाले चार देव रहते हैं जिन के नाम—काल, महाकाल, वेलंब व

अट्ठय चुलसिया पातालसता भवति तिमक्खाया ॥ १२ ॥ तेसिं महापातालाण खुड्डाग पातालाणय हिट्ठिम मज्झिलेध्यतिभागेसु बहवे उराला वाया ससेयंति समुच्छंति पताति वेयति कपति खुज्झति घट्टति फदति तत भाव परिणमति, जेण उदयउच्चा- हिज्जति॥ जचाणं तेसिं खुड्डा पायालाण महापायालाण हेट्ठिल्ले मज्झिल्लेसु तिभागेसु बहवे उरालिय वाया संसेयति समुच्छति एयति वेयति कपति खुज्झति घट्टति फदति ततभाव परिणमति,तयाण से उदये उण्णाहिज्जति२, जयाण ते खुड्डा पायालाण महापायालाणय

सब मीलकर जम्बूद्वीप में सात हजार आठसो चौरासी पाताल कलश कहे हैं + ॥ १३ ॥ जब पाताल कलश के छोटे पाताल कलश में बीच का व नीचे का विभाग में ऊर्ध्वगमन स्वभाव वाले वायु काय उत्पन्न होते हैं मूर्च्छित होते हैं, हिलते हैं, चलते हैं, कंपित होते हैं, क्षुब्ध होते हैं व संघट होते हैं, परस्पर संघर्षण होते हैं, और उस भाव में परिणमते हैं तब पानी ऊंचा उछलता है, और जब वह कलश के

+ चारों बडे कलश के मध्य में अन्या २ छोटे कलशों की नव लट हैं प्रथम लट में २१५, दूसरी में २१६ यों २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, और २२३ कलश की नवमी लट हैं इसी तरह चारों कलश की आसपास लट कहना यह सब बडे कलश सामिल करने से पूर्वोक्त संख्या होती हैं

पायालाण कुड्डा सव्वत्थसमा दसजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं, सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तत्थण बहवे जीवाय पोग्गलाय जाव असासयावि पत्तेय २ अद्धपलिओवमठितियाहिं देवेताहिं परिग्गहिया ॥ तेसिण खुड्डग पायालाण ततोतिभागा पण्णत्ता तजहा हेट्ठिल्लेभागे मज्झिल्लेभागे उवरिल्ले-भागे, तेणतिभागा तिण्णि २ तेतिस जोयणसत ते जोयणतिभाग च बाहल्लेण पण्णत्ता, तत्थण जे से हेट्ठिल्ले भागे एत्थण वाउयाए संचिट्ठति, मज्झिल्लेतिभागे वाउयाते आउयातेय उवरिल्ले आउयाए, एवामेव सव्वावरेण लवण समुद्दे सत्त पायाल सहस्सा

हाते २ ऊपर के मुख स्थान एकसो योजन के चौडे हैं इन छोटे पाताल कलशकी ठिकरी सबत्र समान दश योजन की जाडी है सब वज्र रत्नमय स्वच्छ, यावत् प्रतिरूप हैं वहां बहुत जीव व पुद्गल आते हैं, उत्पन्न होते हैं चवते हैं वह ठीकरी द्रव्य से शाश्वती वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्याय से अशाश्वती है, वहां आधे पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन छोटे पाताल कलश के तीन विभाग किये हैं ऊपर का, मध्य का व नीचे का प्रत्येक भाग तीनसो तीतेसी योजन व एक योजन के तीन भाग मेंसे एकभाग का है इस में से सब से नीचे के भाग में वायु है, मध्य भाग में वायु व पानी है और ऊपर के भागमें पानी है

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुक्खुत्तो अतिरेग २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! उदमतेसु पातालेसु वड्ढति आपूरंतेसु पातालेसु हायति स तेणट्ठेण गोयमा ! लवण सतीसाएसु दुक्खुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाण भंते ! केवइय चक्कवाल विक्खंभेण केवइय अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाण दसजोयणसहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण देसूण अद्धजोयण अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सण भंते ! समुद्दस्स कतिनागसाहस्सीओ अब्भतरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयधारेंति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीस नागसाहस्सीओ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके उचा उछलता है, वह वायु से पूरता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाइ में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाइ में है और आधा योजन में कुच्छ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की आभ्यंतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं और कितने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

हेट्ठिल्ले मज्झिल्लेसु तिभागेसु वहवे उराले जाव तंतभाव परिणमति, तयाण से उदये नो उण्णाहिज्जइ २ अतरा वियण ते वाया उदीराति अंतरावियाण से उदये उण्णाहिज्जति ४ अतरावियण ते वाया नो उदीरेति अतरावियण से उदगेण उण्णाहिज्जति अतरावियण से उदगे णो उण्णाहिज्जति एव खलु गोयमा ! लवणेणं समुद्दे चउद्दस ट्ठमुद्दिट्ठ पुण्णमासिणीसु अतिरेग २ वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १४ ॥ लवणेण भते ! समुद्द तीसाए मुहुत्ताण कतिखुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणेणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुखुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ से केणट्ठेण भते ! जाव

छोटे कलश के नीचे व बीच के विभाग वायु उर्ध्व गमन स्वभाववत नहीं होते हैं यावत् उस भाव में नहीं परिणमते हैं तब पानी ऊंचे उछलता नहीं है इस तरह अहोरात्रि में दो वक्त वायु उत्पन्न होता है तब पानी दो वक्त ऊंचा उछलता है इसी से अहोरात्रि में दो वक्त भरती ओट होता है जब पाताल कलश में वायु नहीं उत्पन्न होता है तब वहां का पानी नहीं उछलता है इससे अहो गौतम ! लवण समुद्र में चतुर्दशी, अष्टमी अमावास्या व पूर्णिमा को पानी अधिक २ बढता है और घटता है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में कितनी वक्त पानी बढता है व कमी होता है ! अहो गौतम ! दो बार पानी बढता है व कमी होता है अहो भगवन् ! ऐसा किस लिये कहा कि लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में दो बार पानी बढता है व हीन होता है ?

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं दुखुत्तो अतिरेगं २ वड्ढुतिवा हायतिवा ? गोयमा ! उध्मतेसु पातालेसु वड्ढुति आपूरतेसु पातालेसु हायति से तेणट्ठेणं गोयमा ! लवण सतीमाएसु दुक्खुत्तो अतिरगं वड्ढुतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाणं भंते ! केवइयं चक्कवाल विक्खंभेणं केवइयं अतिरगं वड्ढुतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाणं दसजोयणसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं देसूणं अद्धजोयणं अतिरगं वड्ढुतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सणं भंते ! समुद्दस्स कतिनागसाहस्सीओ अब्भतरियं वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरियं वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयधारेंति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीसं नागसाहस्सीओ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके वर्षा उछलता है वह वायु से पूराता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाइ में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाइ में है और आधा योजन में कुच्छ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की आभ्यंतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं और कितने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

अभिंतरियवेल धारेंति बावत्तारि णागसाहस्सीओ बाहिरिय वेल धारेंति, सट्ठि नागसाहस्सीओ अग्गोदय धारेंति, एवामेव सपुव्वावरेण एगाणाम सयसाहस्सी बावत्तरिंच णागसहस्सा भवतीति मक्खाया ॥ १७ ॥ कतिण भंते ! वेलधरणागराया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि वेलधरा णागराया पण्णत्ता तंजहा गोथूभे सिवए संखे मणोसिलए,॥एतेसिण भंते ! चउण्ह वेलधरा नागरायाण कति आवास पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वता पण्णत्ता तंजहा गोत्थूभे दओभासे संखे दग-सीमये ॥१८॥कहिण भंते!गोथुभस्स वेलधर णागरायिस्स गोथूणाम आवसपव्वते

गौतम ! ४२ हजार नागदेव लवण समुद्र की आभ्यंतर वेल धारकर रखते हैं, ७२ हजार नागदेव बाहिर की वेर धारकर रखते हैं, और ६० हजार नागदेव अग्रोदक धारकर रखते हैं सब मीलकर एक लाख बम्मतरहजार नाग देव होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ; वेलधर नागराज कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! वेलधर नागराज चार कहे हैं तद्यथा-गोस्तूभ शिव, शंख और मनोशिला अहो भगवन् ! इन वेलधर नागराजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ! अहो गौतम ! चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा-गोस्तुभ दकभास, शंख और दगसीमक ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तुभ नागराजाका गोस्तुभ आवास पर्वत

पण्णत्ते? गोयमा! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पुरस्थिमेणं लवण समुद्द बायालीस जोयण सहस्साति उगाहित्ता एत्थण गोथूभस्स वेलधर णागरायिस्स गोथूभे णाम आवासपव्वते पण्णत्ते, सत्तरस इक्कवीसाइं जोयण सताइं उडु उच्चत्तेण चत्तारि तीसे जोयण सते कोसंच उव्वेहेणं मूलेदस बावीसे जोयणसते आयाम विक्खंभेण मज्झेसत्त तेवीसे जोयण सते आयामविक्खंभेण, उवरिं चत्तारि चउवीसे जोयण सए आयामविक्खंभेण, मूले तिण्णि जोयण सहस्साइं दोण्णिय बत्तीसुत्तरे जोयण सए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइं दोण्णिय चुलसयति जोयण सते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण,

कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरुपर्वत से पूर्व में लवणसमुद्र से ४२ हजार योजन अवगाहकर जावे वहां गोस्तुभ वेलधर नागराजा का गोस्तुभ नामक आवास पर्वत कहा है यह सत्तरह सो इक्कीस योजन का ऊंचा चारसो सवातीस योजन गहरा (पानी में) है मूल मे एक हजार बावीस योजन का लम्बा चौडा (गोल) है बीच में सात सो तेवीस योजन का लम्बा चौडा [गोल] है और ऊपर चारसो चौवीस योजनका लम्बा चौडा [गोल] है मूलमें तीनहजार दोसो बत्तीस योजन में कुछ कम की परिधि है, बीच में दो हजार दोसो चौरासी योजन से कुच्छ कम की परिधि है और ऊपर एक

उवरिं एग जोयणसहस्सं तिण्णिएक्कयाले जोयणसते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, मूले विच्छिण्णे, मज्झेसंखित्ते, उप्पिं तणुए, गोपुच्छ संठाण संठिते, सव्व कणगामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ सेणं एगाए पउमवर वेदियाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ ॥ गोथूभस्सणं आवास पव्वयस्स उवरिं बहुसम रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयति ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्जातो एत्थणं एगे मह पासायवडेंसए पण्णत्ते, बावट्ठिं जोयणद्धंच उड्ढं उच्चत्तेणं तंचेव पमाणं अद्धं आयामविक्खंभेणं वण्णओ जाव सीहासणं सपरिवारं ॥ १९ ॥ से केणट्ठेणं भंते !

हजार तीनसो इकचालीस योजन के कुछ कम की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, बीच में संकुचित व ऊपर संकीर्ण है गोपुच्छ संस्थान वाला है सब कनकमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है उन की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना गोस्तूभ आवास पर्वत पर बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् वहां देवता बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के बीच में एक बडा प्रासादावतंसक कहा है साढे६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा कहा है यावत् परिवार सहित सिंहासन कहा है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूभ आवास पर्वत क्यों कहा ? अहो गौतम ! गोस्तूभ

एव वुच्चइ गोथूभे आवास पव्वते ? गोयमा ! गोथूभ आवास पव्वते तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुओ खुड्डा खुड्डियाओ जाव गोथूभ वण्णाइ तहेव जाव गोथूभे, तत्थ देवे महिड्डिए जाव पलिओवमठितीये परिवसति, सेण तत्थ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव गोथुभस्स आवास पव्वतस्स गोथूभाये रायहाणीए जाव विहरति ॥ से तेणट्ठेण जाव णिच्चे ॥ २० ॥ रायहाणि पुच्छा ? गोथूभस्स आवास पव्वयस्स पुरत्थिमेण तिरिय मसखेज्जे दीव समुद्दे वीतीवातिता अण्णमि लवण समुद्द तचेव

आवास पर्वत पर स्थान २ पर बहुत छोटी बडी बावडियों हैं यावत् गोस्तूभ के वर्ण जैसे बहुत कमल हैं यों सब पूर्ववत् कहना यावत् वहां गोस्तूभ नामक देवता रहता है वह महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाला है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् गोस्तूभ आवास पर्वत व गोस्तूभा राज्यधानी का आधिपतिपना करता हुवा विचरता है इसलिये इस का नाम गोस्तूभ आवास पर्वत कहा है यावत् वह नित्य है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूभ देव की गोस्तूभा राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! गोस्तूभ आवास पर्वत से पूर्व में असख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में गोस्तूभ देव की गोस्तूभा राज्यधानी कही है इन का प्रमाण

पमाण तहेव सव्व ॥ २१ ॥ कहिण भंते ! सिवगस्स वेलंधर णागरायिस्स दगभासेणाम आवासे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूद्दीवेण दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेण लवणसमुद्द बायालीस जायण सहस्साति उगाहित्ता एत्थण सिवगस्स वेलंधर णागरायिस्स दगभासे नाम आवास पव्वते पण्णत्ते, तचेव पमाण ज गोथूभस्स णवरि सव्व अंकामय अच्छे जाव पडिरूवे जाव अच्छो भाणियव्वो ॥ गोयमा ! दगभासेण आवास पव्वये लवण समुद्दे अट्ठ जोयाणिये खत्त उदय सव्वता समताओ भासति उज्जोवेति तवेति पभासेति सिवय एत्थ देवे महिड्डिये जाव रायहाणी से

वगैरह सब वक्तव्यता विजया राजधानी जैसे जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! शिव नामक वेलधर नाग राजा का दगभास पर्वत कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मरु पर्वत से दक्षिण दिशा में लवण समुद्र में बयालीस हजार योजन जावे वहां शिव नामक वेलधर नाग राजा का दगभास आवास पर्वत कहा है इस का सब कथन गोस्तूभ आवास पर्वत जैसे कहना विशेष में यह पर्वत सब अंकरत्नमय स्वच्छ यावत् सब अर्थ कहना अहो भगवन् ! दगभास आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम ! दगभास आवास पर्वत लवण समुद्र के पानी में चारों ओर दीप्ति करता है, उद्योत करता है, तपता है, कांति बढाता है और वहां शिव नामक महर्द्धिक देव रहता है, इस लिये इस का दगभास

दक्खिणेण, सिविगाभगभासस्स सेण तचेव ॥ २२ ॥ कहिण भंते ! सखस्स वेलधर णागरायिस्स सखणाम आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण बायालीस जोयण एत्थण सखस्स वेलधर सखेणाम आवास पव्वते तचेव पमाण नवर सव्वरययामये अच्छे ॥ सेण एगाए पउमवर वेदियाए एगेण वणसंडे जाव अट्ठे बहूउ खुड्डा खुड्डियाओ जाव बहुइ उप्पलाइ सखवण्णाइ सखप्पभाइ सखवण्णप्पभाइ सख तत्थ देवे महड्ढिए जाव रायहाणी

पर्वत नाम कहा इन की राजधानी दगभास पर्वत से दक्षिण दिशा में है शेष वैसे ही जानना ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! शख नामक वेलधर नागराजा का शख नामक आवास पर्वत कहा कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन जावे वहां शख नामक वेलधर नाग राजा का शख नामक आवास पर्वत कहा है इस का प्रमाण गोस्तूभ जैसे जानना परन्तु यह सब रूपामय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है इस की आसपास एक २ पद्मवर वेदिका व वन खण्ड है अहो भगवन् ! शख आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! वहां बहुत बाव-वावडियों प्रमुख में यावत् शख जैसे वर्ण वाले बहुत कमल प्रमुख उत्पन्न होते हैं शख जैसे लावण्य,

पच्चत्थिमेण सक्करस आवास पव्वयरस सक्का रायहाणी तचेव पमाण ॥ २३ ॥ कहिण भंते ! मणोसिलकस्स वेलधर णागराइस्स उदगसीमयेणाम आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जम्बूदीवे २ मंदरस्स उत्तरे लवणसमुद्द बायालीस जोयण सहस्साई उगाहित्ता एत्थण मणोसिलगस्स वेलधर णागराथिरस उदयसीमय णाम आवासपव्वते पण्णत्ते तचेव पमाण णवर सव्वफालहामये अच्छ जाव अट्ठो, गोयमा ! दागसीमतेण आवास पव्वते सीतासीतायाण महाणदीण तत्थण तासोए पडिहम्मति से तेणट्ठेण जाव णिच्चे ॥ मणोसिलये तत्थ देवे महिड्डिए जाव सेण

कांचित है यहां मनदेव महर्द्धिक यावत् रहता है इस की राज्यधानी पश्चिमदिशा में है इस का प्रमाण पूर्ववत् जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! मनोसीलक वेलधर नागराजा का दगसीमक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन अवगाहकर जावे यहां मनोसीलक नाग राजा का उदकसील आवास पर्वत कहा है; इस का प्रमाण वैसे ही जानना विशेष में सब स्फटिक रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है इस का सब अर्थ पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! दगसीमक आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम! सीता सीतोदा यह नदियों का प्रवाह इस आवास पर्वत पर्यंत आता है और इस से लगकर पीछा समुद्र में मील जाता है इस लिये

तत्थ चउण्ह सामाणिये जाव विहरति ॥ कहिण भंते ! मणोसिलगस्स वेलधर णागराइस्स मणोसिलाणाम रायहाणी ? गोयमा ! दगसीमस्स आवास पव्वयस्स उत्तरेण तिरिये असखेज्ज जाव अण्णमि लवणे एत्थण मणोसिलाणाम रायहाणी पण्णत्ता, तच्चेव पमाण जाव मणोसिलए देवे कणगकेरयय फलिहमया वेलधरा णामावासा अणुवलधर राइण पव्वया होति रयणमया ॥ १४ ॥ कतिण भंते ! अणुवेलधर णागरायाणो पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि अणुवेलधर णागरायाणो पण्णत्ता तजहा कक्कोडए कद्दमए कतिलासे अरुणप्पभे ॥ तेसिण भंते ! चउण्ह

कहा है यावत् नित्य है अहो भगवन् ! मनोसीलक वेलधर नाग राजा की मनोसीला राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! दगसीमक आवास पर्वत से उत्तर में तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में मनोसीला नामक राज्यधानी कही है यावत् वहां मनोसीलग देव रहता है पहिला आवास पर्वत कनकमय है, दूसरा आवास पर्वत अंक रत्नमय, तीसरा आवास पर्वत चांदीमय और चौथा आवास पर्वत स्फटिक रत्नमय है ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! अनुवेलधर नाग राजा कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुवेलधर नाग राजा चार कहे हैं तद्यथा-१ कर्कोटक, २ कर्दमक, ३ कैलाश

अणुवेलधर णागराईण कइ आवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वया पण्णत्ता तजहा कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ २६ ॥ कहिण्ण भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलधर णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण लवणसमुद्द बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एत्थण कक्कोडगस्स णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एकवीसाति जोयणसयाति तचेव पमाण ज गोथूभस्स, णवर सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेस जाव सीहासण सपरिवार

और ४ अरुणप्रभ अहो भगवन् ! इन चार अनुवेलधर नाग राजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ? अहो गौतम ! इन के चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा १ कर्कोटक २ कर्दमक ३ कैलास और ४ अरुणप्रभ ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! कर्कोटक नामक अनुवेलधर नाग राजा का कर्कोटक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशान कौन में लवण समुद्र में ४२ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां कर्कोटक नाग राजा का कर्कोटक आवास पर्वत कहा है यह १७२१ योजन का ऊंचा है वगैरह जो गोस्तूभ पर्वत का परिमाण कहा वह सब इस का जानना विशेष में यह रत्नमय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है यावत् परिवार सहित सिंहासन जानना, इस का अर्थ—यहां बहुत छोटी बडी बावडियों में

अट्ठो से बहूइ उप्पलाइ, कक्कोडग पभाइ सेस तचेव णवर कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एवतचेव सव्व कद्दमसवि सो चेव गमओ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरत्थिमेण आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरत्थिमेण कइलासेवि एवचव णवर दाहिण पच्चत्थिमेण कइलासवि रायहाणि, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरु त्तरेण रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिण भत ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवण समुद बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता

उत्पल वगैरह होवे हैं कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना परंतु यहां अग्नि कोण कहना इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना कैलासका भी वैसेही जानना परतु यहां नैऋत्य कोण में कहना और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परतु वायव्य कोण में कहना और इसही दिशा में राज्यधानी भी कहना चारों का प्रमाण समान जानना सब रत्नमय हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां लवण समुद्र का अधिपति

अणुवेलधर णागराईणं कइआवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वया पण्णत्ता तंजहा-कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ २६ ॥ कहिणं भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलधर णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बायालीस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं कक्कोडगस्स णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एकवीसाति जोयणसयाति तचेव पमाणं जं गोथूमस्स, णवरं सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेसं जाव सीहासणं सपरिवारं

और ४ अरुणप्रभ अहो भगवन् ! इन चार अनुवेलधर नाग राजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ? अहो गौतम ! इन के चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा १ कर्कोटक २ कर्दमक ३ कैलास और ४ अरुणप्रभ ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! कर्कोटक नामक अणुवेलधर नाग राजा का कर्कोटक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशान कौन में लवण समुद्र में ४२ हजार योजन अवगाह कर आवे वहां कर्कोटक नाग राजा का कर्कोटक आवास पर्वत कहा है यह १७२१ योजन का ऊंचा है वगैरह सो गोस्तूभ पर्वत का परिमाण कहा वह सब इस का जानना विशेष में यह रत्नमय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है यावत् परिवार सहित सिंहासन जानना. इस का अर्थ—यहां बहुत छोटी बडी वावडियों में

भट्ठो से बहूइ उप्पलाइ, कक्कोडग पमाइ सेस तचेव णवर कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एवतचेव सव्व कद्दमसवि सो चेव गमआ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरत्थिमेण आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरत्थिमेण कइलासेवि एवचव णवर दाहिण पच्चत्थिमेण कइलासवि रायहाणि, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरु त्तरेण रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिण भत ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवण समुद बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता

उत्पल वगैरह होवे हैं कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना परतु यहां अग्नि कोण कहना इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना कैलासका भी वैसेही जानना परतु यहां नैऋत्य कोण में कहना और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परतु वायव्य कोण में कहना और इसकी दिशा में राज्यधानी भी कहना चारों का प्रमाण समान जानना सब रत्नमय हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां लवण समुद्र का अधिपति

एत्थण सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमा दीवे णाम दीवे पण्णत्ते, बारस जोयण सहस्साइं आयामविक्खंभेणं सत्ततीस जोयण सहस्साइं नवय अडयाले जोयणसये किंचिविसेसाहिये परिक्खेवेणं, जंबूदीवं दीवंतेणं अद्धकूणणउति जोयणाइं चत्तालीसच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिए जलताओ लवणसमुद्दतेण दो कोसे ऊसिए जलताओ सेणं एगाए पउमवरवेदियाए एगेण वणसंडेण सव्वतो समंता तहेव वण्णओ दोण्हवि ॥ गोयमदीवस्सणं दीवस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते सेजहा णामए आलिंग जाव आसयति ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्ज

सुस्थित देवका गौतम द्वीप कहा है वह बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है ३७९४८ योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है जम्बूद्वीप तरफ ८८५ योजन व एक योजन के ९५ भाग में के ४० भाग पानी से ऊंचा है और लवण समुद्र की दिशी में पानी से दो कोस ऊंचा है इस के एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है इस का वर्णन सब पूर्ववत् कहना गौतमद्वीप के अंदर बहुत रमणीय भूमि भाग है जैसे मादलका तल वगैरह पूर्ववत् कहना, यावत् वहां बहुत देव बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में लवणाधिपति सुस्थित नामक देव का एक बडा आक्रीडावास नामक भूमि विहार कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१ योजन का चौडा है अनेक स्तंभादिका वगैरह सब वर्णन करना

भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स एगे महं आकीलावासे णाम भोमेज्ज विहारे पण्णत्ते बावट्ठिं जोयणाति अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेण, एकतीसं जोयणाइं कोसच विक्खंभेण अणेगखंभसते सण्णिविट्ठ सव्वओभवण वण्णओ भाणियव्वो ॥ आकीलावासस्सणं भोमज्जविहारस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासो तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगे मणिपेढिया पण्णत्ता, सा मणिपेढिया दो जोयणाति आयाम विक्खंभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाते उवरिं एत्थण देवसयणिज्जे पण्णत्ते वण्णओ॥सेकेणट्ठेण भंते! एवं

आक्रीडावास भूमि विहारमें बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् मणिका स्पर्श है उस बहुत रमणीय भूमि भाग के मध्यमें एक मणिपीठिका कही है यह मणिपीठिका दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी शेष पूर्ववत् इस मणिपीठिका पर एक देवशयन कहा है इस का वर्णन पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! गौतमद्वीप ऐसा नाम क्यों कहा ! अहो गौतम! गौतमद्वीप में बहुत उत्पल कमल यावत् गौतम जैसी प्रभा वाले हैं इस लिये ऐसा कहा है यावत् नित्य है अहो भगवन् ! लवणाधिपति सुस्थित नामक देवकी राजधानी कहां

वुच्चइ गोयम दीवे दीवे ? गोयमा ! गोयमदीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुइ, उप्पलाइं जाव गोयमप्पभाई से तेणट्टेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कहिण भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स, सुट्ठियाणाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! गोयम दीवस्स पच्चत्थिमेण तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णमि लवणसमुद्दे बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता एवं तहेव सव्व जाव सुट्ठिएदेवे २ ॥ २७ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवगाण चंदाण चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण लवणसमुद्दं बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता एत्थण

कही है ? अहो गौतम ! गौतम द्वीप से पश्चिम में तीच्छी असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर आवे वहां दूसरे लवणसमुद्र में बारह योजन अवगाहकर आवे वहां सुस्थित देवकी राज्यधानी कही है वगैरह सब वर्णन पूर्ववत जानना यावत् सुस्थित देव रहता है॥२७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चन्द्रका चंद्रद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाह कर आवे वहां जम्बूद्वीप के चन्द्र का चन्द्र नामक द्वीप कहा है, यह जम्बूद्वीप की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी से ऊचा है लवण समुद्र की तरफ दो कोस का पानी से

जम्बुद्दीवगाण चंदाण चंददीवानाम दीवा पण्णत्ता, जम्बुद्दीवं तेण अद्धेकूणणउतिं जोयणाति चत्तालीसंच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलंतातो लवणसमुद्दतेण जोयणाति चत्तालीसंच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलंतातो बारस जोयण सहस्साति आयाम विक्खंभेण सेस तचेव जहा गोतमदीवस्स परिक्खेवो पउमवरवेइया पत्तेय२ वणसंड परिक्खित्ता, दोण्णविवण्णओ जाव जोइसिया देवा आसयंति ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्ज भूमिभाग।ण बहुमज्झ देसभाए पासादवडेंसका बावट्ठिं जोयणाइ, बहुमज्झदेसभागे मणिपाढयाओ दो जोयणाओ जाव

ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है शेष सब गौतम द्वीप जैसे वर्णन जानना इन को वनखण्ड व पद्मवर वेदिका घेरीहुई है दोनों वर्णन योग्य है उस पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है यावत् ज्योतिषी देव वहां बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में प्रासादावतंसक कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१॥ योजन का लम्बा चौडा है उस के मध्य में एक मणिपीठिका है यावत परिवार सहित सिंहासन कहना इस का अर्थ की पृच्छा भी वैसे ही कहना अर्थात् इस का ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! वहां छोटी बडी बावडियों में बहुत कमल चंद्र समान वर्णवाले हैं, चंद्र समान कांतिवाले हैं, वहां चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाला रहता है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् चंद्र२ द्वीप व चंद्र राज्यधानी में रहनेवाले अन्य ज्योतिषी देव देवियों का अधिपति

वुच्चइ गोयम दीवे दीवे ? गोयमा ! गोयमदीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहूइं, उप्पलाइं जाव गोयमप्पभाइं से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कहिण भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स, सुट्ठियाणाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! गोयम दीवस्स पच्चत्थिमेण तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णमि लवणसमुद्दे बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता एवं तहेव सव्व जाव सुट्ठिएदेवे २ ॥ २७ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवगाण चंदाण चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता एत्थणं

कही है ? अहो गौतम ! गौतम द्वीपके से पश्चिम में तीच्र्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां दूसरे लवणसमुद्रमें बारह योजन अवगाहकर जावे वहां सुस्थित देवकी राजधानी कही है वगैरह सब वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सुस्थित देव रहता है॥२७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चंद्रका चंद्रद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के चंद्र का चंद्र नामक द्वीप कहा है यह जम्बूद्वीप की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी से ऊपर है लवण समुद्र की तरफ दो कोश का पानी से

अबुद्दीवगाण चदाण चद्ददीवानाम दीवा पण्णत्ता, जम्बुद्दीवं तेण अद्धकूणणउतिं जोयणाति चत्तालीसच पचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलतातो लवणसमुद्दतेण दोकोसे ऊसिता जलतातो बारस जोयण सहस्साति आयाम विक्खंभेण सेस तचेव जहा गोतमदीवस्स परिक्खेवो पउमवरवेइया पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ता, दोण्णवि वण्णओ जाव जोइसिया देवा आसयति ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्ज भूमिभागाण बहुमज्झ देसभाए पासायवडेंसका बावट्ठिं जोयणाइ, बहुमज्झदेसभागे मणिपेढयाओ दो जोयणाओ जाव

ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है शेष सब गौतम द्वीप जैसे वर्णन जानना इन को वनखण्ड व पद्मवर वेदिका घेरीहुइ है दोनों वर्णन योग्य है उस पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है यावत् ज्योतिषी देव वहां बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में प्रासादावतंसक कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा है उस के मध्य में एक मणिपीठिका है यावत परिवार सहित सिंहासन कहना इस का अर्थ की पृच्छा भी वैसे ही कहना अर्थात् इस का ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! वहां छोटी बडी बावडियों में बहुत कमल चद्र समान वर्णवाले हैं, चद्र समान कांतिवाले हैं, वहां चद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाला रहता है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् चद्र२ द्वीप व चंद्र राज्यधानी में रहनेवाले अन्य ज्योतिषी देव देवियों का अधिपति

सीहासणा सपरिवारा माणियव्वा तहेव अट्ठो गोयमा! बहुसु खुड्डा खुड्डियाउ बहूइ उप्प-लाइं चंद वण्णाभाइ चंदा इत्थ देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसंति तेण तत्थ पत्तेय २ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव चंददीवाण चंदाणय रायहाणीण अन्नासिं बहूइ जोतिसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति से तेणट्ठेण गोयमा! चंददीवा जाव णिच्चा ॥ कहिण भंते! जबूदीवगाण चंदगाण चंदाणउ णाम रायहाणीउ पण्णत्ताओ? गोयमा! चंददीवाण पुरत्थिमेणं तिरिय जाव अण्णमि जबूदीवे २ बारस जोयणसहस्साति ओगाहित्ता तचेव पमाण जाव एव महिड्डिया चदा देवा २ ॥ २८ ॥ कहिण भंते! जबूदीवगाण सूराणं सूरदीवणाम दीवा

पना करता हुवा विचरता है अहो गौतम! इस लिये ऐसा नाम कहा है अथवा यह द्वीप अतीत काल में नहीं था ऐसा नहीं यावत् नित्य है अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के चन्द्र की चन्द्रा नामक राजधानी कहां कही है? अहो गौतम! चंद्रद्वीप से पूर्व में तीच्छी असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य जम्बूद्वीप में बारह हजार योजन पर चंद्रा नामक राजधानी कही है इस का प्रमाण वैसे ही जानना यावत् महर्द्धिक चन्द्र देव है ॥ २८ ॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के सूर्य का सूर द्वीप कहां कहा है?

पण्णत्ता ? गोयमा ! जबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता तचेव उच्चत्त आयाम विक्खंभेण परिक्खेवो वेदिया वणसंडा भूमिभागा जाव आसयति पासायवडेंसगाण तचेव पमाण मणिपेढिया सीहासण सपरिवारा अट्ठो उप्पलाइ सूरप्पभाति सूराइयइत्थ देवा जाव रायहाणीओ, सकाण दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णम्मि जबुद्दीवे २ सेस तचेव जाव सूरादीवा ॥२९॥ कहिण भंते ! अब्भितरे लवणगाण चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता ? गोयमा !

अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां सूर द्वीप कहा है इस की लम्बाइ चौडाइ ऊंचाइ यावत् सब वर्णन चंद्र द्वीप जैसे जानना इस को भी वेदिका वनखण्ड व भूमिभाग है यावत् वहां देव रहते हैं उस में प्रासादावतंसक है इस का प्रमाण भी पूर्वोक्त जैसे कहना इस में मणिपीठिका, सिंहासन वगैरह परिवार सहित कहना इस में सूर्य की कांति जैसे उत्पल वगैरह उत्पन्न होवे हैं इस में सूर नामक ज्योतिषी का इन्द्र रहता है इस की राज्यधानी लवण समुद्र के सूर्य द्वीप से पश्चिम में अन्य जम्बूद्वीप में सूर्या नामक राज्यधानी है इस का सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में रहकर जम्बूद्वीप की दिशा में फीरनेवाले

साहस्सिया सपरिवारा माणियव्वा तहेव अट्ठो गोयमा! बहुसु खुड्डा खुड्डियाउ बहूइं उप्पलाइं चंदवण्णाभाइं चंदा इत्थ देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तेणं तत्थ पत्तेयं २ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव चंददीवाणं चंदाणय रायहाणीण अण्णेसिं बहूइं जोतिसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति से तेणट्ठेण गोयमा! चंददीवा जाव णिच्चा ॥ कहिण भंते! जंबूद्दीवगाणं चंदगाणं चंदाणउ णाम रायहाणीउ पण्णत्ताओ? गोयमा! चंददीवाणं पुरत्थिमेणं तिरियं जाव अण्णंमि जंबूद्दीवे २ बारस जोयणसहस्साइं उग्गाहित्ता तंचेव पमाण जाव एव महिड्डिया चंदा देवा २ ॥ २८ ॥ कहिण भंते! जंबूद्दीवगाणं सूराणं सूरदीवणाम दीवा

पना करता हुवा विचरता है अहो गौतम! इस लिये ऐसा नाम कहा है अथवा यह द्वीप अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के चंद्र की चंद्रका नामक राजधानी कहां कही है? अहो गौतम! जंबूद्वीप से पूर्व में तीच्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर आवे वहां अन्य जम्बूद्वीप में बारह हजार योजन पर चंद्रका नामक राज्यधानी कही है इस का प्रमाण वैसे ही जानना यावत् महर्द्धिक चंद्र देव है ॥ २८ ॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के सूर्य का सूर द्वीप कहां कहा है?

उगाहित्ता एत्थणं बाहिरि लवणगाण चंदाण चंददीवा पण्णत्ता ॥ धायतिसंडदीव तेणं अट्ठेकूणणओ जोयणाति चत्तालीस पचाणउतभाग जोयणस्स उसित्ता जलंतातो लवण समुद्द तेण दो कोस उसित्ता बारसजोयणसहस्स इं आयामविक्खंभेण पउमवरवेइया वणसंडे, बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा मणिपढिया सीहासणा सपरिवारा सोचव अट्ठो रायहाणीओ ॥ साण दीवाण पुरत्थिमेण तिरियमसंख अण्णमि लवणसमुद्द तहेव सव्व ॥२१॥ कहिण भंते! बाहिर लवणगाण सूराण सूरदीवा नामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्द पच्चात्थिमिल्लातो वेतियन्ताओ लवणसमुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयणसहस्साइ

योजन जावे वहां बाह्य लवण समुद्र के चन्द्र का चन्द्र द्वीप कहा है वह धातकी खण्ड के तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी पर है, और लवण समुद्र की तरफ दो कोश ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है वहां पद्मवर वेदिका व वनखण्ड है बहुत रमणीय भूमिभाग है, मणिपीठिका, परिवार सहित सिंहासन है इस का अर्थ की पृच्छा ? उस द्वीप से पूर्व में तीच्छी असंख्यात द्वीप समुद्र में राज्यधानी है इनका सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥२१॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र सूर्य का सूर्यद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पश्चिम दिशा की, वेदिका से लवण समुद्र में पूर्व

जम्बूमदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण लवणसमुद्द बारस जोयणसहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं अब्भितर लवणगाणं चंदाणं चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता जहा जंबुद्दीवगा चंदा तहा भाणियव्वा, णवरिं रायहाणीओ अण्णमि लवणे, सेस तचेव ॥ एव अब्भितर लवणगाण सूराणवि लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साति तचेव सव्व रायहाणीओवि॥ ३०॥ कहिण भंते! बाहिरि लावणगाण चंदाण चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्दस्स पुरच्छिमिल्लातो वेदीयतातो लवणसमुद्द पच्चत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइं

अर्थात् लवण समुद्र के आभ्यंतर चंद्र के चंद्र द्वीप कहां हैं? अहो गौतम! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे यहां आभ्यंतर लवण समुद्र के चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है जैसे जम्बूद्वीप के चंद्रद्वीप है वैसे ही कहना विशेष में अन्य लवण समुद्र में राजधानी कहना ऐसे ही लवण समुद्र में बारह हजार योजन पर आभ्यंतर लवण समुद्र के सूर्य का सूर्य द्वीप कहा है इस का सब अधिकार पूर्ववत् जानना ॥ ३० ॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र के चंद्र का चंद्र द्वीप कहां कहा है? अहो गौतम! लवण समुद्र की पूर्व दिशा की वेदिका से लवण समुद्र में पश्चिम दिशा में बारह हजार

१ लवण समुद्र के शिखा बाहिर धातकी खण्ड की दिशा में फीरनेवाले

उगाहित्ता एत्थण बाहिरि लवणगाण चदाण चन्ददीवा पण्णत्ता ॥ धायतिसडदीव तेणं अद्धेकूणणओ जोयणाति चत्तालीस पचाणउतिभागे जोयणस्स ऊसित्ता जलंतातो लवण समुद्द तेण दो कोस ऊसित्ता बारसजोयणसहस्सइं आयामविक्खंभेण पउमवरवेइया वणसंडे, बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा मणिपढिया सीहासणा सपरिवारा सोचेव अट्ठो रायहाणीओ ॥ साण दीवाण पुरत्थिमेण तिरियमसंख अण्णमि लवणसमुद्द तहेव सव्व ॥ २१ ॥ कहिण भंते! बाहिर लवणगाण सूराण सूरदीवा नामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्द पच्चात्थिमल्लातो वेतियन्ताओ लवणसमुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयणसहस्साइं

योजन जावे वहां बाह्य लवण समुद्र के चन्द्र का चन्द्र द्वीप कहा है यह धातकी खण्ड के तरफ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी पर है, और लवण समुद्र की तरफ दो कोश ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौड़ा है वहां पद्मवर वेदिका व वनखण्ड है बहुत रमणीय भूमिभाग है, मणिपीठिका, परिवार सहित सिंहासन है इस का अर्थ की पृच्छा? इस द्वीप से पूर्व में तीर्च्छी असंख्यात द्वीप समुद्र में राज्यधानी हैं इसका सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र सूर्य का सूर्यद्वीप कहां कहा है? अहो गौतम! लवण समुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से लवण समुद्र में पूर्व

धायतिखंडदीवं तेणं अट्ठेकूणउतिं जोयणाति चत्ताळीस च पन्नाणउतिं भागो जोयणस्स ऊत्रयसमुद्दं तेण दो कोसे ऊसिया सेस तहेव जाव रायहाणीओ सगाण दीवाणं पच्चत्थिमेण तिरिय मसखज्ज लवण चेव बारसजोयणा तहेव सव्वं भाणियव्वं ॥२२॥ कहिण भंते! धायतिसंडे दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता ? गोयमा! धायतिसंडस्स दीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेदियंतातो कालोयण समुद्द बारसजोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थण धायतिसंडदीवगाण चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता सव्वतो समता दोकोसा ऊसिता जलतातो बारसजोयण सहस्साइं

दिशा में बारह हजार योजन जावे तब यहां सूर्यद्वीप कहा है यह धातकी खण्ड की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग के ४० भाग जितना ऊंचा व लवण समुद्र से दो कोश का पानी से ऊंचा है शेष सब राज्यधानी पर्यंत वैसे ही कहना अपने द्वीप से पश्चिम में असंख्यात द्वीप समुद्र में अन्य लवण समुद्र में इन की राज्यधानी है ॥ २२ ॥ अहो भगवन्! धातकी खण्डद्वीप के चंद्र के चंद्रद्वीप कहां कहे हैं? अहो गौतम! धातकी खण्डद्वीप की पूर्व की वेदिका से कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां धातकी खण्ड के चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है वह चारों ओर पानी से दो कोश ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौड़ा है वैसे पहिले कहा वैसे ही विष्कम, परिधि, भूमिभाग, प्रासादा

तहेव विक्खभो परिक्खेवो भूमिभागो पासादवडेंसया मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा अठा तहेव रायहाणीओ ॥ सकाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि धायतिसडदीवे सेस तहेव एव धायतिसडगावि सूरादिवावि णवरिं धायतिसडस्स दिवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेइयाओ कालोयण समुद्द बारसजोयण तहेव सव्व जाव रायहाणीओ सूराण दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णमि धायतिसड दीवे सव्व तहेव ॥ ३३ ॥ कहिणं भते ! कालोयणगाण चदाण चददीवा णामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! कालोयणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमि-

वतंसक, मणिपीठिका व परिवार सहित सिंहासन है अर्थ इस का वैसे ही कहना यावत् राज्यधानी की पृच्छा करना अपने द्वीप से पूर्व में असख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां धातकी खण्ड में चंद्रकी राज्यधानी कही है वर्णन पूर्ववत् जानना ऐसे ही धातकी खण्ड के सूर्यद्वीप का कहना परंतु पश्चिम दिशा की वेदिका से कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वगैरह सब वैसे ही कहना राज्यधानी सूर्यद्वीप से पश्चिम में जावे वहां अन्य धातकी खण्ड में है ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के चद्रका चद्रद्वीप कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र की पूर्वदिशा की वेदिका से कालोद समुद्र में पश्चिम में बारह योजन जावे वहां कालोद चद्र का चद्रद्वीप कहा है यह चारो ओर पानी से दो कोश का ऊंचा है

छातो वेतियताओ कोलायण समुद्द पच्चत्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चंदाण चंददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलताओ सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चंदा देवा, एवं सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाणं पच्चत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात में अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पर्वत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में है, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में है. उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समुद्द बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्दे चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दसु सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुद्दीव लवण धायइ कालोद पुक्खरे वरुणे खीर घयखायणदी

में चद्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चद्र सूर्य द्वीप क्रम से आगे के समुद्र में है और समुद्र के चद्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है उन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुण वरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नदीश्वरद्वीप, नदीश्वर

छासों वेतियताओ कोलायणं समुद्द पच्चात्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चंदाण चंददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलताओ सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चंदा देवा, एवं सूराणवि णवर कालोयण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाणं पच्चात्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यातवें अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पूर्ववत् जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में हैं, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में हैं. उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चात्थिमिल्लातो वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समुद्द बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्द चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दसु सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुदीव लवण धायइ कालोए पुक्खरे वरुणे खीर घयखायणदी

में चंद्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चंद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चंद्र सूर्य द्वीप उन से आगे के समुद्र में हैं और समुद्र के चंद्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है, इन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चंद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणि वरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नंदीश्वरद्वीप, नंदीश्वर

च्छातो वेतियताओ कोलायण समुद्द पच्चत्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चंदाण चंददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलंताता सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चंदा देवा, एवं सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओ सगाए दीवाणं पच्चत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात वें अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पूर्ववत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में हैं, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में हैं, उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लाओ वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूरणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समद्द बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्दे चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दे सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुदीव लवण धायइ कालोद पुक्खर वरुणे खीर घयखायणदी

में चद्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चद्र सूर्य द्वीप उस से आगे के समुद्र में है और समुद्र के चद्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है, इन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणवरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नदीश्वरद्वीप, नदीश्वर

चंदाणं चंदाओ णाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं चेव सव्वं एवं सूराणवि णवरं देवोदगस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियंताओ देवोदगं समुद्दं पुरत्थिमेणं बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता रायहाणीओ सयाणं २ पुरत्थिमेणं समुद्दं असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं एवं णागे जक्खे भूतेवि चउण्हं दीव समुद्दाणं ॥ २५ ॥ कहिणं भंते ! सयंभूरमणदीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! सयंभूरमणस्स दीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेइयंतातो सयंभूरमणोदगं समुद्दं बारस जोयण सहस्साइं तहेव रायहाणीतो सगाणं २ दीवाणं पुरत्थिमेणं सयंभूरमणोदगं समुद्दं असंखेज्जाइं

कहां सूर्य द्वीप कहा है और द्वीप से पूर्व के समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे वहां उनकी सूर्या नामक राज्यधानी कही है ऐसे ही नागद्वीप, नागसमुद्र, यक्षद्वीप, यक्षसमुद्र भूतद्वीप व भूतसमुद्र का जानना ये चारों द्वीप समुद्र समान जानना ॥२५॥ अहो भगवन् ! स्वयंभूरमण द्वीप के चन्द्र का चन्द्र द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! स्वयंभूरमण द्वीप की पूर्व की वेदिका से स्वयंभूरमणोदक समुद्र में बारह हजार इसी क्रम से राज्यधानी पर्यंत कहना अपने द्वीप से पूर्व में स्वयंभूरमणोदक समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे तब उसकी राज्यधानी कही है ऐसे ही सूर्य का जानना परंतु यहां स्वयंभूरमण समुद्र की पश्चिम की

जोयण तहेव एव सूराणवि, सयभूरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो रायहाणीओ सकाण २ दीवाण पच्चात्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असखेज्जा सेस तहेव ॥ कहिण भते! सयभूरमणसमुद्दकाण चदाण चददीवा पण्णत्ता? गोयमा! सयभूरमणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयतातो सयभूरमण समुद्द पच्चात्थिमेण बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता सेस तचेव, एव सूराणवि, सयभुरमणस्स पच्चात्थिमिल्लातो वेइयतातो राय-हाणीउ सकाण २ दीवाण पुरत्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असखेज्जाइ सेस तहेव ॥३६॥ अत्थिण भते ! लवणसमुद्दे वेलधरातिवा णागरायातिवा अग्घातिवा सिहातिवा

वेदिका से जानना इन की भी राज्यधानी अपने द्वीप से पश्चिम में स्वयभूरमण समुद्र में असख्यात हजार योजन जावे वहां लग कहना अहो भगवन् ! स्वयभूरमण समुद्र के चद्र का चद्रद्वीप कहा है ! अहो गौतम ! स्वयभूरमण समुद्र की पूर्व की वेदिका से बारह हजार योजन स्वयभू रमणसमुद्र में जावे वहां चद्रद्वीप कहा है वगरह शेष सब पूर्ववत् ऐसे ही सूर्य का कहना परतु यहां स्वयभूरमणसमुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से जानना राज्यधानी अपने द्वीप से पूर्व में स्वयभूरमण समुद्र में असख्यात योजन जावे वहां शेष सब वैसे ही कहना यावत् वहां सूर्य देव रहते हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् !

अत्थि वेल

विड्ढातिवा हा वुड्ढीतिवा ? हंता अत्थि ॥ जहण भंते ! लवण समुद्दे अत्थि वेल धरेतिवा णागरायातिवा अग्घासिहा विज्झातिवा हासवड्ढीतिवा तहाण बाहिरएसुवि समुद्देसु अत्थि वेलधराइवा णागरायातिवा अग्घातिवा सिहातिवा विज्झातिवा हासवुड्ढीतिवा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ ३७ ॥ लवणेण भंते ! समुद्दे किं ऊसितोदगे कि पच्छडोदगे खुभियजले किं अखुभियजले ? गोयमा ! लवणेण समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे, खुभिय-जले नो अखुभियजले ॥ जहाण भंते ! लवण समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे

लवण समुद्र में वेलंधर, नाग राजा, अग्र, शिखा, नमण, ग्राम, वृद्धि वगैरह क्या है ? हां गौतम ! वैसे हैं अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र में वेलंधर, नागराजा, अग्र, शिखा, नमण, ग्राम, वृद्धि है वैसेही बाहिर के समुद्र में क्या वेलंधर, नागराजा, अग्र शिखा, नमण ग्रास व वृद्धि है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में क्या कुच्छ ऊचा शिखर वाला पानी है अथवा विस्तारवंत हैं, क्या वायु से पानी क्षुब्ध होता है अथवा अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का पानी ऊचा शिखावाला है, परन्तु प्रस्तारवंत नहीं है वायु से क्षुब्ध पानी है परन्तु अक्षुब्ध नहीं है अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावंत है परन्तु प्रस्तारवंत नहीं है, वायु से क्षुब्ध है परन्तु

खुभियजले ना अक्खुभियजले तहाण बाहिरगा समुद्दा किं ऊसितोदगा नो पत्थडोदगा खुभियजला नो अक्खुभियजला ? गोयमा ! बाहिरगाण समुद्दाण नो उसितेदगा पत्थडोदगा, नो खुभियजला अक्खुभियजला, पुण्णा पुण्णपमाणा वोल्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताये चिट्ठति ॥ ३८ ॥ अत्थिण भंते ! लवण समुद्द बहवे उराला बलाहका ससेयंति समुच्छाति वास वासाति ? हंता अत्थि ॥ जहाण भंते ! लवण समुद्द बहवे उराला बलाहका ससेयंति समुच्छाति वास वासंति बाहिरएसु नो तिणट्ठ समट्ठ॥ ३९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव

मक्षुब्ध नहीं है वैसे ही क्या बाहिर के असंख्यात समुद्र का पानी ऊंचा शिखरवन्त, प्रस्तारवत क्षुब्ध व अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! बाहिर के कालोद समुद्र प्रमुख का पानी ऊंचा शिखरवन्त नहीं है, परतु प्रस्तारवन्त है वायु से क्षुब्ध नहीं है परतु अक्षुब्ध शांत है क्यों कि इन में पाताल कलश नहीं है, ये पानी से परिपूर्ण भरे हुवे हैं पूर्ण प्रमाण भरे हैं, परिपूर्ण घट जैसे भर हुवे हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में बहुत अप्कायरूप मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षते हैं ? हां गौतम ! वैसे ही उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं जैसे लवण समुद्र में बहुत मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं वैसे ही क्या बाहिर के समुद्र में मेघ उत्पन्न होवे हैं व वर्षा करते हैं ? यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! किस

वुच्चइ वाहिरगाण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति? गोयमा! वाहिरएसुण समुद्द बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जति से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चति वाहिरगाण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा जाव समभरघडत्ताए चिट्ठति ॥ ४० ॥ लवणेण भंते! केवतिय उव्वेह परिवुड्ढिए पण्णत्ते? गोयमा! लवणस्स समुद्दस्स उभउ पासिं पंचाणउतिं २ पदेसे गता पएस उव्वेह परिवुड्ढिए पण्णत्ते पंचाणउतिं २ वालग्गाइं गता वालग्ग उव्वेह परिवुड्ढिते पण्णत्ते, एवं पंचाणउतिं २ लिक्खगता लिक्ख उव्वेह

लिये ऐसा कहा कि बाहिर के समुद्र परिपूर्ण घडे जैसे भरे हुवे हैं अहो गौतम! बाहिर के समुद्र में बहुत अप्काय के जीव मेघ-वृष्टि बिना उत्पन्न होते हैं व चवते हैं, इसलिये ऐसा कहा है कि बाहिर के समुद्र भरे हुवे हैं यावत् परिपूर्ण घट समान हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र की गहराइ में कितनी वृद्धि होती जाती है? अहो गौतम! लवण समुद्र के दो बाजुम (जम्बूद्वीप व धातकी खण्ड) अंदर ९५ ९५ प्रदेश जावे तब एक प्रदेश ९५-९५ वालाग्र जावे तब एक वालाग्र गहराइ वृद्धि पाती है ऐसे ही ९५-९५ लिक्ख जावे तब एक लिक्ख, ऐसे ही यूका, यवमध्य, अंगुली, बिहस्ति, हाथ, कुक्षि धनुष्य, गाउ, योजन, सौ योजन की

परिवड्ढिए जूया अवमज्झे अगुलि विहत्थिरयणी कुच्छि धणु उव्वेह परिवड्ढीए गाउय जोयण जोयणसय जोयण सहस्साइ गता जोयण सहस्स उव्वेह परिवड्ढिए पण्णत्ते ॥ ४१ ॥ लवणेण भते ! समुद्द केव तिय उस्सेह परिवड्ढिये पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्सण समुद्दस्स उभउपासिं पचाणउति २ पदसे गता सोलस पदेसे उस्सेध परिवुड्ढिते पण्णत्त ॥ लवणस्सण समुद्दस्स एतेणव कमेण जाव पचाणउति जोयण सहस्साइ गता सोलस जोयण सहस्साइति उस्सेह परिवुड्ढिते पण्णत्ते ॥ लवणस्सण भत ! समुद्दस्स के महालये गोतित्थे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्सण समुद्दस्स उभयो पासिं पचाणउति २ जोयण सहस्साइ गोतित्थे पण्णत्ते ॥ लवणस्सण भते !

गहराइ जानना ९५ हजार योजन जावे तब एक हजार योजन की गहराइ मानना ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् लवण समुद्र की शिखा कितनी ऊंची है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के दोनों बाजु से ९५ ९५ प्रदेश अंदर जावे तब १६ प्रदेश शिखा ऊंची है, इसी क्रम से ९५-९५ हजार योजन अंदर जावे तब १६ हजार योजन शिखा ऊंची है अहो भगवन् ! लवण समुद्र का कितना गोतीर्थ कहा है ? (गोतीर्थ सो पानी का चढाव उतार) अहो गौतम ! लवण समुद्र के दो बाजु ९५-९५ हजार योजन में गोतीर्थ है अहो भगवन् ! लवण समुद्र में गोतीर्थ रहित समपानी कितने क्षेत्र में है ? अहो गौतम ! दश हजार योजन के चक्रवाल

[illegible] भंते ! लवणसमुद्दे जम्बुद्दीवे २ नो उवीलेति नो उप्पीलेइ नोचेव एक्कोदग करेइ ? गोयमा ! जम्बूदीवेण दीवे भरहएरवतेसुवासेसु अरहंत चक्कवट्टि बलदेवावासुदेवा चारणा विजाहरा समणासमणीओ सावया सावियाओ मणुया पगतिभद्दया पगतिविणीया पगति उवसता, पगतिपयणुकोह माण माया लोभ मिउमद्दव सपन्ना अलीणा भद्दगा विणीता तेसिण पणिहाय लवणेसमुद्दे जम्बूदीवे नो वीलति नो उप्पलेति नोचेवण एक्कोदक करेति। गंगा सिंधुरत्ता रत्तवईसु सालिलासु देवयाउ महिड्डियाए जाव पलिओवमठितीयाओ

जलमय क्यों नहीं बनाता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत एरवत क्षेत्रमें अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव, जंघाचारण, विद्याचारण, विद्याधर, साधु, साध्वी श्रावक व श्राविका है और दूसर भद्रिक व विनित भद्रिक स्वभाव से ही क्रोध, मान, माया व लोभ पतले करने वाले, मृदुता सपन्न, वैराग्य सपन्न संसार में अलिप्त ऐसे मनुष्यों की नेश्राय से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र पानी नहीं डालता है, पीडा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है और भी गंगा सिंधु, रक्ता व रक्तवती नदी के अधिष्ठायक देव महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं उन की नेश्राय से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है यावत् उसे जलमय नहीं बनाता है और भी चुल्लहिमवंत व शिखरी वर्षधर पर्वतमें महर्द्धिक देव रहते

परिवसति, तासिण पणिहाय लवण समुद्द जाव नो चेवण एक्कोदय करेति ॥ चुल्लहिमवंत सिहरिसु वासधरपव्वतेसु देवा महिड्डिया तेसिं पणिहाय हेमवयएरन्नवएसु वासेसु मणुया पगति भद्दगा रोहिता रोहितंससुवण्णकूलरुप्पकुलासु सलिलासु देवयाउ महिड्डियाओ तासिं पणिहाय सद्दावति वियडावातिवट्ट वेयड्ढ पव्वतेसु देवा महिड्डिया जाव पलितोवमठितीया पण्णत्ता महाहिवंत रुप्पीएसु वासहर पव्वएसु देवा महिड्डिया जाव पलिउवम ठितीयाय हरिवास रम्मगवासेसु मणुया पगतिभद्दगा, गधावातिमालवंत परितातेसु वट्टवेयड्ढ पव्वतेसु देवा महिड्डिया णिसढ णिलवंतेसु वासहर पव्वएसु

उनकी नेश्राय से लवण समुद्रका पानी नहीं आता है, हेमवय एरणवय क्षेत्र के मनुष्य स्वभाव से भद्रिक विनीत है इन के प्रभाव से समुद्र का पानी नहीं आता है और भी रोहिता, रोहितंसा, सुवर्णकुला व रूपकुला इन चार नदियों के महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इनके प्रभाव से लवण समुद्र का पानी नहीं आता है शब्दापाति विकटापाति वृत्त वैताढ्य पर्वत में महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है महा हिमवंत व रूपी पर्वत पर महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं उन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है हरिवर्ष व रम्यक् वर्ष क्षेत्र में युगलिये भद्रिक प्रकृति वाले,

देवा महिड्ढिया सव्वाओ दहदेवीयाउ भाणियव्वाओ, पउमद्दहाओ तेगिच्छकेसरिद्दहा वसाणसु देवीयाउ महिड्ढिया तासि पणिहाय पुव्वविदेह अवरविदेहेसु वासेसु अरहंता चक्कवट्टि बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा, साविगाओ मणुयापगइभद्दगा तासि पणिहाय लवणे सीता सीतोदगासु सलिलासु देवता महिड्ढिया देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया पगतिभद्दगा मंदरे पव्वत देवा महिड्ढिया, जंबूएण सुदंसणाए जंबुद्दीवाहिवइअणाढिए णाम देवेमहिड्ढिए जाव पलिओवमाठतीए परिवसति, तस्स पणिहाय लवणसमुद्दे णो उवीलेति जाव नोचेवणं एकादग करेंत

व विनीत प्रकृति वाले रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है नरकांता नारीकंता, हरिकांता व हरिसलिला इन चार नदियों पर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, गंधापाति व मालवंत नामक वृत्त वैताढ्य पर्वत में महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभाव से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र का पानी नहीं आता है निषध व नीलवंत वर्षधर पर्वत पर महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभावसे लवणसमुद्रका पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है पद्मद्रह, महापद्मद्रह, पुंडरीकद्रह, महापुंडरीकद्रह, तीगिच्छद्रह केसरीद्रह, इन में श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी ये छ देवियों महर्द्धिक हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी

अहुप्परवण गोयमा ! लोगठिति लोगाणुभावे जण्णं लवणेसमुद्दे जंबूद्दीवं २ नो उव्वीलेति णो उप्पीलइ नो चेवणं एक्कोदगं करेति ॥ ४५ ॥ इति मदरोद्देसो समत्तो ॥ लवणेणं समुद्दं धायइसंडे नामदीवे वट्टे वलयागार संठाण संठिए सव्वओ समन्ता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ॥ १ ॥ धायतिसंडेणं भंते ! किं समचक्कवाल संठिते विसमचक्कवाल संठिए ? गोयमा ! समचक्कवाल संठिए नो

नहीं आता है सीता सीतोदा महा नदियों में महर्द्धिक देवियों रहती हैं, इन के प्रभाव से पानी नहीं आता है देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के युगलिये मनुष्य भद्रिक प्रकृतिवाले यावत् विनीत प्रकृतिवाले हैं, इन के प्रभाव से पानी यहां नहीं आता है मेरु पर्वतपर महर्द्धिकदेव रहते हैं उनके प्रभाव से पानी नहीं आता है, जम्बू सुदर्शन वृक्षपर जम्बूद्वीप का अधिपति अनाधृत नामक देव रहता है इसके प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, लवण समुद्र जम्बूद्वीप को पीड़ा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है अथवा अहो गौतम ! ऐसी लोकस्थिति लोकानुभाव है कि जिस से लवण समुद्र जम्बूद्वीप में पानी की रेल नहीं लाता है, उस को पीड़ा नहीं करता है और जलमय नहीं बनाता है यह लवण समुद्र का अधिकार संपूर्ण हुआ ॥ ४५ ॥ यह तीसरी प्रतिपत्ति में मंदर नामक उद्देशा संपूर्ण हुआ लवण समुद्र की चारों ओर घातकी खण्ड नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार संस्थानवाला रहा हुआ है ॥ १ ॥ अहो भगवन् !

ऊोयणसते तिण्णिय कोसे धारस्मय २ आबाहाये अंतरे पण्णत्ते ॥ ६ ॥ धायइ
संडस्सण भते! दीवस्स पदेसा कालोयण समुद्द पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ॥ तेण भते !
किं धायइसंड दीवे कालोयणे समुद्दे ? गोयमा ! धायइसंडे णो खलु ते कालोयण
समुद्दे, एव कालोयणस्सवि ॥ धायइसंडदीवे जीवा उद्दाइत्ता २ कालोयणे समुद्दे
पच्चायति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायति अत्थेगइया नो पच्चायति, एव कालो-
यणेवि, अत्थेगतिया पच्चायति अत्थगतिया नो पच्चायति ॥ ७ ॥ से केणट्ठेण भते !

योजन और तीन कोश का अंतर कहा है ॥६॥ अहो भगवन् धातकी खण्ड द्वीप के प्रदेश कालोद समुद्र
को क्या स्पर्श कर रहे हैं ? हां गौतम ! स्पर्श कर रहे हैं अहो भगवन् ! वे धातकी खण्ड द्वीप के
हैं या कालोद समुद्र के हैं ? अहो गौतम ! वे धातकीखंड द्वीप के हैं परंतु कालोद समुद्र के नहीं हैं
अर्थात् वह भाग धातकी खण्ड का है परंतु कालोद समुद्र का नहीं है ऐसे ही कालोद समुद्र की पृच्छा
करना अहो भगवन् ! धातकी खण्ड द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्र में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम !
कितनेक उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं उत्पन्न होते हैं ऐसे ही कालोदधि समुद्र के कितनेक
जीव धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं और कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! धातकी

एवं वुच्चइ धायइसंडेदीवे २ ? गोयमा! धायइसंडेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे धायइ रुक्खा धायइवणा धायइसंडा णिच्चं कुसुमिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति धायइ महाधायइ रुक्खेसु, सुदंसणे पियदंसणे दुवेदेवा महिड्डिया जाव पलिओवम-ट्ठितीया परिवसंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, अदुत्तरंचणं गोयमा ! जाव णिच्चं ॥ ८ ॥ धायइसंडेणं भंते! दीवे केवति चंदा पभासिंसुवा? कति सूरिया तवइंसुवा ३, कइमहग्गहाचार चरिंसुवा ३, कइणक्खत्ताजोगं जोयंसुवा ३, कइतारागण कोडाकोडीओ

खण्डद्वीप ऐसा क्यों नाम दिया गया ? अहो गौतम ! धातकी खण्डद्वीप में स्थान २ पर बहुत धातकी वृक्ष, धातकी वन, धातकी वनखण्ड सदैव कुसुमित यावत् रहते हैं धातकी खण्ड के पूर्वार्ध में उत्तर कुरुक्षेत्र में धातकी वृक्ष है और पश्चिमार्ध उत्तर कुरुक्षेत्र में महा धातकी वृक्ष है यह जम्बू वृक्ष जैसे हैं यावत् शाश्वत हैं वहां सुदर्शन व प्रियदर्शन नामक दो महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं अहो गौतम ! इस से इस का नाम धातकी खण्डद्वीप कहा है और भी अहो गौतम! इसका नाम शाश्वत है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! धातकी खण्ड द्वीप में कितने चन्द्रने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे ? कितने सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, कितने महाग्रह चार चरे, चरते हैं व चरेंगे, कितने नक्षत्रने

सोभसोभिंसुवा ३ ? गोयमा ! बारस चदा पभासिंसुवा, एव चउवीस, ससिरविणो णक्खत्त सताय तिण्णि छत्तीसा, एगच सहस्स छप्पण धायइ सड अट्ठेव सय-सहस्सा तिण्णि सहस्साइ सत्तयसयाइ धायइसंडदीवे तारागण कोडाकोडीण सोभसुवा ३ ॥ ९ ॥ धायइसंडेण दीव कालोदे नाम समुद्दे वट्टे वलयागार संठाण संठिते सव्वओ समता संपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ कालोदेण भते! समुद्दे किं समचक्कवाल संठाण संठिते विसमचक्कवाल संठाण संठिते? गोयमा! समचक्कवाल संठाण संठिते णो विसम चक्कवाल संठाण संठिते ॥ कालोदण भते! समुद्द केवतिय

योग किया, करते हैं व करेंगे, कितने क्रोडाक्रोडतारा शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे ? अहो गौतम ! बारह चन्द्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे बारह सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, यों सब मीलकर चंद्र सूर्य २४ हुए तीनसो छत्तीस नक्षत्र एक हजार छप्पन ग्रह, आठ लाख तीन हजार सातसो क्रोडा क्रोड तारा शोभित हुवे, शोभते हैं व शोभित होंगे ॥ ९ ॥ धातकी खण्डद्वीप की चारों ओर कालोद समुद्र वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला रहा हुवा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र क्या समचक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र समचक्रवाल संस्थान वाला है परन्तु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है, अहो भगवन् ? कालोद

चक्कवाल विक्खंभेणं केवतिय परिक्खेवेण पन्नत्ते? गोयमा! अट्ठ जोयणसयसहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण एक्काणउतिं जोयणसय सहस्साइं सत्तरिसहस्साइं छच्चपंचुत्तरे जोयणसये किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते, सेणं एगाए पउमवरवेदियाए एगेण वणसंडेणय दोण्णवि वण्णओ ॥ १० ॥ कालोयणस्सणं भंते ! समुद्दस्स कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा विजए विजयंते जयंते अपराजिए ॥ कहिणं भंते ! कालोदस्स समुद्दस्स विजय णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदसमुद्दस्स पुरच्छिमपेरंत पुक्खरवरदीवड्ढ पुरच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमणं सीतोदाए महानदीए उप्पिं एत्थणं

समुद्र की कितनी चक्रवाल चौडाइ व चक्रवाल परिधि कही ? अहो गौतम ! उस की आठ लाख योजन की चक्रवाल चौडाइ कही और एकानवे लाख, सत्तरह हजार, छसो पचतर योजन से कुछ अधिक परिधि कही है, [सब आभ्यंतरद्वीप समुद्रकी मीलकर परिधि जानना] इसकी चारों ओर वनखण्ड व एक पद्मवर वेदिका है दोनों वर्णन योग्य है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के चार द्वार हैं जिन के नाम विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का विजयद्वार कहा कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पूर्व पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध से पश्चिम में सीतोदा महानदी ऊपर कालोद समुद्र का विजयद्वार कहा है यह आठ योजन का ऊंचा

कालोदस्स समुद्दस्स विजयएणामदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तचेव प्पमाण जावरायहाणीओ कहिण भंते ! कालोयस्स समुद्दस्स विजयंत णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिणा परते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्थण कालोय समुद्दस्स विजयंत णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! कालोय समुद्दस्स जयंत नामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं जयंते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! अपराजिए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदय समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राजधानी पर्यंत कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध से उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! अपराजित का द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है शेष सब वैसे ही कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

दाहिणओ एत्थण कालोयस्स समुद्दस्स अपराजिए नामंदारे पण्णत्ते सेस तंचेव ॥ कालोदस्सण भंते ! समुद्दस्स दारस्सय२ एसण केवतिय अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बावीस सय सहस्सा बाणउतिं खलुभवे सहस्साइं छंचसया छयाला दारंतर तिण्णि कोसाये दारस्सय२ अबाहा अंतरे पण्णत्ते॥कालोदस्सण भंते ! समुद्दस्स पदेसा पुक्खरवरदीव तहेव,एव पुक्खरवरदीवस्सवि जीवा उद्दाइत्ता तहेव भाणियव्व॥११॥सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ कालोयणसमुद्दे ? कालोयणसमुद्द गोयमा ! कालोयणस्सण समुद्दस्स उदके आसले मासले पेसले मासरासिवण्णाभे पगतीए उदगरसेण पण्णत्ते ॥ काल

द्वार का परस्पर कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! बावीस लाख बाणवे हजार छ सो छियालीस (२२९२६४६) योजन तीन कोस का प्रत्येक द्वार पर अंतर कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रदेश पुष्करवर द्वीप के प्रदेशको स्पर्शकर रहे हैं क्या ? वगैरह सब पूर्ववत् जानना यावत् पुष्करवर द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्रमें कितनेक उत्पन्न होवे हैं यों सब कहना ॥११॥ अहो भगवन् ! कालोद ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र का पानी आस्वादनीय है, पुष्ट, वजनदार, मनोहर है इस का वर्ण काला है, शाळेद के वर्ण जैसा है—स्वाभाविक पानी के रस समान है इस में काल व महा

कालोदस्स समुद्दस्स विजयएणामदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तचेव पमाण जावरायहाणीओ कहिण भंते ! कालोदस्स समुद्दस्स वेजयंत णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिणा परते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्थण कालोय समुद्दस्स विजयंत णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! कालाय समुद्दस्स जयंते नामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं जयंते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! अपराजिए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदय समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राजधानी पर्यंत कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध से उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! अपराजित द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है वगैरह सब वैसे ही कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

वाल सठाण सठिते॥ पुक्खरवरेण भते ! दीवे केवइय चक्कवाल विक्खभेण, केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसजोयण सयसहस्साइ चक्कवाल विक्खभेण एगा जोयण कोडी वाणउति खलु सयसहस्सा अउणाणउतिं भवसहस्साइ अट्ठसया चउणउयाय परिरओ पुक्खरवरस्स,सण पउमवर वेदियाए एक्केणय वणसडेण दोण्हवि वण्णओ, ॥१५॥ पुक्खरवरस्सण भत ! कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारिदारा पण्णत्ता तजहा—विजये वेजयते जयते अपराजिते ॥ कहिण भते ! पोक्खरवरस्स दीवस्स विजये णामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! पुक्खरवर दीव पुरच्छिमापेरते पुक्खरोद समुद्द पुरच्छिमद्धस्स पच्चच्छिमेण एत्थण पुक्खरवर दीवस्स विजयेणाम

सोलह लाख योजन चक्रवाल चौडाइवाला है एक क्रोड बाणवे लाख, तेवासी हजार, आठ सो चोराणवे योजन की परिधि है यह पुष्करवर द्वीप एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड से चारों ओर लपेटाया हुवा है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! पुष्करवर द्वीप से पूर्व के अंत में पुष्करोद समुद्र के पूर्वार्ध से पश्चिम में पुष्कर द्वीप का विजय द्वार कहा है यों चारों द्वार का

महाकालायएत्थे दुवे देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ १३ ॥ कालोयणेण भते ! समुद्दे कति चदा पभासिसुवा ३, पुच्छा ? गोयमा ! कालोयणेण समुद्दे बायालीस चदा पभासिसुवा ३, बायालीसच दिणगरादिता, कालोधिम्मि एते चरति सबध लेसगा णक्खत्ता सहस्स एगमग छावत्तर चसयमुणेयव्व छष्णसता छण्णउया महग्गहा तिण्णिय सहस्सा अठावीस कालोदहिमि बाराहसतसहस्साइ नवसय पण्णास तारागण कोडीकोडी सोभेसुवा ३, ॥ १४ ॥ कालोयण समुद्द पुक्खरवरेणाम दीवे वट्टेवलियागार सठाण सठिते सव्वतो समता सपारिक्खित्ता तचेव जाव समचक्कवाल सठाण सट्ठिते णोविसम चक्क-

काल ऐसे दो महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं इस लिये कालोद नाम कहा है यावत् नित्य है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र में कितने चद्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे वगैरह सब पृच्छा करना अहो गौतम ! कालोद समुद्र में ४२ चंद्र, ४२ सूर्य, ११७६ नक्षत्र, ३६९६ ग्रह व २८१२९५० क्रोडाक्रोड तारागण हैं ॥१४॥ कालोद समुद्रकी चारों ओर पुष्करवर द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है यावत् वह समचक्रवाल है परंतु विषम चक्रवाल नहीं है । अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप कितना चक्रवाल चौडाइ में है, कितना चक्रवाल परिधि में है ? अहो गौतम !

परिवसति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चति पुक्खरवरदीवे २ जाव णिच्चे ॥१८॥ पुक्खरवरेण भते! दीवे केवइया चदा पभासिंसुवा, एव पुच्छा? गोयमा! चोयाल चदसय चउयालचेव सूरियाणसय पुक्खरवरमिदीवे चरति,-एते पभासेत्ता, चत्तारि सहस्साइ वत्तीसचेवहोंति णक्खत्ता, छच्चसया वावत्तरमहग्गहा, बारस सहस्सा छण्णउइ सय सहस्सा चत्तालीस भवे सहस्साइ चत्तारिसया पुक्खरवरे तारागण कोडाकोडीण सोभसुवा ३, ॥ १९ ॥ पुक्खरवरदीवस्सण बहुमज्झदेसभाए, एत्थण माणुसुत्तारे नाम पव्वते पण्णत्ते, वट्टे वलयागार सठाण सठिते जेणेव पुक्खरवरदीव दुहा विभयमाणे २ चिट्ठति अब्भितर पुक्खरवरद्धच बाहिर पुक्खरवरद्धच,॥अब्भितर

लिये पुष्कर वरद्वीप कहा गया अथवा इस का नाम शाश्वत है ॥ १८ ॥ पुष्करवरद्वीप में कितने चद्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा? अहो गौतम, १४४ चद्र, १४४ सूर्य ४०३२ नक्षत्र, १२६७२ महाग्रह और ९६४४४०० क्रोडा क्रोड तारा यहां सोभते हैं यह पुष्करवरद्वीपका कथन हुवा ॥१९॥ पुष्करवर द्वीप के मध्य भाग में मानुषोत्तर पर्वत वर्तुल वलयाकार सस्थान वाला पुष्कर वरद्वीप के दो भाग करके रहा हुवा है जिन के नाम आभ्यतर पुष्करवरार्ध और बाह्य पुष्करवरार्ध अहो भगवन् ! आभ्यतर पुष्करार्ध कितने चक्रवाल चौडाइ में है और कितनी परिधि है ? अहो गौतम ! आठ हजार योजन चक्रवाल

दारे पण्णत्ते ? तचेव सव्वं, एव चत्तारिविदारा साया सीयोदा णत्थि भाणियव्वाओ॥ पुक्खरवरस्सण भंते। दीवस्स दारस्सय २ एसण केवतिय अबाहाए अतरे पण्णत्ते? गोयमा! अडयाल सय सहस्सा बावीस खलु भवे सहस्साइ अगुणुत्तराय चउरो दारतर॥१६॥ पुक्खरवरस्स पदेसा दोण्हवि पुट्ठा जीवा दोसुवि भाणियव्वा ॥ २७ ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुचइ पुक्खरवरदीवे ? गोयमा ! पुक्खरवरेण दीवे तत्थ २ देसे२ तहिं२ बहवे पउमरुक्खा पउमवणसडा णिच्च कुसुमिता जाव चिट्ठति, पउम महा पउमरुक्खेसु तत्थ पउम पोंडरियाणामं दुवे देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितिया

वर्णन करना यहां सीता सीतोदानदी कहना नहीं पुष्करवर द्वीप के प्रत्येक द्वार का कितना२ अंतर कहा है? अहो गौतम ! ४८,२२,४६९ योजन जितना प्रत्येक द्वार का अतर कहा है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पुष्कर वरद्वीप व पुष्कर वर समुद्र दोनों स्पर्शकर रहे हैं क्या ? वगैरह सब पूर्वोक्त प्रकार कहना दोनों जीवों मरकर दोनों में परस्पर उत्पन्न होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! पुष्कर वर ऐसा नाम क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! पुष्कर वरद्वीप में बहुत पद्म वृक्ष व पद्म वनखण्ड कुसुमित यावत् रहते हैं पद्म व पद्मासन वृक्षपर पद्म व पुंडरीक नाम के महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं इस

तिण्णिसया छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणंतु भवे, सोलाइ छुवेसहस्साइ, अडयाल सयसहस्सा ॥२॥ बावीस खलु भवे सहस्साइ दोविसया पुक्खरद्धे, तारागण कोडीकोडीण ॥ ३ ॥ सोभसुवा ३ ॥ २१ ॥ समयक्खेत्तेण भंते ! केवतिय आयाम विक्खभेण केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीस जोयण सत सहस्साइ आयाम विक्खभेण, एगा जोयण कोडी जाव अब्भितर पुक्खरद्ध परिरया से भाणियव्वा जाव अउण्णण ॥ २२ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चति मणुस्सखेत्ते ? गोयमा ! माणुसक्खेत्तेण तिविहा मणुस्सा परिवसंति तंजहा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतर दीवगा, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति माणुसखेत्ते २ ॥ अदुत्तरचण

पुष्करवर द्वीप में ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, छ हजार तीन सो छत्तीस महा ग्रह, दो हजार सोलह नक्षत्र, अडतालीस लक्ष बावीस हजार दो सो क्रोडाक्रोड तारे हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! समय क्षेत्र कितना लम्बा चौडा व परिधि वाला है ? अहो गौतम ! समय क्षेत्र ४५ लक्ष योजन का लम्बा चौडा है और जैसे आभ्यंतर पुष्करार्ध की परिधि कही है अर्थात् १,४२,३०,२४९ योजन की परिधि है ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र क्यों कहा है ? अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र में तीन प्रकार के मनुष्य रहते हैं तद्यथा-कर्म भूमक, अकर्म भूमक व अंतर द्वीपक अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा यावत्

पुक्खरवरद्धेण भंते ! केवतियं चक्कवालेणं विक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठ जोयण सय सहस्साति चक्कवाल-विक्खंभेणं, कोडीबायालीसा तीस दोण्ह विसया ३ गुणपण्ण पुक्खरअद्ध गार्‍र परिरयं से मणुस्स खत्तस्स परिरओ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अब्भिंतर पुक्ख... अब्भिंतर पुक्खरद्धे गोयमा! अब्भिंतर पुक्खरद्धेण माणुसुत्तरेण पव्वएण सव्वओ ... समपरिक्खित्ते से तेणट्ठेण गोयमा ! अब्भिंतर पुक्खरद्धे, अदुत्तर च ण जाव णिच्च २० ॥ अब्भिंतर पुक्खरद्धेण भंते! केवतिया चंदा पभासिंसुवा ३, एवं पुच्छा जाव तारागण कोडा कोडीओ? गोयमा ! बावत्तरिं चंदा बावत्तरिमेव दिणयरा दित्ता पुक्खरवरदीवड्ढे चरति एए पभासेता॥१॥

चोराणवे है और एक क्रोड बयालीस लाख तीस हजार दो सो गुनपचास योजन की आभ्यंतर पुष्करार्ध की परिधि जानना इतनी ही मनुष्य क्षेत्र की परिधि जानना अहो भगवन् ! आभ्यंतर पुष्करार्ध ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! आभ्यंतर पुष्करवर द्वीप के चारों ओर मानुषोत्तर पर्वत रहा हुवा है इसलिये आभ्यंतर पुष्कर द्वीप कहा यावत् नित्य है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! आभ्यंतर पुष्कर द्वीप में कितने चन्द्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा ! अहो गौतम ! आभ्यंतर

तारग्ग ज भणिय मणुस्सम्मि लोगम्मि॥चार कलबुया पुप्फ, सठिय जोइस चरति॥५॥
रविसासि गहनक्खत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए ॥ जेसिं नामागोत्त नपागया
पणवेहिं॥६॥छावट्ठिं पिडयाइ, चदाइच्चाण मणुयलोगम्मि ॥ दो चदा दोसूरा हवति
एक्कक्कएपिडए ॥७॥ छावट्ठिं २ पिडगाइ, नक्खत्ताण मणुयलोगमि छप्पन्न नक्खत्ताय,
हुति इक्किक्कए पिडए ॥ ८ ॥ छावट्ठिं पिडगाइ महग्गहाणतु मणुयलोयमि, छावत्तर
गाहसय होइउ एक्कक्कए पिडए ॥ ९ ॥ चत्तारिय पतीओ चदाइच्चाय मणुयलोगमि,
छावट्ठीय२ होइ एक्केकियापती ॥ १० ॥ छप्पण पतीतो, णक्खत्ताणतु मणुयलोगमि॥

इतना तारा समुह कहा ॥ ४ ॥ मनुष्य लोक में जो ज्योतिषी देव के विमान हैं वे सब कदम्ब पुष्प के सस्य न धाके नीचे सकुचित व उपर विस्तारवत आधा कविठ जैसे आकारवाले हैं ॥ ५ ॥ सूर्य, चद्रमा ग्रह नक्षत्र व ताराओं जो मनुष्य लोकमें कहे इनका नाम व गोत्र प्रगटपने नहीं कह सकते हैं ॥६॥ इस मनुष्य लोक में चद्र व सूर्य के ६६ पिटक कहे हैं एक २ पिटक में दो चद्र दो सूर्य हैं ॥ ७ ॥ इस मनुष्य लोक में नक्षत्र के ६६ पिटक कहे हैं एक २ पिटक में छप्पन २ नक्षत्र हैं ॥ ८ ॥ मनुष्य लोक में महा ग्रह के ६६ पिटक हैं और एक २ पिटक में १७६ महा ग्रह हैं ॥ ९ ॥ चद्र व सूर्य की मिलकर चार पंक्ति हैं एक २ पंक्ति में ६६-६६ चद्र व सूर्य हैं ॥ १० ॥ मनुष्य लोक में नक्षत्र की ५६ पंक्ति

गोयमा ! समयक्खित्ते सासये जाव निच्चे ॥ २३ ॥ मणुस्स खेत्तेण भंते! कइचंदा पभासेंसुवा १, कइसूरा तवइंसुवा २, गोयमा ! बत्तीस चंदसय बत्तीस चेव सुरियाणसय सयल मणुस्सलोय चरति एए पभासेंता ॥ १ ॥ एक्कारस सहस्सा, छप्पिय सोला महग्गहाणतु ॥ छच्चसया छण्णउया, णक्खत्ता तिण्णिय सहस्सा ॥२॥ अट्ठासीइ सत सहस्सा, चत्तालीस सहस्समणुयलोगम्मि, सत्तयसता अणुणा, तारागण कोडी कोडीण ॥ ३ ॥ सोमसवा ३ एसो तारापिंडो सव्वे समासेण मणुयलोगम्मि, बाहिया पुणताराओ जिणेहिं भणिया असखेज्जा ॥ ४ ॥ एवइय

मनुष्य क्षेत्र है अथवा अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र शाश्वत यावत् नित्य है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में कितने चन्द्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा ? अहो गौतम ! सब मनुष्य लोक में १३२ चंद्र व १३२ सूर्य हैं [२ जम्बूद्वीप, ४ लवण, समुद्र, १२ धातकी खण्ड, ४२ कालोद समुद्र व ७२ पुष्करार्ध द्वीपके यों सब मीलकर १३२ होते हैं] अग्यारह हजार छसो सोल महाग्रह, तीन हजार छसो छन्नु नक्षत्र, अठयासी लाख चालीस हजार सातसो क्रोडा क्रोड तारागण हैं यह ज्योतिषी [?]र मनुष्य लोक में संक्षेप से जानना और बाहिर असंख्यात तारागण श्री तीर्थंकर भगवानने कहे हैं

मणुस्साणं ॥१६॥ तेसिं पविसताण, तावक्खेत्त तु वढ्ढतेणियमा ॥ तेणेव कम्मेण पुणो, परिहायति निक्खमताणं ॥ १७ ॥ तेसिं कलबुया पुप्फसंठिता, होंति तावक्खेत्त-पहा, अतोसंकोडा बाहिं वित्थडा चद सूराण ॥ ८ ॥ केण वड्ढति चदो, परिहाणी केणहोति चदस्स॥कालोवा जाण्हावा, केणणुभावेण चदस्स ॥ १९ ॥ किण्हं राहुवि-माण, णिच्च चदेण होइ अविरहिय ॥ चउरंगुलमप्पत्त, हेट्ठा चदस्स त चरति ॥२०॥ बावट्ठिं २ दिवस,दिवसेतु सुक्कपक्खस्स॥जपरिवड्ढ चदो, खवति तचेव कालेण ॥२१॥

दुःख के फल की प्राप्त होती है ॥ १६ ॥ चद्र सूर्यादिक बाह्य मडल से ज्यों ज्यों आभ्यतर मडल में प्रवेश करते हैं त्यों त्यों तापक्षेत्र बढता है, और दिन मान भी बढता है, और वेही चद्र सूर्य आभ्यतर मडल से नीकलते हैं त्यों त्यों ताप क्षेत्र कम होता है और रात्रिमान बढता है ॥ १७ ॥ सूर्यादिकका तापक्षेत्र कदबवृक्ष के पुष्पके आकारका है शकट मर्थात् गाडीके आकारवाला अदर मेरु पर्वत पास सकुचित और बाहिर लवण समुद्रकी पास विस्तारवत है ॥१८॥ अहो भगवन्! किस कारनसे शुक्लपक्ष में चद्रमा वृद्धि होता है, व किस कारन से कृष्ण पक्ष में चद्रमा हीन होता है, और किस कारन से एक पक्ष कृष्ण व एक पक्ष शुक्ल कहा है? ॥१९॥ अहो गौतम! कृष्ण, अजन रत्नमय राहुका विमान चद्र विमान नीचे चार अगुल की दूरी पर चद्रमाँ साथ विरह रहित चलता है ॥ २० ॥ चद्र विमान के ६२ भाग करे वैसे

का सेस तचेव ॥६०॥१६॥ से जे इमे गामागार णगर जाव सण्णिवेसेसु आजीविका समणा भवति तंजहा दुघरंतरिया, तिघरंतरिया, सत्तघरंतरिया, उप्पलविंटिया, घर-समुदानिया, विज्जुअंतरिया, उट्टिया समाणा, तेणएयारूवेण विहारेण विहरमाणा बहूइं वासाइं परियाय पाउणंति पाउणित्ता कालमासे कालंकिच्चा उक्कोसेण अच्चुए कप्प देवत्ताए उववत्तारो भवति, तहिं तेसिंगति बाविस सागरोवमाइं ट्ठिति, अणा-राहगा, सेस तचेव ॥ ६१ ॥ १७ ॥ से जे इमे गामागर णगर जाव सन्निवेसेसु

इति सोलवा प्रश्नोत्तर ॥ ६० ॥ १६ ॥ ये जो ग्राम आगर नगर यावत् सन्निवेश में आजीवि का श्रमण गोशाला मत के साधु होते हैं तद्यथा—दो घर के अन्तर भिक्षा ग्रहण करे, तीन घर के अन्तर से भिक्षा ग्रहण करे, सात घर के अन्तर से भिक्षा ग्रहण करे कमल कांटे का भक्षण कर रहे, बहुत घरों से भिक्षा ग्रहण करे, विद्युत चमके तो भिक्षा ग्रहण करे, मट्टी के बडे बरतन (कनाली आदि) में प्रवेश कर तपश्चर्या करे, इस प्रकार अभिग्रह के धारन करने वाले श्रमण साधु, उक्त प्रकार आचार में विहार करते बहुत वर्ष साधु की पर्याय का पालन कर काल के अवसर में काल पूर्ण कर उत्कृष्ट बारवे अच्युत देवलोक में देवता पने उत्पन्न होवे, तहां उन की बावीस सागरोपम की स्थिति कही यह विराधक जानना, सब शेष ही इति सतरवा प्रश्नोत्तर ॥ ६१ ॥ १७ ॥ ये जो इन ग्रामागर नगर यावत् सन्निवेश में प्रव्रजित

पव्वइया समाणा भवति तंजहा-अत्तुक्कोसिया परपरिवाइया भूतीकम्मिया, भुज्जोको-
उयकारका तेण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा बहूइ वासाइ परियाय पाउणति
पाउणित्ता तस्सठाणस्स अणालोइय अप्पडिक्कंता कालमासे कालकिच्चा उक्कोसेण
अच्चुएकप्पे अभिओगी देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, तहिं तेसिं गति बावीसं
सागरोवमाइ ठिति पण्णत्ता, परलोगस्स अणाराहका, सेस तचेव ॥ ६२ ॥ १८ ॥
से जे इमे गामागर नगर जाव सन्निवेसेसु णिण्हका भवति तजहा-बहुरत्ता, जीव-

भूतकर्म
प्रयमी श्रमण होते हैं तद्यथा—मैं उत्कृष्ट हुं ऐसा गर्व करने वाले, पराये की निन्दा करने वाले,
मंत्र चूर्णादि करन वाले, वारम्वार कौतुक करन वाले, वे इस प्रकार आचार में विचर कर बहुत वर्ष साधु
की पर्याय का पालनकर, उक्त पाप के स्थानक की आलोचना प्रतिक्रमना किये विना काल के अवसर में
काल पूर्ण कर उत्कृष्ट बारवे अच्युत देवलोक में अभीयोगी—चाकर देवता उत्पन्न होवे, वहां उनकी गति
बावीस सागरोपम की स्थिति कही, परलोक के विराधक जानना शेष तैसे ही ॥ ६२ ॥ १८ ॥
वे जो ग्रामागर नगर यावत् सन्निवेष में निन्हव होते हैं तद्यथा—१ बहुत समय में कार्य होवे
एक समय में नहीं होवे ऐसा माननेवाला जमालीवत्, २ एक प्रदेश में जीव मानन वाला तीस गुप्तवत्
३ साधु है कि नहीं साधु के लिंग में चोरादि होगा ऐसा सन्देह रखने वाले अषाढाचार्य के शिष्यवत्

का सेस तचेव ॥६०॥१६॥ से जे इमे गामागार णगर जाव सण्णिवेसेसु आजीविका समणा भवति तजहा- दुघरतरिया, तिघरतरिया, सत्तघरतरिया, उप्पलबिंटिया, घर-समुदानिया, विज्जुअंतरिया, उट्टिया समाणा, तेणएयारूवेण विहारेण विहरमाणा बहूइ वासाइ परियाय पाउणति पाउणित्ता कालमासे कालकिच्चा उक्कोसेण अच्चुए कप्प देवत्ताए उववत्तारो भवति, तहिं तेसिंगति बावीस सागरोवमाइ ठिति, अणा-राहगा, सेस तचव ॥ ६१ ॥ १७ ॥ से जे इमे गामागर णगर जाव सन्निवेसेसु

इति सोलवा प्रश्नोत्तर ॥ ६० ॥ १६ ॥ वे जो ग्राम आगर नगर यावत् सन्निवेस में आजीवि का श्रमण गोशाला मत के साधु होते हैं तद्यथा—दो घर के अन्तर भिक्षा ग्रहण करे, तीन घर के अन्तर मे भिक्षा ग्रहण करे, सात घर के अन्तर से भिक्षा ग्रहण करे कमल कांटि का भक्षण कर रहे, बहुत घरों से भिक्षा ग्रहण करे, विद्युत चमके तो भिक्षा ग्रहण करे, मट्टी के बडे बरतन (कनाली आदि) में प्रवेश कर तपश्चर्या करे, इस प्रकार अभिग्रह के धारन करने वाले श्रमण साधु, उक्त प्रकार आचार में विहार करते बहुत वर्ष साधु की पर्याय का पालन कर काल के अवसर में काल पूर्ण कर उत्कृष्ट बारवे अच्युत देवलोक में देवता पने उत्पन्न होवे, तहां उन की बावीस सागरोपम की स्थिति कही यह विराधक जानना, शेष वैसे ही इति सतरवा प्रश्नोत्तर ॥ ६१ ॥ १७ ॥ वे जो इन ग्रामागर नगर यावत् सन्निवेस में प्रवर्जित

पव्वइया समाणा भवति तंजहा-अत्तुक्कोसिया परपरिवाइया भूचीकम्मिया, भुज्जोको-उयकारका तेण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा बहूइं वासाइं परियाय पाउणंति पाउणिचा तस्सठाणस्स अणालोइय अप्पडिकंता कालमासे कालकिच्चा उक्कोसेण अच्चुएकप्पे अभिओगी देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, तहिं तेसिं गाति बावीसं सागरोवमाइ ठिति पण्णत्ता, परलोगस्स अणाराहका, सेसं तचेव ॥ ६२ ॥ १८ ॥ से जे इमे गामागर नगर जाव सन्निवेसेसु णिण्हका भवति तंजहा-बहुरत्ता, जीव-

भूतकर्म-सपवी श्रमण होवे हैं तद्यथा—मैं उत्कृष्ट हुं ऐसा गर्व करने वाले, पराये की निन्दा करने वाले, मंत्र चूर्णादि करने वाले, वारम्वार कौतुक करने वाले, वे इस प्रकार आचार में विचर कर बहुत वर्ष साधु की पर्याय का पालनकर, उक्त पाप के स्थानक की आलोचना प्रतिक्रमना किये बिना काल के अवसर में काल पूर्ण कर उत्कृष्ट बारवे अच्युत देवलोक में अभीयोगी—नौकर देवता उत्पन्न होवे, वहां उनकी गति बावीस सागरोपम की स्थिति कहा, परलोक के विराधक जानना शेष तैसे ही ॥ ६२ ॥ १८ ॥ वे जो ग्रामागर नगर यावत् सन्नीवेष में निन्हव होवे हैं तद्यथा—१ बहुत समय में कार्य होवे एक समय में नहीं होवे ऐसा माननेवाला जमालीवत्, २ एक प्रदेश में जीव मानने वाला तीसगुप्तवत्, ३ साधु है कि नहीं साधु के लिंग में चोरादि होगा ऐसा सन्देह रखने वाले अषाढाचार्य के शिष्यवत्

पदेसीया, अव्वत्तिया, सामुच्छिया, दोकिरिया, तेरासिया, सव्वाट्ठिया, इच्चेते सत्त पवयण णिण्हका केवलचरिया लिंगसमाणा मिच्छादिट्ठी बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ता भिणिवेसाहिय अप्पाणच परच तदुभयच वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा विहरित्ता, काल-मासे कालकिच्चा उक्कोसेण उवरिमगेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, तहिं तेसिंगति, इक्कतीस सागरोवमाइठिति पण्णत्ता, परलोगस्स अणाराहगा, सेस तचेव ॥६३॥१९॥

४ नरकादिका क्षिण२में विच्छेद होते है ऐसा माननेवाला अश्व मित्रवत्, ५ एक समय में दो किरिया लगती है ऐसा माननेवाला गार्गाचार्यवत्, ६ जीवराशी अजीवराशी और जीवाजीवराशी यों तीनराशी माननेवाला गोष्ट महिलावत् और ७ जीव को कर्म सर्प काचलीकी तरह लगे ऐसा माननेवाला, परजापतिवत् इस प्रकार प्रवचन शास्त्र के पंथ को ओलवने-छिपानवाले सात निन्हव, फक्त भिक्षाटनादि चारित्रवन्त फक्त लिंग मात्र साधु मिथ्यात्व दृष्टी बहुत अशुभ अध्यवसाय कर अभिनिवर्षा दृष्टीलापना] मिथ्यात्ववन्त बनेहुवे अपनी आत्मा को पर की आत्मा को दोनों की आत्मा को कुमार्ग में जोडते हुवे काल के अवसर काल पूर्ण कर उत्कृष्ट ऊपर ग्रीवेक में देवतापने उत्पन्न होवे, तहां उन की गति उत्कृष्ट इकतीस सागरोपम की स्थिति कही परलोक के आराधक नहीं यावत् होते हैं ॥ १२ ॥ ६३ ॥ सात निन्हवों की कथा कहते हैं—कुंडलपुर

नगरी में महावीरस्वामी का संसार पक्ष का जमाई जमाली नामका क्षत्रीपुत्र महावीरस्वामी का उपदेश श्रवन कर प्रिय दर्शना पत्नी और पांच सो पुरुषों के साथ मुण्डित हो इग्यारे अंग का अभ्यास किया स्वेच्छा-चारी होते महावीर स्वामी से कहने लगा, आप आज्ञा दो तो मैं पांच सो साधु के साथ अलग विहार करूं ? यों दो तीनवक्त पूछा परंतु अपाय का कारन जान भगवत मौनस्थ रहे, तब अपने साथ निकले हुवे ५०० साधु को साथ ले स्वच्छाचार हो विचरता सावस्थी नगरी के तिंदुक उद्यान में आ रहा उस वक्त जमाली के शरीर में दाहज्वर की वेदना होने से शिष्यों से संथारा (बिछोना) बिछाने का कहा शिष्य बिछाना करने लगे तब अत्यन्त पीडित हो पूछा बिछोना किया क्या ? शिष्य बोला हां जी किया आप यहां आकर देख तो बिछाना कर रहे हैं, पूर्ण हुवा नहीं तब बोला तुम झूट क्यों बोले अपूरे को पूरा कैसे कहा ! तब शिष्यों बोले भगवंत का फरमान है कि " कडे माणे कडे " काम करने लगा उसे किया ही कहना ग्रामान्तर जाने निकला उसे गया ही कहना कपडा थोडा फटा तो भी फटाही कहना परंतु जमालीने उस कथन का कबूल नहीं किया और बोला कि, यह महावीर स्वामी का कहना झूट है यह सुन कितनेक साधु उसे श्रद्धा भृष्ट जान महावीर स्वामी के पास गये और कितनेक उस के पास ही रहे सुदर्शना साध्वी भी जमाली की श्रद्धा धारन कर एक वक्त किसी कुंभार की शाला में कम्बल का पडदा बांधकर रहीथी कुंभकार भगवंत का श्रावकथा उसने कम्बलके कौन पार अंगारा रखा जिससे कोना जला तब साध्वी बोली रे भाई ! यह कम्बली क्यों जला डाली कुंभार बोला साध्वीजी झूट न बोलो

पदेसीया, अव्वत्तिया, सामुच्छिया, दोकिरिया, तेरासिया, सव्वाट्टिया, इच्चेते सत्त पवयण णिण्हगा केवलचरिया लिंगसमाणा मिच्छादिट्ठी बहूहिं असब्भावुब्भवणाहिं मिच्छत्ता भिणिवेसहिय अप्पाणच परच तदुभयच वुग्गहेमाणा वुप्पाएमाणा विहरित्ता, काल-मासे कालंकिच्चा उक्कोसेण उवरिमगेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तहिं तेसिंगति, इक्कतीस सागरोवमाइंठिति पण्णत्ता, परलोगस्स अणाराहगा, सेस तचेव ॥६३॥१९॥

४ नरकादिका क्षण२में विच्छेद होते हैं ऐसा माननेवाला अश्व मित्रवत् ५एक समय में दो किरिया लगती हैं ऐसा माननेवाला गार्गाचार्यवत् ,६जीवराशी अजीवराशी और जीवाजीवराशी यों तीनराशी माननेवाला गोष्ट महिलावत् और७जीव को कर्म सर्प कांचलीकी तरह लगे ऐसा माननेवाला, परजापतिवत् इस प्रकार प्रवचन शास्त्र के पंथ को ओलवने-छिपानवाले सात निन्हव, फक्त भिक्षाटनादि चारित्रवन्त फक्त लिंग मात्र साधु मिथ्यात्व दृष्टी बहुत अशुभ अध्यवसाय कर अभिनिवर्ष(हटीलापना)मिथ्यात्ववन्त बनेहुवे अपनी आत्मा को पर की आत्मा को दोनों की आत्मा को कुमार्ग में जोडते हुवे काल के अवसर काल पूर्ण कर उत्कृष्ट ऊपर ग्रीवेक में देवतापने उत्पन्न होवे, वहां उन की गति उत्कृष्ट इकतीस सागरोपम की स्थिति कही परलोक के आराधक नहीं यावत् वैसे ही ॥ १९ ॥ ६३ ॥ सात निन्हवों की कथा कहते हैं—कुंडलपुर

नगरी में महावीरस्वामी का समार पसरा जमाई जमाली नामका समीपुम महावीरस्वामी का उपदेश श्रवन कर प्रिय दर्शना पत्नी और पांच सो पुरुषों के साथ मुण्डित हो इग्यारे अंग का अभ्यास किया स्वेच्छाचारी होते महावीर स्वामी से कहने लगा, आप आज्ञा दो तो मैं पांच सो साधु के साथ अलग विहार करूं ? यों दो तीनवक्त पूछा परंतु अपाय का कारन जान भगवत मौनस्थ रहे, तब अपने साथ निकले हुवे ५०० साधु को साथ ले स्वच्छाचार हो विचरता सावस्थी नगरी के तिंदुक उद्यान में आ रहा उस वक्त जमाली के शरीर में दाहज्वर की वेदना होने से शिष्यों से संथारा (बिछोना) बिछाने का कहा शिष्य बिछाना करने लगे तब अत्यन्त पीडित हो पूछा बिछोना किया क्या ? शिष्य बोला हां जी किया आप यहां आकर देखे तो बिछोना कर रहे हैं, पूर्ण हुवा नहीं तब बोला तुम झूट क्यों बोले अपूरे को पूरा कैसे कहा ? तब शिष्यों बोले भगवंत का फरमान है कि " कड माणे कडे " काम करने लगा उसे किया ही कहना ग्रामान्तर जाने निकला उसे गया ही कहना कपडा थोडा फटा तो भी फटाही कहना परंतु जमालीने उस कथन का कबूल नहीं किया और बोला कि, यह महावीर स्वामी का कहना झूट है यह सुन कितनेक साधु उसे श्रद्धा भृष्ट जान महावीर स्वामी के पास गये और कितनेक उस के पास ही रहे सुदर्शना साध्वी भी जमाली की श्रद्धा धारन कर एक वक्त किसी कुंभार की शाला में कम्बल का पडदा बांधकर रहीथी कुंभकार भगवत का श्रावकथा उसने कम्बलके कौन पार अंगारा रखा जिससे कोना जला तब साध्वी बोली रे भाई ! यह कम्बली क्यों जला डाली कुंभार बोला साध्वीजी झूट न बोलो

यह तो श्रद्धा महावीर स्वामी की है तुमारी श्रद्धा तो पूर्ण कम्बली जले तभी कम्बली जलादाली कहना इतना सुनते ही साध्वीजी की श्रद्धा शुद्ध हुइ वे भी महावीर स्वामी की पास गई, एकदा जमाली चम्पा नगरी में भगवंत पास आकर कहने लगा, मैं तुमारे पास से छद्मस्थ ही विहार कर गया था अब केवली हो कर आया हु तब गौतम स्वामी उस मिथ्याभिमानी मान पूछा—कहो जमाली! लोक शाश्वता है कि अशाश्वता है जीव शाश्वता है कि अशाश्वता है? इन प्रश्नों का जमाली कुछ उत्तर देसका नहीं तब भगवंत बोले हे जमाली! मेरे छद्मस्थ साधु भी इस प्रश्नों का उत्तर दसकते हैं द्रव्य लोक और जीव शाश्वता है, पर्याय का पलटा होने से अशाश्वता है यों सुन जमाली खिशाना हो भगवंत को वंदना बिना किया ही वहां से निकल गया जनपद देश में विचरन लगा उत्कृष्ट साधु की क्रिया से लोगों का रंजितकर अपनी आत्मा को और लोगों की आत्मा को संसार में डूबाता हुवा अलोयना निन्दना बिना किय आयुष्य पूर्णकर छठे देवलोक में किल्विपी नीच जाति का देवता हुवा आगे चार पांच भवबाद श्रद्धा शुद्ध होगी तब मोक्ष जावेगा॥ १ ॥ राजगृही नगरी में वसु आचार्य का शिष्य तिष्यगुप्त आत्मप्रवाद पूर्व का पठन करते कथन आया कि प्रश्न आत्मा के एक प्रदेश को जीव कहना क्या? उत्तर-नहीं,यों दो तीन यावत् असख्यात प्रदेशामें एकभी प्रदेश कमहोतो जीव कहना क्या? भगवंत बोले कि नहीं भगवतका आशय यह है कि जीव के जितने प्रदेशहो उतने सबके समागमही जीव कहा जाता है और तिष्यगुप्तबोला के जीवका जो अन्तिम प्रदेश है वही जीव है यों

एक प्रदेशी आत्मा को प्रकाशता हुआ अमल कम्पा नगरी में एक श्रावक के यहां गौचरी गया श्रावक एक दाना चांवल का परोसकर (दे कर) खडा हो रहा तब तिष्यगुप्त बोले क्या मश्करी करते हो? श्रावक बोला एक प्रदेश की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग और इस चांवल की अवगाहना तो अंगुल के संख्यातवे भाग है आपको इतना आहार खपना ही मुश्किल है, यों समझाने से भी वह समझा नहीं यह दूसरा निन्हव हुवा ॥ २ ॥ महावीर के निर्वाण के १२० वर्ष बाद श्वेताम्बिका नगर के पोलास उद्यान में अषाढाचार्य अपने शिष्यों को पढाते २ ही अकस्मात आयुष्य पूर्ण कर देवता हुवे और अवधिज्ञान से व्यतिकर जान पीछे अपने शरीर में प्रवेश किये शिष्यों को पढाकर भेद खुल्ला कर आप देवलोक में गये शिष्यों शंकाशील बन कि अपनने इतने दिन अव्रति को नमस्कार किया इस शंका से वे किसी साधु को नमस्कार करे नहीं, विचरते हुवे राजगृही आये वहां सूर्यवंशी बलभद्र राजाने इन को चोर कर पकडाये तब साधु बोले तुम श्रावक हो साधु की विटम्बना कैसे करते हो, राजा बोला-आप का मत ही अव्यक्त है किसे मालुम साधु के भेषमें चोर भी होवे तो यों समझानेसे भी वे समझे नहीं यह तीसरा निन्हव हुवा॥ ३॥ श्री वीर निर्वाणको २२० वर्ष गये मिथिला नगरी के लक्ष्मीगृह उद्यान में कोडिन्नाचार्य का शिष्य अश्वमित्र आत्मप्रवाद पूर्व पढते अधिकार आये कि "सव पडिपुण्ण नेरीया वुच्छिज्जसंति जाव वेमाणिया सविए" इस ऊपर से उसने क्षणिक वाद स्थापन किया, भगवान का कथन तो क्षण २ में पर्याय पलटने आश्रिय था, उसने द्रव्यार्थ में ग्रहण किया वे विचरते राजगृही नगरी आया, वहां खंडरक्ष दानीने इन का

अपमान। क्या तब साधु चाले तुम श्रावक हो साधु के दान में पकडते हो। यह बोला क्षणिक वाद में तो तुमारा साधुपना भी क्षणिक है, यों समझाया परन्तु वह समझा नहीं यह चौथा निन्हव हुआ ॥ ५ ॥ श्री वीर निर्वाण से २२८ वर्ष बाद उल्लुका नदी के पूर्व तीर पर गंगाचार्य रहते थे और इस तीर पर उनका शिष्य धन गुप्त रहता था वह किसी कारण से नदी उतरकर गुरु के पास जाते पांव को तो पानी ठंडा लगा और मस्तक को सूर्य का ताप उष्ण लगा, तब विचार हुआ कि जो भगवंत कहते हैं एक वक्त दो उपयोग होवे नहीं यह बात झूठी प्रत्यक्ष मेरे दो उपयोग प्रवर्तते हैं आगे एक समय में दो कार्य होवे एसी प्ररूपना करने लगा गुरुने बहुत समझाया समय की सूक्ष्मता बताई परन्तु उसने हटका त्याग नहीं किया तब एक भिन्नाज्ञानुरागी यक्ष इस को कुप्ररूपना करते देख मुद्गल उठा बहुत डराया तो भी अपना हट छोडा नहीं यह पांचवा निन्हव हुआ ॥ ५८ ॥ श्री वीर निर्वाण से ५४४ वर्ष गये बाद अतरणक नगर में श्रीबल नृप की सभा में एक पण्डित पेट को लोह का पट्टा बन्ध कर आया पूछने से बोला कि-विद्याकर मेरा पेट फटता है इस लिये कोइ मुझे पराजय कर मेरा पेट हल्का करने वाले को ढूंढता फिरता हूं आप के यहां के पुष्पक उद्यान में श्री गुप्ताचार्य विद्वान सुने हैं, उन से संवाद करने आया हुं तब राजा आदि चतुर्विध संघोंमिल आचार्य को बीनति की, आचार्यने अपना रोहगुप्त नामक शिष्यको सभा चतुर वाक्य पटुत्व विवाद करने समर्थजान राज सभा में भेजा उस पण्डित से किसी प्रकार भय होने जैसा नहीं देखा तब रोहगुप्त साधुने एक सूत का

डोरा सूत्र बटकर उस से पूछा बोल यह जीव है कि अजीव है ? जो जीव कहेतो सूत का डोरा है और अजीव कहते हलता क्यों है यों उस निरुत्तर कर "नो जीवा नो अजीवा" इस तीसरी राशि की स्थापना कर उस का पराजय कर गुरुपास आया, गुरु के पूछने से बीतक कह बताया गुरुजी बोले भगवंतने जीव अजीव दोही राशी कही है, तेने जिनाज्ञाविरुद्ध स्थापना की इसलिये तु पीछा राजसभा में जाकर मिथ्या दुष्कृत्य दे रोहगुप्त गुरु वचन उत्थापकर गुरु के साथ छ महीना तक विवाद किया, वहां द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, और समवाय इन छ वस्तुकी स्थापना की तब गुरुबोले की कुत्रिका वणिक की दुकान में भी तीनों वस्तु मांग करलावो वहां गया जीव वस्तु मंगीता दी, अजीव मांगीतो भी दी नो जीवनों अजीव मांगी तब उस की निभ्रछना कर इकाल दिया, तो भी उसने अपना हट नहीं छोडा, तब उसे संघ के बाहिर करदिया यह छठा निन्हव हुवा ॥ ६ ॥ श्रीवीर निर्वाण से ५८०वर्ष बाद दशारणभद्र पुर के इक्षाग्र उद्यान में श्री आर्यरक्षित सूरी वृद्धावस्था के कारण स्थिर रहे उन के १ गोष्टामाहिल, २ फाल्गुण रक्षित, और ३ दुर्बलिकापुष्फ, इस नाम के तीन शिष्य बड विद्वान थे एक वक्त मथुरा नगरी में अक्रियावादी (नास्तिक मति) ने बहुत पाखंड मचाया, तब श्री संघ दशारनपुर नगर आकर आचार्य की विनती की, आचार्यने वादी विजय गोष्टामाहिल को चौमासा करने वहां भेजा उसने उस का पराजय किया इधर आचार्य अपना आयुष्य नजदीक जान श्रीसंघको बुलाकर बोले कि-दुर्बलिक पुष्प तो निष्पाव घट समान है, फल्गु रक्षित तक्र घट समान है और गोष्टा माहिल घृत घट समान है इतना कह आयुष्य

पूर्ण कर देवता हुवे फिर श्री संघने दुर्बलिकपुष्पको आचार्य पद पर स्थापन किये चौमासा बाद गोष्ट माहिल आये दुर्बलिक पुष्प को आचार्य पद प्राप्त हुवा जान, आप दूसरे उपाश्रयमें रहे यह कथन आचार्यने जान उन का विनयकर अपने उपाश्रय में लेगये, तो भी उनका अभिप्राय मिटा नहीं एक वक्त शिष्यों सूत्राभ्यास करते मुख आया कि जीव को कर्म, बन्ध स्पष्ट निकाचित यों चार प्रकार है उस पर विचार हुवा की निकाचित बन्ध छूटे नहीं और जीव मोक्ष जावे नहीं, तब शिष्योंने कुछ पढाने गोष्टमाहिल बोले कि यह बात झूठी है, परन्तु जीव को कर्म नाग कंचुकवत् तथा सर्पादवत् स्पष्ट रहे हैं जिस प्रकार नाग की कांचली उतरती है वैसेही जीव के कर्म दूर होने से जीव मुक्तिमें जाता है यह बात शिष्यों क ध्यान में जची नहीं आचार्य से पूछने से उन्न कहा जो अभव्य जीव हैं उन के निकाचित कर्म बन्ध है उन को मुक्ति नहीं होती है और जीवों के कर्म लोह पिण्ड अग्निवत् प्रदेश से मिलकर रहे हैं, लोह पिण्ड अग्नि दूर होती है त्यों कर्म भी दूर होते हैं परन्तु गोष्टमाहिलने यह बात कबूल की नहीं दूसरी बात प्रत्याख्यान आश्रिय निकली तब गोष्टमाहिलक बोला कालावधि से कोई पचखान नहीं होते हैं क्यों कि प्रत्याख्यान पूर्ण होते उस वस्तु की भोग की इच्छा होती है आचार्य बोले जो कालावधि न हो तो साधु मरकर देवलोक में भी भजनादि करते हैं वह व्रत भंग गिनाजाय परंतु यह बात गोष्टमाहिलने मानी नहीं श्री संघ गोष्टमाहिल को समझाने तेला कर शासन देव को आराधा सीमंधर स्वामी से पुछाया शासन देव पीछा आकर बोला कि आचार्य कहे सो सच्चा है, तो भी गोष्ट-

से जे इमे गामागर नगर सन्निवेसेसु मणुसा भवंति तंजहा-अप्पारंभा, अप्पपरिग्गहा धम्मिया, धम्माणुया, धम्मिट्ठा धम्मक्खाई, धम्मपलोइ, धम्मपालज्जणा, धम्मसमुदा-यरा, धम्मेणचेव वित्तिं कप्पेमाणा सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा, साहु, ॥ ६४ ॥ एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरिया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अप्पडिविरया, एव

पाहिलने नहीं माना अब श्रोमधने उसे निन्हव जिनवचनका लोपक जान संघके बाहिर किया यह सातवा निन्हव ॥ इन का संक्षिप्त अधिकार ग्रन्थसे लिया है, सो जानना इति उन्नीसवा प्रश्नोत्तर समाप्तम्॥१०॥ वे जो इस ग्रामागर नगर यावत् सन्निवेश में मनुष्य होते हैं अथवा-व्रत कर बहुतसा आरंभका त्यागकर प्रयोजन जितना आगार रखनेवाले होने से अल्पारंभी, २ ऐसेही अल्प परिग्रही, ३ श्रुतचारित्र धर्म के धारक धर्मी, ४धर्म धारमें चलनेवाले धर्मानुयायी,५ धर्मपथमें चलनेवाले,६ धर्मकाही जिनको इष्ट है, ७धर्माख्यात धर्मोपदेश करता, धर्मकोही अवलोकन करनेवाले,९धर्मके पालनेवाले, १०धर्ममें सदैव प्रमोदित चित्तवंत, ११ धर्ममार्गमें प्रवृत्त के ही वृत्तिकल्पते उपजीविका करते,१२अच्छे आचारवन्त,१३ अच्छे स्थान (सकृत्य) द्रव्यका व्यय (खरच)करनेवाले,१४अच्छे कर्तव्य कर आनन्द माननेवाले,१५ साधुके समान-निश्चित, एसे गुणों के धारक होते हैं॥६५॥ उनमें से कितनेक तो जावजीव पर्यंत प्राणातिपात से निवृते और कितनेक नहीं भी निवृते हैं वे अव्रती सम्यक् दृष्टी हैं, ऐसेही कितनेक जावजीव पर्यंत मृषावादसे निवृत हैं और कितनेक नहीं निवृते हैं, ऐसेही यावत्

जाव परिग्गहाओ पडिविरया, एगच्चाओ अप्पडिविरया, एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ, अब्भक्खणाओ, पेसुणाओ परपरिवायाओ, अरतिरतिओ, मायमोसाओ, मिच्छादंसणसल्लाओ, पडिविरया जावज्जीवाए एगच्चाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ आरंभाओ समारंभाओ पडिविरया जावज्जीवाए एगच्चाओ आरंभ समारंभओ अपडिविरया, एगच्चाओ करण करावण पडिविरिया जावज्जीवाए एगच्चाओ अप्पडिविरिया, एगच्चाओ पयणपयावणाओ पडिविरिया, एगच्चाओ अप्पडिविरिया, एगच्चाओ कोट्टणपिट्टण तज्जण तालण वह वध

परिग्रहसे कितनेक, निवृते और कितनेक नहीं भी निवृत हैं, कितनेक क्रोध मान माया-लोभ राग द्वेष-क्लेश अभ्याख्यान पैशुन्य-पर परिवाद अरतिरति मायामृषा-मिथ्यात्व दर्शनशल्यसे निवृते हैं, और कितनेक नहीं भी निवृते हैं,(यहां अठारवा पापसमुचय ग्रहणकिया है)कितनेक जावजीव पर्यंत,छ कायके आरंभ समारंभसे निवृते हैं, और कितनेक नहीं निवृत, कितनेक पाप कर्म करने कराने से निवृते हैं, कितनेक नहीं निवृते, कितनेक आहार आदिकी पचन पाचनादि क्रियासे निवृत हैं कितनेक नहीं निवृते, कितनेक जावजीव पर्यन्त-कूटना पीटना तर्जन करना मारना ताडन करना बन्धनमें बन्धना, क्लेशित करने इससे निवृते हैं, कितनेक नहीं निवृते कितनेक जावजीव पर्यंत स्नान करनेसे रगडना पीठी करने से, वस्त्रादिका मर्दन करनेसे, चन्दनादि का विलेक

परिकिलेसाओ पडिविरिया जावज्जीवाए एगच्चाओ अप्पडिविरियाओ, एगच्चाओ ण्हाणु मद्दण वणक विलेवण सद्द फरिस रस रूव गध मल्लालंकाराओ पडिविरिया जावज्जीवाए एगच्चाओ अपडिविरिया, जेयावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगो वहिया कम्मतापरि पाण परितावणकरा कज्जति ततावि एगच्चाओ पडिविरिया जावजीवाए एगच्चाओ अपडिविरिया, ॥ ६५ ॥ तंजहा समणोवासगा भवति अभिगय जीवाजीवा उवलद्ध पुण्णपावा, आसव सवर किरिया अहिगरण बंध मोक्ख कुसल,असहेज्जदेवा सुरनाग

करने मे, शब्द स्पर्श रस रूप गध इन पांचों इन्द्रियों के काम भोगों मे, गध माला अलकार इत्यादि से निवृते हैं कितनेक नहीं निवृत हैं इस प्रकार के और भी अनेक सावद्य कर्मोपार्जन रूप अन्य को परिताप के करने वाले कामों हैं उन से कितनेक जावज्जीव पर्यन्त निवृते है और कितनेक नहीं भी निवृते हैं वे फक्त सम्यक्त्व दृष्टी हैं ॥ ६० ॥ उक्त गुन के धारक तद्यथा-श्रमणो पासक (श्रावक)होते हैं, वे चैतन्यतालक्षण युक्त जीव जडलक्षण अजीव सुखद फलरूप पुण्य,दु:खद फलरूप पाप, कर्मागमरूप आश्रव, कर्म निरुधन रूप सवर, कर्म छेदनरूप निर्जरा, कर्म के दलिये रूप क्रिया, कर्म सचयरूप अधिकरण कर्म बन्धना सो बंध और कर्म से छूटना सो मोक्ष इनके कामों में कुशल होते हैं॥

सुवण जक्खरक्खस किंणर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादिएहि देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा ॥ ६६ ॥ निग्गंथ पावयणे निस्संकिया णिकंक्खिया, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंज पेमाणुरागरत्ता ॥ ६७ ॥ अयमाउसो ! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे अयपरमट्ठे सेसे अणट्ठे ॥ ६८ ॥ उसिय फलिहा, अवंगुयदुवारा चियत्ततउर परघरपवेसा, ॥ ६९ ॥

उन को वैमानीक देव, भवनपति असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमारादि देव, वाणव्यन्तर यक्ष राक्षस किन्नर किंपुरुष गरुड गंधर्व महोरग इत्यादि देवताओं का समूह मिलकर भी निर्ग्रंथ के प्रवचन से क्षोभ पमाने चलाने समर्थ नहीं होते हैं, तो अन्य की तो कहना ही क्या? इस प्रकार वे धर्म में निश्चल होते हैं ॥ ६६ ॥ वे निर्ग्रन्थ के प्रवचन में शंका रहित—अन्य मत की वांछा रहित—करनी के फल का संदेह रहित—प्रवर्तते हैं जिनों का सत्यार्थ आगमार्थकी प्राप्ति हुई है उस का परमार्थ रूप ज्ञान ग्रहण किया है, उसे पूछ कर निश्चय कर निश्चितार्थ किया है माण से भी अधिक ग्रहण किया है, विशेष से निश्चय आत्मक उन में धर्म है, जिन के हाडोंकी मींजीयें उस रंग से प्रेमानुराग रक्त बनी हैं ॥ ६७ ॥ जब किसी साथ वार्तालाप का प्रसंग होता है तब वे कहते हैं अहो आयुष्मन्तो ! निर्ग्रन्थ प्रवचन है वही अर्थ है वही परमार्थ है, इस सिवाय और सब अनर्थ है ॥ ६८ ॥ उन का हृदय स्फटिक रत्न जैसा निर्मल है जिनोंने दानार्थ अपने द्वार सदैव खुल्ले रखे हैं, राजा के अन्तपुर में और साहुकार के भंडार में प्रवेश करते

चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ मासिणिसु पाडिपुण्ण पोसह मम्म अणुपालेमाणा समणे णिग्गथे फासुएसणिज्जेण असण, पाण, खाइम साइमेण वत्थ, पडिग्गह कवल पायपुन्छ णेण उसह भेसज्जेण, पाडिहरणय पीढ फलग सिज्जा सथारएण पाडिलाभेमाणा विहरति विहिरित्ता, भत्तपच्चक्खाति बहुइ भत्ताइ अणसणाए छेदति छोदित्ता आलो इय पडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे कालकिच्चा उक्कोसेण अच्चुएकप्पे देवत्ताए उववत्तारा भवति, तहिं तसिं गति, बावीस सागरोवमाइ ट्ठिति पण्णत्ता ॥ आराहया

भी वन की प्रतीत है अर्थात् वे चोर जार नहीं हैं ॥३९॥ वे चतुर्दशी अष्टमी अमावस्या पूर्णिमा तीर्थ कर क भ-पादिकी उदिष्ट तिथी यों के दिन पौषधोपवास व्रत सम्यक् प्रकार से अनुपालन करते हैं, श्रमण निग्रंथ को फासुक-निर्जीव एषणिक निर्दोष आहार पानी पकान स्वादिम वस्त्र पात्र कबल रजोहरण औषध भैषज्य पडिहारे [जो देकर पीछा ग्रहण करे एसा] शैया स्थान पाटपाटला सथारा परान्हादिका विछौना प्रतिलाभते देते हुवे विचरते हैं, विचर कर अन्तिम काल में भक्त प्रत्याख्यान(संथारा)करते हैं, बहुत भक्त अनशनका छेदनकर आलोचना प्रतिक्रमणकर समाधी सहित काल के अवसर में कालपूर्णकर के उत्कृष्ट अच्युत देवलोक में देवतापने उत्पन्न होते हैं, वहा उन की गति बावीस सागरोपम की स्थिति पाते हैं, आगे के भव में आराधिक हो वें,

सुवण जक्खरक्खस किंणर किंपुरिस गरुल गधव्व महोरगादिएहि देवगणेहिं निग्गथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा ॥ ६६ ॥ निग्गथ पावयणे निस्संकिया णिकंक्खिया, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा, अट्ठिमिंज पेमाणुरागरत्ता ॥ ६७ ॥ अयमाउसो ! णिग्गथे पावयणे अट्ठे अयपरमट्ठे सेसे अणट्ठे ॥ ६८ ॥ उसिह फलिहा, अवगुयदुवारा चियत्ततउर परघरपवेसा, ॥ ६९ ॥

वन को वैमानीक देव, भवनपति असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमरादि देव, वाणव्यन्तर यक्ष राक्षस किन्नर किंपुरुष गरुड़ गधर्व महोरग इत्यादि देवताओं का समूह मिलकर भी निर्ग्रंथ के प्रवचन स क्षोभ पमान चलान समर्थ नहीं होते हैं, तो अन्यका तो कहना ही क्या? इस प्रकार वे धर्ममें निश्चल होते हैं ॥ ६६ ॥ व निर्ग्रन्थ क प्रवचन में शंका रहित—अन्य मत की वांछा रहित—करनी के फल का सन्देह रहित—भरतस हैं जिनो का तत्त्वार्थ आगमार्थकी प्राप्ति हुई है उस का परमार्थ रूप जान ग्रहण किया है उसे पूछ कर निर्णय कर निश्चितार्थ किया है, प्राण से भी अधिक ग्रहण किया है, विशेष से निश्चय आत्मक उस में घन हैं, जिन के हाडोंकी मींजीयें उस रंग से प्रेमानुराग रक्त बनी हैं ॥ ६७ ॥ जब किसी साथ वार्तालाप का प्रसंग होता है तब वे कहते हैं अहो आयुष्मना ! निर्ग्रन्थ प्रवचन है यही अर्थ है यही परमार्थ है, इस सिवाय और सब अनर्थ है ॥ ६८ ॥ उन का हृदय स्फटिक रत्न जैसा निर्मल है जिनोंने दानार्थ अपने द्वार सदैव खुले रखे हैं, राजा के अन्तपुर में और साहुकार के भंडार में प्रवेश करते

ल्साओ पडिविरया, सव्वाओ ण्हाणु मद्दण वणक विलेवण सद्दफारसरसरूवगंध, मल्लालंकाराओ पडिविरया, जेयावण्णे तहप्पगारे सावज्ज जोगोवाहिया कम्मता परपाण परियावणकरा कज्जति तत्तोवि पडिविरया, जावज्जीवाए, से, जहा नामए अणगारा भवति, इरिया समिया, भासासमिया, जाव इणमेव णिग्गंथं पावयण पुराओ काओ विहरति ॥ ७१ ॥ तेसिण भगवताण एतेण तयारूवेण विहारेण विहरमाणाण, अत्थेगतियाण भंते ! अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवर णाणदसणे समुप्पज्जति, ते बहूइ वासाइ केवलपरियाग पाउणति २ त्ता

तिलकादि विलपन करने से भी निवृते हैं शब्द स्पर्श रस रूप गंध माला अलंकार इस में भी निवृते हैं इस ही प्रकार और भी जो सावद्य काम जोगोपाधि कर्म जिस से अन्य प्राणी को परिताप होय उनसबसे जावजीव पर्यन्त सर्वथा निवृते हैं, वे अनगार साधु होते हैं वे ईर्यासमितिवत भाषा समितिवंत यावत् जिन भाषित निर्ग्रंथ प्रवचन को आगे कर उन के अनुगामी पन विचरते हैं॥ ७१॥ उन साधु भगवंत को इस प्रकार आचारके विहारमें विचरते हुवे कितनेक साधु भगवंतको तो जिसका अन्त नहीं एसा अनंत, जिसकी तुलना दूसरा कर नहीं एसा अनुत्तर जो सर्व ज्ञानों में उत्तम-प्रधान, जिस को किसी कर घात होवे नहीं ऐसा निर्व्याघात, जिस को किसी का पडदा होवे नहीं एसा निरावरण, जिस का टुकडा होवे नहीं

सेस तचेव ॥ ७० ॥ २० ॥ सेजे इमे गामागर नगर जाव सन्निवेसेसु मणुया भवंति तंजहा अणारंभा, अप्परिग्गहा धम्मिया, धम्मिट्ठा जाव धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा, सव्वाओ पाणाइवायाओ पडिविरया, जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया, सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ जाव मिच्छादंसण सल्लाओ पडिविरया, सव्वाओ आरंभ समारंभाओ पडिविरया सव्वाओ करण करावणाओ पडिविरया, सव्वाओ पयण पयावणाओ पडिविरया, सव्वाओ कोट्टण पिट्टण तज्जण ताडण वह बंधपरिकि-

शेष तैसे ही इति बीसवा प्रश्नोत्तर ॥ ७ ॥ २० ॥ ये जो ग्रामागर नगर यावत् सन्निवेश में मनुष्य होते हैं कैसे होते हैं? सो कि सर्वथा छही काया के आरंभ रहित, धातमात्र परिग्रह रहित, धर्मकारी जिनके हुए है यावत् धर्मकी ही वृत्ति करते हुए विचरते हैं सुशील-शुद्धाचारी, सुव्रति अच्छा कार्य कर आनन्द मानने-वाले सर्वथा प्रकार तीन करन तीन जोगसे प्राणातिपातसे निवृते यावत् सर्वथा प्रकारसे परिग्रह से निवृते, तैसे ही सर्वथा प्रकार क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्यात्व दर्शन शल्य यों आठाराही पापसे निवृत, सर्वथा आरंभसारंभ से निवृत, सर्वथा पाप करने कराने से निवृते, सर्वथा पचन पचानादि क्रिया से निवृते, सर्व से कूटन पीटन तर्जन ताडन बंधन वध क्लेशित करना जिस से निवृत, सर्वथा-स्नान करना पीठी मर्दन

लसाओ पडिविरया, सव्वाओ ण्हाणु मद्दण वणक विलेवण सद्दफरिसरसरूवगंध मल्लालंकाराओ पडिविरया, जेयावण्णे तहप्पगारे सावज्ज जोगोवहिया कम्मंता परपाण परियावणकरा कज्जति तत्तोवि पडिविरया, जावज्जीवाए, से जहा नामए अणगारा भवति इरिया समिया, भासासमिया, जाव इणमेव णिग्गंथं पावयण पुराओ काओ विहरति ॥ ७१ ॥ तेसिण भगवंताण एतेण तयारूवेण विहारेण विहरमाणाण, अत्थेगतियाण भंते ! अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवर णाणदसणे समुप्पज्जति, ते बहूइ वासाइ केवलपरियाग पाउणति २ त्ता

तिलकादि विलपन करने से भी निवृते हैं शब्द स्पर्श रस रूप गंध माला अलंकार इस में भी निवृते हैं इस ही प्रकार और भी जो सावद्य काम जागोपाधि कर्म जिस से अन्य प्राणी को परिताप होवे उनमसेम जावजीव पर्यन्त सर्वथा निवृते हैं, वे अनगार साधु होते हैं वे ईर्यासमितिवंत भासा समितिवंत यावत् जिन भाषित निर्ग्रंथ प्रवचन को आगे कर उन के अनुगामी बने विचरते हैं॥ ७१॥ उन साधु भगवंत को इस प्रकार आचारके विचारमें विचरते हुवे कितनेक साधु भगवंतको तो जिसका अन्त नहीं एसा अनंत, जिसकी तुलना दूसरा कर नहीं एसा अनुत्तर जो सर्व ज्ञानों में उत्तम-प्रधान, जिस को किसी कर व्याघात होवे नहीं ऐसा निर्व्याघाव, जिस को किसी का पडदा होवे नहीं एसा निरावरण, जिस का टुकडा होवे नहीं

अणुपुव्वेण अठकम्म पगडिओ खवेत्ता उप्पिलायग्गपइट्ठाणहवंति॥२३॥इति उववाइ अधिकार ॥२॥*॥ अणगारेण भंते! भावियप्पा केवलि समुग्घाएण समोहणइ समोहणित्ता केवल कप्प लोय फुसित्ताण चिट्ठइ? हंता चिट्ठइ॥१॥से णूण भंते! केवलकप्पे लोए तेहिं णिज्जरापोग्गलेहिं फुडे? हंताफुडे॥ २॥ छउमत्थेण भंते! मणुस्से तेसिं णिज्जरा पोग्गलाणं किंचि वण्णेण वण्णं, गंधेण गंधं, रसेण रसे फासेण फासं जाणति पासति? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति छउमत्थेण मणुस्से

क्षय किया, वे केवल ज्ञान केवल दर्शन की प्राप्ति कर, लोक के अग्र में जो सिद्ध स्थान है उसे प्राप्त करते हैं, सिद्ध होते हैं ॥ इति तेवीसवा प्रश्नोत्तर ॥७८ ॥२३॥ इति उववाइकाधिकार ॥२॥*॥ अब केवल समुद्घात का अधिकार कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार साधु केवली समुद्घात को समोहे वे समोह कर संपूर्ण लोक का स्पर्श कर रहते हैं क्या ? हां गौतम ! केवल समुद्घातिक संपूर्ण लोक को स्पर्श कर रहते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उन के निर्जरा के पुद्गलों कर संपूर्ण लोक स्पर्शित होता है क्या ? हां गौतम ! होता है॥२॥ अहो भगवन्! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा के पुद्गलों को किंचित वर्ण से वर्णकर, गंध से गंधकर, रस से रस कर, स्पर्श से स्पर्श कर जान सकता है देख सकता है क्या ? हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् जान सकता भी नहीं है देख सकता भी नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन

तेसिणिज्जरा पोग्गलाण णो किंचि वण्णेण वण्णे जाव फासेण फासे जाणति पासति ? गोयमा ! अयण जबूद्दीवेदीवे सव्वद्दीवसमुद्दाण सव्व भतरेए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लपुय सठाण सठिए वट्टे रहचक्कवाल सठाण,सठिए वट्टेपुक्खर कणियासंठाण साठिए,वट्टपाडि-पुण्ण चदसठाण सठिए, एक जोयण सयसहस्स आयामाविक्खमेण तिणि जोयण सयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोणियसत्तावीसे जोयणसए तिणिय कोसे अठावीसच धणुसय तेरसय अगुलाद्ध अद्धगुल किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ देवेण महिड्डिए महज्जुइए महबले महाजसे महासोक्खे, महाणुभावे, सविलेवण गधमुमु-

एमा कहा कि छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा के पुद्गलों को किंचित ही वर्ण से वर्ण कर यावत् स्पर्श से स्पर्श कर जान सके नहीं देख सके नहीं ? हे गौतम ! यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप सब द्वीप समुद्रों के अभ्यन्तर अन्दर रहा, सब द्वीप समुद्र से छोटा, गोल तेल का बनाया पुडे के जैसे गोल रथ के चक्रवाल पहिये के जैसे गोल कमल की कर्णिका के जैसे गोल संपूर्ण चन्द्रमा के जैसे संस्थान से संस्थित, एक लाख योजन का लम्बा चौडा, तीन लाख सोले हजार दो सो सत्तावीस योजन, तीन कोश एक सो अठावीस धनुष्य साढी तेरे अंगुल कुछ अधिक परधी कर वेष्टित कहा है कोई देवता महा ऋद्धिक महा द्युतिवंत, महा बलवन्त, महा यशवन्त, महा सौख्यवन्त, महानुभाग वह विलेपन करने का सुगन्धी

अणुपुव्वेण अठकम्म पगडिओ खवेत्ता उप्पिलायग्गपइट्ठाणहवंति॥२३॥इति उववाइ अधिकार ॥२॥*॥ अणगारेण भंते! भावियप्पा केवलि समुग्घाएण समोहणइ समोहणित्ता केवल कप्प लोय फुसित्ताण चिट्ठइ? हंता चिट्ठइ॥१॥से णूण भंते! केवल कप्पे लोए तेहिं णिज्जरापोग्गलेहिं फुडे? हंताफुडे॥ २॥ छउमत्थेण भंते! मणुस्से तेसिं णिज्जरा पोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं, गंधेणं गंधं, रस्सेण रसे फासेण फासं जाणति पासति? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति छउमत्थेणं मणुस्से

क्षय किया, वे केवल ज्ञान केवल दर्शन की प्राप्ति कर, लोक के अग्र में जो सिद्ध स्थान है उसे प्राप्त करते हैं, सिद्ध होते हैं ॥ इति तेवीसवा प्रश्नोत्तर ॥७८ ॥२३॥ इति उपपातिकाधिकार ॥२॥*॥ अब केवल समुद्घात का अधिकार कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! भावितात्मा अनगार साधु केवली समुद्घात को समोह के समोह कर संपूर्ण लोक का स्पर्श कर रहते हैं क्या ? हां गौतम ! केवल समुद्घातिक संपूर्ण लोक को स्पर्श कर रहते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! उन के निर्जरा के पुद्गलों कर संपूर्ण लोक स्पर्शित होता है क्या ? हां गौतम ! होता है॥२॥ अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा के पुद्गलों को किंचित वर्णसे वर्णकर, गंधसे गंधकर, रस से रस कर, स्पर्श से स्पर्श कर जान सकता है देखसकता है क्या ? हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् जान सकता भी नहीं है देख सकता भी नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन

तेसिणिज्जरा पोग्गलाण णो किंचि वण्णेण वण्णे जाव फासेण फासे जाणति पासति ? गोयमा ! अयण जबूद्दीवेदीवे सव्वदीवसमुद्दाण सव्व भतरेए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लपुय सठाण सठिए वट्टे रहचक्कवाल सठाण सठिए वट्टेपुक्खर कणियासठाण सठिए, वट्टेपडिपुण्ण चन्दसठाण सठिए, एक्क जोयण सयसहस्स आयामविक्खभेण तिणि जोयण सयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोणियसत्तावीसे जोयणसए तिणिय कोसे अठावीसच धणुसय तेरसय अगुलाइ अद्धगुल किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ देवेण महिड्डिए महज्जुत्तिए महबले महाजसे महासोक्खे, महाणुभावे, सविलेवण गधसमु-

एसा कहा कि छद्मस्थ मनुष्य इन निर्जरा के पुद्गलों को किंचित ही वर्ण से वर्ण कर यावत् स्पर्श से स्पर्श कर जान सके नहीं देख सके नहीं ? हे गौतम ! यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप सब द्वीप समुद्रों के अभ्यन्तर अन्दर रहा, सब द्वीप समुद्र से छोटा, गोल तेल का बनाया पुडे के जैसे गोल रथ के चक्रवाल पहिये के जैसे गोल कमल की कर्णिका के जैसे गोल संपूर्ण चन्द्रमा के जैसे संस्थान से संस्थित, एक लाख योजन का लम्बा चौडा, तीन लाख सोले हजार दो सो सत्तावीस योजन, तीन कोश एक सो अठावीस धनुष्य साढी तेरे अंगुल कुछ अधिक परधी कर वेष्टित कहा है कोई देवता महा ऋद्धिक महा द्युतिवन्त, महा बलवन्त, महा यशवन्त, महा सौख्यवन्त, महानुभाग वह विलेपन करने का सुगन्धी

गाय गिण्हइ, सविलेवण गंध समुग्गय गिण्हत्ता तं अवदलेइ २ त्ता, जाव इणमेव तिकट्टु केवलकप्पं जंबूदीवेदीवं, तीहिं अच्छराणिवाएहिं, तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, सेणूणं गोयमा ! केवलकप्पं जंबूदीवेदीवं तेहिं गंधपोग्गलेहिं फुडे ? हंता फुडे ॥ छउमत्थेणं गोयमा ! मणुस्से तेसिंणं घाणं पोग्गलाणं किंचिवण्णेणं वण्णं जाव फासेणं फासं जाणति पासति भगवं गोयमा णो तिणट्ठे समट्ठे से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ छउमत्थेणं मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं, जाव पासेणं फासं जाणति पासति एसुहुमाणं पोग्गला पण्णत्ता समणा

द्रव्य का डब्बा ग्रहण कर उस को खुल्ला करे ढक्कन उघाड कर यावत् इस प्रकार करके संपूर्ण जम्बूद्वीपको तीन चिपटी बजावे इतने में सात त्रि इक्कीस वक्त प्रदक्षिणा कर परक्रम्मा देवे, देकर शीघ्र पीछा आवे अहो गौतम ! वे डब्बे में रहे गंध के चूर्ण के पुद्गलों संपूर्ण जम्बूद्वीप को स्पर्शित हैं क्या ? हां भगवन् ! स्पर्शित हैं हे गौतम ! छद्मस्थ मनुष्य उन सुगंध के पुद्गल को किंचित वर्ण से वर्णकर यावत् स्पर्श से स्पर्शकर जान सकता देख सकता है क्या ? अहो भगवन् ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् जान सकता भी नहीं है और नहीं देख सकता भी नहीं है इस प्रकार हे गौतम ! ऐसा कहा कि छद्मस्थ मनुष्य उन केवली के समुद्घातसे निर्जराके बिखर हुवे पुद्गलोंको किंचित मात्रही वर्णसे वर्णकर यावत् स्पर्शसे स्पर्शकर जान सकता भी नहीं है देख सकता भी नहीं है, अहो श्रमण आयुष्यवन्तो ! ऐसे सूक्ष्म व निर्जरा के पुद्गल

ठसो ! सव्वलोयं पीयण ते फुसिचाण चिठति ॥ ३ ॥ कम्हाणं भंते ! केवली समोहणति, कम्हाण कवलि समुग्घाय गच्छति? गोयमा ! कवलिण चत्तारि कम्मसा अपलिक्खिणा भवति तजहा-वयणिज्ज, आउय, णाम, गोत्त, सव्वबहु पएसे वेय-णिज्जे कम्म भवति, सव्वथोवसे आउएकम्मे भवति,विसम समकरेति बधणेहिं, ठिति-हिय विसम सम करेणयाए बधणेहिं ठितिहिय, एव खलु केवलि समुग्घाय गच्छति ॥ ४ ॥ सव्वविण भत ! केवलि समुग्घाय गच्छति ? णो तिणट्ठ समट्ठे, अकिया

करे हैं परतु सर्व लोक में वे पुद्गलों स्पर्श कर रहते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! किस प्रकार केवल ज्ञानी समुद्घात समोहन हैं ? किस प्रकार केवल ज्ञानी समुद्घात में प्रवेश करते हैं हे गौतम ! केवल ज्ञानी को १ वेदनिय कर्म, २ आयुष्य कर्म, ३ नाम कर्म, और ४ गोत्र कर्म इन चारों अघातीय कर्मों का अभी क्षय नहीं हुवा इन चारों कर्मों में से सब से ज्यादा वेदनीय कर्म होवे और सब से थोडा आयुष्य कर्म होवे इस विषमताको समकरने को अर्थात् आयुकर्म की स्थिति को बरोबर करने वास्ते केवली के समुद्घात होती है ॥ ४ ॥ अहो भगवान ! सब ही केवली समुद्घात करते हैं क्या ? हे गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् सब ही केवली समुद्घात करते नहीं है * समुद्घात विना

* समुद्घात सो बिना की हुइ स्वभाव से ही होती है क्यों, कि कार्य करने में असंख्यात समय लगते है और यह तो आठ समय में होती है परतु व्यवहार भाषा में ऐसा कहा है कि केवली समुद्घात करते हैं

समुग्घाय अणत केवली जिणा जरामरणविप्पमुक्का सिद्ध वरगतिगता ॥ ५ ॥ कतिसमएण भंते! अवज्जकरण पण्णत्ते ? गोयमा! असंखेज्जे समइए अंतोमुहुत्ते पण्णत्ते ॥ ६ ॥ केवली समुग्घाएण भंते! कतिसमए पण्णत्ते ? गोयमा! अट्ठ समए पण्णत्तए तंजहा-पढमे समए दंडकरेति, बीतिए समए कवाडकरेति, ततिए समए मंथकरेति, चउत्थे समए लोयपूरेति, पचमे समए लोय पडिसाहिति, छट्ठे समए मंथ

किये ही अनंत केवल ज्ञानी जिनेश्वर जरा मरण के दुःख से मुक्त हो प्रधान सिद्धगति को प्राप्त हुवे हैं, ॥ ५ ॥ अहो भगवान ! मोक्ष प्राप्ती का अवर्जी करण कितने समय में होता है ? हे गौतम ! असंख्यात समय का अन्तर मुहूर्त कहा है ॥ ६ ॥ अहो भगवन ! केवल समुद्घात के कितने समय कहे हैं ? हे गौतम आठ समय कहे हैं तद्यथा १ प्रथम समय में नीचे सातवी नरक से ऊपर सिद्ध शिला तक चउदह राजलोक में आत्म प्रदेश दंडाकार होते हैं, २ दूसरे समय में व दंडाकार प्रदेश कपाट (पटोप) रूप बन जाते हैं, ३ तीसरे समय में उन कपाटाकार प्रदेशों का मथन[पूरा]होजाता है, और चौथे समय में वे प्रदेशों सर्व लोक में ओत पोत पूर्ण होते हैं, अर्थात् लोक में जो जगह खाली रही हो वह आत्म प्रदेशन्तर भरा जाती है पुन पांचवे समय में लोक पूर्ण रूप प्रदेशों का संहार हो मथन रूप रह जाते हैं, छठे समय में मथनरूप आत्म प्रदेशों का संहार हो कपाटरूप बन जाते हैं, सात में समय में उन कपाटरूप प्रदेशों का संहार हो

पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाड पडिसाहरति,अट्ठमे समए दंड पडिसाहरति, साइ-रेत्ता शरीरत्थेभवति ॥ ७ ॥ सेण भंते ! तहा समुग्घायगते किंमणजोग जुजति, वइजोग जुंजति, कायजोग जुजति ? गोयमा ! णोमणजोग जुजति, णो वइजोग जुजति, कायजोग जुजति, ॥ ८ ॥ कायजोग जुजमाण किं आरालिय सरीर काय जाग जुजति, ओरालिय मीस सरीर कायजोग जुजति, वेउव्विय सरीर कायजाग जुजति, वउव्विय मिसा सरीर कायजोग जुजति, आहारक सरीरकाय जोग जुजति, आहार मिसा सरीर कायजोग जुजति, कम्मसरीर कायजोग जुजति ? गोयमा !

दंडरूप बन जाते हैं और आठवे समय में उन दंडरूप प्रदेशों का संहार हो आपरूप [जैसा पहिले शरीर था वैसा] बन जाते हैं ॥७॥ अहो भगवान ! यह समुद्घात होने कितने जोग प्रयुंजते हैं ? क्या मन योग प्रयुंजते हैं, कि वचन योग प्रयुंजते हैं काया का जोग प्रयुंजते हैं ? हे गौतम ! मन योग भी प्रयुंजते नहीं हैं, वचन जोग भी प्रयुंजते नहीं हैं परंतु एक काया योग प्रयुंजते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवान ! काय योग प्रयुंजते हुवे क्या औदारिक काया योग प्रयुंजते हैं, औदारिक मिश्र काया योग्य प्रयुंजते हैं, वैक्रय काय योग प्रयुंजते हैं, वैक्रय मिश्र काया योग प्रयुंजते हैं, आहारिक काया योग प्रयुंजते हैं, आहारिक मिश्र काया योग प्रयुंजते हैं कि कार्माण काया योग प्रयुंजते हैं ? हे गौतम ! औदारिक शरीर काय योग औदारिक मिश्र काय योग और कारमण काया योग यह तीनो योग प्रयुंजते

समुग्घाय अणंत केवली जिणा जरामरणविप्पमुक्का सिद्धि वरगतिगता ॥ ५ ॥
कतिसमएण भंते! आवज्जकरण पण्णत्ते ? गोयमा! असंखेज्जे समइए अंतोमुहुत्ते
पण्णत्ते ॥ ६ ॥ केवली समुग्घाएण भंते! कतिसमए पण्णत्ते ? गोयमा! अट्ठ
समए पण्णत्तए तंजहा-पढमे समए दंडकरेति,बीतिए समए कवाडकरेति, ततिए समए
मंथकरेति, चउत्थे समए लोयपूरेति, पंचमे समए लोय पडिसाहिति, छट्ठे समए मंथ

किये ही अनंत केवल ज्ञानी जिनेश्वर जरा मरण के दुःख से मुक्त हो प्रधान सिद्धगति को प्राप्त हुवे हैं, ॥ ५ ॥ अहो भगवान! मोक्ष प्राप्ती का आवर्जी करण कितने समय में होता है? हे गौतम! असंख्यात समय का अन्तर मुहूर्त कहा है ॥ ६ ॥ अहो भगवन! केवल समुद्घात के कितने समय कहे हैं? हे गौतम आठ समय कहे हैं तद्यथा १ प्रथम समय में नीचे सातवी नरक से ऊपर सिद्ध क्षेत्र तक चउदह राजलोक में आत्म प्रदेश दंडाकार होते हैं, २ दूसरे समय में वे दंडाकार प्रदेश कपाट (पटीये) रूप बन जाते हैं, ३ तीसरे समय में उन कपाटाकार प्रदेशों का मथन[चूरा]होजाता है, और चौथे समय में वे प्रदेशों सर्व लोक में ओत पोत पूर्ण होते हैं, अर्थात् लोक में जो जगह खाली रही हो वह आत्म प्रदेशकर भरा जाती है पुन पांचवे समय में लोक पूर्ण रूप प्रदेशों का संहार हो मथन रूप रह जाते हैं, छठे समय में मथनरूप आत्म प्रदेशों का संहार हो कपाटरूप बन जाते हैं, सात में समय में उन कपाटरूप प्रदेशों का संहार हो

पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाड पडिसाहरति, अट्ठमे समए दंड पडिसाहरति, साह-
रेत्ता शरीरत्थेभवति ॥ ७ ॥ सेण भते ! तहा समुग्घायगते किंमणजोग जुजति,
वइजोग जुजति, कायजोग जुजति ? गोयमा ! णोमणजोग जुजति, णो वइजोग
जुजति, कायजोग जुजति, ॥ ८ ॥ कायजोग जुजमाण किं आरालिय सरीर काय
जोग जुजति, ओरालिय मीस सरीर कायजोग जुजति, वेउव्विय सरीर कायजोग
जुजति, वउव्विय मिस्स सरीर कायजोग जुजति, आहारक सरीरकाय जोग जुजति,
आहार मिस्स सरीर कायजोग जुजति, कम्मसरीर कायजोग जुजति ? गोयमा !

दंडरूप बन जाते हैं और आठवे समय में उन दंडरूप प्रदेशों का संहार हो आपरूप [जैसा पहिले
शरीर था वैसा] बन जाते हैं ॥७॥ अहो भगवान ! वह समुद्घात होने कितने जोग प्रयुजते हैं ? क्या मन
योग प्रयुजते हैं, कि वचन योग प्रयुंजते हैं काया का जोग प्रयुजते हैं ? हे गौतम ! मन योग भी
प्रयुंजते नहीं हैं, वचन जोग भी प्रयुंजते नहीं हैं परन्तु एक काया योग प्रयुजते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवान !
काय योग प्रयुंजते हुवे क्या औदारिक काया योग प्रयुजते हैं, औदारिक मिश्र काया योग्य प्रयुजते हैं,
वैक्रय काय योग प्रयुंजते हैं, वैक्रय मिश्र काया योग प्रयुजते हैं, आहारिक काया योग प्रयुजते हैं,
आहारिक मिश्र काया योग प्रयुजते हैं कि कार्माण काया योग प्रयुंजते हैं ? हे गौतम ! औदारिक
शरीर काय योग औदारिक मिश्र काय योग और कारमण काया योग यह तीनो योग प्रयुजते

समुग्घाय अणत केवला जिणा जरामरणविप्पमुक्का सिद्ध वरगतिगता ॥ ५ ॥ कतिसमएण भंते! अवज्जकरण पण्णत्ते ? गोयमा! असखेज्जे समइए अंतोमुहुत्ते पण्णत्ते ॥ ६ ॥ केवली समुग्घाएण भंते! कतिसमए पण्णत्ते ? गोयमा! अट्ठ समए पण्णत्तए तंजहा-पढम समए दंडकरेति, बीतिए समए कवाडकरेति, ततिए समए मथकरेति, चउत्थे समए लोयपूरेति, पचमे समए लोय पडिसाहिति, छट्ठे समए मथ

किये ही अनंत केवल ज्ञानी जिनेश्वर जरा मरण के दुःख से मुक्त हो प्रधान सिद्धगति को प्राप्त हुवे हैं, ॥ ५ ॥ अहो भगवान ! मोक्ष प्राप्ती का अवर्जी करण कितने समय में होता है ? हे गौतम ! असख्यात समय का अन्तर मुहूर्त कहा है ॥ ६ ॥ अहो भगवन ! केवल समुद्घात के कितने समय कहे हैं ? हे गौतम आठ समय कहे हैं तद्यथा १ प्रथम समय में नीचे सातवी नरक से ऊपर सिद्ध क्षेत्र तक १४ चउदह राजूलोक में आत्म प्रदेश दंडाकार होते हैं, २ दूसरे समय में वे दंडाकार प्रदेश कपाट (पटीय) रूप बन जाते हैं, ३ तीसरे समय में उन कपाटाकार प्रदेशों का मथन[चूरा]होजाता है, और चौथे समय में वे प्रदेशों सर्व लोक में ओत पोत पूर्ण होते हैं, अर्थात् लोक में जो जगह खाली रही हो वह आत्म प्रदेशकर भरा जाती है पुन पांचवे समय में लोक पूर्ण रूप प्रदेशों का संहार हो मथन रूप रह जाते हैं, छठे समय में मथनरूप आत्म प्रदेशों का संहार हो कपाटरूप बन जाते हैं, सात में समय में उन कपाटरूप प्रदेशों का संहार हो

पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाड पडिसाहरति,अट्ठमे समए दंड पडिसाहरति, साहरेत्ता शरीरत्थेभवति ॥ ७ ॥ सेण भंते ! तहा समुग्घायगते किंमणजोग जुजति, वइजोग जुजति, कायजोग जुजति ? गोयमा ! णोमणजोग जुजति, णो वइजोग जुजति कायजोग जुजति, ॥ ८ ॥ कायजोग जुजमाण किं आरालिय सरीर काय जोग जुजति, ओरालिय मीस सरीर कायजोग जुजति, वेउव्विय सरीर कायजोग जुजति, वेउव्विय मिसा सरीर कायजोग जुजति, आहारक सरीरकाय जोग जुजति, आहार मिसा सरीर कायजोग जुजति, कम्मसरीर कायजोग जुजति ? गोयमा !

दंडरूप बन जाते हैं और आठवे समय में उन दंडरूप प्रदेशों का संहार हो आपरूप [जैसा पहिले शरीर था वैसा] बन जाते हैं ॥७॥ अहो भगवान ! वह समुद्घात होते कितने जोग प्रयुंजते हैं ? क्या मन योग प्रयुंजते हैं, कि वचन योग प्रयुंजते हैं काया का जोग प्रयुंजते हैं ? हे गौतम ! मन योग भी प्रयुंजते नहीं हैं, वचन जोग भी प्रयुंजते नहीं हैं परंतु एक काया योग प्रयुंजते हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवान ! काय योग प्रयुंजते हुवे क्या औदारिक काया योग प्रयुंजते हैं, औदारिक मिश्र काया योग्य प्रयुंजते हैं, वैक्रय काय योग प्रयुंजते हैं, वैक्रय मिश्र काया योग प्रयुंजते हैं, आहारिक काया योग प्रयुंजते हैं, आहारिक मिश्र काया योग प्रयुंजते हैं कि कार्माण काया योग प्रयुंजते हैं ? हे गौतम ! औदारिक शरीर काय योग औदारिक मिश्र काय योग और कारमण काया योग यह तीनों योग प्रयुंजते

समुग्घाय अणत केवली जिणा जरामरणविप्पमुक्का सिद्धि वरगतिंगता ॥ ५ ॥
कतिसमएण भंते! आवज्जकरण पण्णत्ते ? गोयमा! असंखेज्जे समइए अंतोमुहुत्ते
पण्णत्ते ॥ ६ ॥ केवली समुग्घाएण भंते! कतिसमए पण्णत्ते ? गोयमा! अट्ठ
समए पण्णत्तए तजहा-पढमे समए दंडकरेति,बीतिए समए कवाडकरेति, ततिए समए
मंथकरेति, चउत्थे समए लोयपूरेति, पंचमे समए लोय पडिसाहिति, छट्ठे समए मंथ

किये ही अनंत केवल ज्ञानी जिनेश्वर जरा मरण के दुःख से मुक्त हो प्रधान सिद्धगति को प्राप्त हुवे हैं,
॥ ५ ॥ अहो भगवान ! मोक्ष प्राप्ती का आवर्जी करण कितने समय में होता है ? हे गौतम ! असंख्यात
समय का अन्तर मुहूर्त कहा है ॥ ६ ॥ अहो भगवन ! केवल समुद्धात के कितने समय कहे हैं ? हे गौतम
आठ समय कहे हैं तद्यथा १ प्रथम समय में नीचे सातवी नरक से ऊपर सिद्ध स्थान तक चउदह राजूलोक
में आत्म प्रदेश दंडाकार होते हैं, २ दूसरे समय में वे दंडाकार प्रदेश कपाट (पटीय) रूप बन जाते हैं, ३
तीसरे समय में उन कपाटाकार प्रदेशों का मथन[पूरा]होजाता है, और चौथे समय में वे प्रदेशों सर्व लोक में
ओत पोत पूर्ण होते हैं, अर्थात् लोक में जो जगह खाली रही हो वह आत्म प्रदेशकर भरा जाती हैं पुन
पांचवे समय में लोक पूर्ण रूप प्रदेशों का संहार हो मथन रूप रह जाते हैं, छठे समय में मथनरूप आत्म
प्रदेशों का संहार हो कपाटरूप बन जाते हैं, सात में समय में उन कपाटरूप प्रदेशों का संहार हो

तं-चेव वेंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्ण जोगस्सहेट्ठा असंखेज्जजोग परिहिण बितियवइ जोग। निरुभति, तयाणंतरंचण सुहुमस्स पणगस्स जीवस्स अपज्जतगस्स जहण कायाजोगस्स हेट्ठा असखज्जगुण परिहिण तच्चिय कायाजोग निरुभाति, सेण एएण उवाएण पढम मणजोगेनिरुभति, मणजोगणिरुभित्ता वइजोगनिरुभति, वइजोगनिरुभित्ता कायजोग-निरुभति कायजोगनिरुभित्ता जोगनिरोह करेति, जोगनिरोह करित्ता, अजोगत्त पाउणाति, अजोगत्त पाउणित्ता इसिहस्स पचक्खर उच्चारणट्ठयाए असंखेज्जसमइय अंतोमुहुत्तिय सेलेसि पडिवज्जति पुव्वरईय गुणसेढिय चण कम्म तिसेसेलि अद्धाए

सूक्ष्म के जीव अपर्याप्त का जघन्य काया योग से नीचे का असंख्यात भाग कमी तीसरा काया योग का निरुंधन करते हैं, ये इस उपाय करके योगों का निरुंधन करते प्रथम मन योग का निरुंधन करते हैं मनयोग का निरुंधन किये बाद वचन योग का निरुंधन करते हैं, वचन योग का निरुंधन किये बाद काया जोग का निरुंधन करते हैं इस प्रकार योग का निरुंधन कर अयोगी अवस्था को प्राप्त होते हैं फिर ह्रस्व पांच अक्षर (अ इ उ - ऋ - लृ -) इन के उच्चार जितने काल में अर्थात् असंख्यात समय का अन्तर मुहूर्त जितने काल में शैलेशी (पर्वत के समान स्थिर) अवस्था में रहे हुये, प्रथम निष्पन्न की क्षपक श्रेणि रूप कर्म से उस शैलेशी जितने काल में

जोगजुंजति ॥ १२ ॥ कायजोगजुंजमाणे आगच्छेज्जवा, गच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, णिसिएज्जवा तुयट्टेज्जवा, उल्लघेज्जवा, पल्लघेज्जवा, उक्खेवणवा, अवक्खेव-णवा, तिरियखेवणवा करजा पाडिहेरियवा, पीढ फलग सेज्जा सथारक, पच्चप्पीणेज्जा ॥ १३ ॥ सेण भत ! तहा सजोगीसिज्झति बुज्झति, मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदु-क्खाणमतकरेति ?गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ सण पुव्वामेव सण्णिस्स पचिंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णजोगस्स हेट्ठा,असखज्जगुण परिहिण, पढम मणजोगनिरुभति, तयाण

अहो भगवान ! काय योग प्रयुंजते कोनसा योग प्रयुक्त हैं ? हे गौतम ! काय योग प्रयुक्त हुवे आते हैं जाते हैं, खडे रहते हैं, बैठते हैं, शयनकरते हैं, उल्लंघते हैं, प्रल्लघते हैं, उछलते हैं, पड ते हैं, तिरछ गमनकरते हैं, पडीहारे जो काम सरे बाद पीछे दिये जावे ऐसे लाये हुवे पाटपाटला स्थान बिछोना (पराळादि) पीछे देते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवान ! व केवली वैसीही सयोगी अवस्था में रहेहुवे सिद्ध बुद्ध मुक्त परिनिर्वानहो सब दु खका अन्तकरते हैं क्या ? हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् सयोगी कर्मका अन्त नहीं करते हैं ॥ परन्तु वे पहिलेही संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्तका जघन्य योग सेभी नीच का असंख्यात भाग हीन प्रथम मनयोगका निरूपन करते है, तदनन्तर फिर बेन्द्रिय के पर्याप्तका जघन्य वचन योग के नीचे का असख्यातगुन हीन हुए वचन योग का निरुन्धन करते हैं, तदन्तर सूक्ष्म

अपज्जवसिया जाव चिट्ठति ? गोयमा ! से जहा णामए बीयाण अग्गिदड्ढाण पुणरवि अकूरुप्पत्ति ण भवति, एवामेव सिद्धाण कम्मबीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्तिणभवति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति, तेण तत्थासिद्धा भवति सादिया अपज्जवसिया जाव चिट्ठति ॥ १५ ॥ जीवाण भते ! सिज्झमाणा कयरंसि सघयणसि सिज्झति ? गोयमा ! वईरोसहणारायसघयणे सिज्झति ॥ १६ ॥ जीवाण भते !—सिज्झमाणा कयरमि सट्ठाणे सिज्झति गोयमा ! छण्हसठाणाण अण्णतर सठाणे सिज्झति ॥१७॥ जीवाण भत ! सिज्झमाणा कयरमि उच्चत्तेण सिज्झति ? गोयमा ! जहण्णण सत्तरयणिए

बीज (धान्य) पुनरपि अकुर को उत्पत्ति नहीं करता है इसही प्रकार सिद्ध भगवतने भी कर्म बीज को जलाया है वह भी पुनरपि भवरूप अकूरकी उत्पत्ति नहीं कर सकते हैं, इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि प्रसिद्ध होते हैं सो सादिअपर्य वसित होते हैं यावत् वहां रहते है ॥ १५ ॥ अहो भगवान जो जीव सिद्ध होते हैं वे किस सघयण से सिद्ध होते हैं ? हे गौतम ! वज्रऋषभ नाराच सघयण से सिद्ध होते हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवान ! जीव किस सस्थान से सिद्ध होते हैं ? हे गौतम छ सस्थान में से किसभी सस्थानसे से सिद्ध होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवान ! जीव को कितनी ऊंची अवगाहना वाले शरीर होते हैं ? हे गौतम ! जघन्य सात हाथ की अवगाहना

१ किसी स्थान दो हाथ की अवगाहना ग्रहण है यह वामन सस्थान आश्रिय मानना

असंखेज्जाहि गुणसेठिहिं अणतकम्मसे खवेयतो वेयणिज्जाउयणामगुत्ते इच्चेते चत्तारि कम्मसे जुगवं खवेइ, खवेत्ता उरालिय तेया कम्माइ सव्वाहिं विप्पजहणाहिं, विप्प-जहति, ओरालियतेया कम्माइ सव्वाइ विप्पजहणाहि विप्पजहित्ता, उज्जूसेढिपडिवण्णे अफुसमाणगति उड्ढं एकसमएण अविग्गहेणगत्ता, णकारोवउत्ते सिज्झिहिति, तेण तत्थ सिद्धाभवति सादिया अपज्जवसिया, असरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा, निरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं कालते चिट्ठति ॥ १४ ॥ स केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चति तण तत्थसिद्धा भवति सादिया

असंख्यात गुन श्रेणि से अनन्त कर्मों के अंशोंका क्षयकर वेदनीय आयुष्य नाम और गोत्र इन चारों कर्मों को युगपत् ही क्षयकर, क्षयकर के औदारिक तेजस और कार्मन यह तीनों शरीर रहे हुवे आग उनको सर्व था छोडकर सरल आकाश की श्रेणिमें प्रविष्ट हुवे अन्य आकाश प्रदेश का स्पर्श नहीं करते हुवे विग्रह गति नहीं करते हुवे अनाकार (केवल दर्शन) उपयोग युक्त एक समय में ऊर्ध्वगमन कर वे वहां सिद्ध क्षेत्रमें सादि आदि सहित और अपर्यवसित अन्त रहित भांगेसे सिद्ध होते हैं * यावत् वहां रहते हैं॥१४॥ अहो भगवान् ! एसा क्यों कहाकी वे वहां सादी अनंत भांगेसे सिद्ध होते हैं यावत् वहां रहते हैं? हे गौतम यथादृष्टांत

* सिद्धगतिमें का प्राप्त हुवे यहा आदि है परंतु यहां से कभी चवते नहीं है इसलिये अन्त रहित है.

आरणस्स अच्चुयस्स, गेविज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण ॥ अत्थिणं भंते ! ईसिपब्भाराए पुढविए अहेसिद्धा परिवसति ? णो तिणट्ठे समट्ठे॥२०॥ से कहिं खाएइण भंते ! सिद्धा परिवसति ? गोयमा ! इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्ततारा भवणाओ बहुजोयण सयाइं बहुजोयण सहस्साइं बहुजोयण सयसहस्साइं, बहुजोयणकोडीओ, बहुजोयण कोडाकोडीओ उड्ढं दूरउप्पइत्ता सोहम्मीसाण सणकुमार माहिंद बंभ लंतक सुक्क सहस्सार आणत्त पाणत्त आरण अच्चुय तिणिय अट्ठारगविज्ज विमाणावास सव्वेवीतीवइत्ता विजय

सहस्सार आणत प्राणत आरण अच्युत नवग्रैवेयक विमान पांच अणुत्तर विमान के नीचे सिद्ध रहते हैं क्या ? ऐसा प्रश्न किया और भगवंतने सब का निषेध किया अहो भगवन् ! ईषित्प्राग्भार पृथ्वी के नीचे सिद्ध रहते हैं क्या ? हे गौतम ! यह समर्थ अर्थ नहीं ॥२०॥ अहो भगवन् ! तब किस स्थान कर सिद्ध रहते हैं ? हे गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणिक (बराबर) भूमि के विभाग से ऊपर चन्द्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र ताराओं के भवन-विमान से बहुत सेकडों योजन, बहुत हजारों योजन, बहुत लाखों योजन, बहुत क्रोडों योजन, बहुत कोडाकोड योजन ऊपर दूर जावे वहां सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म लांतक शुक्र सहस्रार आणत प्राणत आरण अच्युत यों बारे देवलोक तीन सो अठारे ग्रैवेयक के

उक्कोसेण पचधणुसइए सिज्झति ॥ १८ ॥ जीवाण भंते ! सिज्झमाणा कयरंमि आउए सिज्झति ? गोयमा ! जहणेण साइरेगट्ठ वासाउए उक्कोसेण पुव्वकोडियाउए सिज्झंति ॥१९॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहेसिद्धा परिवसति? णो तिणट्ठे समट्ठे, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ अत्थिण भंते ! सोहम्म कप्पस्स अहे सिद्धा परिवसंति ? णो तिणट्ठे सम्मट्ठे, एव सव्वोसि पुच्छा ईसाणस्स सण-कुमारस्स माहिंदस्स बभस्स लंतस्स महासुक्कस्स सहस्सारस्स आणयस्स पाणयस्स

उत्कृष्ट पांचसो धनुष्य की अवगाहना वाले सिद्ध होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जीव कितने आयुष्यवाले सिद्ध होते हैं हे गौतम ! जघन्य कुछकम (गर्भ के ९ महिने) अधिक आठ वर्ष के आयुष्य वाले और उत्कृष्ट क्रोड पूर्व के आयुष्यवाले सिद्ध होते हैं ॥१९॥ अहो भगवन् ! सिद्ध भगवन्त रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे रहते हैं क्या ? हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे सिद्ध नहीं रहते हैं ऐसे ही गौतम स्वामीने सातों पृथ्वी के नीचे सिद्ध भगवन्त के रहने का प्रश्न किया और भगवंतने उस का निषेध किया, अहो भगवन् ! सिद्ध भगवंत सौधर्म देवलोक के नीचे रहते हैं क्या ? हे गौतम ! यह अर्थ भी समर्थ नहीं इस प्रकार ही ईशान सनत्कुमार महेन्द्र ब्रह्म लांतक महाशुक्र

तणुयतरि, अगुलस्स असखेज्जइ भागं बाहिरल्लेण पण्णत्ता, इसिपब्भाराएण पुढविए दुवालस णाम धेज्जा पण्णत्त तजहा इसितिवा, इसिपब्भारातिवा, तणुतिवा, तणुतणुतिवा, सिद्धितिवा सिद्धालएतिवा, मुत्तितिवा, मुत्तालएतिवा, लोयग्गतिवा, लोयग्ग दुसियातिवा लोयग्ग पडिवुज्झणातिवा सव्वपाणभूतजीवसत्त सुहावहातिवा इसिपब्भाराएण पुढविएसेया सख-तलविमल सोल्लिय मुणालिय दगरय तुसार गोखिर हारवण्णा, उत्ताणछत्त सट्ठाणसट्ठिया सव्वज्जुणसुवण्णमइ, अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णिरया णिम्मला निप्पंका निक्कक

प्रागभार पृथ्वी के द्वादश (१२) नाम कहे हैं, तद्यथा १ इसित छोटी, २ इसित प्रागभार-बहुत छोटी, (लोक की अपेक्षा या सातों नरक पृथ्वी की अपेक्षा) ३ तणु पतली ४ तणतणु-बहुत पतली, ५ सिद्धी, ६ सिद्धालय ७ मुक्ति, ८ मुक्तालय ९ लोकाग्र, १० लोकाग्र में स्थिर ११ लोकाग्र को प्रतिबोधक और १२ सर्व प्राणी भूत जीव और सत्व को सुख निर्बाध का स्थान यह इसितप्रागभार पृथवी श्वेत शंख के तला समान निर्मल श्वेत, कमल के तंतु, पानी की बुन्दों, पानी प्रकार का जमा ठार (बरफ) गौका दूध, मोतीकाहार, यह जिस प्रकार उज्वल होते हैं इस प्रकार की उज्वल है चित्ते किये छत्र से संस्थान जैसी संस्थित, सर्व अर्जुन सुवर्ण मय, स्वच्छ सूहाली कोमल नरी मठारी रजरहित निर्मल, कर्दम

वेजयत जयंत अपराजित सव्वट्ठसिद्धस्स महाविमाणस्स सव्वुवरिल्लाओ थुभियग्गाओ दुवालस जोयणाइं अन्बाहाए, एत्थण इसिपब्भाराणाम पुढवी पणत्ता ॥ २१ ॥ पणयालिसजोयण सयसहस्साइं अ यामविक्खंभेण एकजोयण कोडी बयालीसच सय सहस्साइं तीसच सहस्साइं दोणिय अउणापण जोयणसय किंचिविसेसाहिए परिएण, इसिपब्भाराण पुढविए बहु‑ मज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अठजोयणाइं बाहल्लेण तयाणंतरंचण मायाए २ पडिहायमाणि २ सव्वसु चरिमपेरंते, समुच्छियपत्ता ता

विमान [प्रथम त्रिक के १११, दूसरी के १०७ और तीसरी त्रिक के १०० विमान] इन से भी उल्लंघ कर विजय वैजयंत जयंत अपराजित और सर्वार्थसिद्ध इन पांचों अनुत्तर विमानों का उल्लंघकर सर्वार्थ सिद्ध महा विमान की स्तुभ का अग्र के ऊपर के विभाग से द्वादश (१२) योजन ऊपर वहां ईपत्प्रागभार नामकी पृथ्वी कही है ॥ २१ ॥ ईपत्प्रागभार पृथ्वी का वर्णन‑यह पैंतालीस लाख योजन की लम्बी चौडी, एक क्रोड बयालीस लाख तीस हजार दो सौ गुन पचास (१४२३०२४९) योजन से कुछ अधिक परधीवाली है वह ईपत् प्रागभार पृथ्वी बहुत मध्य—बीच में आठ योजन की जाडी आकाश क्षेत्र में रही है अर्थात् आठ योजन की मध्य में जाडी है, उस मध्य विभाग से अनुक्रम के प्रमाण से कमी होती हुई सर्व के परिमान्त में—किनारे पर मक्षीकाकी पांख से भी अधिक पतली पारीक अंगुल के असंख्यातवे भाग रही है. ईपत्

तणुयतरि अगुलस्स असंखेज्जइ भागं बाहिरल्लुण पण्णचा,इसिपब्भाराएण पुढविए दुवालस णाम धज्जा पण्णच्च तजहा इसितिवा,इसिपब्भारातिवा,तणुतिवा,तणुतणुतिवा,सिद्धितिवा सिद्धालएतिवा, मुत्तितिवा, मुत्तालएतिवा, लोयग्गतिवा, लोयग्ग थुसियातिवा लोयग्ग पडिबुज्झाणातिवा सव्वपाणभूतजीवसत्त सुहावहातिवा इसिपब्भाराएण पुढविएसेया सख-तलविमल सोल्लिय मुणालिय दगरय तुसार गोखिर हारवण्णा,उत्ताणछत्त सट्ठाणसट्ठिया सव्वज्जुणसुवणगमइ,अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णिरया णिम्मला निप्पंका निक्कंक

पागभार पृथ्वी के द्वादश (१२) नाम कहे हैं, तद्यथा १ ईसित छोटी, २ ईसित प्राग्भार-बहुत छोटी, (लोक की अपेक्षा या सातों नरक पृथ्वी की अपेक्षा) ३ तणु पतली ४ तणतणु-बहुत पतली, ५ सिद्धी, ६ सिद्धालय ७ मुक्ति ८ मुक्तालय ९ लोकाग्र, १० लोकाग्र में स्थिर ११ लोकाग्र को प्रतिबोधक और १२ सर्व प्राणी भूत जीव और सत्व को सुख निर्बाध का स्थान यह ईसितप्राग भार पृथ्वी श्वेत शंख तला समान निर्मल श्वेत, कमल के तन्तु, पानी की बुन्दो, पानी प्रकार का जमा ठार (बरफ) गौका दूध, मोतीका हार, यह जिस प्रकार उज्वल होते हैं इस प्रकार की उज्वल है चित्ते किये छत्र से संस्थान जैसी संस्थित, सर्व अर्जुन सुवर्ण मय, स्वच्छ मुहाली कोमल घसी मठारी रजरहित निर्मल, कर्दम

वेजयत जयत अपराजित सव्वट्ठसिद्धस्य महाविमाणस्स सव्वुवरल्लाओ थुभियग्गाओ दुवालस जोयणाइ अव्वाहाए, एत्थण इसिपब्भाराणाम पुढवी पणत्ता ॥ २१ ॥ पणयालिसजोयण सयसहस्साइ अयामविक्खभेण एकजोयण कोडी बयालीसच सय सहस्साइ तीसच सहस्साइ दोणिय अउणापण जोयणसय किंचिविसेसाहिए परिएण, इसिपब्भाराण पुढविए बहु मज्झदसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अठजोयणाइ बाहल्लेण तयाणतरचण मायाए २ पडिहायमाणि २ सव्वसु चरिमपेरते, समुच्छियपत्ता ता

विमान [प्रथम त्रिक के १११, दूसरी के १०७ और तीसरी त्रिक के १०० विमान] इसे भी उल्लंघ कर विजय वैजयंत जयंत अपराजित और सर्वार्थसिद्ध इन पांचों अनुत्तर विमानोका उल्लंघकर सर्वार्थ सिद्ध महा विमान की स्तुभ का अग्र के ऊपर के विभागसे द्वादश (१२) योजन ऊपर यहां ईषत्प्रागभार नामकी पृथ्वी कही है ॥२१॥ ईषत्प्रागभार पृथ्वी का वर्णन यह पेंतालीस लाख योजन की लम्बी चौडी, एक क्रोड बयालीस लाख तीस हजार दो सो गुन पचास (१४२३०२४९) योजन से कुछ अधिक परीधीवाली है यह ईषत् प्रागभार पृथ्वी बहुत मध्य—बीच में आठ योजन की जाडी आकाश क्षेत्र में रही है अर्थात् आठ योजन का मध्य में जाडी है, इस मध्य विभाग से अनुक्रम के प्रमाण से कमी होती हुई सर्व के चरिमान्त में—किनारे पर मक्षीकाकी पांख से भी अधिक पतली बारीक अगुल के असंख्यातवे भाग रही है. ईषत्

तणुयतरि, अगुलस्स असंखेज्जइ मागं याहीरल्लण पण्णत्ता, इसिपब्भाराएण पुढविए दुवालस णाम धेज्जा पण्णत्त तजहा इसितिवा, इसिपब्भारातिवा, तणुतिवा, तणुतणुतिवा, सिद्धितिवा सिद्धालएतिवा, मुत्तितिवा, मुत्तालएतिवा, लोयग्गतिवा, लोयग्ग थुसियातिवा लोयग्ग पडिवुज्झणातिवा सव्वपाणभूतजीवसत्त सुहावहातिवा इसिपब्भाराएण पुढविएसेया सव्व-तलथिमल सोल्लिय मुणालिय दगरय तुसार गोखिर हारवण्णा, उत्ताणछत्त सट्ठाणसट्ठिया सव्वज्जुणसुवणगमइ, अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णिरया णिम्मला निप्पका निक्कक

प्रागभार पृथ्वी के द्वादश (१२) नाम कहे हैं, तद्यथा १ इसित छोटी, २ इसित प्रागभार-बहुत छोटी, (लोक की अपेक्षा या सातो नरक पृथ्वी की अपेक्षा) ३ तणु पतली ४ तणतणु-बहुत पतली, ५ सिद्धी, ६ सिद्धालय ७ मुक्ति ८ मुक्तालय ९ लोकाग्र, १० लोकाग्र में स्थिर ११ लोकाग्र को प्रतिबोधक और १२ सर्व प्राणी भूत जीव और सत्व को सुख निर्वाण का स्थान यह इसिप्रभार भारा पृथवी शंख का तला समान निर्मल श्वेत, कमल के तन्तु, पानी की बुन्दो, पानी प्रकार का जमा ठार (बरफ) गौका दूध, मोतीकाहार, यह जिस प्रकार उज्वल होते हैं इस प्रकार की उज्वल है चित्ते किये छत्र से संस्थान जैसी संस्थित, सर्व अर्जुन सुवर्ण मय, स्वच्छ सुहाली कोमल नरी मठारी रजरहित निर्मल, कर्दम

उच्छाया समरिचिया सुप्पभा पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ २२ ॥ इसिपब्भाराएण पुढविए सीयाए जोयणमि लोगंते तस्स जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाउए, तस्सण गाउयस्स जसे उवरिल्ले छब्भागे तत्थण सिद्धाभगवंतो सादियाअपज्ज वासया अणेग जाति जरा मरण जोणिवेदण संसारकलं कलिभाव पुणब्भवगब्भवास वसहिं पवंच मतिक्कंता सासयमणागयद्धं चिट्ठति ॥ २३ ॥ इति ॥ (गाथा) कहिं पडिहया सिद्धा, कहिंसिद्धापतिट्ठिया ॥ कहिंबोदिंचइत्ताण, कत्थगंतूणसिज्झइ

रहित कलंक रहित कान्ति सहित किरणों सहित अच्छी प्रभा सहित, चित्त को प्रसन्नकारी, देखने योग्य अभिरूप, प्रतिरूप है ॥ २२ ॥ उस इषत्प्राग भार पृथ्वी से ऊपर एक योजन में लोक का अन्त है, उस योजन के ऊपरका गाउ [कोस] उसगाउ के ऊपर के छठे भाग में [३३३ धनुष्य और ३२ अंगुल जितनी जगह रही है] जितनी ऊंची जगह में वहां सिद्ध भगवंत सादि अपर्य वसित अनेक जन्म जरा मरण रूप चोरासीलक्ष योनीकी वेदनासे यह संसार में कलकलाट हो रहाहै उस दुःखका अतिक्रम उल्लंघकर अनागत कालमें अनंत सुखानुभव करते रहते॥अब सिद्ध भगवंतका वर्णन गाथाबंध करते है॥ श्रीगौतम स्वामी प्रश्नकरते हैं अहो भगवान्।सिद्धभगवंत किसस्थानमें जाकर रहे हैं किसस्थान में जाकर प्रतिहत हुए अर्थात् आगे जानेसे अटके हैं ? किसस्थान में सिद्ध भगवंत प्रतिष्ट हैं–रहे हैं, और किस स्थान प्रथम का शरीर त्याग किया–छोडा है ?

॥ १ ॥ अलोए पडिहयासिद्धा, लोयग्गेयपतिट्ठिया ॥ इहं बोंदी चइत्ताण, तत्थगंतूण सिज्झइ ॥ २ ॥ जसंठाणंतु इहंभवंचय, तस्सचरिमसमयंमि॥ आसियपएसघणं, तसंठाणं तहिंतस्स ॥३॥ दिहंवा हस्संवा जं चरिमभवेहवज्जसयण ॥ तत्तोतिभागहीणं सिद्धाणोगाहणभणिया ॥४॥ तिण्णिसया तित्तिसा, धनुंतिभागायहोइ ॥ बोधव्वाएसा खलु सिद्धाण, उक्कोसागहणा भणिया ॥ ५ ॥ चत्तारिय रयणिओ, रयणितिभागूणियाय

और किस स्थानमें जाकर सिद्ध हुवे हैं॥१॥अहो गौतम! सिद्ध भगवंत अलोक से प्रतिहत हुवे हैं अर्थात् अलोक में जीव को गति देने वाली धर्मास्तिकाया का अभाव होने से लोकाग्रमें सिद्ध प्रतिहत हुवे हैं आगे जाते अटके हैं, लोक के अग्रभाग में प्रतिष्ठ स्थिर हुवे हैं, सिद्ध भगवंतने यहां इस मनुष्य लोक में शरीर का त्याग किया है और वहां सिद्ध स्थान में जाकर सिद्ध हुवे हैं ॥ २ ॥ जिस शरीर में यहां जिस प्रकार के संस्थान में थे उस शरीर के त्यागने के अन्तिम समय में उस संस्थान के प्रदेश घन रूप आकार (कर्ण चक्षु घ्राणादि स्थान में जो शरीर में पोलार थी वह रुंधन हो कर) उस ही संस्थान से वहां सिद्ध स्थान में रहे हैं ॥ ३ ॥ यहां शरीर का जो दीर्घाकार-लम्बापना था अर्थात् चरम अन्तिम शरीर था उस के तीसरे भाग कमी कर बाकी रहे उतनी सिद्ध भगवंत की अवगाहना कही है ॥ ४ ॥ तीन सो तेतीस धनुष्य और एक धनुष्य का तीसरा भाग अर्थात् ३२ अंगुल इतनी उत्कृष्ट अवगाहना सिद्ध भगवंत की जानना ॥५॥

योधव्वा ॥ एगसलुसिद्धाण, मज्झिमओगहणाभणिया ॥ ६ ॥ एकायहोइरयणि, साहिया अंगुलाइ अट्ठभवे ॥ एसा खलु सिद्धाण, जहणाओगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ ओगाहणाएसिद्धाण, भवइभागेणहोई परिहिणा, सठाणमणिउत्थ, जरामरण विप्पमुक्काण ॥ ८ ॥ जत्थयएगासिद्धो, तत्थअणता भवक्खयाविमुक्का ॥ अण्णाणसमागाढा, पुट्ठोसव्वेयलोगते ॥ ९ ॥ फुसतिअणतसिद्धे, सव्वपएसहिंनियमसासिद्धा ॥ तोवि असखिज्जगुणा, देसपएसेहि जे पुट्ठा ॥ १० ॥ असरीराजीवघणा, उवउत्तादसणेय-

चार हाथ और एक हाथ का तीसरा भाग अर्थात् १६ अंगुल, इतनी मध्यम अवगाहना सिद्ध भगवत की जानना ॥६॥ एक हाथ कुछ अधिक अर्थात् ८ अंगुल इतनी जघन्य अवगाहना सिद्ध भगवत की जानना॥७॥इस प्रकार तृतीय भाग कम अवगाहना कम होकर उस शरीर के संस्थान से संस्थित सदा वे सिद्ध भगवत वृद्धावस्था और मृत्युसे मुक्त होते हैं॥८॥ उस सिद्ध स्थान में जहां एक सिद्ध भगवत रहे हैं वहां अनन्त सिद्ध हैं, व भवभ्रमण का क्षय कर अन्योन्य-परस्पर अवगाह कर रहे हैं ॥ ९ ॥ अनंत सिद्ध भगवंत परस्पर स्पर्शित हैं, सर्व सिद्ध असंख्यात प्रदेश कर संस्थित हैं अर्थात एकेक सिद्ध के असंख्यात २ आत्म प्रदेश हैं, वे भी असंख्यातगुने द्रव्य और प्रदेश कर स्पर्शित है इस प्रकार सिद्ध भगवत रहे हैं, ॥१०॥शरीर रहित जीव का घनरूप प्रदेश कर केवल ज्ञान और केवल दर्शन कर सहित है, ज्ञान से साकार व-

णाणेय ॥ सागारमणागार, लक्खणमेयतुमिद्धाण ॥ ११ ॥ केवलणाणवउत्ता,
जाणति सव्वभावगुणभाव ॥ पासतिसव्वआखलु, केवलदिट्ठिहिणताहि ॥ १२ ॥
णविअत्थि मणुस्साण, तसोक्खणविय सव्वदेवाण ॥ जंसिद्धाण सोक्ख, अव्वाबाह
उवगयण ॥ १३ ॥ जदेवाणसोक्ख सव्वद्धा पिंडियअणतगुण ॥ णयपावइमुत्तिसुह,
णताहिविवग्गवग्गूहि ॥ १४ ॥ सिद्धस्ससुहाराासि, सव्वद्धापिंडिजइहविज्जा ॥ साणत

यागी और दर्शन मे अनाकार उपयोगी यही लक्षण सिद्ध भगवंत के जानना ॥ ११ ॥ केवल ज्ञान के उपयोग कर जानते हैं सर्व वस्तु के भाव भेद गुन पर्याय और केवल दर्शन कर सर्व भाव को देखते हैं ॥ १२ ॥ जिस प्रकार के सुख उन सिद्ध भगवंत के हैं उस प्रकार के सुख न तो यहां मनुष्य लोक में किसी मनुष्य के हैं और न देवलोक में सब देवताओं के हैं, इस प्रकार निराम अव्याबाध सुख के उपग्राही सिद्ध भगवंत हैं ॥ १३ ॥ जो देवताओं के त्रिकाल [भूतभविष्य वर्तमान] के सुख हैं उन को अनन्तगुने करो तो भी सिद्ध भगवंत के क्षण मात्र की सुख की तुल्यता नहीं कर सकते हैं अनन्त वर्गावर्ग गुना करो तो भी बराबरी नहीं होता है ॥ १४ ॥ जो सिद्ध भगवंत के सुख की राशी है उन सुखों को यहां सर्व प्रकार के सुख की राशी से वर्गावर्ग कर एकत्र करो उन को अनंत वर्गावर्ग का

योवव्वा ॥ एसक्खलुसिद्धाण, मज्झिमओगहणाभणिया ॥ ६ ॥ एक्कायहोइरयणि, साहिया अगुलाइ अट्ठभव ॥ एसा खलु सिद्धाण, जहणाओगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ आगाहणाएसिद्धाण, भवाइभागेणहोई परिहिणा, सठाणमणिउत्थ, जरामरण विप्पमुक्काण ॥ ८ ॥ जत्थयएगासिद्धा, तत्थअणता भवक्खयाविमुक्का ॥ अण्णाणसमागाढा, पुट्ठोसव्वेयलागते ॥ ९ ॥ फुसतिअणतसिद्धे, सव्वपएसहिनियमसोसिद्धा ॥ तेवि असाखिज्जगुणा, देसपएसेहि जे पुट्ठा ॥ १० ॥ असरीराजीवघणा, उवउत्तादसणेय,-

चार हाथ और एक हाथ का तीसरा भाग अर्थात् १६ अगुल, इतनी मध्यम अवगाहना सिद्ध भगवत की जानना ॥६॥ एक हाथ कुछ अधिक अर्थात् ८ अगुल इतनी जघन्य अवगाहना सिद्ध भगवत की जानना॥७॥इस प्रकार तृतीय भाग कम अवगाहना रूप होकर उस शरीर के सस्थान से सस्थित सदा वे सिद्ध भगवत वृद्धावस्था और मृत्युकर मुक्त होते हैं॥८॥ उस सिद्ध स्थान में जहा एक सिद्ध भगवत रहे हैं वहां अनन्त सिद्ध हैं, वे भवभ्रमण का क्षय कर अन्योन्य-परस्पर अवगाह कर रहे हैं ॥ ९ ॥ अनत सिद्ध भगवंत परस्पर स्पर्शित हैं, सर्व सिद्ध असख्यात प्रदेश कर सस्थित है अर्थात् एकेक सिद्ध के असख्यात आत्म प्रदेश हैं वे भी असख्यातगुने देश और प्रदेश कर स्पर्शित है इस प्रकार सिद्ध भगवत रहे हैं ॥१०॥शरीर रहित जीव के घनरूप प्रदेश कर केवल ज्ञान और केवल दर्शन कर सहित है, ज्ञान से साकार व-

॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्तो, अउलनिव्वाणमुवगएसिद्धा ॥ सासयमव्वाबाहय, चट्ठइसुहीसुहंपत्तो, ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय, पारगयात्तिपरंपरगयत्ति ॥ उम्मुक्ककम्म कवया, अजरामराओसव्वाओ ॥ २० ॥ णिच्छिणसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबंध विमुक्का ॥ अव्वावाहंसोक्खं, अणुहोंति सासयसिद्धा ॥ २१ ॥ अतुलसुहसागरगया, अव्वाबाहं अणोवमपत्ता ॥ सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठतिसुहिसुहपत्ता ॥ २२ ॥ +

मानता है ॥१८॥ इस प्रकार शारीरिक मानसिक दुःख रहित सर्व काल में अनंत काल तक अतुल्य निर्वाण सुखको उपगत हुवे सिद्ध भगवंत शाश्वत अव्याबाधिक रहते हैं जिनको किसीभी प्रकार के सुखकी कदापि अभिलाषा मात्र भी नहीं होती है ऐसे सदैव तृप्त रहते हैं ॥१९॥ सर्व कार्य सिद्ध होने से सिद्ध हैं, सर्व तत्त्व के पारंगत होने से बुद्ध हैं,संसार के पार होने से पारंगत है,गये काल में जिस प्रकार सिद्ध हुवे उस ही प्रकार अनागत में सिद्ध होने से परम्परा गत हैं सर्वथा प्रकार से विमुक्त हुवे आठ कर्मरूप कीचड़कर रहित हुए हैं ॥ २० ॥ जन्म जरा मृत्यु व शारीरिक मानसिक सर्व दुःखो सर्वथा मूल से नाश किया, जन्म जरा—वृद्धावस्था और मृत्यु इस के बन्धकर सर्वथा प्रकारे से मुक्त हुवे हैं निराबाध शाश्वत सुख का अनुभव करते सिद्ध भगवंत सदैव रहते हैं ॥ २१ ॥ सिद्ध भगवंत सुख को किसी भी प्रकार के सुख की औपमा दीजाय नहीं ऐसे सुख के सागर- समुद्र में गर्क हुवे निराबाध निरुपम सुख को प्राप्त हुवे अनंतगत काल में और अनंत अनागत कालमें अर्थात् त्रिकाल में एकान्त सुखही सुखमें रहते हैं॥२२॥

वगगभइओ, सव्वागासेगमईज्जा॥ १५ ॥ अहणामकोइमीच्छो, णगरगुणेबहुविहावियाण तो ॥ णवयइपरिकहेउ, उवमाएतहिअसतिहि ॥ १६ ॥ एयासिद्धाणसोक्ख, अणावम णत्थितस्सउवम्म किंचिविसेसेणत्ता, उवम्ममीणसुणहवोच्छ ॥ १७ ॥ जहासव्वकाम गुणिय पुरिसोभोत्तूण भोयणकोइ ॥ तण्हाछुहाविमुक्को, अच्छेज्जजहाअमियतित्तो

माग देवो तो भी व सिद्ध भगवत के सुख लोक अलोक के सर्व आकाश में समावे नहीं इतने हैं ॥ १५ ॥ यथा दृष्टान्त कोइ म्लेछ जंगली मनुष्य को पकडकर राजा लाया और उस को यहां के सर्व प्रकार के सुख का अनुभव कराया, वह पीछा जंगल में गया और अपने परिवार के आगे अनुभविक सुख का वर्णन करने लगा परन्तु वहां उस प्रकार की कोइ भी वस्तु नहीं होने से उन जंगली परिवार को उस सुख का अनुभव करा सका नहीं, उस सुख की कुछ भी ओपमा बतासका नहीं ॥ १६ ॥ इस दृष्टान्त करके सिद्ध भगवत के सुख की ओपमा यहां इस लोक में किंचित मात्र भी नहीं है, कि जिसकर यहां के लोगों को सिद्ध भगवत के सुख का अनुभव करावे ॥ १७ ॥ जिस प्रकार सर्व प्रकार के पांचों इन्द्रियों के काम शब्द रूप भोग-गंध रस स्पर्श को प्राप्त हुवा मनुष्य उन का यथाइच्छित भोगों भोगवकर तृप्त हुवा तृषा कर क्षुधाकर रहित हुवा उत्तम प्रकार अमृत पान कर तृप्त हुवा सर्व प्रकार की इच्छाकर मुक्त हुवा सुख

॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्तो, अउलनिव्वाणमुवगएसिद्धा ॥ सासयमव्वाबाहय, चिट्ठइसुहीसुहपत्तो, ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय, पारगयात्तिपरंपरगयत्ति ॥ उम्मुक्ककम्म कवया, अजरामराओसव्वाओ ॥ २० ॥ णिच्छिणसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबंध विमुक्का ॥ अव्वाबाहसोक्खं, अणुहोंति सासयसिद्धा ॥ २१ ॥ अतुलसुहसागरगया, अव्वाबाह अणोवमपत्ता ॥ सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंतिसुहिसुहपत्ता ॥ २२ ॥ +

मानता है ॥१८॥ इस प्रकार शारीरिक मानसिक दुःख रहित सर्व काल में अनंत काल तक अतुल्य निर्वाण सुखको उपगत हुए सिद्ध भगवंत शाश्वत अव्याबाधिक रहते हैं जिनको किसीभी प्रकार के सुखकी कदापि अभिलाषा मात्र भी नहीं होती है ऐसे सदैव तृप्त रहते हैं ॥१९॥ सर्व कार्य सिद्ध होने से सिद्ध हैं, सर्व तत्त्व के पारंगत होने से बुद्ध हैं, संसार के पार होने से पारंगत है, गये काल में जिस प्रकार सिद्ध हुवे उस ही प्रकार अनागत में सिद्ध होने से परम्परा गत हैं सर्वथा प्रकार से विमुक्त हुवे आठ कर्मरूप कीचड़कर रहित हुए हैं ॥ २० ॥ जन्म जरा मृत्यु व शारीरिक मानसिक सर्व दुःखों सर्वथा मूल से नाश किया, जन्म जरा—वृद्धावस्था और मृत्यु इस के बन्धकर सर्वथा प्रकारे से मुक्त हुवे हैं निराबाध शाश्वत सुख का अनुभव करते सिद्ध भगवंत सदैव रहते हैं ॥ २१ ॥ सिद्ध भगवंत सुख को किसी भी प्रकार के सुख की औपमा दीजाय नहीं ऐसे सुख के सागर- समुद्र में मग्न हुवे निराबाध निरुपम सुख को प्राप्त हुवे अनतगत काल में और अनंत अनागत कालमें अर्थात् त्रिकाल में एकान्त सुखही सुखमें रहते हैं॥२२॥

* इति द्वादश *

उववाई सूत्र प्रथम उपाङ्ग समाप्तम्

* वीराब्द २४४४ अषाढ शुक्ल तृतीया गुरुवार *